THE CALL of the MAN-EATER

KENNETH ANDERSON

Table of Contents

शीर्षक पेज
कॉपीराइट पृष्ठ
अंतर्वस्तु
परिचय
नरभक्षी की पुकार
उम्बलमेरु का दुष्ट
कैंप फायर के पास एक रात
मोयार घाटी का काला बदमाश
जंगल के दिन और रात
जंगल के जीव
सुलेकुटा पेथर
हैमलॉवर से लेकर नरभक्षी तक

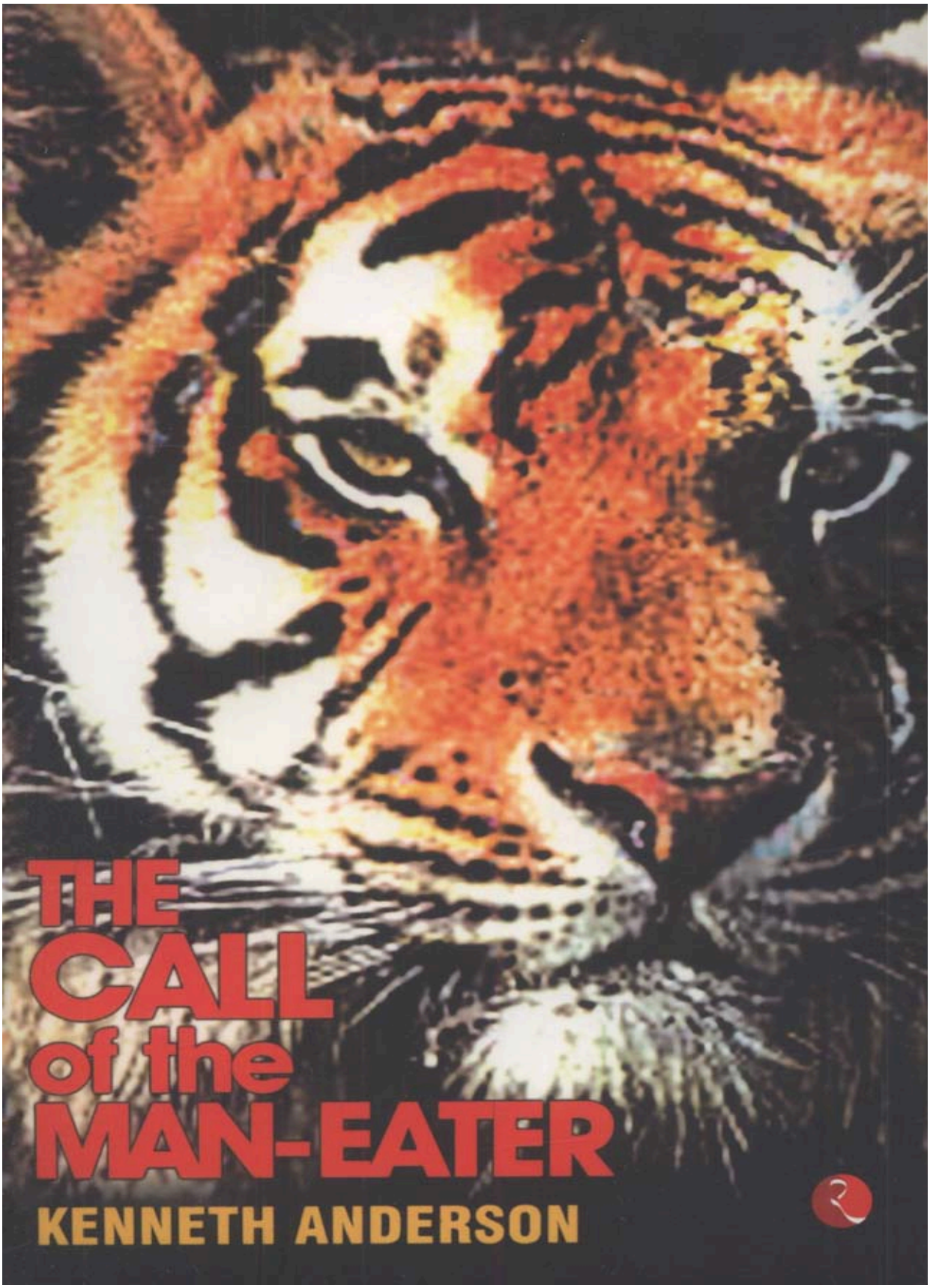
THE
CALL
of the
MAN-EATER
KENNETH ANDERSON

नरभक्षी की पुकार

इसी लेखक द्वारा:

भारतीय जंगल की कहानियाँ
नौ नरभक्षी और एक बदमाश
आदमखोर और जंगल के हत्यारे
शिवानीपल्ली का काला पैंथर
बाघ दहाड़ता है
बहुत समय पहले के जंगल
यह जंगल है
केनेथ एंडरसन ओमनीबस खंड I
केनेथ एंडरसन ओमनीबस खंड II
केनेथ एंडरसन ओमनीबस खंड III

नरभक्षी की पुकार

केनेथ एंडरसन

RUPA

द्वारा प्रकाशित
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, 1976
7/16, Ansari Road, Daryaganj
नई दिल्ली 110002

कॉपीराइट © केनेथ एंडरसन की साहित्यिक संपदा

इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और मत लेखक के अपने हैं और तथ्य उनके द्वारा बताए गए हैं जिन्हें यथासंभव सत्यापित किया गया है, और प्रकाशक इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं हैं।

सर्वाधिकार सुरक्षित।
प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुन: प्रस्तुत, प्रसारित या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।

ISBN: 978-81-716-7469-5

छठा संस्करण, 2016

10 9 8 7 6

लेखक के नैतिक अधिकार का दावा किया गया है।

यह संस्करण केवल भारतीय उपमहाद्वीप में बिक्री के लिए उपलब्ध है।

यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में जिसमें यह प्रकाशित हुई है।

अंतर्वस्तु

परिचय
नरभक्षी की पुकार
उम्बलमेरु का दुष्ट
कैंप फायर के पास एक रात
मोयार घाटी का काला बदमाश
जंगल के दिन और रात
जंगल के जीव
सुलेकुंटा पैंथर
हैमलीवर से लेकर नरभक्षी तक

परिचय

साहसिक कहानियों की इस नई किताब में मैंने अपने निवास स्थान की खूबसूरत भूमि के कुछ विशाल जंगली जानवरों के शिकार का वर्णन मात्र देने से कहीं अधिक प्रयास किया है। मैंने पाठकों के मन में न केवल घटित घटनाओं को, बल्कि उनके घटित होने की पृष्ठभूमि को भी पुनः जीवंत करने और चित्रित करने का प्रयास किया है।
'कैंप फायर के पास एक रात' शीर्षक वाले अध्याय में मैंने जंगल में ऐसी रातें बिताने के दौरान घटी घटनाओं का वर्णन किया है। मैंने पाठक को भी अपने साथ उस यात्रा पर ले जाने और वहाँ के दृश्यों, ध्वनियों और अनुभवों से परिचित कराने का प्रयास किया है। बाद के दो अध्यायों में मैंने अपने विचारों को खुलकर व्यक्त किया है, उन अद्भुत दिनों और रातों के बारे में जिनमें विचित्र या मनोरंजक घटनाएँ, और कुछ मर्मस्पर्शी घटनाएँ भी घटी हैं। ये यादें मेरे लिए बहुत अनमोल हैं और मुझे विश्वास है कि मैं इन्हें कभी भूल नहीं पाऊँगा। यदि इन विचारों को लिखकर मैं पाठक को उतना आनंद दे पाऊँ जितना मुझे इन्हें सुनाने से मिला है, तो मैं अत्यंत संतुष्ट हो जाऊँगा।
मैंने इस अद्भुत भूमि के कुछ कम ज्ञात प्राणियों की आदतों के बारे में भी बताया है, और कुछ अधिक ज्ञात प्राणियों के बारे में भी, ताकि पाठक उनसे और अधिक घनिष्ठता से परिचित हो सके - मेरे विनम्र वनवासी मित्र, जिनकी संगति में मैं बहुत खुश और संतुष्ट हूं।
भारत में एक बड़ा आंदोलन अभी शुरू हुआ है, हालांकि दुर्भाग्य से बहुत देर से, जिसका उद्देश्य जनता के मन में अपने आसपास के वन्य जीवों के प्रति प्रेम जगाना है। ये जीव भारत के मुकुट में जड़े अनमोल रत्न हैं जो लगभग हमेशा के लिए लुप्त हो चुके हैं। कई स्थान जो कभी वन्यजीवों से भरे रहते थे और उनकी मधुर आवाजों से गूंजते थे, अब सन्नाटे में डूबे हुए हैं। इससे पहले कि यह अनूठी विरासत पूरी तरह से अतीत का हिस्सा बन जाए, यह सरकार का, और विशेष रूप से प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि वह उस अंधाधुंध नरसंहार को समाप्त करे जो आज भी रात-दिन और साल के हर दिन जारी है। भविष्य के खेल प्रेमियों के लिए, मैं राइफल और बंदूक के बजाय कैमरे का उपयोग करने की पुरजोर वकालत करूंगा। यह आपको उतना ही आनंद दे सकता है - स्वच्छ आनंद, रक्त की गंध, मृत्यु के दृश्य और पश्चाताप की पीड़ा से मुक्त।
इसलिए मैं आपको उन जगहों की एक अद्भुत यात्रा पर आमंत्रित करता हूँ जो शायद आपके लिए नई हों और देखने में बेहद खूबसूरत हों—वह जंगल जो जीवन से भरपूर है, भले ही आपकी नज़रों से छिपा हो। रात में आप इसे अपने चारों ओर महसूस कर सकते हैं, आपकी टिमटिमाती कैंप फायर की सीमा से ठीक बाहर, जहाँ अँधेरे की

दीवार शुरू होती है और चाँदनी से जगमगाते जंगल के गोलेयारों और मैदानों में दूर तक फैली हुई है, या चाँदनी रात में जंगल की गहरी छाया में, जहाँ, लॉरेंस होप के शब्दों में:

कोई आवाज नहीं थी; उसने कोई चीख नहीं मारी।
लापरवाह तारे शांत भाव से देख रहे थे।
जंगल की अचानक त्रासदी
अनसुना, अज्ञात, अदृश्य ही रहा।

ऊँचे पेड़ों की डालियों से होकर गुज़रती रात की हवा की सरसराहट, लाखों पत्तों का थरथराना जो दूर के सागर की तरह फुसफुसाते हैं; शाखाओं के बीच झिलमिलाते जुगनुओं की चमक; चारों ओर छाया अँधेरा, और उसके भीतर अदृश्य रूप से रेंगता हुआ गहरा अँधेरा; और दूर से आती सियार के झुंड की अजीब, अलौकिक चीख: 'ऊऊऊ-ऊह! ऊह-कहाँ? ऊह-कहाँ? कुहाँ? कहाँ?' और सरदार का जवाब, लोमड़ियों के समूह की आवाज़ के साथ: 'हाँ, यहीं! ही-रे! ही-ई-याह! याह! याह! याह!' फिर अंत में वह भयानक लेकिन रोमांचकारी पुकार जो पहाड़ियों पर गूंजती है और कोहरे से भरी घाटियों में गूँजती है: 'आ-ऊंग! औ-ओ-न-ऊन! औघ-हा! उघ! उघ! उ-उ-उ-घ!' आदमखोर की पुकार!
इसलिए अपनी सारी मानवीय चिंताओं को एक तरफ रख दें और मेरे साथ इन अद्भुत क्षेत्रों की यात्रा करें, जहाँ जंगल का बोलबाला है और प्रकृति के नियम कायम हैं। एक अन्य कवि के शब्दों में, अपने हृदय और मन की शांति में इन जंगली स्थानों को आपसे बात करने दें।

इसलिए तुम मेरे बगीचों में सीखते हो
जहां जंगली जीव सो रहे हैं,
प्रकृति के प्रति श्रद्धा
जिसे शहर की सड़कें नकारती हैं,
आप वास्तविक मूल्य सीखते हैं
दोमट मिट्टी से बने मनुष्य का;
और तुम घुटने टेककर अपने सृष्टिकर्ता का धन्यवाद करो।
जैसे-जैसे तुम अपने घर की ओर कदम बढ़ाते हो।

डब्ल्यू.जे.के.एस.

एक

नरभक्षी की पुकार

आधी रात के कुछ ही समय बाद का समय था, और बाहर घना अंधेरा था। मैं जोल्डाहल स्थित वन बंगले के बरामदे में रखी लंबी कुर्सी पर आराम से लेटा हुआ था, दोनों पैर उसके लकड़ी के स्टैंड पर रखे हुए, पाइप पी रहा था और उस ध्वनि को सुन रहा था जो भारत में हर जंगल प्रेमी के कानों को संगीतमय लगती है और हर शिकारी और परभक्षी के लिए एक चुनौती है।
वह पूरे जंगल में कराहता रहा; और फिर, जैसे ही वह प्राणी चुपचाप जंगल से गुज़रने लगा, मेरे कानों में उसकी संतुष्टि की एक कोमल आह सुनाई दी, मानो वह अपने पूरे क्षेत्र का सर्वोच्च स्वामी हो। 'उह! उह! उहहा!'
मेरी कल्पना में उस पुकारने वाले की छवि बन गई। उस घोर अंधेरे में उसका भूरा रंग, उस पर बनी गहरी काली धारियाँ और कानों के पीछे तथा गले और पेट के निचले हिस्से पर मौजूद सफेद धब्बे, देखने वाले को बिल्कुल भी दिखाई नहीं देते, अगर वह उन्हें देख भी पाता। वास्तव में, वह बाघ के रूप में बिल्कुल भी पहचान में नहीं आता। देखने वाला, अगर देख भी पाता, तो केवल एक काली परछाई देखता, जो आसपास के जंगल से भी कहीं अधिक काली होती।
यदि देखने वाला कोई पुरुष होता, और उसके पास टॉर्च या चाँदनी न होती, तो उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता, क्योंकि मनुष्य की दृष्टि घने अंधेरे में और अधिक अंधेरा देखने के लिए नहीं बनी होती। फिर भी, उसे यह बात निश्चित रूप से पता चल जाती कि कोई बाघ पास ही है। जंगल को कंपा देने वाली दहाड़ें उसे बता देतीं; और देखने वाला स्वयं भी काँप उठता। यदि वह असाधारण रूप से तीव्र श्रवण शक्ति वाला प्रशिक्षित और अनुभवी शिकारी होता, तो वह घास की हल्की सरसराहट या किसी भारी वस्तु से टकराते पत्ते की आवाज सुन पाता। वह किसी टहनी के टूटने की आवाज नहीं सुन पाता, क्योंकि बाघ इतना लापरवाह नहीं होता कि ऐसी किसी चीज पर पैर रख दे, क्योंकि वह स्वयं एक शिकारी है, और शिकारी अपनी उपस्थिति का पता नहीं चलने देते और न ही कोई गलती करते हैं।
यदि कोई व्यक्ति पेड़ की नीची शाखा पर बैठा हो और बाघ ठीक उसके नीचे से गुज़रे, और उसकी सूंघने की शक्ति बहुत तेज़ हो, तो शायद उसे अचानक एक तेज़ हरी गंध महसूस हो जो कुछ पल के लिए उसकी नाक तक पहुँचे। ऐसे में, यदि वह धार्मिक हो, तो उसके लिए बेहतर होगा कि वह जल्दी से प्रार्थना करे और अपनी साँस रोक ले,

और न तो शरीर को हिलाए और न ही पलक झपकाए। क्योंकि बाघ की सूंघने की शक्ति लगभग न के बराबर होती है, लेकिन उसकी सुनने की शक्ति असाधारण रूप से तेज़ और दृष्टि अद्भुत होती है, जिससे वह अपने आस-पास की छोटी से छोटी हलचल को भी पकड़ लेता है। यदि बाघ उस क्षण देखने वाले को सुन या देख ले, तो देखने वाला शायद फिर कभी न देखे।
जिस बाघ की दहाड़ मैं सुन रहा था, वह कोई साधारण बाघ नहीं था। वह आदमखोर था!
आप शायद यह सवाल पूछें कि बाघों की इस सारी छुपकर चलने की कला, उनकी अद्भुत सुनने और देखने की क्षमता, और उनकी उस असाधारण छठी इंद्री का क्या फायदा, जब वह मूर्ख जानवर कराहते, आहें भरते और दहाड़ते हुए अपनी मौजूदगी का ऐलान कर रहा था? यह एक वाजिब सवाल है, जिसका जवाब मेरे लिए संतोषजनक ढंग से देना मुश्किल है, क्योंकि मैं खुद बाघ नहीं हूं। मैं सिर्फ एक सुझाव दे सकता हूं। ज़्यादातर ताकतवर लोग, अच्छी तरह से विकसित शरीर वाले, अच्छे मुक्केबाज़ या पहलवान, अपनी ताकत के बारे में चुप और विनम्र नहीं रह सकते। हम सभी कभी-कभी अपनी उपलब्धियों का बखान करने के लिए ललचाते हैं। यहां तक कि जो पुरुष महिलाओं को लुभाने में माहिर होते हैं, वे भी अपनी जीतों की बात करते हैं और कहते हैं कि वे अप्रतिरोध्य हैं। शायद बाघ भी ऐसा ही अहंकारी है, जो दूर-दूर तक यह ऐलान करता है कि वह अजेय है, निडर है, जंगल का सर्वविजयी स्वामी है, और पहाड़ियों, घाटियों, मैदानों और घने जंगलों में अपनी ही चुनौती की गूंज सुनकर आनंदित होता है, यह जानते हुए कि उसे सुनने वाला हर प्राणी डर जाएगा, कांप जाएगा और छिप जाएगा। शायद वह उदास और अकेला है, अपनी ही संगति से ऊब गया है, ठीक वैसे ही जैसे कभी-कभी हम सब महसूस करते हैं, किसी साथी की तलाश में, खासकर अगर वह साथी एक सुंदर, आकर्षक और खूबसूरत बाघिन हो। हो सकता है उसने अभी-अभी भरपेट खाना खाया हो, और वह पाचन क्रिया में मदद के लिए खाने के बाद टहलने निकला हो; हम सब भी कभी-कभी ऐसा करते हैं, और टहलते हुए सीटी बजाते हैं या गाना गाते हैं।

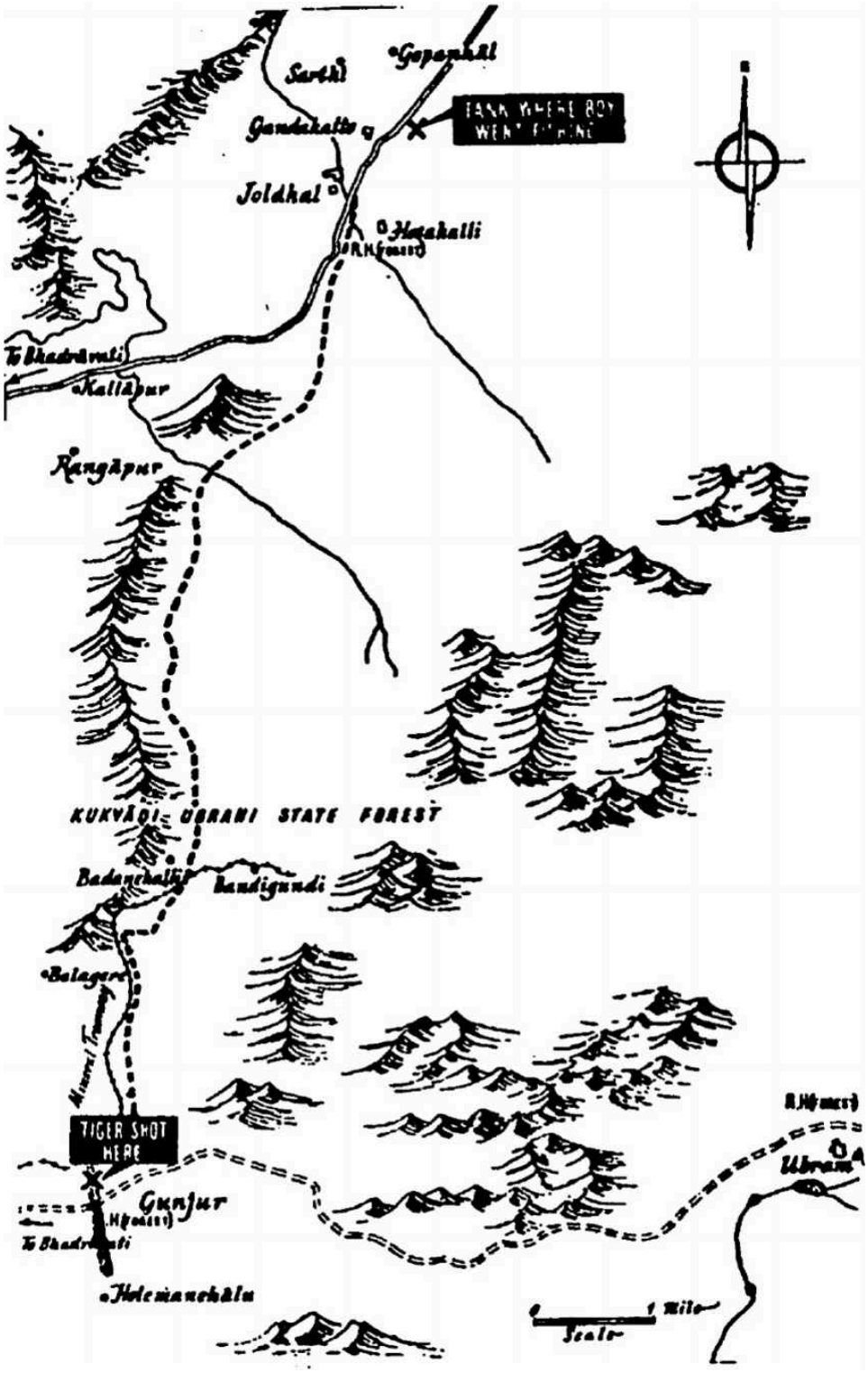

लेकिन मैंने इस कहानी की शुरुआत ठीक से नहीं की है और इधर-उधर की बातें कर रहा हूं, जबकि मुझे शुरुआत से शुरू करना चाहिए था। मैं आपको यह तो बिल्कुल नहीं बता सकता कि बाघ वहां क्यों था, सिवाय इसके कि बाघ जंगलों में रहते हैं। लेकिन मुझे यह ज़रूर समझाना चाहिए था कि मैं आधी रात को जोल्डाहल वन बंगले

के बरामदे में आरामकुर्सी पर लेटा हुआ, पाइप पी रहा था और उन विस्मयकारी लेकिन अद्भुत और मधुर ध्वनियों को सुन रहा था।
यह सब इस प्रकार हुआ। मैसूर राज्य में शिमोगा जिले के मुख्यालय से लगभग बारह मील की दूरी पर, लगभग उतना ही बड़ा शहर भद्रावती स्थित है, जो एक महत्वपूर्ण औद्योगिक केंद्र बन चुका है और यहां एक विशाल लौह और इस्पात कारखाना है। बाबा बूदन पर्वत श्रृंखला पर कुछ मील दूर स्थित केमंगोडी नामक स्थान से निकाला गया लौह अयस्क, केबल-बोल्टी की एक श्रृंखला द्वारा भद्रावती कारखाने तक पहुंचाया जाता है। ईंधन के लिए आसपास के विशाल जंगलों में लगातार काटे जाने वाले पेड़ों से प्राप्त लकड़ी का कोयला उपलब्ध कराया जाता है। भद्रावती की भट्टियों की चमक कई मील दूर तक दिखाई देती है, जो क्षितिज को लाल कर देती है और आकाश में बादलों पर प्रतिबिंबित होती है।
जोल्डाहल, भद्रावती से लगभग पंद्रह मील दूर, चितलदुर्ग की ओर जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह पूरी तरह से घने जंगल से घिरा हुआ है और यहां वन विभाग का एक सुंदर बंगला है। जोल्डाहल से लगभग दस मील दक्षिण-पश्चिम में, घने जंगल में ही, एक और वन बंगला है, जो थोड़ा कम आकर्षक है। यह बंगला गुंजुर नामक स्थान पर स्थित है।
पुराने दिनों में मैं अक्सर गुंजुर में डेरा डालता था। यह एक खूबसूरत जगह है। लेकिन गुंजुर तक जाने वाली सड़क को सिर्फ 'बेहद खराब' ही कहा जा सकता है। यह सड़क बैंगलोर से तारिकेरे और भद्रावती जाने वाली मुख्य सड़क से भद्रावती पहुंचने से लगभग पांच मील पहले पूर्व की ओर मुड़ जाती है। उस बिंदु से आगे यह सड़क नहीं, बल्कि बैलगाड़ी का रास्ता बन जाती है, और वह भी बेहद खराब। शुरुआती दिनों में मैंने अपनी मॉडल टी फोर्ड से और उसके बाद से अपनी स्टडबेकर से इस रास्ते पर सफर किया है। इसके पूरे बीस मील के सफर में मेरी सहानुभूति और असीम प्रशंसा हेनरी फोर्ड और स्टडबेकर भाइयों के साथ रही है। हर समय मेरा धैर्य टूटता रहता था, फिर भी मैंने वहां की किसी भी यात्रा में कभी भी स्प्रिंग या एक्सल नहीं तोड़ा।
गुंजुर बंगले में एक बहुत ही मेहनती और मददगार केयरटेकर रहते थे, जो हर मौके पर मेरे रहने को आरामदायक बनाने के लिए अपनी पूरी कोशिश करते थे। इस केयरटेकर की एक प्यारी सी छोटी बेटी थी। जब मैं पहली बार उनसे मिला, तब वह लगभग बारह साल की थीं, और उन्हें गाड़ियों को देखने और सम्मानजनक दूरी से मेरी बंदूकों को निहारने में बहुत दिलचस्पी थी। साथ ही, अपने पिता की तरह वह भी बहुत मददगार थीं। वह लगभग एक फर्लांग दूर एक झरने से अपना घड़ा भरतीं और उसे उठाकर बंगले के बाथरूम में रखे पुराने जस्ता के टब में मेरे इस्तेमाल के लिए डालतीं।
यह बच्ची बड़ी होकर लगभग सत्रह साल की एक प्यारी लड़की बन गई। उसके पिता ने हमेशा की तरह बड़ी मेहनत से जोल्डाहल के एक सम्मानित ग्रामीण से उसकी शादी की सारी व्यवस्था कर दी थी, और शादी जल्द ही होने वाली थी।
एक दिन वह अपने पिता और खुद के इस्तेमाल के लिए पानी भरने के लिए अपना घड़ा लेकर झरने पर गई। वे जंगल में बने बंगले के पीछे रसोई और गैरेज के बीच बने एक छोटे से गोदाम में रहते थे। लेकिन वह कभी वापस नहीं लौटी। क्योंकि जैसे ही वह घड़ा झरने में डुबोने के लिए झुकी, आदमखोर ने उसे पकड़ लिया।
वह चीखती-चिल्लाती उसे उठाकर झरने के किनारे तक फैले घने जंगल में ले गया। उसके पिता ने उसकी आवाज़ सुनी। उनके पास बंदूक नहीं थी। उन्होंने लकड़ी काटने वाला औजार उठाया और पूरी ताकत से उसका पीछा किया, जब तक कि उन्होंने बाघ को पकड़ नहीं लिया।

उसने अपनी मातृभाषा कन्नारेस में उस पर चिल्लाते हुए कहा: 'मेरे बच्चे को छोड़ दो, हे दरिंदे। मैं इसके लिए तुम्हें मार डालूंगा।'
बाघ ने आवाज़ सुनी और मुड़ा। उसने आदमी को पीछे भागते देखा। हर आदमखोर के दिल में छिपी कायरता ने उसे भयभीत कर दिया। लेकिन उसके मुँह में फंसी कमज़ोर शिकार इतनी लुभावनी थी कि उसे इतनी आसानी से छोड़ना मुश्किल था। इसलिए बाघ ने अपनी गति बढ़ा दी और जंगल में भाग गया, जबकि बेचारी लड़की की चीखें धीरे-धीरे धीमी होती गईं और अंत में शांत हो गईं। बाद में मुझे उस दुखी व्यक्ति ने बताया कि उसे अपनी बेटी के अवशेष कभी नहीं मिले।
गुंजुर और जोल्डाहल को जोड़ने वाली कोई सड़क नहीं है, केवल एक घुमावदार पगडंडी है जो घने जंगलों वाली घाटियों और पहाड़ियों से होकर लगभग दस मील तक जाती है। जैसा कि मैंने बताया, जोल्डाहल स्वयं भद्रावती से पंद्रह मील दूर, चितलद्रुग जाने वाली सड़क पर और गुंजुर के उत्तर-पूर्व में स्थित है। कम से कम वह सड़क तो काफी अच्छी है।
मुझे बताया गया है कि लगभग दो महीने बाद एक छोटा मुस्लिम लड़का जोल्डाहल बस्ती की झोपड़ियों से लगभग छह फर्लांग दूर स्थित छोटी झील में मछली पकड़ने गया। वह काफी भाग्यशाली रहा होगा, क्योंकि बाद में उसके द्वारा लाई गई टोकरी में, उसके द्वारा इस्तेमाल की जा रही दो छड़ियों के साथ, मुरैल, कैटफ़िश और छोटी कार्प सहित एक दर्जन मछलियाँ मिलीं।
वैसे, भारत में मछली पकड़ने का काम रील से या चम्मच या मक्खी जैसे चारे से नहीं किया जाता है। यहां मछली पकड़ने के लिए पतली बांस की छड़ी का इस्तेमाल होता है; रील रस्सी से बनी होती है; तैरने के लिए मोर, सींगदार उल्लू या बाज के पंखों से बना एक पंख होता है; और चारा सड़क किनारे नाले से खोदा गया केंचुआ होता है।
शायद उसकी किस्मत ने ही उसे शाम को देर तक वहीं रोके रखा, जबकि अगर उसे कम मछलियाँ मिली होतीं तो वह इतनी देर तक नहीं रुकता। वह अंधेरा होने तक वहीं रुका रहा। लेकिन शाम ढलते ही बाघ बाहर निकलते हैं। और आदमखोर बाघ भी इसका अपवाद नहीं था।
लड़का कभी घर नहीं लौटा। आठ बज गए और खाने का समय हो गया। उसके पिता और बड़े भाई, जो जानते थे कि वह मछली पकड़ने तालाब गया है, लालटेन और लाठियाँ लेकर उसे लेने गए। शायद वे उसे लाठियों से पीटना चाहते थे। उन्हें दो छड़ें और मछलियों से भरी टोकरी तो मिल गई। लेकिन वह छोटा लड़का नहीं मिला। इसके बजाय, उनकी टिमटिमाती लालटेन की रोशनी में कीचड़ में एक बड़े बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए। बाघ जंगल से बाहर आया था, कीचड़ में फिसल गया था और वापस जंगल में चला गया था। लेकिन अकेला नहीं। बाघ लड़के को अपने साथ ले गया था।
घास पर कुछ काला और चमकदार सा दिखाई दिया। जब उन्होंने झुककर उस चमकदार काले पदार्थ को छुआ और अपनी उंगलियों को देखा, तो वे लाल थीं। यह खून था। पिता और पुत्र दौड़कर गाँव की ओर वापस भागे।
फिर एक तीसरी हत्या हुई, लेकिन किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। जोल्डाहल में एक पागल आदमी आ गया था; कोई नहीं जानता था कि वह कौन है या कहाँ से आया है, और पूरी तरह पागल होने के कारण वह कुछ बता भी नहीं सकता था। भारत में पागलों के साथ कुछ हद तक सहनशीलता बरती जाती है। छोटे लड़के-लड़कियाँ कभी-कभी उन्हें चिढ़ाते हैं। बड़े-बुजुर्ग बच्चों को रोकते हैं और पागल को मुट्ठी भर खाना देते हैं। इसके अलावा वे उस पर ज्यादा ध्यान नहीं देते।

तो वह पागल आदमी दान में मिले भोजन को खाकर रात को झोपड़ियों के बंद दरवाज़ों के बाहर, सड़क किनारे सोता था। लेकिन एक सुबह वह गायब मिला; किसी ने कोई चिंता नहीं दिखाई। दो दिन बाद, गाँव के चारों ओर फैले जंगल में गश्त कर रहे कुछ वन रक्षकों ने आकाश में गिद्धों को चक्कर लगाते और नीचे उतरते देखा। उन्होंने तुरंत सोचा कि किसी जानवर को मारा गया है, शायद कोई हिरण, और उसके शव पर कुछ मांस बचा होगा - बेचने के लिए या कम से कम खाने के लिए। वे जल्दी से उस जगह पहुँचे जहाँ गिद्ध जमा थे और वहाँ उन्हें हिरण के अवशेष नहीं, बल्कि उस पागल आदमी की सफ़ेद हड्डियाँ मिलीं। केवल उसका सिर, जो थोड़ी दूरी पर पड़ा था और मृत्यु में भी जीवन की तरह ही मूर्खतापूर्ण ढंग से उन्हें देखकर मुस्कुरा रहा था, वह सुराग था जिससे हड्डियों की पहचान लापता पागल आदमी के रूप में हुई। सिर के चारों ओर नरम रेत में एक बाघ के पदचिह्न छपे हुए थे, जो काफी बड़ा था।
मुझे इन हत्याओं के बारे में तब तक पता भी नहीं चला था, जब तक कि मेरे एक दोस्त के दोस्त, जो चितलदुर्ग से भद्रावती जा रहे थे, कुछ खोजबीन के लिए जोल्डाहल बंगले पर दो दिन के लिए नहीं रुके। वहाँ उन्हें बाघ और उसके तीन शिकारों के बारे में पता चला। जोल्डाहल बंगले के केयरटेकर, जो गुंजुर में अपने समकक्ष के दूर के रिश्तेदार थे, ने उन्हें बताया कि पहला शिकार गुंजुर बंगले की देखभाल करने वाले व्यक्ति की होनहार बेटी थी। जब वे बेंगलोर लौटे, तो उन्होंने मेरे एक दोस्त को इसके बारे में सब कुछ बताया। यह जानते हुए कि मुझे ऐसी जानकारी की छानबीन करने की आदत है, मेरे दोस्त जो थॉम्पसन ने यह कहानी मुझे आगे बताई।
जिस लड़की को मैं अच्छी तरह से याद करता था, उसकी मृत्यु ने मुझे जोल्डाहल के वन क्षेत्र अधिकारी को पत्र लिखने के लिए प्रेरित किया, जिसमें मैंने विवरण मांगा और विशेष रूप से यह पूछा कि क्या वह अफवाह सच थी जो मैंने सुनी थी, कि गुंजुर के केयरटेकर की बेटी पहली शिकार थी। पांच दिन बाद उनके जवाब ने उस दुखद कहानी की पुष्टि कर दी।
तो मैं स्टुडेबेकर कार से सीधे जोल्डाहल गया, जहाँ मुझे वह कहानी पता चली जो मैंने अभी बताई है। यह घटना अड़तालीस घंटे पहले की थी। तब से मैं दस मील के पैदल रास्ते से चलकर गुंजुर पहुँचा और वहाँ अपने पुराने दोस्त, चौकीदार से मिला। अपनी बेटी की दुखद मौत की कहानी सुनाते हुए वह फूट-फूटकर रोया। मैंने उससे वादा किया कि मैं उसका बदला लेने की कोशिश करूँगा और उससे कहा कि अगर अगले हफ्ते तक उसे बाघ के कोई संकेत दिखाई दें या सुनाई दें, तो जोल्डाहल में मुझे बता दें।
उन्होंने सुझाव दिया था कि मुझे गुंजुर में डेरा डालना चाहिए, लेकिन मैंने दो कारणों से जोल्डाहल को प्राथमिकता दी। पहला, वहाँ दो हत्याएँ हुई थीं। दूसरा, स्टुडेबेकर कार त्वरित परिवहन के लिए उपलब्ध थी और सड़कें भी उपयोग योग्य थीं। फिर मैं उसी रास्ते से वापस जोल्डाहल लौट आया।
उस रात मैं बंगले के अंदर सो रहा था, आधी रात के कुछ देर बाद जंगल में बाघ की दहाड़ सुनकर मेरी नींद खुली। मैं बरामदे में रखी कुर्सी पर आकर बैठ गया, सिगरेट पीते हुए सोचने लगा और उस भयानक आवाज़ को सुनने लगा। जैसे ही मैंने वह आवाज़ सुनी, मुझे कुछ साल पहले की वो नन्ही सी बच्ची याद आ गई, जो हर बार जब मैं गुंजुर जाता था, मेरी कारों और बंदूकों में इतनी दिलचस्पी दिखाती थी; जो अपनी मर्जी से मेरे लिए पानी लाती थी; जो शादी की दहलीज पर एक खूबसूरत लड़की बन चुकी थी; और अब उसी शानदार लेकिन क्रूर जानवर का शिकार हो गई थी, जिसकी दहाड़ मैं उस पल सुन रहा था।
यह फिर से आया! 'आ-ऊंग! आउंग-हा! ओ-ओ-ओ-न-ओ-ऑन!'

अनायास ही मैं सिहर उठा। आवाज़ दूर जाकर मंद पड़ गई, और जहाँ तक मैं समझ पाया, बाघ गुंजुर की ओर जा रहा था, शायद उसी पगडंडी पर चल रहा था जो वहाँ तक जाती थी। मैंने सुबह उठते ही सबसे पहले इसकी जाँच करने का निश्चय किया और इसी बारे में सोचते-सोचते सो गया।
मच्छर सुबह तक सक्रिय रहे और मेरी नींद को खलल डाला। लेकिन मैं सूरज निकलने से पहले ही उठ गया और कुछ कॉफी और चपातियाँ खाकर, सूरज के थोड़ा ऊपर आने का इंतज़ार किया, फिर उस जानवर का पता लगाने के लिए निकल पड़ा जो पिछली रात से आवाज़ दे रहा था। पहले निकलना सुरक्षित नहीं होता क्योंकि रास्ते के किनारे झाड़ियों में कहीं भी बाघ के छिपे होने की संभावना थी। भोर की हल्की रोशनी शाम की धुंधली रोशनी की तरह ही भ्रामक हो सकती है, जबकि मुझे पता था कि सूरज निकलने के साथ ही आदमखोर बाघ, संभवतः, दिन की गर्मी से बचने के लिए शाम तक किसी सुरक्षित और सुनसान जगह पर चला जाएगा।
बंगले से एक मील से कुछ अधिक दूरी पर मुझे वह मिल गया जिसकी मुझे तलाश थी। बाघ एक संकरी खाई से होते हुए उसके किनारे पर कूद गया और उसी रास्ते पर चलने लगा जिस पर मैं चल रहा था, जो गुंजुर की ओर जाता था। आधी रात के कुछ समय बाद बने उसके ताज़े, तश्तरी जैसे पदचिह्न, पगडंडी के बीचोंबीच चलते हुए, मिट्टी पर स्पष्ट रूप से अंकित थे। वह किसी भी दखलंदाज़ी की परवाह नहीं करता था, क्योंकि वह चलते-चलते पुकार रहा था, यह जानते हुए कि हर प्राणी उसके रास्ते से हट जाएगा।
इस बात का कोई पुख्ता सबूत नहीं था कि यही बाघ आदमखोर था; लेकिन उसके घमंडी हावभाव से मुझे लगा कि शायद वही था, और मुझे पूरा यकीन था कि मेरा अनुमान सही था। मैंने उसके पदचिह्नों का पीछा करने का फैसला किया ताकि पता चल सके कि बाघ वाकई गुंजुर तक गया था या कुछ दूरी तय करने के बाद वापस लौट आया था।
मैंने देखा कि दो मील या उससे अधिक दूरी तक वह जानवर, जिसके पदचिह्नों से पता चलता था कि वह एक बड़ा नर था, पगडंडी के बीचोंबीच चला था। फिर उसके पदचिह्न एक सूखी धारा के तल पर उतर गए, जिसका पीछा बाघ ने करना शुरू कर दिया। सूर्य की स्थिति से, जो हर पल ऊपर चढ़ता और गर्म होता जा रहा था, मैं जितना अनुमान लगा सका, धारा लगभग दक्षिण-पूर्व की ओर बह रही थी, इसलिए बाघ के पदचिह्न अब गुंजुर और जोल्डाहल दोनों से दूर जा रहे थे। लेकिन यह ज़्यादा देर तक नहीं चला। लगभग आधा मील चलने के बाद वह धारा के दाहिने किनारे पर चढ़ गया और जंगल में प्रवेश कर गया, जहाँ कठोर, सूखी ज़मीन पर उसके पदचिह्न जल्द ही मेरी नज़र से ओझल हो गए।
मुझे लगा कि शायद वह अपने रास्ते पर वापस मुड़ गया होगा और जंगल से होते हुए उस पगडंडी पर लौट आया होगा जिस पर वह नदी मिलने से पहले चल रहा था। इसी विचार के साथ, झाड़ियों में भटकने के बजाय, मैं अपने कदमों के निशान पर वापस चला जब तक कि मुझे फिर से गुंजुर जाने वाला रास्ता नहीं मिल गया। मैंने उस रास्ते पर चलना शुरू किया और नदी से लगभग एक मील चलने के बाद, अपने सामने रेत में बाघ के पैदचिह्न देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। मेरा अनुमान सही निकला। उसने जंगल से होकर शॉर्टकट लिया था और गुंजुर की ओर अपने पुराने रास्ते पर वापस लौट आया था।
इस हरकत से साफ पता चल गया था कि उसने वहाँ जाने का मन बना लिया था, और मुझे अपने अनुभव से पता था कि जब तक कोई असाधारण घटना न घटे, वह अपना इरादा नहीं बदलेगा। मेरा अनुमान सही निकला, क्योंकि इधर-उधर थोड़ा भटकने के

अलावा, बाघ पूरे रास्ते गुंजुर तक पगडंडी पर ही चलता रहा। उसके पदचिह्नों पर नज़र रखने के कारण मैं उतनी तेज़ी से नहीं चल पाया जितना मैं चल सकता था, इसलिए मुझे उन दस मील की दूरी तय करने में चार घंटे लग गए, और मैं रात ग्यारह बजे के ठीक बाद बंगले के रखवाले के पास पहुँचा।
मैं आपको बता दूं कि उस आदमी का नाम अनंतस्वामी था, और मैंने उसे बताया कि आधी रात के कुछ ही समय बाद मैंने जोल्डाहल में बाघ की आवाज सुनी थी और उसी सुबह उसके पदचिह्नों का पीछा करते हुए सीधे गुंजुर तक पहुंच गया था। अनंतस्वामी ने मुझे बताया कि वह सुबह चार बजे से जागा हुआ था, लेकिन उसे बाघ की कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। हालांकि, सुबह 4:30 बजे के कुछ ही समय बाद दो-तीन सांभरों ने आवाज़ लगाई थी, जबकि चित्तीदार हिरण भोर में बेचैन थे और बंगले के दक्षिण में एक छोटी पहाड़ी की तलहटी से खतरे की चेतावनी दे रहे थे। हम इस बात पर सहमत हुए कि बाघ की चुप्पी, और हिरणों की दोनों प्रजातियों की खतरे की आवाजों से यह संकेत मिलता है कि वह किसी गंभीर उद्देश्य से गुंजुर आया था।
यह सोचना गलत है कि हर आदमखोर बाघ या तेंदुआ सिर्फ इंसानी मांस खाकर ही जीवित रहता है। ये दोनों प्रजातियाँ, खासकर बाघ, बहुत ज्यादा खाने वाले होते हैं, और अगर वे सिर्फ इंसानी मांस पर ही जीने का फैसला कर लें, तो दो बातें होंगी। शुरुआती दौर में मरने वालों की संख्या बहुत ज्यादा होगी, क्योंकि औसतन एक बाघ हफ्ते में कम से कम दो बार शिकार करता है। उसके बाद, जब लोग इतने सतर्क हो जाएंगे कि बाघ को उन्हें मारने का मौका न दें, तो वह अंततः भूख से मर जाएगा। असल में होता यह है कि आदमखोर बाघ को इंसानी मांस का स्वाद पसंद आने लगता है, और यह बात उसे और भी ज्यादा प्रोत्साहित करती है कि जंगली जानवरों की तुलना में इंसानी शिकार को पकड़ना और मारना कहीं ज्यादा आसान है। इसलिए एक ऐसी स्थिति आ जाती है जब वह पालतू मवेशियों या हिरण और जंगली सूअर जैसे जंगली जानवरों को मारने के बजाय किसी पुरुष, महिला या बच्चे को मारना और खाना पसंद करता है। लेकिन जब उसे आसानी से कोई इंसान नहीं मिलता, तो वह अगले मौके का इंतजार करते हुए बिना किसी झिझक के अपने प्राकृतिक भोजन पर लौट आता है। इसके अलावा, एक विचित्र तथ्य यह भी है कि चाहे वह कितने ही लोगों को मारकर खा जाए, आदमखोर बाघ और तेंदुआ मूल रूप से मनुष्यों से डरते हैं। यह बात बार-बार साबित हुई है जब किसी पुरुष—या कभी-कभी किसी महिला—ने उनका विरोध किया है या विरोध करने का प्रयास किया है और यहाँ तक कि पलटवार भी किया है। अक्सर सबसे खूंखार आदमखोर भी दुम दबाकर भाग जाते हैं। लेकिन बाघ कभी भी पालतू पशुओं या उन जंगली जानवरों से नहीं डरते जिनका वह शिकार करते हैं, सिवाय वयस्क बैल बाइसन और हाथी के।
इसलिए, जोल्डाहल में किसी अन्य इंसान को पकड़ने में नाकाम रहने पर, बाघ ने जाहिर तौर पर गुंजुर आने का फैसला किया था, जहाँ नीची पहाड़ियों और चौड़ी घास की घाटियों में हिरणों की भरमार है। संभावना थी कि वह वहाँ कुछ दिनों तक रुकेगा, कुछ सांभर और चित्तीदार हिरणों का शिकार करके उन्हें खाएगा, और जब उसका पेट भर जाएगा तो वह एक बार फिर इंसानी मांस खाने की अपनी नई-नई लत को पूरा करने के बारे में सोचेगा।
अब अकेले रह रहे चौकीदार के अलावा, गुंजुर में कोई और नहीं था, क्योंकि वहाँ कोई गाँव नहीं था। इसलिए कुछ दिन बीतने के बाद, बाघ शायद जोल्डाहल वापस चला जाएगा, या भद्रावती-चित्तलदुर्ग मुख्य सड़क के किनारे बसे अन्य छोटे गाँवों में से किसी एक के आसपास अपनी किस्मत आजमाएगा। इस प्रकार पूरी उम्मीद थी कि आदमखोर बाघ कम से कम अगले दो-तीन दिनों तक गुंजुर के आसपास ही रहेगा।

अगर वह किसी हिरण का शिकार करके अपनी तत्काल भूख मिटा लेता, तो यह उम्मीद और भी मजबूत हो जाती, क्योंकि तब वह आराम करेगा और अगले अड़तालीस घंटों तक उसके अवशेषों को खाएगा। और उसके सफल न होने का कोई कारण नहीं था, क्योंकि जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, गुंजूर में हिरण बहुतायत में पाए जाते हैं: सांभर, चित्तीदार हिरण, जंगली भेड़ और चार सींग वाले मृग।
यह बाघ को चारा डालने के लिए भी एक अनुकूल स्थान है, क्योंकि जिस खुले मैदान में वन बंगला स्थित है, और साथ ही पास में स्थित झरना, छोटी-छोटी पहाड़ियों से घिरा हुआ है, जो बाघ को नीचे खुली घाटी में स्पष्ट रूप से रखे गए किसी भी चारे का शानदार दृश्य प्रदान करेगा।
दुर्भाग्यवश, राइफल के अलावा मैं अपने साथ कोई सामान नहीं लाया था। मेरी टॉर्च, रात में जागने के लिए मेरे गर्म काले कपड़े, मेरा प्राइमस स्टोव और खाने-पीने का सामान सब जोल्डाहल बंगले में था। लेकिन वह बंगला दस मील दूर था और मैं अभी-अभी वहाँ से आया था। इन चीज़ों को लेने के लिए वापस जाना और फिर उन्हें लेकर लौटना कुल मिलाकर तीस मील की यात्रा होती। यह विचार मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। इसके अलावा, मैं रात होने से पहले अपनी यात्रा पूरी नहीं कर सकता था।
अनंतस्वामी ने मुझे अपनी टॉर्च उधार देने की पेशकश की, हालाँकि वह सिर्फ़ दो कोठरियों वाला कैमरा था। उन्होंने मुझे मुफ्त में खाने-पीने और रहने की जगह भी दी, बशर्ते मैं उनके पास मौजूद एकमात्र भोजन - रागी के गोले - को उनके साथ बाँटने के लिए तैयार रहूँ। रागी के गोले पिसी हुई रागी की सूखी दलिया से बनाए जाते हैं, जिसे दोनों हाथों से दबाकर तोप के गोले के आकार का बना दिया जाता है। यह बहुत पौष्टिक और पेट भरने वाला होता है, लेकिन बिल्कुल बेस्वाद होता है।
उनका निमंत्रण स्वीकार करने के बाद, एक और बड़ी बाधा सामने आई। अनंतस्वामी के पास चारा के रूप में बांधने के लिए कोई जानवर नहीं था। उनके पास एक कुत्ता था—एक बदबूदार, बीमार और कुटिल कुत्ता। लेकिन बाघ के लिए कुत्ते का इस्तेमाल चारा के रूप में बेकार है। इसके अलावा, मैं खुद कुत्तों से प्यार करता हूँ, इसलिए मैं किसी भी परिस्थिति में कुत्ते को चारा के रूप में इस्तेमाल करने से इनकार करता हूँ।
एक और सवाल था। क्या मैं कुछ ज़्यादा ही आशावादी तो नहीं हो रहा था? मुझे कैसे पता था कि जिस बाघ का मैंने पीछा किया था, वही आदमखोर था? हो सकता है वो बस एक सामान्य, बेहद शांत और हानिरहित, शिकार करने वाला और मवेशी चुराने वाला जानवर हो। मैंने अनंतस्वामी से इस बारे में विस्तार से बात की। जब मैंने उनकी मेहमाननवाज़ी स्वीकार की और कहा कि मैं उनके साथ दो दिन रुकूँगा, तो उनकी गहरी आँखें खुशी से चमक उठीं। उन्होंने कहा कि उन्हें पूरा यकीन है कि शिकार वही आदमखोर था क्योंकि उस समय आसपास कोई और बाघ नहीं था। जहाँ तक चारे की बात है, उन्होंने कहा कि इसका हल आसानी से निकल जाएगा। वे खुद खुले में चारे के रूप में बैठेंगे या खड़े होंगे, जबकि मैं किसी आड़ में या पेड़ की मचान पर छिपकर बाघ को गोली मारूँगा—अगर मुमकिन हो तो, इससे पहले कि वो उन पर झपट्टा मारे। और उसी समय उन्होंने कहा: 'यह मत सोचो, दोराई, कि मैं यह तुम्हारे लिए कर रहा हूँ। यह मत सोचो कि मैं यह इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मैं बहादुर हूँ और मुझे डर नहीं लगता—क्योंकि मुझे भी बहुत डर लगता है।' लेकिन मैं यह कर रहा हूँ—और खुशी-खुशी कर रहा हूँ—अपनी नन्ही बेटी का बदला लेने के लिए। वह मेरे लिए सब कुछ थी—उसकी माँ की प्रसव के दौरान मृत्यु हो जाने और उसके बड़े भाई की कुछ ही समय बाद चेचक से मृत्यु हो जाने के बाद, वही मेरे लिए दुनिया में

सब कुछ था। मैं उसके क्रूर हत्यारे को मौत के घाट उतारने के लिए खुशी-खुशी अपनी जान कुर्बान कर दूंगी।'
उनकी सादगी और महीन साहस ने मुझे गहराई से प्रभावित किया। लेकिन यह भावुक होने का समय नहीं था; न ही मैं किसी बहादुर व्यक्ति का खून अपने हाथों पर लगाना चाहता था। याद रखिए: रातें अंधेरी थीं और मुझे उनकी दो सेल वाली टॉर्च का इस्तेमाल करना था। न ही मैं टॉर्च को राइफल से जोड़ने वाले क्लैंप लाया था। मुझे उसे अपने बाएं हाथ में पकड़ना होगा और गोली चलाते समय राइफल की नली पर रोशनी डालनी होगी। इससे कम से कम दो सेकंड का समय लगेगा, रोशनी को सही दिशा में लाने में। और एक सेकंड भी बाघ के लिए अनंतस्वामी पर झपटने और उन्हें मार डालने के लिए काफी होगा।
मैंने बहुत ज़ोर देकर जवाब दिया: 'नहीं।' फिर, उसकी भावनाओं को ठेस न पहुँचाने और अपना असली कारण छिपाने के लिए, मैंने आगे कहा: 'जब बाघ आएगा, तो मुझे उस पर टॉर्च की रोशनी डालने के लिए आपकी ज़रूरत होगी, जबकि मैं उस पर गोली चलाऊँगी।'
अनंतस्वामी मेरी दी गई व्याख्या से असंतुष्ट प्रतीत हुए। उन्होंने कहा: 'दोराई अपने बाएं हाथ में टॉर्च को राइफल के सामने पकड़कर भी गोली चला सकता है।'
बहस शुरू होने का आभास होते देख मैंने जवाब दिया: 'नहीं, बिलकुल नहीं!'
उसके बाद हम कुछ देर चुपचाप बैठे रहे। हम सब गहरी सोच में डूबे हुए थे। तभी मेरे मन में एक विचार आया। आदमखोर बाघ ने उस आदमी की बेटी को उस झरने पर ले जाकर मार डाला था जहाँ वह पानी भरने गई थी। शायद बाघ को वह शिकार याद होगा जो उसने वहाँ किया था। उसने शायद उस लड़की को, और यहाँ तक कि अनंतस्वामी को भी, कई बार उस झरने पर पानी भरने जाते देखा होगा। कम से कम वह उस झरने को किसी इंसान के आने-जाने से तो जोड़कर देखेगा ही। वह झरना बंगले से महज़ एक फ़र्लांग दूर था और आसपास की पहाड़ियों से साफ़ दिखाई देने वाले एक हल्के गड्ढे में था। जी हाँ, बिल्कुल: चारा तैयार करने के लिए झरना ही सबसे अच्छी जगह होगी। रातें अँधेरी थीं और मेरे पास टॉर्च नहीं थी, इसलिए चारा न तो अनंतस्वामी हो सकता था और न ही मैं। तो एकमात्र विकल्प यही था कि मैं एक ऐसे पुतले को बनाऊँ जो झरने से पानी भरते हुए आदमी जैसा दिखे, और मैं जितना हो सके उसके पास छिप जाऊँ। इतना पास कि दो सेल वाली टॉर्च की हल्की रोशनी असरदार हो सके।
मैंने अनंतस्वामी को अपने विचार विस्तार से बताए, जो बेहद प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा: 'चलो, दोराई; हम तुरंत झरने पर चलते हैं और तुम वह जगह चुन लो जहाँ तुम छिपकर आज रात जब बाघ नकली पुतले पर हमला करे तो उसे गोली मारोगे।'
मैंने उसे सीधे देखा, और उसने भी मुझे उतनी ही सीधे नज़र से देखा। उसकी आँखों में स्पष्टवादिता और उत्सुकता थी, डर का कोई निशान नहीं था, और मैं जान गया कि यह आदमी अब 'ना' को स्वीकार नहीं करेगा।
हम उठे और झरने की ओर चल पड़े। ज़मीन पर पड़ी एक चपटी चट्टान की दरार से पानी रिस रहा था। यह एक हल्की ढलान से बहकर एक छोटे से कुंड में जा रहा था, जो लगभग तीन फुट गहरा और लगभग दस फुट चौड़ा था। इसी कुंड से पिता और पुत्री वर्षों से पानी भरते आ रहे थे, जब से वह गुंजुर बंगले के रखवाले थे। पानी का बहाव जंगल में फैल गया, जहाँ धारा बनने के लिए अपर्याप्त होने के कारण वह मिट्टी में समा गया। लगातार नमी के कारण लगभग पच्चीस गज़ तक हरी-भरी घास उग आई थी। फिर जंगल दोबारा शुरू हो गया। अनंतस्वामी ने मुझे बताया कि जब वह पहली बार गुंजुर आए थे, तो झाड़ियाँ कुंड तक फैली हुई थीं और उसे पूरी तरह से घेरे

हुए थीं। उन्होंने अपने पुत्रों की मदद से लगभग पच्चीस गज तक उन झाड़ियों को काट दिया था, जिससे अब वहाँ केवल घास ही उगती है।
सामने समस्या यह थी: हम कहाँ छुपेंगे? मचान बनाने के लिए सबसे नज़दीकी पेड़ 100 गज से भी ज़्यादा दूर था। इतनी दूरी को टॉर्च की रोशनी से तय करना नामुमकिन था, जिसमें सिर्फ़ दो ही सेल थे और वो भी पुराने। ऐसा लग रहा था कि पुतले के ऊपर बैठने की हमारी सारी योजना धरी की धरी रह जाएगी, क्योंकि छुपने के लिए कोई जगह नज़र ही नहीं आ रही थी।
मैंने चौकीदार से पूछा कि क्या उसके पास कोई सुझाव है। उसने बड़े दुख से कहा कि उसके पास कोई सुझाव नहीं है। एक बात स्पष्ट हो गई थी कि हमें कहीं ज़मीन पर बैठना होगा और जितना हो सके खुद को छिपाना होगा। या फिर हमें पूरी योजना छोड़नी पड़ेगी। पास का बड़ा पेड़ तालाब से बहुत दूर था और अनंतस्वामी की टॉर्च की हल्की रोशनी उस दूरी को पार नहीं कर सकती थी। मैंने चौकीदार के गोदाम में टॉर्च की रोशनी का परीक्षण किया था और देखा था कि उसकी कोठरियाँ आधी सूख चुकी थीं।
हम सबकी सहमति से लगभग पच्चीस गज घास के मैदान को पार करके उस जगह तक पहुँचे जहाँ झाड़ियाँ शुरू होती थीं। हम दोनों ने एक शब्द भी नहीं बोला था, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे हम दोनों ने अपरिहार्य को स्वीकार कर लिया हो। यहीं हमें बैठना होगा—अगर बैठना ही पड़े तो—ताकि बाघ का इंतज़ार कर सकें।
झाड़ियाँ हमेशा की तरह ही घनी थीं; काँटेदार झाड़ियाँ, लैंटाना और अन्य जंगली झाड़ियाँ, सब एक साथ घनी और सघन रूप से उगी हुई थीं। काँटेदार झाड़ियाँ मनुष्यों और जानवरों, दोनों को ही नापसंद होती हैं, क्योंकि जब ये बहुत घनी उग जाती हैं तो एक असंभव बाधा बन जाती हैं; यहाँ तक कि एक अकेली टहनी भी अगर आपके कपड़ों के संपर्क में आ जाए तो आपको काफी देर तक रोके रख सकती है। अगर ये आपके शरीर को छू लें, तो आपको अपनी त्वचा का कुछ हिस्सा खोने के लिए तैयार रहना होगा, जो असंख्य सुई जैसे नुकीले, हुक जैसे काँटों में धँस जाएगा।
एक जगह पर, जहाँ झाड़ियाँ शुरू ही होती थीं, वहाँ एक छोटी सी काँटेदार झाड़ी थी; वास्तव में काफी बड़ी। बिना चौक के कोई भी आदमी उसे पार नहीं कर सकता था। यहाँ तक कि हाथी को छोड़कर कोई भी जानवर भी ऐसा नहीं कर सकता था। इसलिए उस समय मैंने उस झाड़ी को बड़ी कृपा दृष्टि से देखा। ऐसा लगा जैसे उसी ने स्थिति को संभाला हो।
मैंने पूछा, 'अनंतस्वामी, क्या बंगले में अभी भी लोहे के दो स्प्रिंग वाले पलंग हैं?'
'जी हाँ, दोराई,' उसने जवाब दिया। फिर, अचानक पूछे गए इस अजीब सवाल के एहसास ने उसके मन में जगह बनाते हुए कहा, 'अगर मालिक थके हुए हैं, तो मैं बंगले का दरवाजा खोल दूंगा और वे आराम से लेटकर सो सकते हैं।'
जाहिर तौर पर बिल्कुल अप्रासंगिक ढंग से, मैंने आगे पूछा: 'क्या परिसर में इस तरह का तीसरा पलंग है?'
मैंने देखा कि उसकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं, और मुझे लगभग ज़ोर से हंसी आ गई। उस पल उसके मन में जो विचार थे, वे उसके स्पष्ट चेहरे पर साफ झलक रहे थे। आखिर इस आदमी को तीसरे पलंग की क्या ज़रूरत है? पहले से ही दो पलंग हैं, और अकेला होने के कारण वह उनमें से केवल एक पर ही सो सकता है। उसने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।
मैंने इसे दोहराया: 'क्या इस तरह का तीसरा पलंग उपलब्ध है, अनंतस्वामी?'
उसकी आँखें और भी चौड़ी हो गईं; लेकिन उसने बड़ी कुशलता से खुद को संभाला और जवाब दिया, 'नहीं,' 'बस वे दो जो हमेशा से यहाँ रहे हैं।'

'आओ, अनंतस्वामी,' मैंने बंगलू की ओर मुड़ते हुए कहा। 'दरवाजा खोलो। मैं अंदर जाकर फर्नीचर देखना चाहता हूँ।'
निश्चित रूप से लू लग गई होगी; या फिर किसी और तरह का पागलपन। बेचारा दोराई! कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि ऐसा इतने नाजुक समय पर हुआ! रखवाला अपने विचारों को छिपा नहीं सका। इस बार तो मैं खुलकर हंस पड़ा।
'घबराइए मत, अनंतस्वामी,' मैंने समझाया जब हम वापस उस छोटी सी झोपड़ी की ओर चल पड़े। 'मैं पागल नहीं हो रहा हूँ। मेरे मन में यह विचार है कि मैं आपके और मेरे लिए एक पिंजरा बनाऊं, ठीक उसी जगह जहां अभी वह कांटेदार झाड़ी उगी है। दो पलंगों, जिन्हें करवटों में रखा जाएगा—वैसे, लंबी करवटों में—हमारे लिए एक तरह की बाधा बनेंगी। उनके बीच में हम कांटेदार झाड़ी की शाखाएँ और लताएँ लगाएँगे जिन्हें आपको काटना होगा। सामने का हिस्सा खुला रहेगा, क्योंकि उस दिशा में हम पुतले की ओर मुंह करके बैठेंगे।'
लेकिन एक अड़चन है, अनंतस्वामी। एक बहुत बड़ी अड़चन। हमें कुछ ढूंढना होगा, कोई तीसरी चीज़, ताकि तीसरी तरफ तीसरी रुकावट बन सके। क्योंकि हम सिर्फ एक ही दिशा में देख सकते हैं, दो दिशाओं में नहीं, मेरे दोस्त। यह मत भूलो कि इस समय रातें बहुत अंधेरी होती हैं; बेहद अंधेरी। और तुम्हारी टॉर्च भी खराब हालत में है।
मेरी बताई योजना को समझने में उसे काफी समय लग गया। हम चलते-चलते बातें कर रहे थे, और जब आखिरकार उसे बात समझ आई, तो उसकी प्रतिक्रिया बिल्कुल अप्रत्याशित थी। अचानक रुककर, चौकीदार कमर झुकाकर, हथेलियों से अपनी जांघों पर थपथपाया और खूब हंसा।
'हे भगवान!' वह खिलखिलाकर हंसा, 'मैंने ऐसी योजना पहले कभी नहीं सुनी। हमें दो पलंगों और कुछ अन्य फर्नीचर से पिंजरा बनाना है और उसमें बैठकर बाघ का इंतजार करना है? और पलंगों को कांटेदार झाड़ से ढकना है? दोराई, मैं यह योजना अपने बच्चों को और उनके बाद उनके बच्चों को भी बताऊंगा। कसम से।'
बेचारे अनंतस्वामी! वे तो यह बात पूरी तरह भूल ही गए थे कि उनके कोई बच्चे नहीं हैं। बाघ ने उनके इकलौते बच्चे को खा लिया था। इसके अलावा, उनके इरादों को पूरा करने की कोई उम्मीद भी नहीं थी, क्योंकि उनकी पत्नी भी नहीं थी!
उसने बंगले का दरवाजा खोला और हम अंदर चले गए। वहाँ लोहे के दो स्प्रिंग वाले पलंग थे, प्रत्येक शयनकक्ष में एक-एक। अन्य फर्नीचर में एक बड़ी डाइनिंग टेबल, दो छोटी टेबल, दो ड्रेसिंग टेबल (एक टूटे हुए दर्पण वाली और दूसरी बिना दर्पण वाली), एक काफी बड़ी अलमारी, सभी बंगलों में आम तौर पर पाई जाने वाली एक आरामकुर्सी और लगभग आधा दर्जन पुरानी, लकड़ी के तले वाली कुर्सियाँ थीं। बाथरूम में एक प्राचीन जस्ता का टब, लोहे के स्टैंड पर पीतल का वॉशबेसिन और एक तौलिया रखने का स्टैंड था। वहाँ कोई कमोड नहीं था; इसके लिए बाहर मिट्टी की दीवारों वाले शौचालय में जाना पड़ता था, जहाँ जमीन में एक गड्ढा था जिसके ऊपर दो पत्थर रखे थे।
फर्नीचर के इस ढेर को देखकर मेरे मन में निराशा छा गई। एक तो अलमारी बहुत भारी थी और हम दोनों उसे उठाकर झरने तक नहीं ले जा सकते थे। छोटी मेजें भी बहुत छोटी थीं। इसलिए हमें तीसरी बाधा के लिए डाइनिंग टेबल और आर्मचेयर में से किसी एक को चुनना था। डाइनिंग टेबल निश्चित रूप से अधिक सुरक्षित और मजबूत विकल्प था। लेकिन समस्या यह थी कि जब इसे तिरछा रखा जाता था, तो इसकी सपाट ऊपरी भाग कांटों या पत्तों से भी आसानी से नहीं छिपता था। यह एक बहुत ही स्पष्ट वस्तु साबित होती, जो न केवल बाघ का संदेह पैदा करती, बल्कि उसे डराकर

भगा भी देता। लेकिन कम से कम आरामकुर्सी का आकार थोड़ा-बहुत छिपाने में मददगार था।
'हम आरामकुर्सी ले लेंगे,' मैंने फैसला किया और चौकीदार को अपना कारण बताया।
मैंने अपनी घड़ी देखी। समय 12:25 था। 'अनंतस्वामी, अगर आपकी रागी की लोइयां तैयार हैं, तो हम उन्हें खाएंगे। फिर हमें काम पर लगना होगा। हमें बहुत सारा काम करना है।'
मैंने रागी का आधा गोला खाया। बस इतना ही खा पाया। बेस्वाद चीज़ को निगलने में मुझे बार-बार पानी के घूंट भरने पड़े। लेकिन अनंतस्वामी ने दो गोले खा लिए। फिर उन्होंने एक देगची में पानी भरकर अपनी आग के बचे हुए हिस्से पर रख दिया। ताकि लौटने पर चाय बन सके। हमें तब चाय की ज़रूरत पड़ेगी; हम ज़रूर थके हुए होंगे।
अनंतस्वामी अपनी कुल्हाड़ी लेकर आए और मुझे एक अतिरिक्त, बल्कि कुंद सी, कुल्हाड़ी थमा दी। हम झरने तक अपने कदमों के निशान पर चले और पूरी लगन से काम में जुट गए। सबसे पहले हमने कांटेदार झाड़ी काटी, इस काम में हमें कई खरोंचें आईं जिनसे खून बह रहा था और मेहनत से पसीना बह रहा था। फिर हम लगभग 200 गज दूर गए और उसी तरह की झाड़ियां काटीं जो उस जगह उग रही थीं जहाँ हम बैठने वाले थे। इनमें लैंटाना और अन्य झाड़ियां थीं, लेकिन कांटेदार झाड़ी बिल्कुल नहीं थी। हमने इन झाड़ियों को घसीटकर नहीं, बल्कि उठाकर उस जगह तक ले गए जहाँ हमने कांटेदार झाड़ी काटी थी। घसीटने से निशान बन जाते जिससे बाघ को शक हो सकता था। जब तक हमने सारा ज़रूरी छलावरण इकट्ठा किया, तब तक दो बज चुके थे।
इसके बाद हम बंगले में वापस लौटे, जहाँ से हमने एक-एक करके पलंग उठाए, हममें से एक-एक व्यक्ति दोनों सिरों पर खड़ा होकर, अपनी चुनी हुई जगह पर ले गए। हमारी सुरक्षा में पिछला हिस्सा स्वाभाविक रूप से सबसे कमज़ोर कड़ी था। वहाँ हमने एक पलंग को उसकी लंबी भुजा पर लिटाया, उसके पैर बाहर की ओर थे। दूसरे पलंग को हमने पहले पलंग के समकोण पर उसकी भुजा पर लिटाया, उसके पैर भी बाहर की ओर थे। फिर हम आरामकुर्सी लेने के लिए बंगले में वापस गए, जिसे हम वापस लाए और उसे भी उसकी भुजा पर लिटाया, फिर से पैर बाहर की ओर करके, हमारे कच्चे पिंजरे की तीसरी भुजा पर—बंगले की ओर वाली भुजा पर। हमने ऐसा इसलिए किया क्योंकि हम जानते थे कि यह हमारी तीन कमज़ोर दीवारों में सबसे कमज़ोर थी, जबकि बाघ के बंगले की दिशा से आने की संभावना सबसे कम थी। हमारे 'चौकोर' का चौथा सिरा ज़ाहिर तौर पर खुला था। यह पूल के सामने घास के मैदान की ओर था जहाँ हम अपना पुतला रखने वाले थे।
अब शुरू हुआ कांटेदार झाड़ियों की शाखाओं और लताओं को दोनों पलंगों के स्प्रिंगों में, और कुर्सी के पैरों के बीच और उसके बेंत के तले में पिरोने का दर्दनाक काम। तीनों फर्नीचर के बाहरी हिस्से को पूरी तरह से छिपाने के लिए, हमने उन झाड़ियों को भी इसमें मिला दिया जिन्हें हम दो सौ गज दूर से काटकर लाए थे।
जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि हमारे पास इस काम को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए पर्याप्त छलावरण नहीं था। हमें और सामग्री लाने के लिए छह बार और चक्कर लगाने पड़े, और तब भी हमारे पास मुश्किल से ही पर्याप्त सामग्री थी। खैर, काम शाम 4 बजे तक पूरा हो गया। दूर से और अलग-अलग कोणों से देखने पर, हमारा जुगाड़ लगभग वही कांटेदार झाड़ी जैसा दिख रहा था जो कुछ घंटे पहले वहाँ उग रही थी। लेकिन मैं इससे खुश नहीं था। इतने कमज़ोर और साफ़-साफ़ दिखने वाले छलावरण से बाघ जैसे इतने सतर्क जानवर को धोखा देने की कोशिश करना सरासर कोरी कल्पना लग रही थी।

हमारी एकमात्र उम्मीद यही थी कि हम नकली पुतले को इतना असली बना दें कि बाघ का ध्यान हमारी ओर आकर्षित हो जाए और वह हमारी तरफ ज़्यादा ध्यान न दे। मुझे पता था कि सफलता काफी हद तक इस बात पर भी निर्भर करेगी कि वह किस कोण से आ रहा है। अगर वह किसी भी तरफ से आता है, तो शायद वह हमारे छिपने की जगह को न देख पाए। अगर वह सीधे विपरीत दिशा से आता है, तो हमारी छिपने की जगह साफ दिखाई देगी और हमारे बचने की संभावना 90 प्रतिशत कम हो जाएगी। लेकिन अगर वह पीछे से आकर हमें देख लेता है, तो क्या होगा? खैर, हमें ज्यादा देर तक संदेह नहीं रहेगा। या तो वह डरकर चुपचाप चला जाएगा, या फिर हमला कर देगा। दोनों ही स्थितियां लगभग पचास-पचास थीं।
हमें जल्दी से पुतला बनाना था। पहले ही बहुत देर हो चुकी थी। अनंतस्वामी के छोटे से कमरे में वापस आकर, हमने उनके बक्से, बिस्तर और उनके पास जो कुछ भी था, सब कुछ खंगाला। असली जैसा पुतला बनाने के लिए न तो समय था और न ही पर्याप्त सामग्री। उनके बालों के तेल से काला पड़ा उनका पुराना गंदा तकिया ही पुतले का धड़ बना। मैंने उनकी हैरानी के बीच तकिये के दोनों ओर छेद कर दिए और उनमें से एक-एक बांस निकाल दिया; दोनों ओर निकला हुआ यह बांस दो भुजाएँ बना रहा था। तकिये के एक सिरे पर एक छोटा सा बांस लगाया गया, जिसमें एक छोटे मिट्टी के बर्तन का किनारा डाला गया, वह सिर था। पैरों के लिए बांस नहीं थे, इसलिए पुतले को तालाब के किनारे उकड़ू बैठे हुए दिखाना पड़ा; वैसे भी, पानी भरते समय किसी आदमी के लिए यह एक स्वाभाविक स्थिति होती है।
तकिये पर चौकीदार की एक पुरानी फटी हुई कमीज रखी थी, जिसकी बाँहों से बाँसें बाहर निकली हुई थीं। उसके ऊपर एक सफेद कोट, ताकि वह आसानी से नज़र आ जाए। मिट्टी के बर्तन के चारों ओर एक तरह की पगड़ी। खैर, यह तो काफी आसान था।
लेकिन आखिर हम इस पुतले को बिठाए कैसे रखते? मैं घबराकर इधर-उधर देखने लगा। तभी एक विचार आया और मैं तुरंत बाथरूम में गया और तौलिया रखने वाले रैक से लकड़ी का टुकड़ा लेकर वापस आया। तकिए के निचले हिस्से में, जो वैसे भी लगभग खराब हो चुका था, एक आखिरी छेद किया और तौलिया रखने वाले रैक के टुकड़े को सूती कपड़े से, बाँहों के बीच से, और मिट्टी के बने सिर के निचले हिस्से में बने छेद से जबरदस्ती अंदर डाला, ताकि पहले से लगे बाँह को और मजबूती मिल सके। इससे एक ठीक-ठाक गर्दन बन गई। कम से कम मजबूत तो थी।
अब बस क्रॉसमेम्बर के दूसरे सिरे को ज़मीन में मज़बूती से गाड़ना बाकी था। लेकिन पाँच बज चुके थे। खाने का समय नहीं था। भला रागी बॉल का एक और डोज़ कौन खाना चाहेगा? और चाय का भी समय नहीं था। ये तो बहुत बुरा हुआ। जल्दबाजी में हम चाय के बारे में भूल गए और पानी फिर से ठंडा हो गया।
'अनंतस्वामी, कुल्हाड़ी और दूसरा चाकू ले आओ। गर्म कोट भी पहन लो। टॉर्च लाना मत भूलना। और दो पानी के बर्तन भी ले आओ ताकि लगे कि पुतला पानी भर रहा है। जल्दी करो, यार, जल्दी करो!'
हम जल्दी से तालाब के पास वापस गए, जिसके किनारे चौकीदार ने कुल्हाड़ी से ज़मीन में एक गड्ढा खोदा। मैंने पुतले की 'रीढ़ की हड्डी' को उस गड्ढे में डाला और मिट्टी को एक बार फिर मजबूती से दबा दिया। हमने पानी के दोनों घड़े ज़मीन पर रख दिए, एक-एक दोनों तरफ। देखो! पुतला तालाब के किनारे बैठ गया। हमने पूरी ईमानदारी से उम्मीद की कि किसी भूखे नरभक्षी की नज़र में वह वहाँ बैठकर पानी भरता हुआ एक इंसान जैसा दिखेगा। मेरी नज़र में तो वह बस एक बेतुका ढेर लग

रहा था। एक बार फिर चारों ओर नज़र घुमाकर यह सुनिश्चित किया कि सब कुछ ठीक है, फिर हम सामने से सावधानी से अपने 'किले' में दाखिल हुए।
हम बैठ गए, चौकीदार मेरे दाहिनी ओर बैठा था जबकि मैं आरामकुर्सी के बगल में। मुझे उसकी दाहिनी ओर बैठने की ज़रूरत थी, क्योंकि बाघ के आने पर उसे टॉर्च की रोशनी डालनी थी। राइफल के निशाने को सही करने के लिए, अगर वह मेरे बाईं ओर बैठता तो रोशनी बहुत दूर होती; क्योंकि मैं दाहिने कंधे से गोली चलाता हूँ।
शाम के 5:30 बजने में बस तीन मिनट बाकी थे और मुझे पता था कि हमें कम से कम एक घंटा पहले ही अपनी जगह पर पहुंच जाना चाहिए था। हम पूरब की ओर मुंह करके बैठे थे और सूरज हमारे पीछे पहाड़ियों के किनारे डूब चुका था। कुछ जल्दबाजी भरे और फुसफुसाते वाक्यों में मैंने अनंतस्वामी को उनके अंतिम निर्देश दिए।
किसी भी हालत में अपना सिर, हाथ या पैर मत हिलाना। अगर मच्छर काटें तो उन्हें फूंक मारकर भगा देना। उन्हें थप्पड़ मत मारना। अगर कुछ सुनाई या दिखाई दे तो मुझे अपने बाएं घुटने से धीरे से धक्का देना। किसी भी हालत में फुसफुसाना भी मत। अगर बाघ आए तो मैं तुम्हें दो बार धक्का देकर बता दूंगा। यही संकेत होगा। जब वह नकली पुतले पर कूदेगा और अपने पंजों के नीचे मांस और खून नहीं पाएगा तो शायद गुर्राएगा। फिर टॉर्च जलाकर जानवर पर तब तक जलाए रखना, चाहे कुछ भी हो जाए। याद रखना, तुम्हें डगमगाना नहीं है और न ही टॉर्च बुझने देनी है। अगर तुमने ऐसा किया तो हम सब मर जाएंगे; क्योंकि मैं अंधेरे में नहीं देख सकता और बाघ देख सकता है।
उनका जवाब आश्वस्त करने वाला था, 'डरो मत, दोराई। मैं तुम्हें निराश नहीं करूंगा। राजम्मा की खातिर तो बिल्कुल नहीं।'
उनकी बेटी का नाम राजम्मा था। उसके बाद हमारी फिर कभी बात नहीं हुई।
'टोक-टोक-टोक-टोक।' हमारे पीछे जंगल में एक हरे और लाल रंग का कठफोड़वा अपनी मज़बूत चोंच से पेड़ के तने पर लगातार चोंच मार रहा था। तभी आसपास की झाड़ियों में एक नन्हा चिड़िया झगड़ा करने लगा। 'काव-विक-अ-वैक,' चुनौती भरे मुर्गे ने कहा, और उसकी चुनौती चारों ओर गूंज उठी। 'कुकुरुकू-वैक! कुकुरुकू-वैक!' झगड़ालू छोटे मुर्गे लड़ाई के लिए बेताब थे। दूर कहीं, कोयल, जो कोयल परिवार का ही एक सदस्य है, बारिश के लिए अपनी दुख भरी पुकार लगा रहा था, जैसा कि जंगल के लोग कहते हैं। 'कोयल! कोयल! को-येल! को-येल!', वह बढ़ती हुई आवाज़ में चीख रहा था। उसका चचेरा भाई, कोयल परिवार का ही एक चिड़िया, 'दिमाग-बुखार', ने सोचा कि कोयल की पुकार उसके द्वारा लगाई जा सकने वाली चरम सीमा के सामने कुछ भी नहीं है, अगर वह सच में कोशिश करे। और उसने किया, 'दिमाग-बुखार!' 'दिमाग का बुखार; दिमाग का बुखार!' चीख लगभग उन्मादपूर्ण और दिल दहला देने वाली थी, जिसने कोयल के सारे प्रयासों को फीका कर दिया। कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया, और इससे पहले कि कोयल फिर से बांग दे पाती, एक ताज़ा और सुहावनी आवाज़ सुनाई दी; सिल्वर-हैकल्ड जंगली मुर्गे की बुलंद आवाज़। 'व्हीं-ई-ई-ईवं! कुक-काया-क्यो-कुक'म,' उसने जोश से बांग दी। इससे कोयल एक-दो पल के लिए चुप हो गई। फिर वे दोनों फिर से झगड़ने लगे, जबकि दूसरे जंगली मुर्गे ढलते दिन को विदाई देते हुए बांग दे रहे थे।
जंगल में हमेशा की तरह शाम बहुत जल्दी ढल गई। एक पल पहले उजाला था। फिर मेरे सामने का जंगल धुंधला, धुएं के रंग जैसा बैंगनी हो गया। कुछ ही क्षणों में अंधेरा छाने लगा और देखना मुश्किल हो गया।

दिन भर के पक्षियों का आखिरी आवाज दूर किसी ऊंचे पेड़ पर बैठे मोर का था। 'मिया-आ-ऊ! मिया-आ-ऊ! आओ! आओ!' उसकी आवाज बेहद उदास और दिल को छू लेने वाली थी। मानो यह जताने के लिए कि मोर के सक्रिय रहने का समय अब समाप्त हो गया है, रात के एक पक्षी ने जवाब दिया और भूरे मुलायम पंखों के गुच्छे की तरह मेरे सामने लंबी घास में उड़ गया। 'चक। चक। चक। चक-ओ-ओ-ओ-ओ।' मेरे छोटे दोस्त, रात्रि के पक्षी, एक बार फिर सक्रिय हो गए और उड़ने लगे। एक पल बाद रात हो गई।

मैंने अक्सर देखा है कि दिन में पक्षियों की आखिरी आवाज़ के बाद रात में पक्षियों की शुरुआती आवाज़ सुनाई देती है। फिर कुछ देर के लिए पूरी तरह सन्नाटा छा जाता है। दिन में पक्षी सो चुके होते हैं, जबकि रात में उड़ने वाले पक्षी निस्संदेह भोजन करने में व्यस्त होते हैं, सिवाय उन छोटे कीड़े खाने वाले चमगादड़ों के जो तेज़ आवाज़ में चीखते हुए ऊपर से तेज़ी से उड़ते हैं। 'ची-ई-क। ची-ई-क।' मैं उस छोटे से झिंगुर का आभारी था जो लगभग मेरे पैरों के पास चहचहाना शुरू कर दिया: 'सिज़। सिज़। सिज़-ज़-ज़! सिज़-ज़-ज़!'

अब तारे खूब चमक रहे थे, जिनमें शाम का तारा सबसे प्रमुख था। आकाश बादलों से रहित और गहरे नीले रंग का था, जो अनगिनत टिमटिमाते रत्नों के लिए एक आदर्श पृष्ठभूमि थी, जो इतनी शांति से चमक रहे थे, मानो स्वर्ग के अतुलनीय दीपक हों। हमारे आस-पास के जंगल में अन्य जगमगाते रत्न भी थे, जो इधर-उधर घूम रहे थे; कभी यहाँ, कभी वहाँ; कभी गायब, फिर पुनः प्रकट होते। वे जुगनू थे जो रात के घने, सर्वव्यापी अंधकार में क्षण भर के लिए ठहरते थे, और अगले ही पल गायब हो जाते थे। फिर वे क्षण भर के लिए पुनः प्रकट होते और अपनी चमक को एक साथ मिलाकर एक तीव्र, क्षणिक, पल भर की चकाचौंध में तब्दील कर देते, जो दूर के पेड़ों की रूपरेखा को भी उजागर करने के लिए पर्याप्त होती। फिर वे गायब हो जाते; अंधकार को पीछे छोड़ते हुए।

हम बिना हिले-डुले बैठे रहे। धीरे-धीरे मच्छर आने लगे, हमारे चारों ओर भिनभिनाते और गुनगुनाते हुए, मानो हवा मच्छरों के बादलों से भर गई हो। मुझे एक के बाद एक मच्छरों के काटने से हल्का लेकिन तेज़ दर्द महसूस हो रहा था—मेरे चेहरे पर, मेरी गर्दन पर, मेरे हाथों पर; वास्तव में, जहाँ भी वे मेरी त्वचा तक पहुँच सकते थे। मैंने अपने चेहरे पर धीरे से फूँका और अपना सिर या हाथ न हिलाने की पूरी कोशिश की। सौभाग्य से मेरी पैंट, मोज़े और जूते मेरे पैरों की रक्षा कर रहे थे। मैं अपने साथी को भी फुंकते हुए सुन सकता था, जैसा मैंने उसे निर्देश दिया था।

यह बेहद असहज और कष्टदायक था, कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है। लेकिन खतरनाक नहीं था। क्योंकि ये मलेरिया फैलाने वाले मच्छर नहीं थे। जब ऐसा कोई कीड़ा काटता है, तो वह लगभग उल्टा खड़ा हो जाता है और उसकी पूंछ हवा में होती है, और आपको डंक का दर्द महसूस नहीं होता। ठीक इसी तरह, मुझे कैसे पता चलता कि उस शाम तक कितने मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों ने मुझे काट लिया था, और रात खत्म होने से पहले कितने और मच्छर मुझे काटेंगे?

मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। लगभग 8:30 बज रहे थे। अभी कई घंटे बाकी थे। दस बजते ही सन्नाटा छा गया—लगभग शांति छा गई। ऐसा लग रहा था मानो अंधेरे में कोई और जीव-जंतु हो ही नहीं। लेकिन फिर भी हम जानते थे कि सबसे खतरनाक जीव अंधेरे में छिपा हुआ है, एक आदमखोर बाघ जो पहले ही कई लोगों की जान ले चुका है। लेकिन क्या इस सन्नाटे का मतलब यह था कि वह कहीं और चला गया था? क्या यही कारण था कि हमें डरे हुए हिरणों की कोई चेतावनी भरी आवाज़ नहीं सुनाई दी? यह एक निराशाजनक और उदास करने वाला विचार था।

जैसे कि इन धारणाओं को दूर करने के लिए, मुझे एक अजीब सी चीख सुनाई दी। बल्कि, मुझे कहना चाहिए, एक विशिष्ट पुकार, ऐसी पुकार जो मैंने काफी समय से नहीं सुनी थी, और जो जंगल में हमेशा सुनाई नहीं देती: 'बा-ऊह-आह! बा-ऊह-आह!' यह निस्संदेह 'अकेले सियार' की पुकार थी, वह रहस्यमय और अनसुलझा सियार जिसके बारे में जंगल की जनजातियां कहती हैं कि वह बाघ या तेंदुआ के साथ साझेदारी करता है और उसे शिकार तक अचूक रूप से ले जाता है। इस साझेदारी में सियार को यह अधिकार मिलता है कि वरिष्ठ साथी के भरपेट खाने के बाद वह बिना किसी रोक-टोक के शिकार की हड्डियां चुन-चुनकर खा सके।
सियार हर मिनट करीब आता जा रहा था, और बहुत तेजी से, क्योंकि उसकी चीख हर बार और भी तेज और स्पष्ट होती जा रही थी! 'बा-ऊह-आह! बा-ऊह-आह!'
मैंने उस भयानक अफवाह के बाकी हिस्से के बारे में सोचा: कि एक बार जब अकेला सियार किसी को ढूंढ लेता है और शिकार शुरू कर देता है, तो कोई भी पीड़ित इस भयानक और शैतानी गठबंधन से बच नहीं सकता। मैं अनायास ही कांप उठा, और उसी क्षण मुझे अनंतस्वामी का बायां घुटना मेरी दाहिनी जांघ पर जोर से दबा हुआ महसूस हुआ। घुटना बहुत तेजी से कांप रहा था।
मैंने घोर अंधेरे में चारों ओर टकटकी लगा दी, और सबसे हल्की आवाज़ सुनने के लिए अपने कान लगा लिए। लेकिन मुझे उस भयानक चीख के अलावा कुछ भी दिखाई या सुनाई नहीं दे रहा था जो बार-बार दोहराई जा रही थी और करीब आती जा रही थी: 'बा-ऊह-आह!'
क्या मेरे साथी ने कुछ देखा या सुना था? या वह मुझे उस अकेले सियार के बारे में बताने की कोशिश कर रहा था? निस्संदेह, वह खुद भी उस अजीब कहानी को जानता था। शायद उसे पता नहीं था कि मैं भी इसे जानता हूँ। हो सकता है वह मुझे सतर्क रखने की कोशिश कर रहा हो, क्योंकि मैंने उसे किसी भी कीमत पर बोलने या फुसफुसाने से भी मना किया था। मैंने अपने मन से उस अफ़वाह के बारे में सोचना बंद कर दिया—चाहे वह सच हो या झूठ, महज़ अंधविश्वास हो या कुछ और। अब मेरे लिए बस एक ही ठोस तथ्य बचा था। एक सियार अजीब तरह से आवाज़ निकाल रहा था, बिल्कुल भी अपने सामान्य तरीके से नहीं। वह हर पल करीब आ रहा था और बहुत जल्द हमारे पास पहुंच जाएगा। यह पता लगाना मेरा काम था कि वह अकेला था या उसके साथ कोई दूसरा जानवर था—शायद सियारों का झुंड ही उसके जैसा था।
एक बार फिर, और इस बार बेहद करीब से, वह अजीब सी आवाज सुनाई दी: 'बा-ऊह-आह! बा-ऊह-आह!'
क्या मैंने उसमें द्वेषपूर्ण प्रसन्नता का भाव देखा था? लगभग उपहास भरी हंसी? विजय की हंसी? मैंने गुस्से से इन बेतुके विचारों को रोका और खुद को पहले से कहीं अधिक सतर्क कर लिया। उसके बाद वह अजीब सी चीख फिर कभी नहीं सुनाई दी। बस सन्नाटा छा गया, जिसे महसूस किया जा सकता था। गहरा, दमनकारी सन्नाटा, बहुत गहरा और बहुत वास्तविक।
अनंतस्वामी बुरी तरह कांप रहे थे। उनका घुटना मेरी जांघ से टकरा रहा था। उनका पूरा शरीर, जिसे उन्होंने मेरी दाहिनी बांह और बगल से सटा रखा था, बुखार से कांप रहा था। मैं उनकी तेज़-तेज़ सांसें सुन सकता था; छोटी-छोटी, सिसकती हुई सांसें। मैंने अपनी बाईं बांह अपनी गोद में डाली, उनके घुटने पर धीरे से और मजबूती से हाथ रखा, और फिर उन्हें तसल्ली देते हुए थपथपाया। मैं नहीं चाहता था कि कई साल पहले बैंगलोर से सिर्फ तीस मील दूर क्लोज़पेट नामक जगह पर हुए अपने अनुभव की पुनरावृत्ति हो। वह घटना काफी हास्यास्पद थी, उसमें कोई खतरा नहीं था। अब, मौजूदा परिस्थितियों में उसी तरह का अनुभव निश्चित रूप से हास्यास्पद नहीं होगा।

दूसरी ओर, यह इस तरह का या किसी भी अन्य प्रकार का आखेरी अनुभव हो सकता है जो देखभाल करने वाले या मेरा हो।
मेरी एक परिचित, जो संयोगवश एक प्रतिष्ठित महिला थीं, मेरे पास एक पैंथर का शिकार करने के लिए आई थीं। हम कार से क्लोज़पेट गए, जहाँ हमने चारा के रूप में दो गधे बाँधे थे। दो दिन बाद सूचना मिली कि उनमें से एक मारा गया है। हम घटनास्थल पर पहुँचे तो पता चली कि गधे को ठीक से नहीं बाँधा गया था, जिसके परिणामस्वरूप पैंथर उसे मारने के बाद पेड़ के नीचे से खींचकर ऐसी जगह ले गया जहाँ केवल झाड़ियाँ थीं और कोई पेड़ नहीं था। इसलिए हमारे सामने दो विकल्प थे: या तो ज़मीन पर बैठकर उसके लौटने का इंतज़ार करें या बिना देर किए बेंगलोर वापस चले जाएँ। मेरी परिचित ने खुशी-खुशी मेरी बात मान ली और जहाँ भी मैं कहूँ वहाँ बैठने को तैयार हो गईं।
उस दिन शिकारी थंगावेलु और उनके भाई, जिन्हें हम अपने साथ लाए थे, ने असाधारण उपलब्धि हासिल की। उन्होंने इतना सुंदर छिपने का स्थान बनाया था कि जब पैंथर वहाँ पहुँचा, तो उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि हम अंदर हैं। और न ही हमें कभी यह एहसास हुआ कि वह बाहर है—या कम से कम काफी देर तक तो नहीं।
वह रात भी अंधेरी और बिना चाँद वाली थी। उस घने लेकिन अद्भुत रूप से कारगर छिपने की जगह में हम एक-दूसरे को देख नहीं पा रहे थे। कुछ समय बाद मुझे झाड़ी के दूसरी तरफ़ से, मेरे दोस्त के बाईं ओर से एक हल्की सी आवाज़ सुनाई देने लगी, जो मेरे बाईं ओर बैठा था।
रगड़-रगड़-खुरदराहट। कोई खुरदुरा पदार्थ किसी मुलायम पुदार्थ पर सरक रहा है। ये क्या हो सकता है? कोई साँप? झाड़ी के चूहे? नहीं; साँप तो काफी देर तक सरसराहट करते रहेंगे; जबकि दूसरे लैंटाना में भागते हुए रुक-रुक कर झटकेदार आवाजें करेंगे। क्या ये दीमक हो सकते हैं, जो गिरे हुए पत्ते और सूखी लकड़ी खा रहे हों? नहीं; क्योंकि उनकी आवाज पेड़ों के पत्तों पर बारिश की बूँदों के गिरने जैसी होगी, लेकिन सौ गुना धीमी। क्या ये इल्लियाँ या रात के भृंग खा रहे हों? नहीं; क्योंकि इल्लियाँ खाते समय कोई आवाज नहीं करतीं। कम से कम, ऐसी कोई आवाज नहीं जो इंसान के कान सुन सकें। कुछ भृंग बहुत हल्की आवाज़ करते हैं, जैसे परियों के जाल की क्लिकिंग: भृंगों के जबड़े आपस में टकराते हैं जब वे किसी पत्ते को काटते हैं, और एक तीखी और कर्कश आवाज पैदा करते हैं।
लेकिन ये कुछ अलग ही था। खरखराहट। रुकना। रगड़ना। फिर रुकना। कुछ सेकंड की खामोशी। फिर एक बार फिर। खरखराहट। आखिर ये क्या हो रहा था?
अचानक ज्ञानोदय हुआ। वह पैंथर था, जो अपनी खुरदरी जीभ से खुद को चाट रहा था। और वह छिपने की जगह के ठीक बाहर बैठा था। इतना ही नहीं, उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि हम उससे दो फीट से भी कम दूरी पर थे।
मुझे याद है कि मैंने अपनी दोस्त को कोहनी मारी, उसकी बाँह को दबाया, अपनी तर्जनी उंगली उसकी आंखों के पास ले जाकर शोर के संभावित स्रोत की ओर इशारा किया। बेशक, उसे कुछ समझ नहीं आया।
फिर मुझे एक और विचार आया। मैं फुसफुसाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था, क्योंकि पैंथर मुझे सुन लेता। इसलिए, मैंने अपने बाएं हाथ से उसका एक हाथ पकड़ा। मैंने उंगलियाँ खोलीं और हथेली को ऊपर की ओर मोड़ दिया। सब कुछ मैंने स्पर्श के बल पर किया। मैं अक्सर सोचता हूं कि उसने क्या सोचा होगा कि मुझसे क्या गलती हुई है, आगे क्या होने वाला है।
लेकिन मैंने उसे ज्यादा देर तक असमंजस में नहीं रखा। मैंने अपनी दाहिनी तर्जनी उंगली से उसकी हथेली पर वर्णमाला के बड़े अक्षर बनाने शुरू किए। मैंने पहले P

बनाया, फिर A, फिर N, फिर T और H।
फिर उसे अचानक समझ आ गया। और सचमुच में। मैंने कभी किसी इंसान को बैठे हुए से इतनी तेज़ी से खड़े होते नहीं देखा था। बिजली की तरह, उसने खुद को हवा में उछाला, मुझसे टकराई और मेरे पीछे झाड़ियों में सिर के बल गिर पड़ी, और अपने जूते से मेरे चेहरे पर ज़ोरदार लात मारी।
लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। बल्कि, बहुत कुछ हुआ। पैंथर ने भी उसी करतब को दोहराया—और बड़े ही शानदार तरीके से। अपने बगल से ज़मीन से किसी आवाज़ को निकलते हुए सुनकर, जो शायद खुद शैतान की आवाज़ थी, या पैंथरों की भाषा में शैतान का जो भी नाम हो, पैंथर भी घबराकर वैसा ही करने लगा। वह हवा में उछला, कलाबाज़ी खाई और हमारे छिपने की जगह की बाईं दीवार पर जा गिरा, जिसके ठीक बगल में मेरा साथी एक पल पहले बैठा था। यह समझकर कि वह बहुत डरा हुआ है और अंधाधुंध अपने पंजों से हमला कर सकता है या काट भी सकता है, मैंने भी हवा में उछलकर और पीछे की ओर गिरकर इस मनोरंजन का ज़बरदस्त अंत किया।
खैर, सब कुछ बहुत खुशी और सुरक्षित तरीके से समाप्त हो गया। हमने एक-दूसरे के बहुत करीब आए बिना ही अपना मामला सुलझा लिया, कम से कम पैंथर के मामले में तो ऐसा ही था, और उसने भी बदले में ऐसा ही किया। वह बस गायब हो गया।
हम सब इस पर खूब हंसे। मेरी दोस्त ने कहा कि वह इस घटना को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ना चाहती थी—हजार रुपये के लिए भी नहीं। लेकिन—और यहाँ एक असली सवाल था—क्या होता अगर हम एक हानिरहित पैंथर की जगह आदमखोर बाघ से निपट रहे होते?
हकीकत और वर्तमान में लौटते हुए, मुझे डर था कि चौकीदार का धैर्य अचानक टूट सकता है। वह कुछ भी कर सकता था: उछल सकता था, चिल्ला सकता था, या चीख भी सकता था। और फिर शायद स्थिति अच्छी न हो—यह याद रखते हुए कि हमें 'अपवित्र साथियों' से निपटना था, न कि किसी साधारण पैंथर से। मैं जानता था कि अनंतस्वामी एक बहादुर आदमी था और निश्चित रूप से बाघ से नहीं डरता था। लेकिन जो कुछ घट रहा था, उसका अलौकिक पहलू उसे परेशान कर रहा था—या यूँ कहूँ कि जिसे वह अलौकिक समझ रहा था: वह शैतानी साझेदारी, उस रहस्यमय 'अकेले सियार' की अमानवीय, या यूँ कहें कि अलौकिक बुद्धि, जो आदमखोर को सीधे हमारे पास ले आई थी। मैंने उसके घुटने को पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से दबाया, फिर उसे धीरे से थपथपाया, बार-बार, उसे दिलासा देने के लिए, उसे शांत करने की कोशिश करने के लिए।
उसके बाद घटनाएँ तेज़ी से घटने लगीं। मुझे बाईं ओर झाड़ियों की सूखी पत्तियों पर तेज़ कदमों की आहट सुनाई दी; वह हमारे बेतुके छोटे किले का सबसे कम सुरक्षित हिस्सा था, आरामकुर्सी वाला हिस्सा, बंगले की ओर, जिस दिशा से हमने कभी किसी के आने की उम्मीद नहीं की थी।
वे हमारी ओर आ रहे थे, और झाड़ियों के बीच से आ रहे थे; क्योंकि आवाज़ सूखी पत्तियों की थी। अगर आवाज़ सामने से या यहाँ तक कि बाईं ओर से भी आती, तो हम उसे सुन नहीं पाते, क्योंकि वहाँ घास घनी, मुलायम और हरी थी, और तालाब के पास होने के कारण ज़मीन नम थी।
कदमों की आहट थम गई, फिर आगे बढ़ी, और फिर थम गई; दो-तीन कदम आगे बढ़ी, और फिर पूरी तरह से बंद हो गई।
उस खर्राटे की आवाज़ को सिर्फ़ सियार ही निकाल सकता था—वह अकेला सियार। और अब वह रुक गया था। क्यों? क्या उसे शक हो गया था? क्या उसने हमें देख लिया

था? या फिर वह किसी और वजह से रुका था? क्या अब उसका 'मार्गदर्शक' और कनिष्ठ सदस्य का काम खत्म हो गया था? क्या अब वरिष्ठ साथी की बारी थी?
हमें बाघ की कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी थी। लेकिन मुझे पूरा यकीन था—उतना ही यकीन जितना मुझे अपने नाम का—कि बाघ भी वहीं था। मेरी हर सहज प्रवृत्ति, मेरे शरीर का हर कण, ज़ोर-शोर से संदेश दे रहा था। सावधान! खतरा! आदमखोर बाघ पास ही है।
एक और भी ज़्यादा परेशान करने वाला विचार मेरे दिमाग में कौंध गया। शायद छोटा साथी, चालाक, अकेला सियार, जानबूझकर पत्तों के बीच से चलकर शोर मचा रहा था ताकि हमारा ध्यान भटका सके। शायद ठीक उसी समय वरिष्ठ साथी, जल्लाद, जो अपने अंजाम तक पहुँचने को तैयार था, गीली ज़मीन और हरी घास पर चुपचाप रेंगता हुआ आ रहा था, ताकि आखिरी घातक वार करने के लिए काफ़ी करीब पहुँच सके। इससे भी बुरा, शायद वह पीछे से आ रहा था।
मैंने चौकीदार के घुटने से अपना हाथ हटा लिया, क्योंकि मेरा हाथ भी लगभग उतना ही काँप रहा था। मैं अपने सामने के अंधेरे में घूर रहा था, आँखें जल रही थीं, कान चौकन्ने थे। मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। पल बीतते जा रहे थे, शायद ये इस धरती पर बिताए मेरे आखिरी पल थे। पसीना मेरे चेहरे से बह रहा था, गालों से टपककर मेरे कंधे से लगी .405 राइफल के बट पर गिर रहा था, जिसका मुँह व्यर्थ ही बाहर की ओर काले अंधेरे में था, मानो कुछ दिखाई ही न दे रहा हो। राइफल पकड़े मेरे हाथ पसीने से तरबतर थे।
वह हमारे पीछे कैसे आया, यह हम कभी नहीं जान पाए, लेकिन अचानक उस दिशा से चौंकाने वाली तेज़ी के साथ एक अजीब, शैतानी चुनौती सुनाई दी: 'बा-ऊह-आह! बा-ऊह-आह!'
और उस शाम पहली बार, उस अपवित्र साथी ने जवाब दिया। हमने बाघ की दहाड़ सुनी जब वह पुतले पर झपटा। अपनी उत्तेजना में हम यह बात पूरी तरह भूल गए थे। हमने इस संभावना को नज़रअंदाज़ कर दिया था कि सियार—अगर उसने सचमुच बाघ को उसके 'शिकार' तक पहुंचाया था—तो वह उसे पुतले तक ले गया था, न कि हमारे पास। हमारी चाल वास्तव में कामयाब हो गई थी।
लेकिन अनंतस्वामी इतना भयभीत था कि उसने टॉर्च नहीं जलाई, या शायद जलाना ही नहीं चाहा। घोर अंधेरे में बैठे हुए और बाघ को अपने 'शिकार' को परेशान करते हुए सुनते हुए वह मानो लकवाग्रस्त हो गया था।
और ठीक उसी नाजुक क्षण में हमें एक और आवाज़ सुनाई दी—लेकिन इस बार एक सुकून देने वाली, आश्वस्त करने वाली, घरेलू सी आवाज़। चौकीदार का आवारा कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। वह ज़रूर अपने मालिक की तलाश में आया होगा। उसने सियार की आवाज़ सुनी थी, उसके बाद बाघ की दहाड़ और पुतले को नोंचते हुए की आवाज़ सुनी थी। लेकिन भाग जाने के बजाय, जैसा उसे करना चाहिए था, वह पूरी ताकत से भौंकने लगा।
मैंने अपनी मुट्ठी से अनंतस्वामी की जांघ को ज़ोर से धक्का दिया और बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाया: 'बैटरी पोडु (टॉर्च जलाओ)।'
उसने टॉर्च की रोशनी डाली, बेचारा। लेकिन बाघ पर नहीं। उसने सीधे मेरे चेहरे पर रोशनी डाली। मेरी आँखें चौंधिया गईं, मैंने अपने बाएँ हाथ से उससे टॉर्च छीन ली और उसे हमारे सामने अँधेरे में घुमा दिया, जहाँ वह पुतला बैठा था। टॉर्च की रोशनी में बाघ की आँखें चमकीं और उसके पीछे उसकी आकृति धुंधली सी दिखाई दी। मैंने अपने बाएँ हाथ से टॉर्च को ऊपर उठाया और उसे अपनी राइफल की नली पर टिकाने की

कोशिश की ताकि आगे का निशाना स्पष्ट हो जाए और साथ ही बाघ और उसकी चमकती आँखें भी दिखाई दें।
लेकिन उस रात किस्मत ने हमारा साथ नहीं दिया। एक बार फिर बाघ ने अपने पीछे आने वाले इंसान के प्रति आदमखोर का स्वाभाविक भय दिखाया। एक ज़ोरदार 'र-र-राफ़!' की आवाज़ गूंजी और अगले ही पल बाघ गायब हो गया।
मैंने टॉर्च चारों दिशाओं में घुमाई, इस उम्मीद में कि शायद कहीं और उसकी आँखें दिख जाएँ। लेकिन वह गायब हो चुका था। मैंने टॉर्च पीछे की ओर घुमाई, उस मनहूस सियार को ढूंढने की उम्मीद में, जिसे देखते ही मैं गोली मार देता। लेकिन अपने साथी की तरह वह भी गायब हो गया था। तभी कोई छोटी सी भूरी-सफेद चीज़ कराहती हुई हमारी ओर भागी। क्या यह वही अकेला सियार था? आख़िरकार हमारी दया पर? लेकिन आते ही वह कराहने और भौंकने लगा। यह तो अनंतस्वामी का छोटा सा कुत्ता था।
पंद्रह मिनट बाद हम तीनों उठे और बंगले की ओर वापस चलने लगे। अब और रुकना स्पष्ट रूप से व्यर्थ था। नकली चाल का पर्दाफ़ाश हो चुका था। बाघ और सियार दोनों को अब पता चल गया था कि वहाँ मनुष्य मौजूद हैं—ऐसे मनुष्य नहीं जो अनजान हों—और जो सबसे पहले उन्हें मार डालेंगे। इसलिए उन्होंने वहाँ से भागने का फ़ैसला कर लिया था।
बंगले की ओर लौटते समय मैंने कुछ मिनट पहले बनाए अपने निष्कर्ष को पलट दिया। मैंने सोचा था कि यह मेरी बदकिस्मती भरी रात थी। अब मुझे यकीन था कि यह वास्तव में बहुत ही भाग्यशाली रात थी। पहली बात तो यह कि तथाकथित चालाक साथी, सियार, उतना चालाक साबित नहीं हुआ जितना मैंने सोचा था। उसने हमें बाघ के आने की चेतावनी दे दी थी। दूसरी बात, जब मैंने टॉर्च जलाई, लेकिन गोली चलाने के लिए तैयार नहीं था, तो बाघ ने सहर्ष भाग जाने का फ़ैसला किया। अगर वह हम पर हमला कर देता तो? तीसरी बात, शायद अपने तेज भौंकने से उस छोटे कुत्ते ने बाघ को डरा दिया था और उसे भागने पर मजबूर कर दिया था, जबकि वह हम पर आसानी से झपट्टा मार सकता था।
जी हाँ, वाकई वो रात बदकिस्मती की नहीं, बल्कि किस्मत की ही थी! हम दोनों बुरी तरह डर गए थे। हम दोनों से ही गलती हो गई थी और इसीलिए हम बाघ को खो बैठे। लेकिन दोषारोपण से कोई फायदा नहीं। इसलिए हम सो गए।
अगली सुबह सूरज की तेज और गर्म किरणें हमें पिछली रात की निराशा भुलाने में मदद कर रही थीं। अनंतस्वामी को अपने ऊपर बहुत शर्म आ रही थी। उसने मुझे बार-बार यकीन दिलाया कि वह आदमखोर बाघ से नहीं, बल्कि उस रहस्यमयी बुरी आत्मा, उस अकेले सियार से डरा था, जो उस शैतानी साझेदारी के पीछे का शातिर दिमाग था। मैंने भी उसे यकीन दिलाया कि मैं भी उतना ही डरा हुआ था, लेकिन बाघ से, न कि उस बुरी आत्मा या चालाक दिमाग वाले अकेले सियार से। इस तरह, हम दोनों के बीच अपनी कायरता स्वीकार करने से माहौल साफ हो गया और हमने नए सिरे से योजना बनाना शुरू कर दिया।
यह कहना मुश्किल था कि नकली पुतले वाली तरकीब को दोबारा आजमाने पर सफलता की कोई संभावना थी या नहीं। बाघ को जब पता चल गया कि उसने किसी जीवित व्यक्ति पर हमला करने के बजाय पुराने कपड़ों के गट्ठे और पानी के घड़े पर हमला किया है, तो वह इतनी मूर्खता नहीं करेगा कि चौबीस घंटे के भीतर दोबारा धोखा खा जाए। इसलिए हमें कोई नई रणनीति सोचनी होगी—और बहुत गंभीरता से सोचना होगा।

मैंने बाघ के पदचिह्नों का अध्ययन किया, या यूँ कहूँ कि तालाब के किनारे हमें जितने भी पदचिह्न मिल सके, उनका। वह पुतले पर कूदा था और फिर कीचड़ में फिसल गया था, क्योंकि उसके वजन से पुतला धंस गया था। उसके अगले पैरों के केवल दो स्पष्ट निशान ही दिखाई दे रहे थे—शायद उसी जगह पर जहाँ वह एक पल के लिए रुका था, जब मैंने अपनी राइफ़ल की नली के साथ अपनी बाईं ओर छोटी टॉर्च को संरेखित करने की कोशिश की थी। ये निशान लगभग उसी आकार के थे जैसे उस जानवर के पदचिह्न थे जिसका मैंने पिछले दिन गुंजुर जाने वाले रास्ते पर पीछा किया था। हरी घास पर उसने कोई निशान नहीं छोड़ा था, जबकि पीछे का जंगल सूखा और पथरीला था, जिस पर कोई निशान नहीं था।
एक बात तो स्पष्ट थी। सियार की मदद से हो या न हो, बाघ बहुत भूखा था। उसने तुरंत ही नकली पुतले पर हमला कर दिया था, जिससे उसकी भूख और बढ़ गई थी। उसे खाना ही था, और जल्दी ही। इसलिए, या तो उसने रात के आखिरी घंटों में किसी जानवर का शिकार किया होगा, या आने वाली रात के शुरुआती घंटों में करेगा। आम तौर पर बाघ दिन के उजाले में जंगली जानवरों का शिकार नहीं करते, और गुंजुर में कोई पालतू मवेशी नहीं थे। या फिर, वह डर के मारे सूर्यास्त के समय उस जगह से निकल चुका होगा, या निकल जाएगा, और कहीं और चला जाएगा।
हम दोनों साथ-साथ पैदल रास्ते से होते हुए लगभग एक मील चलकर जोल्डाहल वापस गए। लेकिन बाघ उस रास्ते से नहीं लौटा था। हम वापस गुंजुर गए और बंगले से आधा मील दूर एक छोटी पहाड़ी पर चढ़ गए। इस ऊँचाई से हमने ध्यान से आसमान की ओर देखा, ताकि अगर कोई शिकार हुआ होता तो उसका पता चल जाता। लेकिन किसी भी दिशा में कोई गिद्ध नज़र नहीं आ रहा था।
दोपहर होते-होते हम और भी निराश और पूरी तरह असफल हो चुके थे; और फिर हमने एक बहुत ही मूर्खतापूर्ण काम किया। हमने नकली बाघ को फिर से खड़ा किया और उसी छिपने की जगह पर बैठ गए। यह दो कारणों से मूर्खतापूर्ण लग रहा था। पहला, इस बात की संभावना बहुत कम थी कि बाघ दोबारा नकली बाघ के झांसे में आ जाएगा। लेकिन, इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण बात, जो हमें तब तक समझ नहीं आई जब तक हम वास्तव में अपनी जगह पर नहीं बैठ गए थे, वह यह थी कि अगर बाघ वापस आता, तो पिछली रात की घटना के कारण उसे पता चल जाता कि हम कहाँ हैं।
चित्तीदार हिरणों ने रात 8 बजे के कुछ देर बाद ही आवाज लगाई। जिस टीले पर हम उस सुबह चढ़े थे, उसके नीचे का जंगल उनकी तीखी, भयभीत चीखों से गूंज उठा: 'आओ! आओ! आओ!' एक नर हिरण ने सबसे पहले आवाज लगाई, और फिर बाकी हिरणों ने भी उसका साथ दिया। 'आओ! आओ! आओ!'
उन्होंने निःसंदेह बाघ को देखा या उसकी गंध महसूस की होगी। इससे हमारा मनोबल काफी बढ़ गया। कम से कम वह अभी भी यहीं था और कहीं गया नहीं था। लेकिन हमें न तो बाघ की कोई आवाज सुनाई दी, न ही उसके साथी, अकेले सियार की।
दस बज गए, और एक बार फिर ऐसा लगा जैसे बाघ की गतिविधियों का पर्दा उठने का पूर्वनिर्धारित समय आ गया हो। हमसे थोड़ा दक्षिण की ओर से हमें एक दर्दनाक, पीड़ादायक चीख सुनाई दी: एक चीख जो दो बार दोहराई गई और अंत में एक दबी हुई, सिसकती हुई आवाज़ में समाप्त हुई। एक जानवर की अभी-अभी हत्या कर दी गई थी: शायद एक चित्तीदार हिरण या एक छोटा सांभर। बाघ अपने शिकार को ढूंढने में सफल हो गया था। हमने उस आवाज़ की अनुमानित दिशा को ध्यान में रख लिया।

उसके बाद पूरी रात कुछ नहीं हुआ, न ही चित्तीदार हिरण ने दोबारा आवाज़ लगाई। अनंतस्वामी दो बजे के बाद सो गया, जबकि मैं मुश्किल से अपनी आँखें खुली रख पा रहा था। लेकिन जागते रहना जरूरी था। हम दोनों का सोना वाकई बहुत खतरनाक होता।
जैसे ही उजाला हुआ, हम छिपने की जगह से निकले और पिछली रात की आवाज़ की दिशा में चलने लगे। अगर हमारी किस्मत अच्छी रही तो शायद हम बाघ को उसके शिकार के पास ही देख पाएंगे। लेकिन इस योजना में एक ही खामी थी। हमें पता नहीं था कि शिकार वास्तव में कहाँ है या उसे कहाँ ढूँढना है। हमने लगभग नौ बजे तक खोज की। फिर सूरज तेज़ होने लगा और मैं बहुत थक गया था। मैं पूरी रात सोया नहीं था और उससे पहले वाली रात भी आधी ही सो पाया था। इसलिए हम बंगले में वापस चले गए।
अनंतस्वामी ने रागी के गोले पकाने शुरू किए, जिन्हें मैं किसी और चीज़ से ज़्यादा तोप के गोले समझने लगा था। इस भयानक खाने का इंतज़ार किए बिना, मैं सो गया। दोपहर एक बजे के बाद जब मैं जागा तो देखा कि मेरे पास एक थाली में एक बहुत बड़ा रागी का गोला रखा हुआ था, साथ में चाय का एक कटोरा भी था जो बिल्कुल ठंडा हो चुका था। अनंतस्वामी कमरे के दूसरे कोने में सो रहे थे। मैंने हार मानकर उस चिपचिपे, बेस्वाद गोले को थोड़ा-थोड़ा खाया। काश उसमें थोड़ी चीनी या नमक ही होता। मैंने ठंडी चाय की तरफ देखा और कटोरा खाली कर दिया। कम से कम उसमें थोड़ा स्वाद तो था।
बंगले के बरामदे में कदम रखते हुए मैंने उम्मीद भरी निगाहों से दक्षिण दिशा की ओर देखा। आसमान में कोई गिद्ध मंडराता हुआ नहीं दिखा। पिछली रात के शिकार का कोई सुराग नहीं मिला। इसका मतलब यह था कि आने वाले अंधेरे घंटों के लिए हम कोई निश्चित कार्ययोजना नहीं बना सकते थे।
हालांकि, एक बात के लिए मैं शुक्रगुजार था। भले ही बाघ द्वारा मारा गया हिरण अपेक्षाकृत छोटा ही क्यों न हो, और उसने उसे पूरी तरह खा लिया हो, फिर भी संभावना यही थी कि भूख उसे दोबारा शिकार की तलाश में निकलने से पहले वह चौबीस घंटे तक आसपास ही मंडराता रहेगा।
मेरे लिए दस मील चलकर जोल्डाहल वापस जाना, एक जीवित चारा खरीदना और उसे सूर्यास्त से पहले बांधकर लाना बहुत देर हो चुकी थी। मैंने तय किया कि मैं यह काम अगले दिन करूँगा। उस रात मुझे झरने के पास अपने पुराने ठिकाने पर फिर से बैठने से बेहतर कुछ नहीं लगा, इस बार मैं नकली जानवर की जगह बदलूँगा। इस बीच, चूंकि अभी दो बजे नहीं बजे थे और चौकीदार अभी भी सो रहा था, मैंने दोपहर के अगले दो घंटे उस छोटे बंगले के आसपास की पहाड़ियों में जाने वाले कुछ जंगली जानवरों के रास्तों पर घूमने में बिताने का फैसला किया।
मुझे पूरा यकीन था कि बाघ ने पिछली रात ही शिकार किया था, क्योंकि अनंतस्वामी और मैंने दोनों ने ही शिकार की चीख सुनी थी। अगर मैं रात होने से पहले उस जगह का पता लगा लेता और वहां बैठ जाता, तो लगभग निश्चित था कि बाघ वापस आएगा।
इसी विचार को मन में लिए मैं एक बार फिर दक्षिण की ओर उस पहाड़ी की तरफ चल पड़ा जहां से वह मरणासन्न चीख सुनाई दी थी। इस बार मैं एक अलग कोण से उसके पास पहुँचा, मेरा ध्यान दो बातों पर बँटा हुआ था: एक तरफ़ रेतीली ज़मीन पर बाघ के पैरों के निशान ढूँढना, दूसरी तरफ़ गिद्धों या पेड़ पर बैठे कौवे को ढूँढना, ताकि पता चल सके कि बाघ ने शव कहाँ छिपाया था। और हर समय मुझे ध्यान से देखना था कि मैं कहाँ चल रहा हूँ, किसी भी झाड़ी या घनी वनस्पति के बहुत पास से न गुज़रना था, जिसके पीछे कोई बाघ घात लगाकर बैठा हो सकता था।

जिस तरह मैं उसका शिकार कर रहा था, उसी तरह आदमखोर बाघ मेरा भी शिकार कर रहा था। यह एक ऐसा खेल था जिसमें ज़रा सी भी गलती की गुंजाइश नहीं थी, क्योंकि गलती का मतलब न सिर्फ खेल का अंत होता, बल्कि गलती करने वाले का भी अंत। इसी सावधानी के चलते मेरी प्रगति बहुत धीमी रही। आखिरकार मैं एक रेतीले नाले पर पहुँचा जो पहाड़ी की तलहटी के चारों ओर घूमता था। यहाँ मैं रुका और बाईं ओर मुड़कर थोड़ी दूर तक नाले का पीछा किया यह देखने के लिए कि क्या बाघ उसे पार कर गया है। थोड़ी देर बाद मुझे रेत में बाघ के पैरों के निशान दिखाई दिए, लेकिन वे निश्चित रूप से पिछली रात के नहीं थे। ये कम से कम एक सप्ताह पुराने थे; शायद दस दिन पुराने। निराश होकर, मैंने नाला पार किया और पहाड़ी पर चढ़ना शुरू कर दिया।
ज़मीन पथरीली हो गई थी, जो मैसूर राज्य की कई छोटी पहाड़ियों पर बहुतायत में पाए जाने वाले लाल लेटराइट ककड़ से ढकी हुई थी। इसी वजह से वनस्पति विरल हो गई थी, झाड़ियाँ कहीं-कहीं छिटपुट उग रही थीं, जिनमें वल्लारी के पौधे, बौनी घास और लैंटाना के साथ-साथ कांटेदार नाशपाती भी शामिल थे। मुझे इस बात की खुशी थी क्योंकि इस अपेक्षाकृत खुले मैदान में बाघ अब मुझ पर अचानक हमला नहीं कर सकता था। इसी तरह, वह अपने शिकार को यहाँ नहीं लाता, क्योंकि उसे छिपाने की कोई जगह नहीं थी। इसलिए मेरी खोज जारी रखना व्यर्थ था। जब मैंने अपनी घड़ी देखी तो मुझे आश्चर्य हुआ कि दोपहर के 3:20 बज रहे थे। मुझे जल्दी वापस जाना होगा, क्योंकि हमें नकली बाघ को तैयार करना है और पाँच बजे तक अपने छिपने की जगह पर पहुँच जाना है।
वापसी का सफ़र जल्दी तय हो गया, क्योंकि मैंने बाघ के पैरों के निशान या गिद्धों की तलाश नहीं की, हालाँकि मैंने झाड़ियों या घास के बड़े-बड़े झुंडों से पूरी तरह दूरी बनाए रखी, जिनके पीछे बाघ छिपा हो सकता था। चार बज चुके थे जब मैं वापस लौटा तो अनंतस्वामी बहुत चिंतित थे। सौभाग्य से उन्होंने ताज़ी चाय तैयार कर रखी थी, जिसे मैंने कृतज्ञतापूर्वक पी लिया, हालाँकि रागी की एक और गेंद खाने के उनके निमंत्रण को मैं ठुकरा नहीं सका। हमने पुतले को थोड़ा सजाया और उसे वापस नदी के किनारे ले गए। इस बार हमने उसे तालाब के किनारे नहीं रखा, बल्कि अपने छिपने की जगह से लगभग बीस गज दूर घास के मैदान पर रख दिया। इस जगह का कोई खास फायदा नहीं था सिवाय इसके कि यह हमारे छुपने की जगह से कुछ गज करीब थी, जिसके पीछे हम पांच बजने के कुछ देर बाद बैठ गए।
यह जानते हुए कि उस दोपहर अनंतस्वामी भले ही कई घंटे सो चुके थे, फिर भी आधी रात तक उन्हें दोबारा नींद आ जाएगी, मैंने उनसे कहा कि वे सात बजे तक, यानी अंधेरा होने तक, पहरा दें, जबकि मैं रात भर जागने की तैयारी के लिए थोड़ी देर झपकी ले लूँ। इस तरह उस अवसर पर मैं दिन के पक्षियों की मधुर चहचहाहट को धीरे-धीरे कम होते हुए और रात के पक्षियों और जानवरों की तेज़ आवाज़ों में बदलते हुए सुनने से वंचित रह गया।
मैं देर से जागा, चौकीदार ने मेरा कंधा हिलाया। ऊपर, साफ, मखमली आकाश में तारे शांति से टिमटिमा रहे थे। घना अंधेरा था और मैं जानता था कि अनाथस्वामी ने मुझ पर दया की थी और मुझे उस समय से ज़्यादा सोने दिया था जिस समय मैंने उन्हें जगाने के लिए कहा था। मैंने अपनी घड़ी देखी। रात के 8:12 बज रहे थे। धीरे से, और जितना हो सके चुपचाप, मैं उठ बैठा।
और फिर मैंने उसे सुना। हालाँकि आवाज़ दूर से आ रही थी, फिर भी ठंडी रात की हवा में वह स्पष्ट रूप से सुनाई दी: 'बा-ऊह-आह! बा-ऊह-आह!'

अनायास ही, सहज रूप से, मेरा हाथ राइफल के बट पर कस गया, क्योंकि सदियों पुरानी जंगल की अफवाह से उपजे पुराने, डरावने विचार एक बार फिर मेरे मन में उमड़ पड़े। वे भयानक साथी फिर से शिकार की तलाश में थे। क्या वह रहस्यमयी सियार बाघ को हमारे पास ले आएगा, ठीक वैसे ही जैसे उसने दो रात पहले किया था?
जवाब आया, मानो मेरे अनकहे विचारों का मौखिक उत्तर हो: 'आ-ऊंग! ओ-ओ-न-ऊह! आउंग-हा! आउंग-हा!'
बाघ दहाड़ रहा था, और उसकी आवाज़ ठीक उसी दिशा से आ रही थी जहाँ से कुछ ही मिनट पहले अकेले सियार की आवाज़ आई थी। जंगल के लोगों ने हर दिशा में खतरे की घंटी बजा दी। बंगले के उत्तर की ओर, एक सांभर हिरण ने अपनी गहरी, नाक से निकलने वाली चेतावनी भरी दहाड़ लगाई, जो चौंककर 'पोंक!' से शुरू हुई, फिर 'व्ही-ओंक! व्ही-ओंक!' अंत में वह एक स्थिर चेतावनी भरी आवाज़ में चिल्लाने लगा जो पहाड़ियों के पार दूर-दूर तक गूंज रही थी: 'धंक! धंक! धंक!' हमारे काफी करीब एक मुंटजैक, या भौंकने वाला हिरण, अपनी कर्कश, लगभग कुत्ते जैसी भौंकने की आवाज़ निकाल रहा था, जिसके कारण उसका नाम पड़ा है: 'खर्र! खर्र! खर्र!'
भय की आवाज़ें सुनकर, हमारे पीछे झाड़ियों में छिपी एक चित्तीदार हिरणी ने अपनी प्रारंभिक चेतावनी देते हुए एक कर्कश, तीखी, सीटी जैसी आवाज़ निकाली: 'फ्रू! फ्रू!' फिर झुंड के मुखिया नर हिरण ने चौंककर 'आइओ! आइओ! आइओ!' की आवाज़ निकाली। यहाँ तक कि दूर किसी डाल पर सो रहा एक मोर भी विचलित हो गया। जागते ही वह 'पे-हौन! पे-हौन!' चिल्लाया, और फिर अपनी सामान्य 'मिया-आ-ऊ! आओ! मिया-आ-ऊ!' की आवाज़ में बदल गया।
पूरा जंगल दहशत और सतर्कता से भर गया। तालाब में मेंढक टर्राना बंद कर दिए। यहाँ तक कि नम घास में झींगुर भी चहचहाना बंद कर दिए। हर छोटा-बड़ा जीव एक ही बात सोच रहा था और जान रहा था: सावधान! बाघ! खतरा!
लेकिन हमारे लिए भागने का कोई रास्ता नहीं था। हम वहाँ एक निश्चित उद्देश्य से पहुँचे थे—उस आदमखोर को मार गिराना। तनावग्रस्त नसों और मांसपेशियों के साथ हम अगले कुछ मिनटों या घंटों में होने वाले नाटकीय घटनाक्रम का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे।
खतरे की चीखें दूर तक गूंजती रहीं, क्योंकि चीखने वाले जानवर सुरक्षित क्षेत्रों की ओर भाग गए, उसे धारीदार आतंक से यथासंभव दूर, जो उनके लिए, और उस समय हर जीवित प्राणी के लिए, हिंसक मौत का प्रतीक था। जंगल में सन्नाटा छा गया, जो भयावह था। मैंने अनंतस्वामी की कमज़ोर दो-सेल वाली टॉर्च के बारे में सोचा, जिसकी रोशनी हाल ही में उसके इस्तेमाल के कारण और भी कमज़ोर हो गई थी। वही एकमात्र साधन था जिससे बाघ दिखाई देता और मैं उसकी तस्वीर ले पाता।
कुछ नहीं हुआ। एक घंटा बीत गया, एकदम सन्नाटा पसरा रहा। यहाँ तक कि मेंढक और झींगुरों ने भी अपनी जानी-पहचानी आवाज़ें नहीं निकाली थीं। और समय बीत गया, और तनाव कम होने पर मैंने घड़ी पर नज़र डाली। रात के 10:5 बज रहे थे और मुझे बहुत तेज़ भूख लग रही थी।
फिर मेरी गर्दन के बाल मानो अपने आप खड़े हो गए। अनंतस्वामी का ठंडा और पसीने से भीगा हाथ मेरी बांह पकड़ने के लिए आगे बढ़ा। वह बुरी तरह कांप रहा था।
टप-टप। टप-टप। टप-टप। इस बार आवाज़ हमारे पीछे से आई, एक बार फिर झाड़ियों के बीच से। उन्हीं झाड़ियों में जहाँ हम अपने कमज़ोर पिंजरे की आड़ में छिपे हुए थे। कोई जानवर ज़मीन पर बिछे सूखे पत्तों के कालीन पर तेज़ी से चल रहा था।

जैसे ही वह झाड़ियों और छोटे पौधों के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ा, कुछ टहनियाँ टूट गईं।
यह क्या हो सकता है? निश्चित रूप से बाघ तो नहीं। कदमों की आहट बहुत हल्की और तेज़ थी। क्या यह अकेला सियार था जो एक बार फिर रास्ता दिखा रहा था? मैं उस छोटे से आवारा कुत्ते को याद कर रहा था जिसने भौंककर शायद अड़तालीस घंटे पहले हमारी जान बचाई थी। अफसोस, हमने उसे चौकीदार के कमरे में बंद करके यह सुनिश्चित कर लिया था कि वह फिर कभी किसी नाजुक समय में दखल न दे।
फिर सन्नाटा छा गया। तारों की रोशनी में मैं बीस गज दूर पड़ी उस पुतली को धुंधला-धुंधला देख पाया: एक धुंधली, सफेद वस्तु, जो मेरी थकी हुई आँखों को लगभग दिखाई नहीं दे रही थी। हमारे पीछे घनी झाड़ियों में से, जहाँ से वह हल्की-हल्की आवाज़ आ रही थी, कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।
कुछ देर बाद हमें अपने दाहिनी ओर, जहाँ हम बैठे थे उसके दक्षिण में, तेज़ कदमों की आहट सुनाई दी। फिर सन्नाटा छा गया और तभी एक धूसर, प्रेत जैसी आकृति हमारे सामने घास पर, हमारे और पुतले के बीच से गुज़रती हुई दिखाई दी। वह काफ़ी छोटी लग रही थी और तेज़ी से, अजीब तरह से झटके से चल रही थी। वह लगभग हमारे सामने आकर रुक गई।
तारों की परावर्तित रोशनी से इतनी रोशनी नहीं मिल पा रही थी कि मैं जानवर की हरकतें साफ़-साफ़ देख सकूँ। अचानक वह अपने आकार से आधा सिकुड़ गया, लेकिन मुझे समझ आ गया कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वह प्राणी हमारी ओर मुड़ गया था। उसका सिर तेज़ी से ऊपर-नीचे हिल रहा था, मानो उसकी आँखें घनी झाड़ियों को भेदकर हमें पहचानने की कोशिश कर रही हों।
एक बात तो तय थी: हमारी स्थिति अब गुप्त नहीं रही। जानवर को पता चल गया था कि छलावरण के पीछे कोई न कोई ज़रूर है। इस बात की पुष्टि इस तथ्य से हुई कि उसने नकली वस्तु पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। उसने नकली वस्तु की ओर पीठ कर ली थी और हमें घूर रहा था।
अगले ही पल मैंने न केवल अकेले सियार की चीख सुनी बल्कि जानवर को अपना सिर आकाश की ओर उठाते हुए यह कहते हुए भी देखा: 'बा-ऊह-आह! बा-ऊह-आह!'
इसके तुरंत बाद, मानो अचानक हरकत में आकर, सियार कुछ गज दूर भाग गया, जहाँ वह अचानक रुक गया, मुड़ा और हमारी दिशा में ध्यान से देखने लगा।
मैं उस जानवर की हरकतों में इतना मग्न था कि अनंतस्वामी के हाथ ने, जो मेरी बांह को ज़ोर से और दर्दनाक तरीके से दबा रहा था, मुझे मजबूर कर दिया कि मैं अपना सिर आधा उसकी तरफ़ घुमाऊं। और जैसे ही मैंने ऐसा किया, मेरी नज़र एक ऐसे दृश्य पर पड़ी जिसने मुझे पल भर के लिए सदमे से स्तब्ध कर दिया। ठीक उसी जगह पर जहाँ एक पल पहले सियार था, एक विशालकाय जानवर खड़ा था। उस अवास्तविक रोशनी में वह घोड़े जितना बड़ा दिख रहा था।
मुझे पता था कि मैं बाघ को ही देख रहा था, जो हमारे सामने घास में खड़ा था, बगल से हमारी ओर देख रहा था, ठीक वैसे ही जैसे कुछ क्षण पहले सियार ने किया था।
मैंने अनंतस्वामी को दो बार ज़ोर से और जल्दी से धक्का दिया। यह उसके लिए पूर्वनिर्धारित संकेत था कि वह जानवर पर अपनी टॉर्च की रोशनी डाले। कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। देखभाल करने वाला हिल भी नहीं सका। मुझे अफ़सोस हुआ कि एक बार फिर उसने मुझे उस समय निराश किया जब मुझे उसकी मदद की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। मैंने उसे फिर से धक्का दिया, लेकिन फिर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। मैंने मुट्ठी बांधकर उसे घूंसा मारा। लेकिन अनंतस्वामी बस बैठा रहा और

देखता रहा। मैंने अपनी टॉर्च पीछे छोड़ने पर खुद को कोसा। लेकिन जो कुछ घटित हुआ, उसका मैं पहले से अनुमान कैसे लगा सकता था?
बाघ ने मेरी हलचल देख ली। या शायद उसने अनंतस्वामी की जांघ पर मेरी मुट्ठी की हल्की सी आवाज सुन ली हो। वह धमकी भरे स्वर में गुर्राया और उसकी आकृति छोटी होती चली गई, मानो घास में घुलमिल गई हो। मैं समझ गया कि वह हम पर हमला करने की तैयारी में जमीन पर लेट गया है। दो-तीन छलांगों में ही वह हमारे ऊपर आ गिरेगा, हमारी असुरक्षित चमड़ी के सामने से होते हुए।
बाघ की हरकत और मेरे निष्कर्ष लगभग एक साथ निकले। शायद यह सब दस सेकंड से भी कम समय में हुआ।
चौकीदार की बेजान उंगलियों से टॉर्च छीनकर, मैंने राइफल की नली पर निशाना साधने से पहले ही बटन दबा दिया। रोशनी की किरण से मेरी फोरसाइट तो नहीं दिखी, लेकिन वह सीधे बाघ की आंखों में पड़ी। हालांकि रोशनी बहुत तेज़ नहीं थी, फिर भी बाघ काफ़ी झिझका। शायद उसने रोशनी को दो रात पहले हुए उस अचानक हमले से जोड़ लिया हो, जब उसने नकली बाघ पर छलांग लगाई थी। उसके झिझकने का जो भी कारण रहा हो, उसने मुझे फोरसाइट की नोक को बैकसाइट और चमकती आंखों के बीच सीधी रेखा में लाने के लिए ज़रूरी एक पल का समय दे दिया।
इस तरह का निशाना लगाना बिल्कुल भी आदर्श नहीं था, खासकर तब जब मैंने टॉर्च और राइफल दोनों को अपने बाएँ हाथ से पकड़ रखा था। अगर गोली बहुत ऊपर लगती, तो बाघ के पीछे हटते माथे से टकराकर निकल जाती। लेकिन मेरे पास और कुछ करने का समय नहीं था, और मैंने ट्रिगर दबा दिया।
राइफल की आवाज के बाद एक कान फाड़ देने वाली दहाड़ सुनाई दी, जब बाघ अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और उसके अगले पंजे उसके कुचले हुए चेहरे को खरोंच रहे थे। मैंने हड़बड़ी में नीचे का लीवर चलाया और उसकी छाती पर दिख रहे सफेद फर पर गोली चला दी।
उसके बाद वह ज़मीन पर आ गिरा, अंधाधुंध इधर-उधर भटकता रहा, जबकि उसके नुकीले पंजों से ज़मीन पर बेतहाशा प्रहार होते हुए मिट्टी और घास के ढेले उखड़ रहे थे, और उसके खुले जबड़े दर्द से कराहते हुए बेरहमी से काट रहे थे। लगातार दहाड़ें गूंज रही थीं, और मैंने मैगज़ीन की सारी गोलियां चला दीं। गोलियों की गिनती भूलकर, मैंने खाली चैंबर में फायरिंग पिन की क्लिक की आवाज़ सुनी। बाघ अभी भी छटपटा रहा था, लेकिन दहाड़ों की जगह एक घुरघुराहट सुनाई दी, जो मरते हुए बाघ की स्पष्ट अंतिम सांस थी।
'टॉर्च पकड़ो।' मैंने जल्दी से फुसफुसाते हुए टॉर्च को चौकीदार के सुन्न हाथ में थमा दिया, और साथ ही तेजी से मैगज़ीन में तीन गोलियां भर लीं।
लंबी घास में लेटे हुए बाघ का धड़कता हुआ हिस्सा मुझे साफ दिखाई दे रहा था। उसकी गड़गड़ाहट अनियमित हो गई। अचानक वह बंद हो गई और मैं समझ गया कि बाघ मर चुका है। हमने पंद्रह मिनट और इंतजार किया, लेकिन कोई हलचल नहीं हुई।
वह अकेला सियार फिर कभी प्रकट नहीं हुआ। शायद उसे सहज ज्ञान से पता चल गया था कि उसने अपने साथी को मृत्यु के घाट उतार दिया है और उसे खेद हुआ होगा। संभवतः वह इसके बाद किसी दूसरे साथी की तलाश में जल्दी से चला गया, यह याद करते हुए कि अब तक इस साथी ने उसे सहज और बड़े लाभ दिए थे।
अगली सुबह हमने बाघ का ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया। वह बहुत बूढ़ा नर बाघ था, जिसके नुकीले दांत घिसे हुए थे। लेकिन इसके अलावा उसमें कोई और दोष नहीं

देख रहा था। आखिर किस बात ने उसे इंसानों के खिलाफ़ कर दिया था? शायद यह बस एक सनक थी। हो सकता है उसे बुढ़ापा आ रहा हो और उसने भोजन प्राप्त करने का एक आसान तरीका खोज लिया हो। शायद सियार ने ही उसे शिकार की ओर ले जाकर उकसाया हो—यानी चौकीदार की अभागी बेटी। कौन जानता है?

दो

उम्बलमेरु का दुष्ट

जंगल की सुनहरी भूरी घास, जो पहले बारिश से नरम हुई और फिर दोपहर की चिलचिलाती धूप से सूख गई, ढलान वाली पहाड़ियों के किनारों को ढक लेती है, जो इस जंगली इलाके में बेतरतीब ढंग से उठी हुई प्रतीत होती हैं। प्रत्येक पहाड़ी के आधार पर, सुंकरी, तीखी घाटियाँ सदियों से आए तूफानों के दौरान बारिश के पानी से बनी हैं, जो ऊँची चोटियों से टकराकर उग्र, कीचड़ भरी धाराओं के रूप में जंगल से ढकी ढलानों से नीचे घाटियों में बह जाती हैं, जहाँ वे आपस में मिलकर अंततः छोटी कल्याणी नदी की उत्तर-पूर्वी शाखा का निर्माण करती हैं।
ये छोटी-छोटी घाटियाँ झाड़ियों से भरी हुई हैं: बेंत-बांस, लैंटाना और 'घातक' लता की चिपकने वाली लताएँ, जिसने निश्चित रूप से अपना नाम सार्थक कर लिया है।
कई साल पहले, शायद किसी नन्ही चिड़िया ने इसके कुछ भूरे बेर खाए होंगे और फिर पत्तों वाली टहनी पर बैठ गई होगी। बेरों का गूदा जल्दी ही पच गया और चिड़िया ने बिना पचे बीज निकाल दिए। ऐसा ही एक बीज उस विशाल पेड़ की जड़ों में गिर गया होगा जहाँ वह बैठी थी। फिर बारिश आई और वह छोटा बीज अंकुरित हुआ और एक नन्हा 'किलर' पैदा हुआ, जो शुरू में आपकी छोटी उंगली के नाखून से भी छोटा था।
लेकिन पौधा तेजी से बढ़ता है और एक महीने का होते ही अपनी बेलें निकाल लेता है, इस प्रकार पहली बार एक रेंगने वाले पौधे के रूप में प्रकट होता है जो अपना भार अन्य पौधों और पेड़ों पर टिकाता है। यह बढ़ता ही जाता है और पहले वर्ष के अंत तक शायद उस विशाल पेड़ की एक तिहाई ऊँचाई तक चढ़ चुका होता है जिसने इसे आश्रय दिया था। लेकिन इसका तना अभी भी आपकी मध्यमा उंगली से अधिक मोटा नहीं होता। दो वर्षों के भीतर यह पेड़ के शिखर तक पहुँच जाता है, जहाँ से इसकी बेलें आसपास के विशाल वन वृक्षों की ओर भूख से फैल जाती हैं, जो सभी, मेजबान वृक्ष की तरह, संभवतः दो या तीन शताब्दियों पुराने होते हैं। और अब लता का तना आपकी कलाई जितना मोटा हो जाता है।
वर्ष बीतते जाते हैं और लता उस पुराने पेड़ को पूरी तरह से ढक लेती है और जकड़ लेती है जिस पर वह टिकी है। तना, जो कभी आपकी उंगली जितना मोटा था और फिर आपकी कलाई जितना, अब आपकी जांघ जितना मोटा हो गया है, और यह तब तक बढ़ता रहता है जब तक कि यह आपके शरीर जितना मोटा न हो जाए। इसका

वज़न बहुत अधिक है। यह अपने मेज़बान पेड़ के तने और शाखाओं के चारों ओर और भी कसकर लिपट गई है, नरम बाहरी छाल को काटकर लकड़ी के बिल्कुल भीतरी हिस्से तक पहुंच गई है।
धीरे-धीरे, निर्दयतापूर्वक, यह अपने मेज़बान का गला घोंटकर उसे मार डालता है। वर्षों बाद बारिश और तूफान फिर आते हैं। शायद उसी रात जैसी किसी रात, जिस रात 'हत्यारे' का जन्म हुआ था, वह विशाल पुराना पेड़, जिसने कभी मासूम दिखने वाले हत्यारे को आश्रय दिया था, ज़मीन पर गिर पड़ता है, और उस 'बच्चे' द्वारा निगल लिया जाता है जिसे उसने कभी पनाह दी थी। गिरे हुए मूलबे के बीच से 'हत्यारे' की लताएँ लालच से पड़ोसी पेड़ों के तनों की ओर बढ़ती हैं, और वहाँ उस भयावह कहानी को दोहराती हैं और बार-बार 'हत्यारे' के रूप में अपना नाम कमाती हैं।
संकरी घाटियों में घनी झाड़ियों के कारण, मनुष्य का प्रवेश असंभव है, और किसी भी आकार के जानवर के लिए तो यह लगभग नामुमकिन है। यह कृन्तकों और ऐसे ही अन्य छोटे जीवों का घर है, और उन पर शिकार करने वाले साँपों की कई प्रजातियों का भी। सबसे शुष्क गर्मी के महीनों और सबसे तेज़ उष्णकटिबंधीय सूरज के बावजूद, यहाँ हमेशा हरियाली छाई रहती है। ऐसा लगता है मानो आसपास की पहाड़ियों का भार धरती से ही नमी सोख लेता है, जिससे घनी हरियाली में दलदल बन जाता है जहाँ दिन भर झींगुर चहचहाते रहते हैं और हमेशा धुंध छाई रहती है। सूरज की किरणें हरियाली के आवरण को भेद नहीं पातीं। अंकुरण और ऊपर की ओर बढ़ने में एक पल की भी देरी का मतलब है कि पास की झाड़ी, लता या छोटा पौधा अवसर का लाभ उठा लेता है और पीछे रह जाने वाला पौधा हमेशा छाया में रहने और अंततः सड़ने-गलने से मरने के लिए अभिशप्त हो जाता है।
लेकिन घाटियों के ऊपर, पहाड़ियों की ढलानों पर, स्थिति अलग है। वहाँ सूरज बेरहमी से तपता है, और गर्मियों के महीनों में पेड़ों के पत्ते सूखकर जमीन पर गिर जाते हैं, जिससे धरती पर सरसराहट की एक चादर बिछ जाती है, जब तक कि बारिश उन्हें सड़ाकर मिट्टी में तब्दील नहीं कर देती, जो उन्हीं पेड़ों को पोषण देती है जिनसे वे गिरे थे।
पहाड़ियों पर ऊँचाई पर मौसम ठंडा और पथरीला होता है: यह उखड़े हुए पत्थरों, लाइकेन और काई का क्षेत्र है, जबकि ऑर्किड तनों और शाखाओं से लटके रहते हैं, और 'सीटी बजाने वाले स्कूली लड़के' के रूप में जाना जाने वाला बड़ा नीला-काला पक्षी अपने अद्भुत, बेतरतीब, चहचहाते स्वरों से श्रोताओं को रोमांचित कर देता है, जो कभी भी एक ही धुन को दो बार नहीं दोहराता है।
दोपहर के कुछ ही समय बाद मेरी कहानी शुरू होती है: सीटी बजाता हुआ स्कूली बच्चा, अन्य अधिकांश पक्षियों और लगभग सभी छोटे-बड़े जानवरों के साथ, एक छायादार चट्टान के नीचे दोपहर की झपकी ले रहा है। वहाँ से चट्टान की दरार से रिसता हुआ निर्मल, बर्फीला ठंडा पानी दिखाई दे रहा है। हवा का झोंका भी न के बराबर महसूस हो रहा है, और पेड़ों की टहनियाँ और लंबी घासों के काटेदार तने बिल्कुल स्थिर हैं। दोपहर के इस समय अजीब सी शांति छाई हुई है। यहाँ तक कि झींगुर भी चुप हैं, और आस-पास कोई पत्ता भी नहीं हिल रहा है। ऐसा लगता है मानो पूरी दुनिया गहरी नींद में सो गई हो।
लेकिन कुछ देर बाद एक हल्की सी आवाज़ सुनाई देती है, जो नदी के पानी की धीमी कलकल ध्वनि के ऊपर सुनाई देती है, जब वह चिकनी, घिसी हुई, काई लगी हरी, फिसलन भरी चट्टानों पर बहता है। यह रुक-रुक कर आने वाली, अनियमित आवाज़ है। किसी के खोदने की आवाज़, और यह नदी के दूसरे किनारे से, लगभग पचास गज की दूरी से आ रही है।

वहाँ एक मानव आकृति दिखाई देती है, जो घुटनों के बल बैठा है और नदी के किनारे बहुतायत में उगने वाली 'हाथी के कान' जैसी लिली की विशाल पत्तियों के बीच लगभग छिपी हुई है। केवल उस व्यक्ति की छोटी छड़ चलाते समय होने वाली झटकेदार हरकतें और खुदाई की आवाज़ ही उसकी उपस्थिति का संकेत देती हैं; क्योंकि उसका गहरा काला शरीर, गंदी लंगोटी की एक छोटी पट्टी के अलावा नग्न, लिली की विशाल पत्तियों के नीचे और आसपास की गहरी छाया में पूरी तरह घुलमिल जाता है।
बूढ़े कोथंडा रेड्डी अपने गाँव रंगमपेट से, जो लगभग बारह मील दूर है, विशाल लिली के बीच उगने वाले दुर्लभ कामोत्तेजक कुलु जलपौधे के कंद खोदने के लिए आए हैं। यह पौधा अपने कामोत्तेजक गुणों के लिए प्रसिद्ध है। उन्हें तीन पंखुड़ियों वाले, तिपतिया घास जैसे छोटे पत्ते वाले कुलु जलपौधे को बड़ी सावधानी से खोजना पड़ता है, जो अपने विशाल साथी पौधे के कारण लगभग पूरी तरह से छिप जाता है। जब उन्हें एक पौधा मिल जाता है, तो उन्हें कीचड़ में गहराई तक खोदना पड़ता है और हिलने वाले पत्थरों को हटाकर पौधे की पतली, कंदयुक्त सफेद जड़ों तक पहुँचना पड़ता है। इन जड़ों को अच्छी तरह सुखाकर, बाद में पीसकर पुरुष वीर्य के साथ मिलाकर, अमावस्या की रात (जिसे 'अमावस्या' कहा जाता है) को मंत्रों से उपचारित करने पर, ये अपनी पूरी शक्ति प्राप्त कर लेती हैं।
ऐसा कहा जाता है कि इस पाउडर की एक चुटकी, प्रियजन के भोजन में मिलाकर, या इससे भी बेहतर, बिना दूध वाली कॉफी में गुड़ या भूरी चीनी डालकर, ताकि इसका हल्का तीखा स्वाद छिप जाए, देने से स्त्री इतनी उत्तेजित हो जाती है कि वह अपनी सारी शर्म-हया को त्यागकर, निःसंकोच और निर्लज्जता से अपने उत्सुक और पहले से तैयार प्रेमी की बाहों में समा जाती है। जाहिर है, इस मिश्रण का कुछ महत्व है—या कम से कम इसकी प्रतिष्ठा तो है ही—क्योंकि बूढ़े कोथंडा रेड्डी इसे कुछ वर्षों से एक रुपये प्रति चुटकी के हिसाब से बेच रहे थे। उन्हें रंगमपेट गाँव में नाजायज बच्चों की संख्या पर चुपके से गर्व है—जो उनकी राय में कुलु की जड़ों की प्रभावकारिता के जीते-जागते प्रमाण हैं।
तो कोथंडा रेड्डी काम में जुट जाता है और गहराई तक खुदाई करने लगता है, जबकि उसकी लोहे की छड़ की धीमी और रुक-रुक कर आने वाली आवाज़, तेज़ बहते पानी की कलकल और बुलबुले की आवाज़ में लगभग दब जाती है, लेकिन पूरी तरह नहीं। और इस तरह तल्लीन होने के कारण वह उन द्वेषपूर्ण और क्रूर आँखों पर ध्यान नहीं देता जो ठीक ऊपर, चट्टानी छोटी धारा के किनारे से उस पर टकटकी लगाए खड़ी हैं।
उसे देख रहा प्राणी अपनी उपस्थिति का जरा सा भी संकेत देने वाली कोई आवाज नहीं निकालता। उसकी गुफा जैसी छाती और गले से किसी भी प्रकार की गुर्राहट नहीं निकलती। उसकी खोजपूर्ण और निर्मम निगाहों में पलकें भी नहीं झपकतीं।
अंततः लोहे की छड़ की नोक से कोमल सफेद जड़ें बाहर आ जाती हैं। बूढ़े कोथंडा रेड्डी उसे एक तरफ रख देते हैं और झुककर अपने द्वारा बनाए गए गड्ढे में दोनों हाथों से जड़ों को आसपास के कीचड़ से अलग करने लगते हैं।
ऊपर बैठा मूक दर्शक, जो उसकी हर हरकत पर नज़र रख रहा था, उस घटना को देख लेता है और जानता है कि सिर झुकाए हुए वह व्यक्ति अब उसे देख नहीं सकता। एक लाल जीभ तेज़ी से उसके ऊपरी जबड़े के होंठों को चाटती है। फिर वह प्राणी और नीचे झुकता है और सिलसिलेवार हत्याओं में से पहली हत्या को अंजाम देता है, जिसके कारण उसे चित्तूर जिले के तीन वन क्षेत्रों (भाकरापेट रिजर्व, चमाला घाटी और

मामंदूर हाई रेंज वन) की सीमा से लगे लगभग बीस गांवों और बस्तियों में 'शैतान' का नाम मिलेगा। (यह जिला अब आंध्र प्रदेश राज्य का हिस्सा है)।
पल भर में ही सब कुछ हो गया। कोथंडा रेड्डी ने उस विशालकाय आकृति को नहीं देखा जो हवा में तेज़ी से उड़ती हुई उन पर आ गिरी, हालांकि एक पल के लिए उन्होंने उसका भारी वज़न महसूस किया और उसके पंजों से हुए गहरे घावों की पीड़ा को भी सहा, जो उनकी खुली पीठ और बगलों में धंस गए थे। लेकिन यह केवल एक पल के लिए ही था, क्योंकि अगले ही पल विशाल नुकीले दांतों से लैस शक्तिशाली ज़बड़ों ने उनकी गर्दन और खोपड़ी के पिछले हिस्से को कुतर दिया। इस प्रकार कोथंडा रेड्डी की मृत्यु हो गई, और उन्हें उस क्षण का पता भी नहीं चला जब वे उस दूसरे लोक में चले गए जहाँ कामोत्तेजक दवाओं की कोई मांग नहीं है और कुलु की जड़ों का कोई मूल्य नहीं है।
रंगमपेट में उस बूढ़े व्यक्ति के लापता होने की खबर काफी समय बाद फैली। उनकी आदत थी कि वे रहस्यमयी जड़ों और जड़ी-बूटियों की तलाश में जंगल में चले जाते थे, या अपने बनाए हुए काढ़े, जादुई पाउडर, ताबीज और कवच बेचने के लिए आस-पास के गांवों का चक्कर लगाते थे, जिससे एक महान जादूगर या मंत्रकार के रूप में उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई थी। और जब आखिरकार वे लापता हुए, तो उनकी हड्डियां कभी नहीं मिलीं, जिससे उनके निधन को किसी शैतान से जोड़ा जा सके। लेकिन, कुछ हफ्तों बाद, दो भटकते हुए वन रक्षक, जो पहाड़ी की ढलान पर चढ़े और बर्फीले ठंडे पानी से भीगने के लिए छोटी सी धारा पर रुके, उन्होंने एक लोहे की छड़ और उसके पास एक गंदा कपड़े का थैला देखा, जिसे दीमक ने आधा खा लिया था, लेकिन उन भयानक दिखने वाली और सड़ती हुई जड़ों को नहीं खाया था जो अब बाहर निकलकर धारा के नम तल पर बिखरी पड़ी थीं। तब उन्हें याद आया कि कोथंडा रेड्डी काफी समय से लापता थे, जिसके कारण कुछ लोगों ने कहा कि वे अचानक और हमेशा के लिए रंगमपेट छोड़कर चले गए हैं। अब पहली बार वन रक्षकों को पता चला कि वह कभी वापस क्यों नहीं लौटा।
यह त्रासदी स्पष्ट रूप से काफी समय पहले घटी थी, और हत्यारे की प्रकृति या पहचान का कोई सुराग नहीं मिला था। वन रक्षकों ने अपनी खोज की सूचना रंगमपेट स्थित पुलिस चौकी को दी, जहां उनकी कही गई बातों को नोट कर लिया गया।
शैतान की गतिविधियों का कोई निश्चित या उचित रिकॉर्ड नहीं रखा गया था, कम से कम उसके करियर की शुरुआत में तो नहीं; लेकिन रिपोर्टों के अनुसार अगली घटना निम्नलिखित तरीके से घटी।
दोपहर के लगभग तीन बज रहे थे, जब सात बैलगाड़ियों का एक काफिला जंगल से रंगमपेट की ओर जाने वाले ऊबड़-खाबड़ रास्ते से लौट रहा था। यह रास्ता जंगल में सात मील दूर पुलिबोन नामक स्थान पर स्थित एक कुएं से होकर जाता था। सड़क से लगभग एक चौथाई मील दूर, और गांव से चौथे मील के पत्थर के ठीक सामने, नरसिम्हा चेरुवु नामक एक बारहमासी जलकुंड है। सातों व्यक्ति चौथे मील के पत्थर के पास अपनी गाड़ियां रोककर दो फर्लांग नीचे जलकुंड की ओर उतरे। रास्ते में वे बातें करते हुए अपने चेहरे, हाथ और पैर साफ, गुनगुने भूरे पानी से धोते थे, और फिर मुट्ठी भर पानी होठों पर लगाकर बिना निगले गरारे करते थे और उसे कुंड में थूक देते थे।
आखिरकार, सातों आदमी पानी के किनारे एक बबूल के पेड़ के नीचे बैठ गए और थोड़ी देर बीड़ी पी। बीड़ी खत्म होते ही वे उठे और एक-एक करके अपनी गाड़ियों की ओर लौट गए। वे अपनी गाड़ियों तक तो पहुँच ही गए। कम से कम उनमें से छह तो पहुँच ही गए—लेकिन सातवें आदमी का कोई अता-पता नहीं था। वह कहाँ गया

होगा? उसके आधे दर्जन साथी, भारतीय ग्रामीण की तरह शांत और धैर्यवान, समय की परवाह किए बिना, सड़क किनारे बैठ गए और उसका इंतज़ार करने लगे और कुछ और बीड़ी पीने लगे। यूँ ही उनमें से एक ने कहा कि पुट्टू रेड्डी, जो गाड़ी वाला गायब था, कतार में सबसे पीछे चल रहा था। बोलने वाले ने एक पल के लिए पीछे मुड़कर देखा और पुट्टू रेड्डी को बीड़ी जलाते हुए देखा। वह बहुत ज़्यादा बीड़ी पीता था।

समय बीतता गया और लापता व्यक्ति का कोई पता नहीं चला। सामान्य परिस्थितियों में अनिश्चित काल तक उसका इंतजार करना सुरक्षित होता। लेकिन अगर वे अब और देर करते तो जंगल से बाहर निकलकर रंगमपेट के आसपास के खेतों तक पहुँचने से पहले ही अंधेरा हो जाता। यह उन्हें मंजूर नहीं था।

वे उसे पुकारने लगे: 'पुट्टू रेड्डी! जल्दी आओ, यार; तुम कहाँ हो?'—'पुट्टू रेड्डी!'—'पुट्टू रेड्डी!' पुट्टू रेड्डी प्रकट नहीं हुआ।

छह गाड़ीवानों में दहशत छा गई। अपने लापता साथी को ढूंढने के लिए पानी के स्रोत तक वापस जाना उनके लिए नामुमकिन था। शायद किसी बुरी आत्मा ने उसे पकड़ लिया हो। हो सकता है किसी सांप ने उसे काट लिया हो। शायद उसे कोई बाघ, कोई तेंदुआ या कोई भालू ले गया हो। लेकिन उनमें से अधिकतर लोगों का मानना था कि उसका गायब होना अलौकिक शक्तियों का परिणाम था।

कुछ ही क्षणों में उनमें से प्रत्येक अपनी बैलगाड़ी में सवार हो गया और छह जोड़ी बैल लगातार चाबुक की मार से प्रेरित होकर अपनी-अपनी गाड़ियों को लेकर तेज़ी से चल पड़े। चौथे मील के पत्थर पर सातवीं गाड़ी - पुट्टू रेड्डी की गाड़ी - अकेली रह गई, बैल धैर्यपूर्वक अपने मालिक का इंतज़ार कर रहे थे। लेकिन वह कभी नहीं आया।

रात होते-होते ठंड बढ़ गई और ओस खूब बरसने लगी। गाड़ी से जुते हुए दोनों बैल अपने मालिक को भूल गए और रंगमपेट स्थित अपने सूखे, आरामदायक बाड़ों को याद करने लगे। उन्होंने रात भर सफर तय किया और सुबह करीब 4 बजे गांव पहुंचे। चूंकि उन्हें किसी ने परेशान नहीं किया था, इसलिए वहाँ बाघों का कोई नामोनिशान नहीं था।

फिर भी, पुट्टू रेड्डी—ठीक कोथंडा रेड्डी की तरह—बिना कोई निशान छोड़े हवा में गायब हो गया। जब अगले दो महीनों के भीतर एक तीसरा और फिर एक चौथा व्यक्ति गायब हो गया, तो लोग कहने लगे कि चमाला घाटी में एक 'शैतान' का साया है, जो अपने आने-जाने का कोई सबूत नहीं छोड़ता, सिवाय इसके कि वह हर बार अपने साथ एक इंसान को ले जाता है।

तीसरा शिकार एक छोटा व्यापारी था जो रंगमपेट से उत्तर-पश्चिम दिशा में तेरह मील दूर एक छोटे से गाँव तक चने से लदे दस-बारह गधों का झुंड ले जा रहा था। उसे पुलिबोनू के कुएँ पर दोपहर का भोजन करते देखा गया था, जो इस रास्ते पर सातवें मील के पत्थर से थोड़ा आगे था। दरअसल, उसने वहाँ डेरा डाले हुए कई बांस काटने वालों में से एक से कुएँ से उसके लिए पानी निकालने का अनुरोध किया था, क्योंकि उसके पास रस्सी नहीं थी। उस आदमी ने उसकी मदद की और व्यापारी ने जी भरकर पानी पिया। फिर उसे अपने गधों पर दोबारा सामान लादते देखा गया और अंत में वह उन्हें आगे बढ़ाते हुए चल पड़ा।

अगले दिन विपरीत दिशा से आ रहे कुछ अन्य यात्रियों ने दसवें मील के पत्थर के पास गधों के झुंड को बिखरा हुआ पाया, जो संतुष्ट भाव से चर रहे थे। वे अब भी अपनी पीठों पर चने की बोरियाँ लादे हुए थे। लेकिन उनके मालिक का कोई अता-पता नहीं था।

लापता होने वाला चौथा व्यक्ति पुलिबोनू में ही गायब हुआ था। और संयोगवश, वह वही बांस काटने वाला था जिसने गधों के मालिक के लिए कुएँ से पानी निकाला था। पुलिबोनू के पास ही स्थित एक छोटे से जंगल में बांस काटने के लिए ठेके पर काम कर रहे बांस काटने वालों का एक दल एक महीने से अधिक समय से वहाँ डेरा डाले हुए था। लापता व्यापारी की मदद करने के कुछ ही दिनों बाद, यही बांस काटने वाला अपने साथियों के साथ पुलिबोनू के कुएँ के पास दोपहर का भोजन करने और पानी पीने के लिए इकट्ठा हुआ था। इसके बाद वे सभी अपने-अपने काम पर लौट गए। लेकिन शाम को, जब दिन का काम खत्म हो गया, तो वह सड़क के किनारे बनी अपनी अस्थायी झोपड़ियों में अपने साथियों के पास वापस नहीं आया। और फिर कभी उसे देखा भी नहीं गया।
बाँस काटने वाले बाकी लोग तुरंत घबराए नहीं। दरअसल, अगली सुबह, वे सब मिलकर उसकी तलाश में निकल पड़े। वे उस जगह पहुँच गए जहाँ वह बाँस काट रहा था। थोड़ी ही दूरी पर उन्हें उसका कोइथा (काटने वाला चाकू) मिला। उसके पास ही उसकी पगड़ी का सफेद कपड़ा पड़ा था, जो गिर गया था और उसके सिर पर अभी भी टिका हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो उसने पगड़ी को सावधानी से उतारकर ज़मीन पर रख दिया हो, न कि वह अपने आप गिर गई हो।
उसके साथी पंखे की तरह फैलकर जंगल, ज़मीन, यहाँ तक कि पेड़ों की पत्तियों और घास के तिनकों तक में उसकी रहस्यमय गुमशुदगी का सुराग ढूँढ़ रहे थे; अगर उस पर किसी जंगली जानवर ने हमला किया होता और उसे मार डाला होता तो ज़रूर कुछ निशान होते, खून का धब्बा, किसी के पंजे का निशान, या घसीटने का निशान जहाँ उसके शरीर को झाड़ियों के बीच से घसीटा गया हो। लेकिन वहाँ इनमें से कुछ भी नहीं था।
ऐसा लग रहा था मानो उसने जानबूझकर और बड़े करीने से अपनी पगड़ी उतारी हो, उसे ज़मीन पर रखा हो और फिर हवा में गायब हो गया हो। लेकिन कोई भी ऐसा नहीं कर सकता था, और हिंसा का कोई निशान न होने के कारण, बांस काटने वालों के मन में यही निष्कर्ष निकल सकता था कि अलौकिक शक्तियों ने एक बार फिर अपना काम किया है और उनके साथी को उसी तरह उठा ले गई हैं जैसे उससे पहले उस छोटे व्यापारी को और उससे पहले उस गाड़ीवाले को। यहाँ तक कि उनके गाँव के जाने-माने जादूगर, कोथंडा रेड्डी भी इन बुरी आत्माओं या उस दुष्ट आत्मा के सामने बेबस थे, जो अब उनके जंगलों में आ गई थी और ऐसा लग रहा था कि यहीं रहने वाली है।
रंगमपेट के निवासियों में एक बार दहशत फैल गई तो वह सचमुच गंभीर हो गई। घबराहट जल्द ही आतंक में बदल गई और सभी गाँवों में फैल गई। पुलिस और वन विभाग के अधिकारियों को सतर्क कर दिया गया। यहां तक कि चित्तूर के कलेक्टर को भी सूचित कर दिया गया। लेकिन रंगमपेट में रहने वाले बुजुर्गों ने दुख से, और शायद थोड़ा मज़ाक उड़ाते हुए भी, सिर हिलाया। पुलिस और अन्य अधिकारी उस शैतान के खिलाफ क्या कर सकते थे?
स्पष्टतः, एकमात्र उपाय था उस दुष्ट आत्मा को प्रसन्न करना। और प्रसन्न करने का एकमात्र तरीका था बलिदान—रक्त का बलिदान! आस-पास के पुलिस अधिकारी चिंतित हो गए। ऐसे मामले में बलिदान का प्रश्न उठता ही था कि क्या भयभीत ग्रामीण किसी जानवर, जैसे मुर्गी या बकरी, जो आमतौर पर बलि के लिए प्रयुक्त प्राणी होते थे, के जीवन को जंगल में विचरण कर रही इस दुष्ट आत्मा को प्रसन्न करने के लिए पर्याप्त महत्व देंगे। उन्हें यह आभास हो सकता था कि किसी उच्च कोटि के बलिदान

की आवश्यकता है। मानव बलि; शायद किसी बच्चे की बलि। ऐसी घटनाएँ पहले भी हो चुकी थीं।
इसलिए रंगमपेट की छोटी पुलिस चौकी के प्रभारी पुलिस दफ्फेदार (मुख्य कांस्टेबल, जिसका पद सार्जेंट के बराबर था) ने कृष्णाप्पा रेड्डी को चेतावनी दी - जो गांव का नया जादूगर, तांत्रिक और जादूगरनी था, जिसके कंधों पर पुराने कोथंडा रेड्डी की विरासत स्वतः ही आ गई थी क्योंकि वह आसपास का एकमात्र योग्य उम्मीदवार था - कि अगर गांव का कोई भी बच्चा लापता पाया गया तो उसे जेल में डाल दिया जाएगा और फिर फांसी दे दी जाएगी।
अपने पेशेवर गतिविधियों पर इस प्रतिबंध का सामना करते हुए, कृष्णप्पा रेड्डी आसानी से विचलित नहीं हुए। उन्होंने क्या निष्कर्ष निकाला, यह ज्ञात नहीं है। इसके कुछ ही समय बाद, हरिजन महिला आदिमा, जो सफाईकर्मी वर्ग से थी, के नौ वर्षीय बेटे आदिराज के चंद्रगिरी कस्बे से लापता होने की सूचना उसकी मां ने दी।
चंद्रगिरि, रंगमपेट से मुश्किल से छह मील दूर है और जिले का मुख्यालय है। यहाँ हर सोमवार को एक साप्ताहिक बाज़ार लगता है, जिसे 'शंडी' कहते हैं। आसपास के गाँवों के लोग इस साप्ताहिक बाज़ार में आते हैं और ऐसी ज़रूरी चीज़ें और सामान खरीदते हैं जो उनके गाँवों में नहीं मिलते। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि कृष्णप्पा रेड्डी को एक सोमवार की सुबह बाज़ार में कई लोगों ने देखा था। छोटा लड़का, आदिराज, पिछली रविवार रात अपनी माँ के पास सोया था। सोमवार की सुबह उसने अपनी माँ से कहा कि वह बाज़ार घूमने जा रहा है, यह देखने के लिए कि वहाँ क्या देखने को मिलता है, और उसके बाद उसे किसी ने नहीं देखा।
शुक्रवार तक आदिमा ने हिम्मत जुटाकर पुलिस को अपने बेटे के सोमवार सुबह से लापता होने की सूचना दी। सब-इंस्पेक्टर को जब सुराग मिला, तो उसने एक जुट्का (टाट्टू द्वारा खींचा जाने वाला दो पहिया वाहन) मंगवाया और चालक को आदेश दिया कि वह टाट्टू को छह मील की दूरी तय करके रंगमपेट गांव तक पूरी रफ्तार से दौड़ाए। वहां उसने कृष्णप्पा रेड्डी की झोपड़ी की बड़ी सावधानी से तलाशी ली, इस उम्मीद में कि लापता लड़के के बारे में कोई सुराग मिल जाए—शायद खून से सना कपड़ा या चाकू, या उसके शरीर का कोई अंग, जैसे कि जिगर, हृदय या अन्य अंग, क्योंकि ये अंग बलि के अनुष्ठानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन उसे कुछ नहीं मिला।
अपनी असफलता से बेहद नाराज़ और निराश होकर, नाराज़ सब-इंस्पेक्टर कृष्णप्पा रेड्डी को हथकड़ी लगाकर चंद्रगिरी वापस ले गया और उसे वहाँ एक सप्ताह से अधिक समय तक रखा। लेकिन कोई भी सामने आकर यह नहीं कह पाया कि उसने उसे लापता लड़के आदिराज से बात करते देखा था। इससे भी बुरी बात यह थी कि कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो कम से कम यह कह सके कि उसने उस आदमी और बच्चे को एक साथ देखा था। आख़िरकार, याद रखिए, कृष्णप्पा रेड्डी एक जादूगर था! मान लीजिए कि वह उस आदमी या औरत पर श्राप दे दे जो उसके खिलाफ़ ऐसी गवाही दे, चाहे वह झूठी हो या सच्ची?
नौवीं सुबह सब-इंस्पेक्टर ने जादूगर को रिहा कर दिया और उसे छह मील पैदल चलकर अपने गाँव वापस जाने को कहा, जहाँ उसे रहना था और पुलिस की अनुमति के बिना गाँव नहीं छोड़ना था। इस पर कृष्णप्पा रेड्डी ने रहस्यमय ढंग से कहा, 'लोमड़ी तो चालाक होती है, लेकिन क्या वह सियार को मात दे सकती है?'
सब-इंस्पेक्टर कई दिनों तक उन शब्दों पर विचार करता रहा। क्या उसे सियार कहा गया था? या वह सिर्फ लोमड़ी था? आदिराज का क्या हश्र हुआ, यह कभी पता नहीं चला। लेकिन अगर सचमुच उसे गुप्त बलि के रूप में इस्तेमाल किया गया था, तो

जाहिर तौर पर शैतान उसे अपने पास नहीं रखना चाहता था। क्योंकि एक हफ्ते के भीतर ही पांचवां शिकार गायब हो गया।
इस बार एक महिला थी। और वह उस मोड़ के पास गायब हो गई जहाँ से रागिमनकोनार नामक नाले की ओर जाने वाला पैदल मार्ग रंगमपेट से पुलिबोनू जाने वाली सड़क से अलग होकर एक नाले की ओर मुड़ता है। यह मोड़ गाँव से तीन मील की दूरी पर है।
वेंकट्टम्मा नाम की उस महिला ने अपने पति के लिए दोपहर का भोजन तैयार किया था, जो सुबह अपने मवेशियों को लेकर जंगल में चराने के लिए निकल गए थे, जहाँ उन्हें चराने का अधिकार प्राप्त था। दोपहर होते ही वह भोजन लेकर उस स्थान पर जाने के लिए निकल पड़ी, जहाँ उन्होंने जाने से पहले मिलने का तय किया था—रागीमनकोनार नाले के किनारे उगने वाला पवित्र पीपल का पेड़, जहाँ से वह नाला लगभग तीस फीट नीचे एक चौड़े रेतीले गड्ढे में गिरता था, जहाँ केवल बरसात के मौसम में ही पानी जमा होता था।
वह आदमी भूख से क्रोधित हो गया; और जब उसकी पत्नी दोपहर का भोजन लेकर नहीं आई, तो उसका क्रोध भूख के अनुपात में बढ़ता चला गया। उसने तय किया कि जब वह आएगी तो उस आलसी औरत की खूब पिटाई करेगा। इससे उसे भविष्य में समय पर आने की सीख मिलेगी।
लेकिन पिटाई कभी हुई ही नहीं। वेंकट्टम्मा पिटाई सहने के लिए कभी आई ही नहीं।
उस दोपहर एक बेहद नाराज़ और क्रोधित चरवाहा अपने झुंड को सामान्य समय से बहुत पहले घर ले गया, ताकि वह देर से दोपहर का भोजन कर सके और अपनी पत्नी को सामान्य पिटाई के बजाय, जिसे वह हमेशा याद रखेगी, वैसी ही पिटाई कर सके जैसी कि आमतौर पर सजा के तौर पर की जाती थी। एक बार फिर उसे निराशा ही हाथ लगी। न तो उसका दोपहर का भोजन उसका इंतज़ार कर रहा था और न ही वेंकटम्मा। उसकी छोटी बेटी ने उसे बताया कि माँ ठीक दोपहर 12 बजे मिट्टी के बर्तन में खाना लेकर चली गई थी।
कुछ दिनों बाद खोजकर्ताओं को वह बातूनी घड़ा फुटपाथ के किनारे टूटा हुआ मिला, जो उस पीपल के पेड़ से आधे मील से भी कम दूरी पर था जिसके नीचे चरवाहा दोपहर भर इंतजार कर रहा था। लेकिन वेंकटम्मा का कोई सुराग नहीं मिला।
एक दिन मैं अपने एक भारतीय मित्र के साथ नागपतला के वन बंगले में एक सप्ताह के लिए डेरा डालने आया। यह बंगला रंगमपेट से एक मील दूर, पुलिबोनू जाने वाले रास्ते पर, जंगल के बाहरी इलाके के पास बना हुआ था। उस समय मेरे आने का तरीका और उद्देश्य कुछ असामान्य था। हालांकि मैं अपने साथ राइफल और बंदूक तो लाया ही था, लेकिन हमने किसी गंभीर शिकार यात्रा की योजना नहीं बनाई थी। मेरा मित्र, देवा सुंदरम, मुसीबत में था और मैं उसकी मदद करने के लिए उसे नागपतला लाया था। दरअसल, देवा सुंदरम को काली खांसी हो गई थी और उसने खुद बताया था कि उसकी उम्र अड़तीस वर्ष थी।
मुझे बीमारियों के बारे में बहुत कम जानकारी है और चिकित्सा के बारे में तो और भी कम। लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि काली खांसी बच्चों की बीमारी है और वयस्कों को शायद ही कभी होती है। फिर भी, देवा सुंदरम को यह बीमारी अपने छोटे बेटे से ही लगी थी। ऐसा लगता था कि सभी ज्ञात उपचारों से बेचारे को कोई फायदा नहीं हुआ था, न ही उनकी खांसी, घरघराहट और काली खांसी के दौरे कम हुए थे। एक शाम मैं संयोगवश बैंगलोर में उनके घर उनसे मिलने गया। वे सोफे पर दुबके बैठे थे, उनकी आँखें फटी हुई थीं, वे खांस रहे थे और गले से अजीब आवाजें निकाल रहे थे। दौरे के बीच उन्होंने मुझे घबराकर दूर जाने का इशारा किया और हकलाते हुए कहा: 'चले

जाओ। मुझे काली खांसी है। अगर तुम मेरे पास आओगे तो तुम्हें भी लग जाएगी। चले जाओ—चले जाओ।' उनकी पत्नी ने घबराकर बताया कि उन्होंने बाजार में मिलने वाली हर दवा और कई डॉक्टरों से इलाज करवा लिया है, लेकिन देव की हालत बिगड़ती जा रही है।
अब पता चला कि कुछ ही साल पहले मेरी बेटी जून और बेटे डोनाल्ड को काली खांसी हो गई थी। उस समय मैंने नागपट्टला में शिकार पर जाने की योजना बनाई थी। मेरी पत्नी, जो नर्स भी हैं, ने सोचा कि वहाँ की शुष्क और गर्म जलवायु से बीमारी जल्दी ठीक हो जाएगी और उन्होंने सुझाव दिया कि हम बच्चों को भी साथ ले जाएं। हमने ऐसा ही किया और उनकी बात सही साबित हुई। दोनों बच्चों की खांसी अड़तालीस घंटे के भीतर ठीक हो गई।
मैंने श्रीमती सुंदरम को इस बारे में बताया। देव ने दम घुटने की कोशिश करना थोड़ी देर के लिए रोककर मेरी बात सुनी। जंगल से प्रेम करने वाला देव मुश्किल से इतना ही कह पाया था, 'शानदार; चलो आज से शुरू करते हैं,' और फिर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। उसे देखना काफी मज़ेदार था और मैं अपनी हंसी मुश्किल से रोक पाया। बाद में उसने मुझसे कहा कि उसे मेरा सेंस ऑफ ह्यूमर कुछ खास पसंद नहीं आया।
हालांकि, इन सब के चलते, हम अगली सुबह नागपुतला के लिए निकल पड़े, वो भी मेरी उस समय की फोर्ड टी मॉडल कार में। हमने बेंगलुरु से थोड़ा जल्दी ही निकल गए ताकि देव को रात की ठंडी हवा का सामना न करना पड़े। टी मॉडल कार, अपनी तमाम खूबियों के बावजूद, तेज़ रफ़्तार वाली गाड़ी नहीं है, और लगभग 170 मील की दूरी होने के कारण हम नागपुतला देर रात तक ही पहुंच पाते। सुबह निकलकर और लगभग बीस मील प्रति घंटे की रफ्तार से धीरे-धीरे चलते हुए, बीच-बीच में रेडिएटर में पानी डालने और दोपहर के भोजन के लिए रुकते हुए, हम शाम पांच बजे से कुछ देर पहले बंगले पर पहुंच गए। तब भी काफ़ी गर्मी थी, और देव बहुत खुश था कि मैंने इस जगह आने का सुझाव दिया था। टी मॉडल कार के कठोर स्प्रिंग्स पर लंबी, थोड़ी असुविधाजनक और ऊबड़-खाबड़ यात्रा के बावजूद, चित्तूर से आगे निकलकर निचले इलाके में पहुंचने के बाद से उसकी खांसी कम हो गई थी।
फूस की छत वाले बंगले के चौड़े बरामदे में लालटेन की रोशनी में रात का खाना खाते हुए, मैंने 'बंगले के रखवाले' से बातचीत शुरू की, जो वन विभाग का एक विनम्र सेवक और मेरा एक पुराना दोस्त था, और उससे जंगली खुब्बर के बारे में पूछा, यानी उस छोटे से बंगले के आसपास के जंगलों में क्या हो रहा था, उसकी ताजा खबर।
वह उत्साह से फूला नहीं समा रहा था और ताबड़तोड़ भाषण देते हुए उस शैतान के कारनामों के बारे में बताने लगा जो पिछले कुछ महीनों में जंगल में आया था और जिसके कारण पहले ही पांच लोग लापता हो चुके थे।
अफवाहों, अपने अनुमानों, सदियों पुराने अंधविश्वास और बचपन में सीखी जादू-टोने की कहानियों के मिश्रण से, बंगले की रखवाली करने वाले उस बूढ़े व्यक्ति ने हमें एक दिलचस्प और रोमांटिक कहानी सुनाई, जिसमें पांचों पीड़ितों के गायब होने के बारे में शानदार विवरण दिए गए थे।
देव और मैं रोमांचित हो गए; और इसे और भी रोमांचक बनाने के लिए, जैसे ही हम सुन रहे थे, एक पैंथर लकड़ी काटने जैसी आवाज़ करते हुए कल्याणी नदी की ओर चलने लगा, जो जंगल के किनारे से होकर हमारे बैठने की जगह से आधे मील से भी कम दूरी पर बहती थी। 'आह-हा! आह-हा!' वह पुकार रहा था, उसकी आवाज़ लगभग लकड़ी काटने जैसी थी, बस उससे कहीं ज़्यादा तेज़ और गहरी थी।

उसकी आवाज़ों से हम अपने मन में पैंथर की गतिविधियों का अनुसरण कर सकते थे, जो बांस के झुंड से मुथी के पेड़ तक, और आश्रय देने वाली झाड़ियों से लंबी घासों के बीच से होते हुए कल्याणी नदी के किनारों पर लहराती सरकंडों की पट्टी तक, और उसकी शांत, लहरदार जलधारा के बीच से होकर तेजी से बहती है, जो घने, शांत और रहस्यमय अंधेरे जंगल की भूलभुलैया से होकर गुजरती है, जहां केवल मखमली-काले आकाश में तारे ही अशांत धारा पर अपना प्रतिबिंब डालते हैं।
उस रात हमने बंगले के अंदर सोने की कोशिश की, लेकिन बहुत गर्मी थी और घुटन भरे वातावरण में हवा का नामोनिशान नहीं था। ऊपर हमारे सिर के ऊपर घास की छत में उछल-कूद करते चूहे एक-दूसरे का पीछा करते हुए चीं-चीं कर रहे थे। अचानक उनमें से एक डर और फिर दर्द से चीख उठा। हम दोनों कमरे में बिछे सख्त तख्तों वाले पलंगों पर जागते हुए लेटे थे। चूहे ने कुछ सेकंड तक जोर-जोर से चीख मारी और फिर चुप हो गया। देव ने मुझसे पूछा कि क्या मैं बता सकता हूँ कि वह क्यों चीखा था। मेरे लिए जवाब एकदम स्पष्ट था। उसे किसी सांप ने काट लिया था, पकड़ लिया था और अब वह उसे निगलने की प्रक्रिया में था, जो इसी उद्देश्य से घास की छत में घुस आया था।
जब मैंने उसे यह बताया, तो देव बिस्तर से झटपट उठ खड़ा हुआ और चारपाइयों को बरामदे में ले जाने का सुझाव दिया। मुझे भी यह अच्छा विचार लगा। बरामदा न केवल ठंडा था, बल्कि उसकी छत जस्ता की थी, जहाँ चूहे रात भर उछल-कूद नहीं करते थे और साँप उनका पीछा नहीं करते थे।
उसके बाद हम सो गए, और देव ने रात भर मुझे ज्यादा परेशान नहीं किया। उसकी खांसी पहले से बेहतर हो गई थी।
'व्ही-ई-ई-ईव! कुक-कायाा-कायाा-खुक्कम।' अगली सुबह मुझे जंगली मुर्गे की जानी-पहचानी आवाज़ से नींद से जगाया, जब भोर का भ्रम छंट रहा था और अंधेरे का एक छोटा सा दौर फिर से शुरू हो रहा था। फिर असली भोर आई, जो पूर्वी क्षितिज पर फैल गई, और दूर के जंगल से ढके पहाड़ों को गुलाबी, सिंदूरी, लाल और गहरे नीले रंगों की भव्यता से भर दिया, जो मोर के हरे रंग में मिल रहे थे, जिसमें पीले, नारंगी और बैंगनी रंग की झलक थी। मैंने इससे पहले भी कई भोर और सूर्यास्त देखे थे, लेकिन उगते सूरज के सुनहरे गोले को जंगल की नम मिट्टी से उठने वाले कोहरे के घेरों को हटाते हुए देखने से मैं कभी नहीं थका।
'कुकड़ू-कुकड़ू।' बंगले के दक्षिण से यह आवाज़ आई, जहाँ एक मील दूर रंगमपेट गाँव बसा हुआ था। गाँव का मुर्गा, अपने जंगली चचेरे भाई की चुनौती सुनकर, जवाब देने की इच्छा को रोक नहीं पाया, हालाँकि लगभग दो मील की कृषि भूमि उन्हें अलग करती थी। उत्तर में एक मील दूर स्थित जंगल, एक नए दिन की शुरुआत के साथ जाग उठा, जब देवा सुंदरम ने अपना नींद से भरा सिर हिलाया और सुनने के लिए कोहनियों के बल उठ खड़ा हुआ।
दूर जंगल के किसी पेड़ पर बैठे एक मोर ने 'मिया-आ-ऊ, मिया-ऊ' की आवाज़ लगाई। चित्तीदार हिरण किसी चीज़ से डरकर लगातार 'आओ! आओ! आओ!' चिल्ला रहा था। शायद जिस पैंथर की आवाज़ हमने पिछली रात सुनी थी, वह घर लौट रहा था और उसने उन्हें डरा दिया था।
मैंने अपने प्राइमस स्टोव पर कुछ बेकन तला, जिसे हमने बैंगलोर से लाई हुई चपातियों के साथ खाया। हम उस खास कॉफी के लिए गर्म पानी उबलने का इंतजार कर रहे थे, जिसे देव ने उस सुबह बनाने का वादा किया था। और उसने अपना वादा निभाया। कॉफी बहुत स्वादिष्ट थी।

थोड़ी देर बाद हम जंगल में घूमने निकले और रागेमनकोनार नदी के किनारे स्थित पीपल के पेड़ तक गए, जिसके पास ही वेंकटम्मा नाम की महिला रहस्यमय तरीके से गायब हो गई थी। जाते समय मैंने ज़मीन का और रागिमनकोनार नदी के रेतीले तल का जायज़ा लिया, यह देखने के लिए कि रात में कौन-कौन से जानवर वहाँ से गुज़रे थे। कल्याणी नदी के किनारे पहुँचते ही हमें एक तेंदुआ के पदचिह्न दिखाई दिए। वह एक बड़ा नर तेंदुआ था। एक मील आगे एक मादा भालू जुमलम के पेड़ के नीचे आराम कर रही थी, जबकि उसके दो शावक उसके आसपास खेल रहे थे। रेत पर उनके छोटे-छोटे पैरों के निशान साफ़ दिखाई दे रहे थे। अलग-थलग पड़े सांभर, चित्तीदार हिरण और जंगली सूअर के पदचिह्न उन अन्य जानवरों के निशान दिखा रहे थे जो रात के अंधेरे में बाहर निकले थे।
लेकिन मुझे वो चीज़ बिल्कुल नहीं मिली जिसकी मुझे खास तलाश थी और जिसे पाने की मुझे उम्मीद थी: बाघ के पुगड़े। कोई बाघ उस रास्ते से नहीं गुजरा था। देव और मैं बंगले पर लौट आए, और कॉफी पीकर रंगमपेट की ओर दक्षिण दिशा में चल दिए। हम उस अजीब कहानी के दूसरे पहलू सुनना चाहते थे जो बंगले के रखवाले बूढ़े दादू ने पिछली रात खाने के दौरान सुनाई थी। पटेल और ग्राम मुंसिफ दोनों ने हमें और कॉफी पिलाकर स्वागत किया और गाँव वाले हमारे चारों ओर जमा हो गए। आगंतुकों का आना, खासकर दूर से आने वालों का, हमेशा बातचीत का मौका होता था।
'वह दुष्ट, डोराइलू?' एक बूढ़े, झुके हुए, लड़खड़ाते हुए और अपनी लाठी के सहारे खड़े व्यक्ति ने पूछा। 'जी हाँ, वह सचमुच जंगल में है और पाँच लोगों को पकड़ चुका है। लेकिन वह आपकी गोलियों से नहीं गिरेगा, महोदय, क्योंकि वह आपके सामने प्रकट होकर आपको मौका ही नहीं देगा। वह धूर्त है—सचमुच बहुत धूर्त। हालाँकि अगर वह खुद को दिखा भी दे, तो भी आपकी गोलियों का उस पर कोई असर नहीं होगा, लेकिन वह ऐसा कभी नहीं करेगा। क्योंकि आप अजनबी हैं, परदेसी हैं और हमसे अलग हैं। लेकिन वह जंगल में घात लगाए बैठा रहेगा, किसी झाड़ी के पीछे या ज़मीन में किसी गड्ढे में, या शायद वह एक भृंग के आकार का होकर किसी ऊँचे पेड़ की चोटी पर चढ़ जाएगा, जहाँ से वह हम में से किसी एक का इंतज़ार करेगा; चाहे वह पुरुष हो, स्त्री हो या बच्चा, जो भी अकेला वहाँ से गुज़रे। फिर पलक झपकते ही उसका आकार और रूप बदल जाएगा। एक छोटे से भृंग से वह एक विशालकाय राक्षस बन जाएगा। वह उस दुर्भाग्यशाली को पकड़ लेगा और उसे खा जाएगा और उसका कोई निशान नहीं छोड़ेगा।' यह सिलसिला तब तक ऐसे ही चलता रहेगा जब तक हम सब या तो उसे ले नहीं जाते या फिर इस शापित जंगल को उसके हवाले छोड़कर कभी इसमें प्रवेश नहीं करते।'
वहाँ मौजूद भीड़ ने उदासी भरे स्वर में सहमति में सिर हिलाया। ऐसे गहरे अंधविश्वास के सामने हम सचमुच बहुत असहाय महसूस कर रहे थे। मैंने तिरस्कारपूर्ण भाव दिखाने की कोशिश की और कहा: 'बकवास है, बुजुर्ग; मुझे आश्चर्य है कि आपकी उम्र और ज्ञान का व्यक्ति एक छोटे बच्चे की तरह बात कर रहा है। निस्संदेह यह कोई बाघ या तेंदुआ है जो आदमखोर बन गया है और सारी गड़बड़ी फैला रहा है।'
वह घमंडी मुस्कान के साथ बोला, 'मैं आदमखोर बाघों से पहले भी मिल चुका हूँ। जब मैं जवान था, तब उम्बलमेरु के पार खड़ी चट्टान के नीचे एक बाघ ने मुझ पर हमला कर दिया था। सौभाग्य से उस समय मेरे पास लकड़हारे की कुल्हाड़ी थी, जिसे मैंने उस दरिंदे पर फेंक दिया। और भी बड़े सौभाग्य से कुल्हाड़ी का ब्लेड सीधे उसकी आँखों के बीचोंबीच जा लगा। उस दिन उस बाघ का जिगर पानी बन गया। वह घूमकर भाग गया। इसलिए मैं यहाँ यह कहानी सुनाने आया हूँ। हो। हो। हो।' घटना की याद करते हुए वह बेजान-से हँस पड़ा।

'पर ये तो बिलकुल अलग बात है, साहब,' उन्होंने आगे कहा। 'देखिए: आप बाघों और तेंदुओं के बारे में जानते हैं, और हम जानते हैं कि आप एक शिकारी हैं जो पहले भी इन जंगलों में आ चुके हैं। क्या आपने कभी ऐसा बाघ या तेंदुआ देखा है जो अपने पैरों के निशान न छोड़े: किसी भी तरह का कोई निशान न छोड़े? जहां पाँचों शिकारों को ले जाया गया, वहां खून की एक बूंद भी न मिले। घसीटने का कोई निशान भी नहीं, जहां वो उनके शवों को जंगल में घसीटता या ले जाता हो। अगर इस समय इन इलाकों में कोई बाघ होता, खासकर आदमखोर, तो क्या हमें जंगल में, या धूल भरी पगडंडियों पर, रेतीले नालों में, या कल्याणी नदी के किनारों की नम मिट्टी पर उसके पदचिह्न नहीं मिलते? क्या हमें रात में अपने शिकार की तलाश करते हुए उसकी कराहने की आवाज़ें नहीं सुनाई देतीं? और यही बात तेंदुओं पर भी लागू होती है, हालाँकि कुछ हानिरहित तेंदु भी आसपास होते हैं। इसके अलावा, जैसा कि आप अच्छी तरह जानते हैं, साहब, तेंदुओं की आदत नहीं होती कि वे अपने शिकार को मारने के बाद बहुत दूर तक घसीटें।' एक तो उसमें इतनी ताकत नहीं है।
'अंततः, आदमखोर जानवर हमेशा अंधेरे में या शाम के समय हमला करते हैं, जब रात का अंधेरा छाने वाला होता है। लेकिन इस मामले में पांचों शिकार दिन दहाड़े, और वह भी दोपहर या शाम की चिलचिलाती गर्मी में किए गए हैं, जब सभी मांसाहारी जानवर आराम कर रहे होते हैं।'
'तुम इसे समझा नहीं सकते, है ना, डोराइलु? लेकिन मैं समझा सकता हूँ; और इसका स्पष्टीकरण सरल और स्पष्ट है। हमारा सामना स्वयं शैतान से है—एक ऐसी आत्मा जो अपनी इच्छा से प्रकट और लुप्त हो सकती है, और किसी भी रूप या आकार को धारण कर सकती है, एक कीड़े से लेकर एक राक्षस तक, जो वह स्वयं है। आपकी बंदूकें बेकार होंगी, सज्जनों। क्योंकि आप किसी हाड़-मांस के बाघ या तेंदुआ से नहीं लड़ रहे हैं। मैं आपको घर जाने की सलाह देता हूँ। शायद अगर आप उसे बहुत ज़्यादा नाराज़ करेंगे, तो वह आप में से किसी एक को ले जाए; शायद आप दोनों को ही।'
इतना कहकर बूढ़े व्यक्ति ने फिर से भावहीन मुस्कान बिखेरी। यह जताने के लिए कि उसने अंतिम शब्द कह दिया है, बूढ़े ने मुंसिफ़ के छोटे से ईंट-मिट्टी के मकान की दीवार की नींव पर पान और सुपारी का एक घूंट अचूक निशाने से थूक दिया। आस-पास खड़े लोगों ने सहमति और अनुमोदन व्यक्त किया। यहां तक कि पटेल और ग्राम मुंसिफ़ ने भी उदास भाव से सिर हिलाया।
देव और मैं चुपचाप नागपतला लौट आए। बूढ़े आदमी के शब्द मेरे कानों में गूंज रहे थे। यह कैसा प्राणी था जो न तो पैरों के निशान छोड़ता था, न खून का कोई निशान, न ही किसी तरह का घसीटने का निशान, जो पूरी तरह खामोशी से काम करता था, और जो दिन के सबसे गर्म समय में हत्या करता था? मेरे अनुभव में किसी भी आदमखोर ने ऐसा व्यवहार नहीं किया था। फिर भी मैं जानता था कि इन हमलों के लिए कोई बुरी आत्मा जिम्मेदार नहीं थी। इसका कोई तर्कसंगत कारण जरूर होगा।
पांचों लोगों की हत्याएं अनियमित अंतरालों पर की गई थीं। हर मामले में एक बात समान थी कि हर पीड़ित की हत्या या लापता होने की घटना दोपहर के ठीक बाद हुई थी। दूसरी बात, घटना का कोई अन्य प्रत्यक्षदर्शी नहीं था। कोथंडा रेड्डी के लापता होने के बारे में काफी हद तक अटकलें लगाई जा रही थीं; लेकिन निश्चित रूप से गाड़ीवान, व्यापारी, बांस काटने वाला और अपने पति के लिए भोजन ले जा रही महिला, सभी अकेले थे। छोटे व्यापारी के मामले में, घटना के समय उसके गधे उसके साथ थे। वे बोल नहीं सकते थे। महत्वपूर्ण बात यह है कि उनमें से किसी पर भी हमला नहीं हुआ था, न ही उन्हें चोट लगी थी और न ही उनकी हत्या हुई थी। और जाहिर तौर पर, जब

उनके मालिक गायब हो गए तो वे ज्यादा घबराए भी नहीं थे, क्योंकि अगले दिन वे सभी एक साथ चरते हुए पाए गए थे। अगर वे डर गए होते, तो स्वाभाविक रूप से वे हर दिशा में भाग जाते। और निश्चित रूप से, किसी बाघ या यहां तक कि किसी तेंदुआ के अचानक आने से कोई भी गधा बुरी तरह डर जाता।
हम बंगले में वापस आए और हमने अपना सादा दोपहर का भोजन तैयार किया। देव ने मुझसे पूछा: 'जॉक,'—वह मुझे पिछले अट्ठाईस वर्षों से हमेशा 'जॉक' कहकर बुलाता है—'तुम्हें क्या लगता है कि यह क्या है?'
'देव, यह बाघ या तेंदुआ के अलावा और कुछ नहीं हो सकता,' मैंने जवाब दिया, 'हालाँकि मुझे यह मानना पड़ेगा कि यह वाकई एक अजीब और अनोखा जानवर है। इस जंगल में हाथी या बाइसन नहीं हैं, और बिना उकसावे के हमला करने वाला एकमात्र दूसरा जानवर सुस्त भालू ही हो सकता है। और सुस्त भालू एक मूर्ख, अनाड़ी जानवर होता है। वह ज़रूर कोई निशान छोड़ जाता। इसके अलावा, वह अपने शिकारों के शवों को उठाकर नहीं ले जाता। वह उन्हें वहीं छोड़ देता जहाँ उसने उन्हें मारा था।'
दोपहर के भोजन के बाद मैंने देव से कहा: 'यह रहस्य मुझे बहुत आकर्षित करता है। मैं इसे सुलझाना ज़रूर चाहूँगा। मुझे बताइए, क्या लीला'—श्रीमती देवा सुंदरम—'आपके यहाँ और दस दिन रुकने पर आपत्ति करेंगी?'
वह इसके लिए बहुत उत्साहित था। दरअसल, शैतान के बारे में सुनने के बाद से देव अपनी काली खांसी को पूरी तरह से भूल चुका था, जो वैसे भी लगभग ठीक हो चुकी थी। इसलिए हममें से प्रत्येक ने उसकी पत्नियों को पत्र लिखकर बताया कि हम योजना से अधिक समय तक रुक रहे हैं। हालांकि हमने सीधे तौर पर नहीं कहा, लेकिन हमें उम्मीद थी कि वे यह अनुमान लगा लेंगी कि देव की काली खांसी ही हमारे रुकने का एकमात्र कारण है।
दोपहर तीन बजे तक हम बाघ के निशान ढूंढने के लिए वापस जंगल में थे। हमें कुछ नहीं मिला। हम सड़क पर चौथे मील के पत्थर तक चले और फिर पूर्व की ओर जंगल में मुड़ गए, दो फर्लांग चलकर नरसिम्हा चेरुवु नामक जलकुंड तक पहुँचे। कुंड के कीचड़ भरे किनारे पर भी हमें बाघ के पैरों के निशान नहीं मिले। हाल ही में एक तेंदुआ पानी पीने आया था और, ज़ाहिर है, कई तरह के हिरण भी दिखे।
सड़क मार्ग से लौटने के बजाय, हम कल्याणी नदी के किनारे-किनारे वापस आए। यहाँ हमें कई जगहों पर एक और तेंदुआ के पदचिह्न मिले। वह काफी बड़ा जानवर था, और निश्चित रूप से वह जानवर नहीं था जिसके पदचिह्न हमें नरसिम्हा चेरुवु में मिले थे। शायद वही बड़ा तेंदुआ पिछली रात आवाज लगा रहा था।
एक बात तो अब लगभग निश्चित थी। उस समय जंगल के उस हिस्से में कोई बाघ मौजूद नहीं था। लेकिन वहाँ निश्चित रूप से दो तेंदुआ थे; शायद और भी अधिक।
क्या उनमें से कोई आदमखोर था? अगर इस सवाल का जवाब 'हाँ' है, तो इस बात की और भी ज्यादा संभावना है कि गायब हुए पाँचों लोगों में से कम से कम एक या ज्यादा मामलों में हमले का कोई सबूत ज़रूर मिलना चाहिए था। क्योंकि आदमखोर पैंथर, हालांकि एक घातक जीव है, लेकिन उसमें बाघ जैसी शारीरिक ताकत नहीं होती कि वह अपने शिकार को उठाकर ले जा सके। कभी-कभी वह उसे वहीं खाना शुरू कर देता है, लेकिन आम तौर पर वह बचे हुए हिस्से को झाड़ियों में घसीटकर ले जाता है और वहीं खाता है। दोनों ही मामलों में, लगभग अनुभवहीन खोजकर्ताओं के लिए भी किसी न किसी तरह का सुराग ढूंढने के लिए पर्याप्त संकेत मौजूद होते।
हमें इसमें बेहद दिलचस्पी थी।

अगली सुबह हम सात मील पैदल चलकर पुलिबोनू पहुंचे और बांस काटने वालों के शिविर में अपनी पूछताछ जारी रखी, जो अभी भी वहीं था। कोई भी तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं दे सका, और यही सर्वमान्य धारणा थी कि इसके लिए कोई दुष्ट आत्मा जिम्मेदार है।
हमने कल्याणी नदी के किनारे, जंगली जानवरों के रास्तों और पुलिबोनू से निकलने वाले पैदल रास्तों की छानबीन की। इनमें से एक रास्ता उत्तर-पश्चिम दिशा में जाता है, और इसी रास्ते पर वह छोटा व्यापारी अपने गधों से अलग हुआ था। दूसरा पैदल रास्ता उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ता है, गुंडलपेंटा नामक एक पथरीले तालाब के किनारे से गुजरता है और एक ऊंचे, भयावह चट्टानी टीले की तलहटी में स्थित उंबलमेरु नामक एक अन्य तालाब तक जाता है। इसी क्षेत्र में कहीं पहला शिकार, गांव का जादूगर, बूढ़ा कोथंडा रेड्डी, गायब हो गया था।
पुलिबोनू से अलग होकर निकलने वाले ये दो रास्ते, रंगमपेट से पुलिबोनू जाने वाले मुख्य मार्ग के साथ मिलकर Y अक्षर बनाते हैं। हम रंगमपेट गांव से पुलिबोनू तक सात मील की दूरी इसी Y अक्षर की पूंछ पर चलकर तय कर चुके थे। वहां से हमने Y की ऊपरी शाखाओं में से प्रत्येक का अनुसरण एक मील से अधिक दूरी तक किया। उम्बालमेरु की ओर जाने वाले रास्ते पर हमें बाघ के पहले पदचिह्न मिले। ये कुछ दिन पुराने थे, लेकिन इनसे पुष्टि हो गई कि कम से कम एक बाघ इस क्षेत्र में मौजूद था। दोनों अलग-अलग दिशाओं में और Y की पूंछ पर, हमने तेंदुओं के पदचिह्न और एक असाधारण रूप से बड़े लकड़बग्घे के निशान देखे, लेकिन बाघ के कोई पदचिह्न नहीं मिले।
देव ने मुझसे पूछा कि क्या मुझे लगता है कि जो कुछ हुआ उसके लिए लकड़बग्घा जिम्मेदार हो सकता है, और मैंने इस सुझाव को सिरे से खारिज कर दिया। मैं कई बार और कई जगहों पर लकड़बग्घों से मिल चुका था, और मैंने उन्हें न केवल मनुष्यों के प्रति पूरी तरह से हानिरहित पाया था, बल्कि बेहद डरपोक भी। वे केवल मृत जानवरों का मांस खाते हैं, जैसे बाघों और तेंदुओं का शिकार, या किसी अन्य प्रकार से मरे हुए जानवर। मैंने उनके गांवों के कब्रिस्तानों में घुसकर शवों को खोदकर निकालने की अफवाहें सुनी हैं, और मैंने एक-दो बार अखबारों में पढ़ा था कि मध्य प्रदेश के कुछ जंगलों में उन्हें गांवों के बाहरी इलाकों से बच्चों को उठाकर ले जाने का आरोप लगाया गया था। लेकिन दक्षिण भारत में अपने पूरे अनुभव में मैंने इस तरह का एक भी मामला नहीं सुना था। दक्षिण के लकड़बग्घे अपना पूरा ध्यान मृत जानवरों, जानवरों और पक्षियों के मल-मूत्र और हर तरह की गंदगी पर ही केंद्रित करते हैं, साथ ही साथ छोटे जानवरों जैसे चूहे, छिपकली और घोंसला बनाने वाले पक्षियों को भी पकड़ लेते हैं। एक-दो बार उनके द्वारा बकरियों और भेड़ों पर हमला करने की खबरें भी आई हैं।
उस शाम अंधेरा होने के बाद जब हम नागपतला स्थित बंगले पर वापस लौटे तो हम बुरी तरह थक चुके थे, क्योंकि हमने अठारह मील से अधिक की दूरी पैदल तय की थी। और हमें बहुत भूख भी लगी थी। देव और मैं उस रात इतनी गहरी नींद सोए कि अगली सुबह जब हम उठे तो सूरज तेज चमक रहा था।
तीन दिन बाद हमारे दोस्तों, बांस काटने वालों ने, शैतान की पहचान का पहला ठोस सुराग दिया। उन्होंने पुलिबोनू में कुएं के पास वाले बाड़े में अपना बांस काटने का काम पूरा कर लिया था, और उन्हें काम पर रखने वाले बांस ठेकेदार ने पूरे दल को अगले बाड़े में भेज दिया, जहां उसे बांस काटने का अधिकार प्राप्त था। यह बाड़ा पुलिबोनू में मुख्य मार्ग छोड़ने के बाद, अक्षर Y की दाहिनी शाखा के बिल्कुल अंत में था। यह उम्बालमेरु नामक चट्टानी कुंड से आधे मील के भीतर था, और चेमाला घाटी

आरक्षित वन का प्राकृतिक उत्तर-पूर्वी सीमा बनाने वाली ऊँची चट्टान के लगभग आधार पर था, जहाँ शैतान ने अंततः अपनी पहचान प्रकट की।
पूरा क्षेत्र बांस से भरा हुआ था और वन विभाग ने इसे ब्लॉकों या कूपों में विभाजित किया था। जब बांस के तने एक निश्चित ऊंचाई और मोटाई तक बढ़ जाते थे, तो उस विशेष ब्लॉक या कूप की कटाई के लिए नीलामी की जाती थी, और बांस काटने वालों के दल को काम पर रखने वाले ठेकेदार ने नीलामी में सबसे ऊंची बोली लगाकर उस क्षेत्र में बांस काटने और बेचने का अधिकार प्राप्त कर लिया था। उसके लिए समय ही पैसा था, इसलिए उसने अपने कर्मचारियों को तुरंत उस स्थान पर भेजने में देरी नहीं की जहाँ उन्हें कटाई का काम शुरू करना था।
पहले ही दिन दोपहर में, काम से आराम कर रहे एक व्यक्ति की नज़र अचानक ऊपर की ओर पड़ी। चट्टान की चोटी पर, उसे एक बाघ का सिर और चेहरा दिखाई दिया, जो उसे घृणा से घूर रहा था। वह भाग गया।
उस रात या उससे भी आगे जंगल में डेरा डालने से बाँस काटने वालों ने इनकार कर दिया। उन्होंने अपने मालिक से कहा कि वे हर शाम बारह मील पैदल चलकर रंगमपेट की सुरक्षित जगह पर वापस जाना पसंद करेंगे और जब तक बाड़ा साफ नहीं हो जाता, तब तक अगली सुबह लौट आएंगे।
ठेकेदार प्रभावित नहीं हुआ। उसने तर्क दिया कि तेज़ चलने पर भी उन्हें एक तरफ़ जाने में ढाई घंटे लगेंगे। इसका मतलब था कि हर दिन पाँच घंटे काम का नुकसान होगा, और परिणामस्वरूप प्रतिदिन कम बाँस काटे जाएँगे। उसने उन्हें याद दिलाया कि जितने कम बाँस काटे जाएंगे, उतनी ही कम कमाई होगी। उन्होंने जवाब दिया कि अगर वह सहमत नहीं हुआ, तो वे सब मिलकर काम छोड़ देंगे। तब बाँस काटना बंद हो जाएगा और उसे कुछ भी नहीं मिलेगा। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि बाँस काटने और बाँस की कमाई से ज़्यादा उनकी अपनी जान मायने रखती है। ठेकेदार ने समझौता करने की कोशिश करते हुए कहा कि अगर वे दैनिक मज़दूरी में आनुपातिक कमी करने को तैयार हों, तो वह मान जाएगा। लेकिन ठेकेदार को वे लोग अड़ियल लगे। उन्होंने उसी दर पर मज़दूरी की माँग की और फिर से काम छोड़ने की धमकी दी।
'अरे हाँ,' ठेकेदार ने मन ही मन सोचा। 'हालात वाकई खराब हैं। दुनिया भर में मजदूर दिन-रात अड़ियल, झंझट भरे और काबू से बाहर होते जा रहे हैं। अगर मैंने हार नहीं मानी, तो ये लोग चले जाएंगे और फिर मेरे लिए बांस काटने वाला कोई नहीं बचेगा। इस क्रूर बाघ पर लानत हो। उसकी बहुत दर्दनाक मौत हो, और वो भी जल्दी।'
इसलिए वह उनकी मांग पर सहमत हो गया और उस शाम सूर्यास्त के समय ठेकेदार समेत पूरा दल रंगमपेट लौट आया। रास्ते में उन्हें नागपतला वन लॉज के गेट से होकर गुजरना पड़ा, जहाँ देव और मैं ठहरे हुए थे। सभी अंदर चले गए और जिस व्यक्ति ने बाघ देखा था, उसने हमें उसके बारे में बताया। ठेकेदार ने भी अपनी दुख भरी कहानी सुनाई। हम सब बहुत खुश हुए। आखिरकार रहस्य सुलझ गया। वह दुष्ट आत्मा, कोई अवास्तविक या काल्पनिक प्राणी नहीं था, जैसा कि सबने सोचा था। वह सचमुच एक बाघ था, जैसा कि मैंने लगभग अनुमान लगाया था।
बाघ ने अगले ही दिन हमला करने का फैसला किया। बांस काटने वाले सुबह लौट आए थे और अपने-अपने काम में लगे हुए थे। सबने मिलकर उस जगह से दूरी बनाए रखी, जहाँ उनमें से एक ने पिछली शाम बाघ को देखा था। मजदूरों के प्रभारी मुखिया ने दोपहर के समय काम बंद करने और इमली के पेड़ों के झुरमुट के नीचे भोजन करने के लिए इकट्ठा होने की घोषणा लंबी, तीखी सीटियों की एक श्रृंखला से की, जो उसने अपनी जीभ और दांतों की मदद से बजाई। इसके लिए एक घंटा दिया गया था

और बांस काटने वालों ने इसका पूरा फ़ायदा उठाया। उम्बालमेरु के तालाब से निकलने वाली एक छोटी सी धारा से मटमैला पानी भरकर करी और चावल खाने के बाद, वे बैठ गए और धूम्रपान किया, या पान के पत्ते चबाए, या ऊंघने लगे।
एक घंटे के अंत में, मिस्त्री ने सीटी की एक समान श्रृंखला बजाकर उन्हें काम पर लौटने का संकेत दिया, और जल्द ही बांस के कटने और गिरते हुए तनों के गिरने की आवाज उस घाटी से गूंज उठी, जिसमें वे काम कर रहे थे।
लेकिन जिस आदमी ने कल बाघ को देखने की सूचना दी थी, उसकी कहानी ने उन्हें घबरा दिया और उन्हें असामान्य रूप से सतर्क कर दिया। और इसी वजह से उस दिन उनमें से एक की जान बच गई। क्योंकि लकड़ी काटते समय वह बार-बार घबराकर अपने चारों ओर देख रहा था। इस तरह उसने देखा कि एक बड़े झुंड के नीचे से उगी कोमल बांस की कुछ पत्तियां हल्की-हल्की हिल रही थीं, और भूरी-पीली चमकती आंखें उसे लालच भरी निगाहों से घूर रही थीं।
जैसे ही बाघ ने छलांग लगाई, वह आदमी कीइठा उठाए हुए तेज़ी से घूम गया। अपने शिकार की हरकत देखकर बाघ समझ गया कि उसे देख लिया गया है और वह आदमी बचाव के लिए तैयार है। उसने अपनी रीढ़ और पूंछ को ज़ोर से घुमाकर हवा में ही अपनी छलांग रोक दी और अपने शिकार से बस थोड़ी ही दूर पर उतरा। उसके नुकीले दांत हवा में बेजान से लहराते हुए जानवर को बाल-बाल से चूक गए।
लेकिन बाघ को इस तरह का स्वागत पसंद नहीं आया। वह अपने शिकार को अचानक पकड़ने की उम्मीद कर रहा था। ज़मीन पर उतरते ही वह ज़ोर से गुर्राया, एक पल के लिए दुबका रहा मानो दोबारा हमला करने वाला हो, फिर पूंछ घुमाकर वापस उसी बांस के झुरमुट में कूद गया जहां से वह आया था और तुरंत ही नज़रों से ओझल हो गया।
उस आदमी ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर खतरे का संकेत दिया, 'अय्यो! अय्यो! पिल्ली! पिल्ली!' (मदद! मदद! बाघ! बाघ!), और फिर इमली के झुरमुट की ओर भागा। चारों ओर फैले उसके साथी मज़दूरों ने उसकी चीखें सुनकर अफ़रा-तफ़री मचा दी और इमली की ओर दौड़ पड़े। ठेकेदार, जो अभी-अभी वहाँ सो गया था, शोरगुल और लोगों के बेतहाशा भागते हुए उस तक पहुँचने की वजह से बुरी तरह जाग गया।
दिन भर काम करने का कोई ख्याल नहीं था। ठेकेदार के नेतृत्व में कुली अपनी पूरी ताकत लगाकर उम्बलमेरु के दुर्गम इलाकों में छिपी खूंखार बिल्ली से यथासंभव दूरी बनाने की कोशिश कर रहे थे।
देव और मैंने सुबह जल्दी चाय पी ली थी और पुलिबोन जाने वाली सड़क पर तीसरे मील के पत्थर के पास ही पहुंच गए थे कि हमें गाँव की सुरक्षा की ओर दौड़ते हुए कुछ लोग बड़बड़ाते हुए मिले। वे सब एक साथ बड़बड़ाने लगे और स्थिति को समझने और उस व्यक्ति को ढूंढने में कम से कम एक मिनट लग गया जिसने इतना भयानक अनुभव झेला था। उसने बाघ का वर्णन करते हुए कहा कि वह अपने चारों पैरों पर 'इतनी ऊँचाई' तक खड़ा था, और ऐसा करते हुए उसने अपनी छाती की ओर इशारा किया। सचमुच, वह एक विशालकाय जानवर था।
शाम के 3:45 बज रहे थे जब यह सब हुआ। मैंने उस आदमी से जल्दी करने को कहा, क्योंकि उसे देव और मुझे लेकर वापस आना था और हमें वह जगह दिखानी थी जहां बाघ दिखाई दिया था। मेरे ऐसा करने का एक कारण था। सीधे शब्दों में कहें तो, मैं उसकी कहानी की पुष्टि करना चाहता था, यदि संभव हो तो बाघ के पदचिह्नों को स्वयं देखकर। आपको याद रखना चाहिए कि उस समय तक हमने इस अजीब जानवर के बारे में केवल अतिरंजित कहानियाँ ही सुनी थीं, इसके वास्तविक अस्तित्व का कोई सबूत नहीं था। और मैं अपने अनुभव से जानता हूँ कि जब जंगल के सीधे-

सादे लोगों के मन में अतिशयोक्ति को बेकाबू होने दिया जाता है तो वह किस हद तक जा सकती है।
वह आदमी स्तब्ध रह गया। उस भयानक जगह पर वापस जाना? बिलकुल नहीं! यह विचार ही धिक्कार है! उसने ये सब और भी बहुत कुछ मुझसे अपनी स्थानीय भाषा में कहा, और मैं उसके इस तरह महसूस करने के लिए उसे दोष नहीं दे सकता था। लेकिन मुझे उसकी कहानी की पुष्टि करनी ही थी। इसलिए मैंने सख्ती बरती।
मैं आपको यह नहीं बताऊंगा कि मैंने क्या कहा, लेकिन थोड़ी देर में देव, बांस काटने वाला और मैं अपनी पूरी गति से उस सड़क पर चल रहे थे जो पुलिबोनु की ओर जाती थी, और वहां से अक्षर Y की दाहिनी शाखा के साथ-साथ उम्बालमेरू की ओर।
हमें नौ मील का सफर तय करना था और हमने शाम 6:30 बजे से कुछ पहले ही इसे पूरा कर लिया। जल्द ही अंधेरा होने वाला था, लेकिन इससे हमें कोई खास चिंता नहीं थी क्योंकि देव और मैं दोनों अपने साथ इलेक्ट्रिक टार्च लाए थे, ताकि अगर हम लंबी पैदल यात्रा से देर से लौटें तो काम आ सकें। वैसे भी, रात में ज़्यादा ठंड नहीं होगी, सिवाय देव के, जो काली खांसी का मरीज होने के कारण रात की ठंडी हवा और ओस में बाहर नहीं निकलना चाहता था। मैंने उसे धीरे से चेतावनी दी।
'काली खांसी!' उसने हैरानी से कहा। 'किसने कहा कि मुझे काली खांसी है? मुझे हुई थी, लेकिन बहुत समय पहले।'
कुली ने उस जगह की ओर इशारा किया जहाँ वह बाँस काट रहा था, और उन छोटे बाँस के पत्तों की ओर भी इशारा किया जिन्हें उसने हिलते हुए देखा था और जहाँ से बाघ निकला था। हमने उसके आस-पास और पीछे की ज़मीन की जाँच की। शाम ढलने के बावजूद हमें बाघ के पदचिह्न साफ़ दिखाई दिए। बेशक, वह बहुत बड़ा नहीं था, और ढलती रोशनी और गिरे हुए, सड़े हुए बाँस के पत्तों के कारण, जिन पर वह चला था, मैं यह नहीं बता सका कि वह नर था या मादा। लेकिन वे निश्चित रूप से बाघ के ही पदचिह्न थे।
ज़मीन का मुआयना करने के बाद मैं एक प्रसन्न और संतुष्ट व्यक्ति बनकर उठा। रहस्य सचमुच सुलझ गया था। वह शैतान जिसने हमें इतने लंबे समय तक उलझन में डाल रखा था, कोई अलौकिक या रहस्यमयी चीज़ नहीं थी। वह बस एक बाघ था; लेकिन बेहद शर्मीला, चालाक और पकड़ में न आने वाला बाघ। साथ ही डरपोक भी।
हमारे पास चारा नहीं था; बैठने के लिए कुछ भी नहीं था। चारों ओर पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। बंगले तक वापस जाने का मतलब था अंधेरे में बारह मील पैदल चलना और टार्च की बैटरी खत्म कर देना। तो, क्यों न जंगल में ही रात बिता दी जाए, बस मजे के लिए? हो सकता है हमें कुछ सुनाई दे या दिखाई दे, या हो सकता है कुछ भी सुनाई या दिखाई न दे। कम से कम मज़ा तो आएगा। नागपतला के चूहों और साँपों से भरे विश्राम गृह में एक और रात बिताने से तो बेहतर ही है।
मैंने सुझाव दिया। देव उत्साहित था। हमारे साथ आया आदमी हैरान रह गया। लेकिन बेचारा कुछ नहीं कर सकता था, जब तक कि वह अकेले वापस न चला जाए—जो उसने बिल्कुल नहीं चुना।
अगला सवाल था कि कहाँ बैठें। उम्बालमेरु का तालाब ही बैठने के लिए सबसे अच्छी जगह हो सकती थी। कम से कम मुझे तो यही उम्मीद थी कि हमें वहां कोई उपयुक्त जगह मिल जाएगी। जिस जंगल में हम थे, वह बहुत घना था और बांस बहुत पास-पास थे। रात होते-होते हम पूरी तरह से उनके बीच घिर जाते।
जब हम तालाब तक थोड़ी दूरी तय कर पाए, तब तक काफी अंधेरा हो चुका था। ज़मीन पर छिपने की जगह बनाने का समय नहीं था, पेड़ पर किसी भी तरह का

चबूतरा या मचान बनाने की तो बात ही दूर थी। लेकिन पास ही में एक बरगद का पेड़ था, और वह काफी बड़ा और पुराना पेड़ था।
बरगद एक ऐसा वृक्ष है जिसकी शाखाओं से जड़ें निकलती हैं। ये जड़ें ज़मीन तक पहुँचती हैं, अंदर तक जाती हैं और समय के साथ-साथ अन्य वृक्षों के तने बन जाती हैं। इस प्रकार बरगद लगातार बढ़ता जाता है, अधिक से अधिक ज़मीन को ढक लेता है और इसमें कई तने होते हैं, जिनमें मूल वृक्ष और बाद में जुड़ पकड़ चुके कई अन्य तने शामिल होते हैं। इस वृक्ष का एक सुंदर नमूना—भारत में अपनी तरह का सबसे बड़ा—कलकत्ता के वनस्पति उद्यानों में स्थित है। यह एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। यह उन प्रमुख स्थलों में से एक है जिनके लिए वहाँ के उद्यान प्रसिद्ध हैं। इसी तरह का एक विशाल बरगद का वृक्ष बेंगलोर से लगभग बयालीस मील और थाली नामक गाँव से दो मील दूर स्थित है। इसके आधार पर कभी एक पत्थर का मंदिर हुआ करता था। लटकती जड़ों ने मंदिर की पत्थर की दीवारों को पूरी तरह से ढक लिया है, हालाँकि इसका प्रवेश द्वार खुला रखा गया है। सरसरी नज़र से देखने पर जड़ें एक प्राकृतिक गुफा जैसी लगती हैं। संयोगवश, गुफा के पिछले हिस्से में एक छेद में एक सौ साल पुराना काला कोबरा रहता है। मंदिर की देखरेख करने वाले ब्राह्मण पुजारी उसे एक बोर में दूध के कटोरे और आधा दर्जन अंडे खिलाते हैं। पुजारी ने मुझे बताया कि यह पेड़ 2,000 साल पुराना है।
लेकिन उम्बालमेरु की बात पर लौटते हैं। तालाब से कुछ ही दूरी पर एक बरगद का पेड़ था। इतना बड़ा और पुराना तो नहीं था, लेकिन उसकी कई जड़ें थीं जो मुख्य तने के चारों ओर ज़मीन में उगनी शुरू हो गई थीं। इनमें से दो जड़ें लगभग चार फीट की दूरी पर थीं; प्रत्येक का व्यास लगभग आठ फीट रहा होगा।
हम दोनों पेड़ों की जड़ों के बीच ज़मीन पर बैठ गए। मैंने अपनी राइफल पकड़ी और जंगल की ओर मुँह करके बैठ गया। देव मेरी तरफ पीठ करके तालाब की ओर मुँह करके बैठा था, और उसकी गोद में मेरी .12 बोर की शॉटगन पड़ी थी, जिसके दाहिने बैरल में एक घातक गोली और बाएँ बैरल में एक एल.जी. कारतूस भरा हुआ था। बास काटने वाला देव के दाहिनी ओर बैठा था और उसी दिशा में मुँह किए हुए था। देव और मेरे पास अपनी-अपनी टॉर्च थीं, लेकिन जहाँ मैं टॉर्च को राइफल से जोड़ने वाले क्लैंप लाना भूल गया था, वहीं देव और शॉटगन के लिए कोई क्लैंप नहीं थे। इसलिए बरगद काटने वाले को देव के लिए टॉर्च पकड़नी थी और ज़रूरत पड़ने पर उसे जलाना था। बरगद की जड़ों से सुरक्षित हमारे दोनों किनारों को छोड़कर, हम पूरी तरह से खुले में थे और दिखाई दे रहे थे।
देव के सामने तालाब था। अगर बाघ पास वाले किनारे से नहीं आता, तो उसे पानी पार करना पड़ता, जहाँ कुछ हद तक सुरक्षा थी। कम से कम हम उसकी आवाज़ तो सुन सकते थे। मेरे सामने जंगल था, जिसमें अंधेरा होने के बाद टॉर्च जलाए बिना कुछ दिखाई नहीं देता था। हम तीनों को सिर्फ अपनी सुनने की शक्ति पर ही निर्भर रहना पड़ता। अगर बाघ तालाब के किनारे से या मेरे सामने वाले जंगल से आता, तो वह हमें तुरंत देख लेता। आगे क्या होता, यह किस्मत की बात थी और बाघ के साहस पर निर्भर करता। क्या वह तीनों आदमियों पर एक साथ हमला करता या चुपके से भाग जाता?
देव उतना ही प्रसन्न और उत्साहित था जितना कोई स्कूली बच्चा मेले में होता है।
देखते ही देखते घना अंधेरा छा गया। मेरे पंख वाले दोस्त, पक्षी, हमारे बैठने से बहुत पहले ही अपने घोंसलों में जा चुके थे। थोड़ी देर बाद केवल दूर से आती हुई सींगदार उल्लू की आवाज़ सुनाई दे रही थी। कहीं बहुत ऊपर, विशाल चट्टानों की दुर्गम पहाड़ियों में, शायद एक मील दूर, वह नीचे फैली घाटी को निहारते हुए बड़े आराम से

बैठा था। और बैठे-बैठे ही वह 'हूऊऊ-ऊऊ! हूऊऊ-ऊऊ!' की आवाज़ निकाल रहा था।
अचानक तालाब में एक मेंढक टर्राने लगा। 'खोर! खोर! खोर! खोर! खोर!' दूसरे मेंढक भी एक-एक करके उसमें शामिल हो गए। यह एक धड़कता हुआ, स्पंदित संगीतमय स्वर बन गया।
'स्किच! स्किच! स्किच! स्किच!' बांस काटने वाला, जिसकी पीठ मेरी बाईं बांह से छू रही थी, अचानक चौंक गया। मैं कल्पना कर सकता था कि वह अंधेरे में घूर रहा होगा। लेकिन वह तो बस एक पानी का मेंढक था।
बुल-मेंढक से काफी छोटा और लंबे, पतले पिछले पैरों वाला यह मेंढक तालाबों और झीलों के किनारे आधा डूबा हुआ बैठा रहता है। कभी-कभी इनमें से कोई एक मेंढक पानी की सतह पर कुछ गज तक उछलता है, अपने पिछले पैरों से ज़ोरदार लातों से सतह को लगभग छूते हुए, फिर रुक जाता है और अपनी आँखें और आधा सिर पानी से बाहर निकालकर तैरने लगता है। पानी पर उछलने या कूदने की इसी क्रिया से वह आवाज़ निकली थी जिसके कारण कुली अचानक चौंक गया था।
मुझे पता था कि जब तक कोई एक मेंढक कभी-कभार पानी की सतह पर तैरता रहे, तब तक चिंता की कोई बात नहीं है। लेकिन अगर कई मेंढक एक साथ ऐसा करने लगें, तो यह एक बहुत ही विश्वसनीय संकेत होगा कि कोई चीज आ रही है और उसने उन्हें डरा दिया है, जिसके कारण वे पानी के बीच में शरण लेने के लिए मजबूर हो गए हैं।
उम्बालमेरु तालाब बहुत बड़ा नहीं है। अंडाकार आकार का यह तालाब लगभग साठ फीट लंबा और तीस फीट चौड़ा है। उत्तरी और संकरे छोर पर यह चट्टानों से घिरा है, जो ढलान के तल पर स्थित भूभाग का ही विस्तार है। बाकी तीन तरफ जंगल है। हम पूर्वी किनारे पर बैठे थे। अब अँधेरा होने के कारण कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन बैठने से पहले मैंने ऊपर देखा और हमारे ऊपर फैली ढलान को देखा, जिसकी ऊंचाई शायद 500 फीट थी।
मेरे पीछे पानी के किनारे मेंढक जोर-जोर से टर्रा रहे थे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। तभी सींग वाले उल्लू ने अपनी डरावनी आवाज फिर से शुरू कर दी: 'हूऊऊऊ! हूऊऊऊ! हूऊऊऊ!'
नीचे घाटी में अचानक एक चिड़िया चीखने लगी: 'क्या तुमने किया! क्या तुमने किया! जल्दी! जल्दी! जल्दी! जल्दी!' किसी चीज़ ने चिड़िया को डरा दिया था। आखिर क्या हो सकता था? लगभग एक साथ ही, मैंने महसूस किया कि देवा सुंदरम और कुली की पीठ मेरे पीछे सीधी और तन गई। लेकिन मुझे पता था कि अभी समय है। जिस भी चीज़ ने चिड़िया को डराया था, अगर वह हमारी तरफ आ रही थी, तो उसे आने में कम से कम पाँच मिनट, शायद दस मिनट और लगेंगे।
मेरे सामने जंगल में एक छोटा जानवर पत्तों को सरसरा रहा था। शायद वह नेवला था, या फिर दक्षिण भारतीय जंगलों में बहुत कम पाए जाने वाले उन जीवों में से एक, जैसे कि रैटल। सरसराहट और सन्नाटा बीच-बीच में सुनाई दे रहा था, क्योंकि वह छोटा जानवर भोजन की तलाश रोककर अपने संभावित दुश्मनों की आहट सुन रहा था। फिर वह दोबारा ज़मीन खोदने और पत्तों को खुरचने लगा।
अचानक सब कुछ रुक गया और सन्नाटा छा गया। पाँच मिनट लगभग पूरे हो चुके थे। क्या इसने किसी के आने का आभास किया होगा? इसी विचार के साथ ही मैंने महसूस किया कि मेरे दोनों साथियों की कोहनियाँ उत्तेजित होकर मेरी पीठ के निचले हिस्से में चुभ रही थीं।

मैंने बहुत धीरे से अपना सिर घुमाया। पहले तो मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर, पानी की सतह की हल्की धुंधली रूपरेखा के बीच एक हिलती हुई काली आकृति की तरह, कुछ हमारी ओर बढ़ता हुआ प्रतीत हुआ।
मुख्य बरगद के पेड़ की बाहरी शाखाओं से पड़ने वाली काली छाया में वह गायब हो गया और पूरी तरह आंखों से ओझल हो गया। लेकिन जब ऐसा हुआ, तब वह हमारी ओर आ रहा था। यह सोचकर मुझे बहुत घबराहट हुई। मुझे पूरा यकीन था कि वह बाघ ही था, और अंधेरे में असहाय होकर किसी आदमखोर बाघ का हमारे ऊपर हमला करना वाकई एक अपमानजनक अंत होता।
मैं अपने दाहिने घुटने पर संतुलन बनाते हुए मुड़ा। राइफल का बट कंधे पर रखकर, मैंने उसका मुंह उस दिशा में किया जहाँ मुझे लगा कि हत्यारा होगा और जल्दी से अपने बाएं अंगूठे से टार्च का बटन दबाया। तेज़ रोशनी से एक भयानक सिर दिखाई दिया, जिसमें से दो नीली-हरी आँखें आश्चर्य से मेरी ओर देख रही थीं, टॉर्च की रोशनी उनमें पूरी तरह से चमक रही थी। लेकिन वे कायर, धूर्त और षड्यंत्रकारी आँखें थीं, हालांकि उनकी चौंकी हुई अभिव्यक्ति थोड़ी नादान लग रही थी। विशाल सिर, जो एक बड़े लकड़बग्घे के ढीलेदार शरीर के अनुपात से कहीं अधिक बड़ा था, हमारी ओर देख रहा था। मैं उसके लंबे, सीधे कान, काला थूथन और गले के नीचे का काला धब्बा स्पष्ट रूप से देख सकता था, हालांकि सामने से होने के कारण, उसके शरीर का अधिकांश भाग, जिस पर काली धारियाँ थीं, छिपा हुआ था।
मैंने मशाल जलाए रखी। हम तीनों बिना हिले-डुले चुपचाप खड़े रहे।
'ग्रर-र्र-र्र! ग्-ड्! ग्-ड्! ग्-ड्!' आश्चर्यचकित जानवर गुर्राया, वह एक पल के लिए भी प्रकाश के स्रोत को, और न ही मानव हस्तक्षेप से उसके संबंध को समझ पा रहा था।
फिर शायद उसकी नाक ने, या शायद सिर्फ उसकी सहज प्रवृत्ति ने, उसे बता दिया।
'फ्फ! फ्फ!' वह फुफकारा और अपनी अजीबोगरीब लहरदार चाल से छिपने के लिए भागा। उसकी चाल उसके बेहद छोटे और कमजोर पिछले पैरों की वजह से थी, जो उसके लंबे और ताकतवर अगले पैरों के साथ तालमेल बिठाने की कोशिश कर रहे थे। वह बेढंगे तरीके से दौड़ रहा था, जबकि उसकी गर्दन और पीठ पर बालों की लटें सीधी खड़ी थीं, जिससे ऐसा लग रहा था मानो वह हमारी आंखों के सामने अचानक अपने आकार से दोगुना बड़ा हो गया हो। उसकी भूरी पूंछ, जो उसके बाकी शरीर की तरह ही पूरी तरह से कांटेदार थी, एक पंख वाले ब्रश की तरह पीछे की ओर फैली हुई थी।
लकड़बग्घा झाड़ियों में गायब हो गया, लेकिन वह वहां से गया नहीं। वह हमारे चारों ओर एक बड़े घेरे में दौड़ता रहा, झाड़ियों को चीरता हुआ अपना रास्ता बनाता रहा, और साथ ही तरह-तरह की अजीबोगरीब और परेशान करने वाली आवाजें निकालता रहा: 'हा! हा! हा! हा! हा!' वह खिलखिलाकर हंसा, 'ये क्या हो रहा है? हा! हा!'
जब वह हमारे हवा की दिशा वाली तरफ आया और आखिरकार हमारी गंध पहचान पाया, तब उसे समझ आया कि आस-पास ही इंसान बैठे हैं। उसने अपनी चीखें बदलकर तिरस्कार भरी आवाज़ें निकालनी शुरू कर दीं: 'ची! शी-ए! शी-ए!' और इधर-उधर भागने लगा, उम्मीद कर रहा था कि हम चले जाएँगे। लेकिन हम नहीं गए और वह इससे खुश नहीं था। बल्कि, वह और भी नाराज़ हो गया। 'गरार! गरार!' वह गुर्राया, फिर गरारे जैसी आवाज़ में विरोध करते हुए बोला, 'गुद्दार! गुद्दार! गुद्दार! गुद्दार! गुद्दार!'
हमारी ज़िद पर अड़े रहने से नाराज़ होकर, वह जंगल में खूब शोर मचाता रहा, इधर-उधर भागता रहा और अजीबोगरीब आवाज़ें निकालता रहा, यहाँ तक कि हम उसे सुनकर तंग आ गए। एक बात साफ़ समझ में आने लगी। अगर हमने इस बकबक

करने वाले मेहमान को नहीं भगाया, तो बेहतर यही होगा कि हम अपना सामान समेटकर बंगले पर वापस चले जाएँ और कुछ घंटे चैन से सो जाएँ।
'भागो! भागो!' मैंने कहा। 'भागो! भागो!' देव चिल्लाया। 'ची! पो फ़िसाच! (शैतान जाओ!),' कुली ने दोहराया। लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ; क्योंकि वह जाने को बिल्कुल तैयार नहीं था।
मैंने अपने बगल की मिट्टी में मिट्टी का ढेला ढूँढा, मिल गया और उसे शोर मचाने वाले घुसपैठिए पर फेंक दिया। उसने पहले से भी ज़्यादा शोर मचाया।
'गोली उचूद थायवूली मेले!' बांस काटने वाले ने सलाह दी, जिसका अर्थ है, 'फलां को गोली मारो!' लेकिन वह बेचारा लकड़बग्घा था, हालांकि वह अपने काम से काम नहीं रख रहा था, और मैं ऐसा करना भी नहीं चाहता था। शोर असहनीय था।
वह लकड़बग्घा फिर से नजर आया—पानी के कुंड की हल्की चमक के बीच एक गहरी छाया, जो तारों की रोशनी को प्रतिबिंबित कर रही थी।
तभी पानी के दूसरी ओर से बाघ की गुर्राहट सुनाई दी: 'आ-ऊ-ओम! आ-ऊ-ओम!'
लकड़बग्घे पर इसका असर तुरंत हुआ। वह वहीं रुक गया, मानो पत्थर बन गया हो। उसके लंबे कान साफ़ दिखाई दे रहे थे, जब उसने अपना सिर घुमाकर उस भयानक आवाज के स्रोत को ढूंढने की कोशिश की। अगले ही पल वह गायब हो गया!
गिरे हुए पत्तों पर से भागते हुए उसकी सरसराहट की कुछ सेकंड तक आवाज सुनाई दी। फिर सन्नाटा छा गया: गहरा और डरावना।
हमें पता था कि जब बाघ ने गुर्राया था, तब वह हमारे सामने और पानी के उस पार कहीं था। लेकिन क्या वह अभी भी वहीं था? हो सकता है, लेकिन यह भी उतना ही संभव है कि वह अब हमारे पीछे या किसी भी तरफ हो। क्योंकि बाघ लकड़बग्घे की तरह अपनी हरकतों का संकेत नहीं देते। या हो सकता है वह चला गया हो।
लकड़बग्घे ने उसे आगाह कर दिया था और वह समझ गया था कि सब कुछ ठीक नहीं है। सवाल यह था: क्या वह जांच करना चाहेगा? या लकड़बग्घे की तरह चुपचाप निकल जाएगा? अगले कुछ पलों में हमें जवाब मिल जाएगा, और यह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण था। इसलिए हम चुप रहे और सतर्क रहे।
मिनट धीरे-धीरे बीतते गए और एक घंटा गुज़र गया। दूर से आती झींगुरों की चहचहाहट और पास से आती मेंढकों की टर्राहट के अलावा और कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। मुझे लकड़बग्घे की वापसी की कामना होने लगी। उसकी आवाज़, भले ही बेतुकी थी, लेकिन कुछ ठोस और वास्तविक थी। लेकिन यह सन्नाटा बेचैन करने वाला और परेशान करने वाला था! हम सब बेचैन हो गए।
आधी रात आई और गुज़र गई, फिर ठंड बढ़ गई। हमें सूखी पत्तियों और झाड़ियों में हल्की सरसराहट और मंद-मंद सरसराहट की आवाज़ें सुनाई दीं। शायद चूहे या अन्य छोटे जानवर पानी पर भोजन कर रहे थे और अपनी प्यास बुझा रहे थे।
एक परछाई हमारे सिर के ऊपर से गुजरी। हमें पंखों के फड़फड़ाने की भारी आवाज सुनाई दी। फिर से सन्नाटा छा गया।
'हू-हू! हू-हू!' सींगदार उल्लू अब हमारा साथी बन गया था। इसमें कोई शक नहीं कि वह जानता था कि छोटे जीव कब पानी पीने आएंगे और कुछ पलों के लिए खुद को सामने लाएंगे। हमें कभी पता नहीं चला कि उसने कब हमला किया; लेकिन हमने उसका नतीजा ज़रूर सुना।
एक खरगोश (भारत में जिसे 'खरहा' कहते हैं) शिकार बना। हमने उसकी दया की भीख मांगती हुई चीख सुनी, जब उल्लू के क्रूर पंजे उसकी कोमल पीठ में धंस गए, और हमने उसकी शक्तिशाली चोंच के उसके सिर पर लगने की हल्की 'धड़-धड़' की आवाज सुनी। फिर खरगोश की चीख थम गई। क्योंकि वह मर चुका था।

घंटे धीरे-धीरे बीतते गए और ठंड बढ़ती गई। बरगद के पेड़ों की घनी शाखाओं के कारण हमें ठीक ऊपर का आकाश दिखाई नहीं दे रहा था; लेकिन पानी के गड्ढे के ऊपर बने खुले मैदान से, जहाँ से कुछ देर पहले एक विशाल उल्लू उड़कर गया था, हमें आकाश की झलक मिल रही थी। आसमान में कोई बादल नहीं थे और एक-दो तारे दूर टिमटिमा रहे थे।
साफ़ आसमान की वजह से पृथ्वी को सूर्य की रोशनी के बाद बची हुई थोड़ी-बहुत गर्मी को विकीर्ण करने में मदद मिली। ठंड तेजी से बढ़ती गई। इससे भारी ओस गिरने लगी और हमारे सिर के ऊपर बरगद के दो तनों और उसकी शाखाओं के कारण हम सुरक्षित थे, फिर भी हम अपने आसपास के पेड़ों की पत्तियों से नमी टपकने की आवाज सुन सकते थे।
बेचारा कुली बहुत दुबला-पतला था और उसे ठंड से बहुत तकलीफ होने लगी थी। मैं उसकी कंपकंपी अपनी पीठ पर महसूस कर सकता था और उसके दांतों की हल्की सी कटकटाहट सुन सकता था। मेरे हाथों में राइफल की नली बर्फ जैसी ठंडी थी और उस पर ओस की बूंदें धीरे-धीरे बह रही थीं। मैंने नमी को अंदर जाने से रोकने के लिए नली का मुंह नीचे की ओर कर दिया।
कुछ हद तक ठंड ने मच्छरों को निष्क्रिय कर दिया था, जो सूर्यास्त के बाद से काफी सक्रिय थे। चूहों और अन्य छोटे जानवरों की हल्की खरोंच की आवाज़ें भी मंद पड़ गईं। निस्संदेह, उन्हें भी ठंड लग रही थी। मेंढकों का समूह भी धीरे-धीरे शांत हो गया और उनमें से किसी एक की छिटपुट आवाज़ सुनाई देने लगी। सुबह का वह समय था, जब रात के जीव भी आराम करते प्रतीत होते हैं।
सुबह 3 बजे के बाद हवा चलने लगी। हमारे नीचे घाटी में मौजूद गर्म हवा, जो अब तक ठंडी हो चुकी थी, काफी देर पहले ही जमीन से ऊपर उठ चुकी थी और उसकी जगह उत्तर और उत्तर-पूर्व की ओर स्थित ऊंचे ढलान से आने वाली ठंडी हवा ने ले ली थी। यह हवा घाटी में तेज़ झोंकों के साथ बहती हुई सरसराहट और सिसकारी भर रही थी और छोटे पेड़ों की चोटियों को झुका रही थी।
मैं बाघ के बारे में सोचना भूलने लगा और मुझे नींद आने लगी। लेकिन इतनी ठंड थी कि झपकी लेना भी मुश्किल था। दूर से आती एक जंगली मुर्गे की बांग से पता चला कि सुबह के 4 बज चुके हैं। हमारी निगरानी खत्म होने वाली थी और बाघ अभी तक नहीं आया था।
लगभग पाँच बजे भोर का भ्रम हुआ, जिससे जल्दी सूर्योदय की उम्मीद जगी। फिर, हमेशा की तरह, कुछ मिनटों के लिए फिर से घना अंधेरा छा गया। पूर्व की ओर ढलान की चोटी की धुंधली आकृति से संकेत मिला कि रात का समय आखिरकार समाप्त हो रहा है। नीचे की घाटी अभी भी अंधेरे में डूबी हुई थी, जबकि ऊपर की चट्टानें हल्के गुलाबी रंग की कोमल छटाओं में दिखाई देने लगीं, जो बैंगनी और नीले रंग की पृष्ठभूमि के साथ विचित्र रूप से मिश्रित थीं। इनके सामने ढलानों पर उगने वाले पेड़ों से धुंधे के गुच्छे ऊपर की ओर ऐसे उठ रहे थे मानो हमलावर रेड इंडियनों के समूह के धुएं के संकेत हों।
'वुम्प! वुम्प! वुम्प!' यह जोशीली आवाज़ चट्टानी ढलान पर गूंज उठी और नीचे जंगल से घिरी घाटी में खोखली गूंज के साथ गूंजती रही। यह नर लंगूर की आनंदमयी पुकार थी, जो दक्षिण भारत के जंगलों में रहने वाला एक बड़ा, भूरे रंग का बंदर है, जिसके चेहरे पर काली मूंछें और असामान्य रूप से लंबी, घुमावदार पूंछ होती है। वह जागकर आने वाले दिन का स्वागत कर रहा था। जल्द ही अन्य लंगूर भी उसमें शामिल हो गए और एक के बाद एक पुकारें चट्टान से चट्टान तक गूंजती रहीं और फिर जंगल से घिरी घाटी में गूंजती हुई दूर जाकर मंद पड़ गईं।

जहां हम बैठे थे, वहां काफी उजाला था, हालांकि सूरज अभी तक पूरब की ओर ढलान की चोटी पर स्थित चट्टानों और पत्थरों की नुकीली कतार के ऊपर नहीं चढ़ा था। आखिरकार हम उठे, पैर पटके, अंगड़ाई ली और जम्हाई ली ताकि नींद न आने वाली, असहज रात के असर को दूर कर सकें, और नागपतला स्थित बंगले तक बारह मील की पैदल यात्रा शुरू की। हममें से कोई भी अच्छे मूड में नहीं था, और न ही किसी को बात करने का मन था।
बंगले के द्वार पर हमें अपने कुछ दोस्त मिले, जो बांस काटने वाले थे और गांव से हमारे लौटने का इंतजार कर रहे थे। किसी ने पूछा, 'क्या हुआ?' दूसरे ने पूछा, 'क्या बाघ आया था?' तीसरे ने पूछा, 'क्या उसने तुम पर हमला किया?'
'भांग को धिक्कार है!' मैंने चिढ़कर जवाब दिया। फिर, मेरा मन नरम पड़ गया और मैंने अपने कुली को कहा कि वह अपने साथियों को सारी घटना का ब्यौरा दे दे। वे ज़ोर-ज़ोर से चर्चा कर रहे थे जब मैंने चाय के लिए गर्म पानी बनाने के लिए केतली चूल्हे पर रखी। और वे अभी भी चर्चा कर ही रहे थे जब देव और मैं सख्त पलंगों पर गिर पड़े और तुरंत सो गए।
हम दोपहर भर सोते रहे और शाम करीब 4 बजे उठे, फिर देर से दोपहर का खाना खाया और साथ में चाय भी पी। उसके बाद हम सब मिलकर बाघ से हिसाब बराबर करने का कोई तरीका सोचने लगे।
तथ्यों को इकट्ठा करने पर, या यूँ कहें कि जितने तथ्य हमें ज्ञात थे, उनसे हमने पाया कि हमारा सामना एक ऐसे जानवर से था जो आदमखोरों के सामान्य व्यवहार से बिल्कुल अलग था। पहली बात तो यह थी कि उसने जितने भी मानव शिकार किए थे, वे सभी दोपहर के समय, दिन की भीषण गर्मी में किए थे। दूसरी बात यह थी कि उसके सभी शिकार लगभग एक ही क्षेत्र में, उम्बालमेरु तालाब और चट्टानी इलाके से कुछ मील की दूरी के भीतर ही हुए थे, जहाँ वह रहता हुआ प्रतीत होता था। आम तौर पर, आदमखोर एक बड़े क्षेत्र में घूमते हैं और एक निश्चित मार्ग का अनुसरण करते हैं, जो कभी-कभी सौ मील से भी अधिक लंबा होता है। तीसरी बात यह थी कि जिन लोगों को वह अपना शिकार बनाता था, उन्हें वह पूरी तरह से और रहस्यमय तरीके से गायब कर देता था। एक भी शव बरामद नहीं हुआ था। चौथी बात यह थी कि वह असामान्य रूप से शर्मीला जानवर प्रतीत होता था, और उसमें सामान्य से कहीं अधिक कायरता थी, जो सभी आदमखोरों में आम तौर पर पाई जाती है, जब कोई इंसान उसका विरोध करता है। इस मामले में, बांस काटने वाले ने उसे अपने कोइथा से डराकर भगा दिया था, जबकि पिछली रात लकड़बग्घे की चेतावनी ने उसे चुपके से भागने पर मजबूर कर दिया था, जबकि वह आसानी से हम पर हमला कर सकता था। पांचवीं बात, ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि इसमें बाघों की तरह अपने जंगल क्षेत्र में घूमने की आदत थी। हमने जिन जंगल के रास्तों या नदी-नालों की तलाशी ली थी, उनमें से किसी पर भी हमें इस जानवर के पदचिह्न नहीं मिले। छठी बात, हमें आसपास के क्षेत्र में मवेशियों के मारे जाने की कोई सूचना नहीं मिली थी।
हमें इससे कुछ भी समझ नहीं आया, इसलिए हमने एकमात्र संभव काम करने का फैसला किया - उम्बालमेरु जलकुंड के आसपास एक या दो जीवित मछलियों को चारा बनाकर छोड़ देना, हालांकि हमें शायद ही उम्मीद थी कि उन्हें कोई मछली पकड़ेगी।
इसी बात को ध्यान में रखते हुए हम उस रात खाना खाने के बाद रंगमपेट गाँव गए। गाँव वालों ने तुरंत सहयोग किया और देव और मैंने लगभग चालीस रुपये में (उन दिनों के हिसाब से) एक-एक लगभग तीन-चौथाई विकसित बैल खरीद लिए। अंग्रेज़ी मुद्रा में यह लगभग तीन पाउंड प्रति बैल था! उनमें से एक भूरे रंग का था और दूसरा

राख-धूसर। हमने जानबूझकर सफेद या काले रंग के जानवरों से परहेज किया, क्योंकि कुछ बाघ दोनों रंगों के शिकार से दूर रहते हैं, खासकर सफेद रंग के। हम कोई जोखिम नहीं लेना चाहते थे। सौदा पूरा होने के बाद, हम अपने जानवरों को वापस वन लॉज ले गए और रात के लिए उन्हें मोटर-शेड में अलग-अलग हिस्सों में बाँट दिया, और अपनी मॉडल टी कार को बाहर निकाल दिया।
अगली सुबह जल्दी ही हम काम में जुट गए और दो बांस काटने वालों की मदद से अपने जानवरों को वापस उम्बालमेरु ले आए। हमने एक जानवर को पानी के गड्ढे के किनारे बरगद के पेड़ के नीचे बांध दिया, और दूसरे को लगभग दो मील दूर, पुलिबोनू की ओर जाने वाले रास्ते के पास बांध दिया। यहाँ भी हमने उसे एक चुने हुए पेड़ के पास बांध दिया। हमने जानबूझकर ऐसा किया ताकि अगर कोई जानवर मारा जाए, तो हमारे पास बैठने और बाघ के लौटने का इंतज़ार करने के लिए एक उपयुक्त पेड़ मौजूद हो।
इन सबमें हमें दोपहर तक का समय लग गया, इसलिए जब हम नागपतला स्थित विश्राम गृह लौटे तब तक शाम हो चुकी थी।
अगली सुबह हमने फोर्ड कार से पुलिबोनू तक के पहले सात मील के ऊबड़-खाबड़ रास्ते को तय किया। कार आगे नहीं जा सकी क्योंकि सड़क वहीं खत्म हो गई थी। इसलिए हम पैदल ही अपने शिकारों को देखने गए। वे दोनों जीवित थे।
हमने बारी-बारी से दोनों को खोलकर पानी तक ले गए और फिर उन्हें दोबारा बांध दिया, ताकि दोनों को अगले दिन तक खाने के लिए पर्याप्त भोजन मिल सके। इसके बाद हम और कुछ नहीं कर सकते थे। देव ने कहा कि वह तिरुपति शहर के कुछ मंदिरों में दर्शन करना चाहेंगे, जो बंगले से लगभग पंद्रह मील दूर था। तो हमने ऐसा किया।
तिरुपति हिंदू तीर्थयात्रा का एक प्रमुख केंद्र है, जहां साल भर हजारों श्रद्धालु भगवान गोविंदा को श्रद्धांजलि अर्पित करने आते हैं और उनके नाम का जाप करते रहते हैं। इन तीर्थस्थलों पर आने वाली सभी महिलाओं को तीर्थयात्रा के प्रतीक के रूप में अपने सिर के सारे बाल मुंडवाने होते हैं। चूंकि वे प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में आती हैं, इसलिए मुंडवाए गए बालों की मात्रा बहुत अधिक होगी।
वापस लौटने से ठीक पहले हम रेलवे स्टेशन पर बने जलपान कक्ष में चाय पीने के लिए रुके। कुछ देर तक कोई ट्रेन आने वाली नहीं थी, इसलिए प्रबंधक उस समय खाली था। तो वह हमारे पास आकर बैठ गया और समय बिताने के लिए बातचीत शुरू कर दी। भारत के सहज और सरल स्वभाव के साथ उसने हमसे पूछा कि हम कौन हैं, कहाँ से आए हैं, क्यों आए हैं, और ऐसे ही कई अन्य प्रश्न पूछे।
देव ने बड़े ही सौम्य भाव से उसे सारी जानकारी दे दी। प्रबंधक, जो शिकार के बारे में काफी कुछ जानने का दावा करता था, उसने भी इस बात से सहमति जताई कि बाघ का सामान्य व्यवहार अत्यंत असामान्य था और आदमखोर बाघ के सामान्य व्यवहार के अनुरूप नहीं था।
फिर उसने कुछ ऐसा कहा जिससे मैं एकदम चौंककर बैठ गया। 'मुझे आश्चर्य है कि क्या यह वही बाघिन हो सकती है जो कुछ महीने पहले शहर में आए एक सर्कस से भाग निकली थी।'
अब मेरी बारी थी सवाल पूछने की, और मैंने उन पर सवालों की बौछार कर दी। कौन सा सर्कस? कितने समय पहले? बाघिन कहाँ से भागी थी? क्या कोई रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी? क्या उसे दोबारा पकड़ लिया गया था?
उन्होंने मेरे सवालों के जवाब टुकड़ों में दिए, और उनके द्वारा दी गई जानकारी से हमें निम्नलिखित तथ्य पता चले। एक छोटा सा सर्कस, जिसमें एक बाघिन और कुछ अन्य

जानवर थे, तिरुपति आया था और शहर से लगभग एक मील दूर डेरा डाला था। सर्कस के मालिक ने रेलवे स्टेशन पर बने भोजनालय के प्रबंधक से दोस्ती कर ली थी क्योंकि वे दोनों शराब नहीं पीते थे, और ऐसे ज़िले में जहां शराबबंदी लागू है, शराब न पीने वाले लोग अपनी ज़रूरतों को पूरा करने की चाह में एक-दूसरे से बहुत कुछ साझा करते हैं।
एक शाम, कुछ गिलास चुपके से पीने के बाद, सर्कस के मालिक का मूड थोड़ा ठीक हो गया और उसने जलपान कक्ष के प्रबंधक को बताया कि दो रात पहले बाघिन भाग गई थी। उसकी देखभाल करने वाले मूर्ख व्यक्ति ने उसके पिंजरे का दरवाज़ा ठीक से बंद नहीं किया था। मालिक पुलिस को सूचित करने से डर रहा था, और चूंकि वह एक मिलनसार व्यक्ति था और अपने कलाकारों और कर्मचारियों के बीच सम्मानित था, इसलिए उसे विश्वास था कि वे यह रहस्य किसी को नहीं बताएंगे। और किसी ने नहीं बताया। लापता बाघिन को खोजने का आधा-अधूरा प्रयास किया गया, लेकिन किसी ने भी उसे नहीं देखा। चूंकि जंगल तिरुपति से एक मील की दूरी पर है, मालिक ने स्वाभाविक रूप से यह निष्कर्ष निकाला कि उसकी बाघिन वापस जंगल में चली गई होगी जहाँ वह अपना ख्याल रख सकेगी। उसने अपने नुकसान को स्वीकार कर लिया और सर्कस आगे बढ़ गया।
मैंने मैनेजर से पूछा कि क्या उसने भागने से पहले इस जानवर को कभी देखा था। उसने जवाब दिया कि उसने देखा था, क्योंकि सर्कस मालिक ने उसे जितनी बार चाहे उतनी बार शो देखने की छूट दे रखी थी। वह बहुत बड़ी बाघिन नहीं थी, लेकिन पूरी तरह से विकसित थी। उसने आगे कहा कि उसे वह असामान्य रूप से खूंखार लगती थी, क्योंकि उसने उसे अक्सर हर दिन गोमांस का अपना एक ही भोजन खाते समय गुर्राते और दहाड़ते देखा था। उसे यह भी लगता था कि उसे कभी पूरी तरह से प्रशिक्षित नहीं किया गया था, क्योंकि उसने उसे सर्कस के बाघों के सामान्य करतब करते हुए कभी नहीं देखा था।
मेरे मन में एक जिज्ञासु विचार आया और मैंने उससे पूछा: 'इस बाघिन को उसका दैनिक भोजन लगभग किस समय मिलता था?'
उन्होंने मेरी तरफ़ कुछ हैरानी से देखा, लेकिन तुरंत जवाब दिया: 'दोपहर में, सर्कस वालों के अपना दोपहर का भोजन समाप्त करने के बाद।'
रहस्य सुलझ गया, और उस जानवर की विचित्र आदतें अब रहस्य नहीं रहीं। क्योंकि अब मुझे पूरा यकीन था कि आदमखोर वही भागी हुई बाघिन थी, कोई और जानवर नहीं।
दोपहर में खाना खाने की उसकी आदत बनी रही। वह लोगों से बेहद डरती थी—जब तक कि वह उन पर अचानक हमला करके उन्हें झटपट मार न डाले। वह ठीक से शिकार नहीं कर पाती थी, इसलिए उसने आम आदमखोर बाघों की तरह कोई निश्चित इलाका तय नहीं किया था। लोगों से डरने के कारण, वह अपने शिकार को जितनी जल्दी हो सके, बिना कोई निशान छोड़े, अपराध स्थल से बहुत दूर ले जाकर खा जाती थी। और, इतने लंबे समय तक पिंजरे में रहने के बाद भी उसकी ये आदतें पूरी तरह नहीं छूटी थीं, इसलिए उसने अपने लिए एक ठिकाना ढूंढ लिया था, शायद कोई गुफा, और उसे अपना स्थायी निवास बना लिया था, बजाय इसके कि वह आम बाघों की तरह, चाहे वे आदमखोर हों या नहीं, जंगल के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में भटकती रहे।
जैसे-जैसे मैं इस बारे में सोचता गया, मुझे अपने सिद्धांत के सही होने का और भी पक्का यकीन होता गया। और उसका ठिकाना निस्संदेह उंबलमेरु के आस-पास ही कहीं था; शायद किसी गुफा या चट्टानी खोखले हिस्से में, ढलान के नीचे। आख़िरकार,

सीधी रेखा में तिरुपाते से उंबलमरु के पास की ढलान की दूरी बीस मील से ज़्यादा नहीं हो सकती, अगर इतनी भी हो तो। और बाघ के लिए इतनी दूरी तय करना कोई बड़ी बात नहीं है।
मैंने उस समय देव को अपने विचार नहीं बताए, बल्कि जलपान कक्ष के प्रबंधक से लगातार सवाल पूछता रहा। लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि उसने हमें वह सब बता दिया था जो उसे पता था। वह केवल इतना ही बता सका कि सर्कस तिरुपति से रेनिगुंटा, फिर पुत्तूर नामक स्थान पर और उसके बाद मद्रास शहर से लगभग चालीस मील दूर स्थित रेलवे स्टेशन अरकोनम चला गया था। वह मालिक के साथ अनियमित रूप से पत्र व्यवहार करता था और इन सभी स्थानों से उसे पत्र मिलते थे। फिर पत्र आने बंद हो गए, इसलिए अब उसे पता नहीं था कि सर्कस कहाँ चला गया है।
आखिरी बात जो उसने मुझे बताई, वह यह थी कि उसे याद था कि बाघिन का नाम रानी था।
जब आखिरकार हम उस शाम अंधेरा होने के बाद तिरुपति से नागपटला स्थित वन बंगले में वापस लौटने के लिए निकले, तो मुझे लगा कि हमारी यात्रा अत्यंत उपयुक्त रही।
अगली सुबह भोर से पहले हम पुलिबोन गए, गाड़ी वहीं छोड़ दी और अपने शिकार को फिर से देखने गए। दोनों ज़िंदा और स्वस्थ थे। उसके बाद हमने कई नालों और रास्तों की छानबीन की, ताज़े बाघ के पंजों की तलाश में और अपने शिकार से मिलने की उम्मीद में। लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। शाम हो चुकी थी जब हम बंगले पर वापस लौटे। हमने खाना खाया और फिर रंगमपेट गए, जहाँ हमने रामैया नाम के एक व्यक्ति से मदद मांगी, जिसने कई साल पहले चमाला घाटी में शिकार यात्राओं पर मेरी मदद की थी। मुझे उम्मीद थी कि वह अब मेरी मदद कर पाएगा।
रामैया एक असाधारण व्यक्ति हैं, कम से कम गाँव वालों के हिसाब से तो ऐसा ही है। उनसे मेरी पहली मुलाकात लगभग आठ-दस साल पहले हुई थी, जब उन्होंने कुछ ऐसी बातों में दिलचस्पी दिखाई थी जो गाँव के किसी और व्यक्ति को जानने की ज़हमत ही नहीं उठाती। रामैया का दावा था कि उन्होंने घाटी में उगने वाली एक गुप्त जड़ी बूटी खोजी है, जिसकी पत्तियों को खाने से किसी भी ज़हरीले साँप के काटने का असर खत्म हो जाता है। उन्होंने बताया कि वे इन पत्तियों को सुखाकर पीसकर अपनी झोपड़ी में रखते हैं और इनकी मदद से उन्होंने कई लोगों की जान बचाई है जिन्हें कोबरा और रसेल वाइपर ने काटा था, साथ ही मवेशियों को भी बचाया है। मेरे कहने पर वे मेरे लिए एक छोटा पौधा लाए थे जिसे मैं बैंगलोर ले आया और अपने बगीचे में उगाने की कोशिश की। दुर्भाग्य से, वह पौधा मर गया। रामैया ने एक और जड़ी बूटी भी खोजी थी, जिसकी कुछ पत्तियाँ चाय बनाते समय चायदानी में डालने से उसका स्वाद बहुत बढ़ जाता है। मैंने इस जड़ी बूटी को आजमाया और पाया कि उनका दावा सही था। उन्होंने मुझे टेनिस बॉल के आकार का एक चिकना, अंडाकार पत्थर दिया था, जिसके बारे में उन्होंने कहा था कि इसमें से हमेशा थोड़ी नमी निकलती रहती है, खासकर सुबह के समय। मैं उस पत्थर को अपने साथ बैंगलोर ले गया और पाया कि उनकी बात सच थी। इस विचित्र घटना ने मुझे इतना आश्चर्यचकित और उत्सुक कर दिया कि मैंने बैंगलोर के एक भूविज्ञानी को वह पत्थर दिखाया। लेकिन वह सज्जन, मेरी ही तरह आश्चर्यचकित थे, उन्होंने इस विचित्र घटना का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया।
एक बार शिकार यात्रा के अंत में, मैंने रामिया को उसकी सेवाओं के लिए भुगतान करने की पेशकश की थी। इसके बदले में, उसने मुझसे घाटी के ऊपरी हिस्से में, जहाँ से जंगल शुरू होता था, एक ज़मीन का टुकड़ा सस्ते में खरीदने के लिए कहा, और

उसे खेती करने की अनुमति देने के लिए कहा, और बदले में जब भी मैं शिकार के लिए नागपूतला आऊँगा, वह मेरी सेवा करने के लिए तैयार रहेगा।
मैंने उसकी बात मानकर लगभग ढाई एकड़ ज़मीन पचास रुपये (अंग्रेज़ी मुद्रा में चार पाउंड से भी कम) में खरीद ली। उसके बाद, रामैया ने बिना किराया दिए उस ज़मीन पर खेती की और जब भी मैंने उसे बुलाया, वह खुशी-खुशी मेरी मदद के लिए आया।
तो उस रात हमने रामिया को उसकी झोपड़ी से बाहर निकाला और उसके दरवाजे पर बैठकर मैंने उसे वह सब बताया जो मैंने भोजनालय के प्रबंधक से सुना था। जब हमें इस हत्यारे के बारे में पहली बार पता चला था, तब मैंने रामिया से सलाह ली थी, लेकिन चूंकि वह उन कई लोगों में से एक था जो 'बुरी आत्मा' के सिद्धांत में विश्वास करते थे, इसलिए मैंने अब तक उसकी मदद लेना उचित नहीं समझा था।
भाग निकली बाघिन की कहानी सुनाने के बाद मैंने कहा: 'मुझे पूरा यकीन है कि अगर कोई चमाला घाटी के जंगल के हर कोने को जानता है, तो वह आप ही हैं। अब बहुत ध्यान से सोचिए। क्या उम्बालमेरु तालाब के पास या उससे दो-तीन मील के दायरे में, ढलान के नीचे कोई गुफा है?'
उनका जवाब तुरंत आया। 'जी हाँ, साहब। देखिए—एक, दो, तीन, चार, और हाँ, एक और, कुल पाँच गुफाएँ हैं, लगभग उतनी ही दूरी पर जितनी आपने बताई है। उनमें से दो उत्तर दिशा में हैं, और बाकी तीन पूर्व दिशा में। उत्तर दिशा वाली दो गुफाओं में से एक खड़ी चट्टान पर काफी ऊँचाई पर है। मुझे नहीं लगता कि कोई बाघ आसानी से उसका इस्तेमाल करेगा। चढ़ाई बहुत खड़ी है। मुझे पता है कि लंगूर बंदर उस गुफा के आसपास खेलते हैं, लेकिन वे उसमें रहते नहीं हैं। बाकी चारों गुफाएँ बाघ के आराम करने के लिए बिल्कुल उपयुक्त होंगी।'
मैं बेहद खुश हुआ और मैंने अपनी खुशी जाहिर की। मैंने कहा, 'वाह, रामिया! क्या आप मुझे उन सभी के पास ले जाएंगे?'
'ज़रूर, साहब,' उसने तुरंत सहमति दे दी। 'मैंने आपसे वादा किया है कि इस जंगल में आप जहाँ भी चाहें, मैं आपके साथ किसी भी समय चलूँगा, इसके बदले में आपने मुझे इतने वर्षों तक बिना किराया लिए आपकी ज़मीन पर खेती करने की अनुमति दी है। मैं अपना वादा निभाऊँगा, साहब,' उसने सरल शब्दों में कहा।
मैंने उनसे इन गुफाओं के बारे में और पूछताछ की और मुझे पता चला कि उनके मन में जिन चार गुफाओं का जिक्र था, उनमें से तीन काफी छोटी थीं। चौथी गुफा, जो पूर्वी दिशा में ढलान के नीचे स्थित तीन गुफाओं में से एक थी, बाकी गुफाओं से काफी बड़ी थी और उसका अपना एक नाम था: 'मडापेंटा', क्योंकि यह ढलान से नीचे बहने वाली एक छोटी सी धारा से बने एक छोटे से तालाब के पास थी। पेंटा का अर्थ तालाब होता है।
मैंने उससे पूछा, 'हम एक ही दिन में इन चारों गुफाओं का दौरा कर पाएंगे, है ना?'
'जी साहब, बिल्कुल,' उन्होंने सहमति जताई। 'उत्तर की ओर वाली गुफा उंबलमेरु से मुश्किल से एक मील दूर है। पूर्व की ओर वाली तीनों गुफाएँ जलकुंड से दो से तीन मील की दूरी पर हैं, लेकिन एक-दूसरे से एक मील के भीतर ही स्थित हैं।'
मैंने उससे कहा, 'मैं कल सुबह मुर्गे की बांग देते ही कार से तुम्हें लेने आऊंगा। तैयार रहना। जल्दी शुरुआत करने पर हम सूर्योदय तक पुलिबेंन पहुंच जाएंगे। हम उम्बालमेरु तक की शेष दूरी पैदल तय करेंगे और वहां से गुफाओं तक जाएंगे, जिसकी शुरुआत उत्तर दिशा वाली गुफा से होगी।'
'जैसा आप कहें, साहब,' उन्होंने तुरंत सहमति जताते हुए कहा। 'मैं आपका इंतजार करूंगा।'

देव और मैं बच्चों की तरह खुश होकर जंगल वाले बंगले में वापस लौटे। वहाँ देव ने आधी रात तक .12 कैलिबर की शॉटगन को बार-बार साफ किया। उसने मेरी राइफल भी साफ की।
अगली सुबह जब मॉडल टी कार नागपतला विश्राम गृह के गेट से निकली, तो भूरे रंग के जंगली मुर्गे बांग दे रहे थे, और जब हम रामैया की झोपड़ी पर पहुंचे, तो उनके चचेरे भाई, रंगमपेट गाँव के मुर्गे भी बांग देने लगे थे। लगभग सुबह के 5 बज रहे थे। उसने फोर्ड कार के आने की आहट सुन ली थी और जैसे ही मैंने कार रोकी, वह दरवाजे से बाहर आ गया।
हम सात मील की दूरी तय करके पुलिबोन पहुँचे, और सुबह के 6:5 बज रहे थे जब हम कुएं के पास रुके और उस पगडंडी पर चलना शुरू किया जो अक्षर Y के दाहिने स्ट्रोक का आकार बनाती थी और जो लगभग उत्तर-पूर्व दिशा में जाकर उम्बालमेरु के पानी के कुंड पर समाप्त होती थी। हम आठ बजने से कुछ मिनट पहले कुंड पर पहुँचे, और आसमान बिल्कुल साफ था और सूरज खूब चमक रहा था।
रामिया ने मुझे बताया कि उम्बालमेरु से उन चारों गुफाओं तक कोई स्पष्ट पगडंडी नहीं जाती, जिनकी हम खोज करने वाले थे। हमें केवल दिशा के बारे में उसकी जानकारी पर ही भरोसा करना होगा।
और रामैया का दिशा ज्ञान कभी धोखा नहीं देता था। वह आगे-आगे चल रहा था, उसके हाथ में कोइथा था, जो एक लंबी, घुमावदार नोक वाली चाकू होती है, जिसका हैंडल लगभग एक फुट लंबा बांस का बना होता है। यह देखने में प्रश्न चिह्न जैसा लगता था, लेकिन झाड़ियों के बीच से रास्ता बनाने के लिए जब भी उसे इसकी आवश्यकता होती थी, यह अत्यंत उपयोगी साबित होता था।
अक्सर हमें हर दिशा में जाते हुए जानवरों के रास्ते दिखाई देते थे, जो मुख्य रूप से, जैसा कि मैं खुद पटरियों को देखकर समझ सकता था, सांभर और जंगली सूअरों द्वारा बनाए गए थे, और कभी-कभार सुस्त भालुओं द्वारा छोड़े गए निशान भी थे, जिन्होंने इधर-उधर जड़ें खोदी थीं और दीमकों की तलाश में चींटियों के हर टीले को व्यवस्थित रूप से नष्ट कर दिया था। लेकिन इन सब बातों से हमारे गाइड का हौसला ज़रा भी नहीं टूटा और न ही वह एक पल के लिए भी दिशा का ज्ञान खो बैठा। वह उत्तर की ओर बढ़ता रहा और मैं उसके ठीक पीछे .405 पिस्तौल को अचानक हमले से बचाव के लिए तैयार रखे हुए था। देव शॉटगन लेकर सबसे पीछे चल रहा था।
ज़मीन धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठने लगी, उस ढलान की ओर जो पेड़ों के बीच से दिखाई दे रही थी, मानो हम पर गुस्से से घूर रही हो। जल्द ही बड़े पेड़ कम होते गए और उनकी जगह घनी झाड़ियाँ आ गईं, और चारों ओर बड़े-बड़े पत्थर बिखरे पड़े थे, जिनका आकार और संख्या जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गए, बढ़ती गई। मुझे पूरा यकीन था कि ये पत्थर समय-समय पर बारिश और उसके परिणामस्वरूप हुए भूस्खलन से ढलान से बहकर नीचे आ गए होंगे।
आधे घंटे बाद रामिया रुकी और फुसफुसाते हुए बोली कि हम पहली गुफा के पास पहुँच रहे हैं। उम्बालमेरु के तालाब से निकलने के बाद से हम जो सावधानी बरत रहे थे, उसे हमने और भी बढ़ा दिया—अगर यह संभव था तो। आदमखोर कहीं भी घात लगाए बैठा हो सकता है, और हमें इसकी भनक तक नहीं लगेगी।
फिर रामियाह दूसरी बार रुका और बिना कुछ बोले सिर हिलाकर गुफा की ओर इशारा किया। और मैंने उसे देख लिया—मेरा मतलब गुफा से है। पत्थरों का ढेर एक के ऊपर एक गिर गया था और इस तरह एक गुफा बन गई थी। अब मुझे उसका प्रवेश द्वार दिखाई दे रहा था। वह बहुत बड़ा तो नहीं था, शायद प्रवेश द्वार का व्यास

एक गज हो होगा, लोकेन इतना बड़ा ज़रूर था कि उसमें एक बाघ आसानी से छिप सकता था।
मैंने अपना बायां हाथ बढ़ाकर रामैया के कंधे को छुआ। फिर मैंने उसे पीछे खींचा और आगे बढ़कर उसे अपने और देव सुंदरम के बीच में रखा, जो अभी भी पीछे था। मैं दबे पांव, जितना हो सके चुपचाप, इस बात का ध्यान रखते हुए कि कहीं किसी सूखी लकड़ी या पत्ते पर पैर न पड़ जाए जिससे चटकने की आवाज आए, धीरे-धीरे आगे बढ़ा और गुफा के मुहाने से लगभग पंद्रह फीट दूर खड़ा हो गया। दुर्भाग्य से, सामने की ज़मीन सख्त और पथरीली थी। इसके अलावा, जगह-जगह भाले के आकार की घास के गुच्छे उगे हुए थे। ऐसी ज़मीन पर कोई भी पदचिह्न दिखाई नहीं देते।
मैंने रामैया और देव को इशारे किए कि वे पत्थर उठाकर गुफा में फेंकें। वे मेरे इशारे समझ गए और कुछ ही सेकंड में उन्होंने छोटे-बड़े पत्थरों की एक बेतरतीब बौछार शुरू कर दी, जो गुफा के संकरे प्रवेश द्वार में घुस रहे थे।
कुछ नहीं हुआ। हर पत्थर के गिरने की आवाज़ और अंदर उछलते-उछलते पत्थरों की खड़खड़ाहट सुनाई दे रही थी। यकीनन, अगर कोई बाघ वहां छिपा होता, तो या तो हम पर हमला कर देता या कम से कम गुर्राकर अपनी मौजूदगी का संकेत ज़रूर देता। लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। पत्थरों की खड़खड़ाहट और धमक के अलावा पूरी तरह सन्नाटा था। ऐसा लगने लगा जैसे बाघ घर पर नहीं है।
और भी पत्थर फेंके गए, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। दस मिनट बाद मुझे यकीन हो गया कि गुफा में कोई नहीं रहता। मैं गुफा के मुहाने तक गया, जहां घास और पत्थर खत्म होते थे और ज़मीन पर मिट्टी बिछी हुई थी। अंधेरे अंदरूनी हिस्से पर पैनी नज़र रखते हुए, मैं नीचे झुका और ज़मीन पर पैरों के निशान देखे। कहीं भी कोई पदचिह्न नहीं थे। गुफा में रहने वाला एकमात्र जानवर, जैसा कि मैं उसके छोटे-छोटे पैरों के निशानों से देख सकता था, एक साही था; और मैं जानता था कि कितना भी पत्थर फेंकने से वह बाहर आकर तेज़ धूप का सामना नहीं करेगा। रात में सक्रिय रहने वाला साही, केवल धुएं से ही अपने बिल से बाहर निकाला जा सकता है, और वह भी बड़ी मुश्किल से। आम तौर पर, अगर वह और गहरा बिल नहीं खोद पाता, तो ऐसी स्थिति में वह दम घुटकर मरना पसंद करेगा।
हमारे मुड़ने से ठीक पहले, रामिया ने ऊपर की ओर खड़ी चट्टान की तरफ इशारा किया। उसने हमारा ध्यान उन दो गुफाओं में से दूसरी गुफा की ओर दिलाया, जिनके बारे में उसने कहा था कि वह पानी के गड्ढे के उत्तर में स्थित है। हम उसका प्रवेश द्वार मुश्किल से देख पा रहे थे, जो घनी घास से आधा छिपा हुआ था। गुफा हमसे कम से कम 200 फीट या उससे अधिक ऊपर लग रही थी और शायद दो फर्लांग दूर थी।
रामियाह सही था। कोई बाघ इतनी खड़ी चढ़ाई चढ़ने की हिम्मत नहीं करता। इसके अलावा, एक और पुख्ता सबूत था कि उस दूसरी गुफा में कोई बिल्ली प्रजाति का जानवर नहीं रहता था। गुफा के प्रवेश द्वार पर एक लंगूर बंदर आराम से बैठा था और उत्सुकता से हमारी ओर देख रहा था। अगर कोई बाघ आस-पास से गुजरा होता, और अगर कोई बाघ उस गुफा में रहता भी, तो लंगूर वहां नहीं होता। वे इतने प्यारे होते हैं कि जोखिम नहीं उठाते।
हम ढलान से नीचे उम्बालमेरु की ओर बढ़े और फिर पूर्वी ढलान के तल पर स्थित तीन गुफाओं की ओर चल पड़े। एक बार फिर रामिया ने दूरी का अच्छा अनुमान लगाया। पहली गुफा तक पहुंचने में हमें लगभग पैंतालीस मिनट लगे, जिससे मैंने अनुमान लगाया कि यह पानी के स्रोत से लगभग दो मील दूर है। ढलान वाली ज़मीन और भूभाग लगभग एक जैसे ही थे, लेकिन गुफा एक सामान्य गुफा की बजाय एक

गहरी खाई जैसी लग रही थी, क्योंकि यह ऊपर से खुली थी और चट्टान के एक बड़े टुकड़े के भूस्खलन में गिरने से बनी थी, जो चट्टान के आधार से लगभग दस फीट दूर पड़ा था। गिरा हुआ टुकड़ा लगभग बीस फीट या उससे अधिक ऊँचा लग रहा था, और इसके और ढलान के बीच की दस फीट की जगह को ही रामिया ने गुफा कहा था। ऊपर से खुली होने के कारण इसमें बारिश और धूप आती थी, और यह लैंटाना और लंबी घास से घनी तरह से ढकी हुई थी।
हालांकि यह अस्थायी रूप से छिपने के लिए एक शानदार जगह थी, लेकिन बाघ के लिए लंबे समय तक रहने के लिए यह उपयुक्त स्थान नहीं लग रहा था। एक तो यह घनी झाड़ियों से भरा हुआ था। बाघ ऐसी जगह घर बनाना पसंद नहीं करता जहां उस पर अचानक हमला हो सकता है।
मैंने अपने साथियों को भी वही योजना अपनाने को कहा कि वे भी उसी खाई में पत्थर फेंकें, जबकि मैं अपनी राइफल लेकर उनकी रक्षा करता रहूं। जैसा कि उम्मीद थी, कुछ नहीं हुआ। थोड़ी देर बाद हम और करीब पहुंच गए। ज़मीन इतनी पथरीली और सख्त थी कि पैरों के निशान दिखना मुश्किल था, लेकिन देव और रामैया द्वारा खाई में बरसाए गए पत्थरों की ज़ोरदार बौछार से जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि बाघ वहां नहीं था।
हम ढलान के किनारे-किनारे दक्षिण की ओर बढ़ते हुए अगली गुफा तक पहुँचे, जहाँ पहुंचने में हमें लगभग पंद्रह मिनट लगे। ऐसा प्रतीत हुआ कि यह किसी भूमिगत मार्ग का निकास द्वार है जो ढलान में जाता है। गुफा का मुँह अपेक्षाकृत छोटा था, लगभग दो फुट चौड़ा। हमने हमेशा की तरह पत्थर फेंके, लेकिन तीसरी बार भी हमें कोई सुराग नहीं मिला। ज़मीन फिर से इतनी सूखी और सख्त थी कि कोई निशान नहीं बन पा रहे थे, इसलिए हम मार्ग के मुंह के पास गए और आसपास उगी घास में आग लगा दी।
पत्थरबाजी से भले ही कोई नतीजा न निकला हो, लेकिन आग का नजारा और धुएं की गंध बाघ को तुरंत बाहर निकाल लाते। फिर भी कुछ नहीं हुआ। अगले दस मिनट तक हमने सावधानीपूर्वक अपनी लगाई हुई आग के हर निशान को बुझाया। हम अच्छी तरह जानते थे कि एक सुलगता अंगारा भी जंगल में आग लगाने के लिए काफी होगा, जो कई दिनों तक जलती रहेगी और हजारों एकड़ जंगल को नष्ट कर देगी।
हमारी निराशा को शब्दों में बयां करना मुश्किल है। हम पूरी तरह से हताश हो गए थे। लेकिन एक गुफा अभी भी देखने बाकी थी, जो उन सभी गुफाओं में सबसे बड़ी थी, जिसे रामिया ने मदापेटा कहा था। उसने हमें बताया था कि वह एक मील से भी अधिक दूर है।
सफलता की बहुत कम उम्मीद के साथ हम इस जगह के लिए निकल पड़े। वहाँ पहुंचने से ठीक पहले हम उस छोटे से जंगल के तालाब के पास पहुंचे, जिसके नाम पर इस गुफा का नाम पड़ा था। और यहाँ हमारी उम्मीदें आसमान छू गईं। तालाब के किनारे कीचड़ में कई जगह बाघिन के पंजों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे। जाहिर है, यही उसका पानी का मुख्य स्रोत था।
कम से कम 200 गज की दूरी तक सावधानीपूर्वक और चुपचाप आगे बढ़ने के बाद गुफा दिखाई दी। इसका प्रवेश द्वार चौड़ा था, पाँच फीट से अधिक और ऊंचाई भी लगभग उतनी ही थी। अंत में, यह घास और झाड़ियों से मुक्त था और अंदर छिपी बाघिन की ओर बढ़ते दुश्मन का स्पष्ट दृश्य प्रस्तुत करता था। अगले कुछ ही क्षणों में यह स्पष्ट हो गया कि यह दृश्य कितना उत्कृष्ट था। देव या रामैया के पहला पत्थर फेंकने से पहले ही, अंदर के अँधेरे से एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी और अगले ही पल बाघिन बाहर कूद पड़ी।

तेज धूप ने कुछ देर के लिए उसकी आंखों को चौंधिया दिया। फिर उसकी आंखें सामान्य हुईं और उसने हमें देख लिया। एक पल के लिए वह हिचकिचाई, फिर डर, जो इस जानवर के स्वभाव में काफी प्रबल प्रतीत होता था, उस पर हावी हो गया। वह भागने के लिए दाईं ओर मुड़ गई।
उसी क्षण मैंने आवेग में आकर तुरंत प्रतिक्रिया दी। मैंने जोर से और तीखी आवाज में पुकारा: 'रानी! रानी!'
शेरनी रुक गई। वह मेरी ओर मुड़ी। उसके चेहरे पर भयंकर क्रोध था; लेकिन साथ ही हैरानी, पहचान और आंशिक समर्पण का एक अजीब सा भाव भी था। लेकिन हमारी उपस्थिति उसके लिए एक पहेली थी जिसका उत्तर उसे कभी नहीं मिला, क्योंकि मैंने कोई जोखिम न लेते हुए उसकी छाती में गोली मारी और जैसे ही वह आगे की ओर गिरी, मैंने उसके दिमाग में एक और गोली दाग दी।
वह एक युवा जानवर थी, अभी पूरी तरह से विकसित भी नहीं हुई थी, और स्पष्ट रूप से दुबली-पतली और कुपोषित थी। रानी को आदमखोर बनने की प्रेरणा कहां से मिली?
जवाब सीधा-सादा था। वर्षों की कैद ने उसे जंगली जानवरों का पीछा करने और उन्हें मारने की कला में अक्षम बना दिया था। दूसरी ओर, वह केवल मनुष्यों के रूप-रंग और आदतों से ही परिचित थी, हालाँकि अंत तक उसके मन में मनुष्यों के प्रति सहज भय बना रहा।
इसलिए, इन परिस्थितियों में उसने खुद को जीवित रखने के लिए एकमात्र संभव उपाय किया। उसने अचानक हमला करके अपने शिकारों को मार डाला और फिर शवों को दूर ले गई, जहाँ वह पीछा किए जाने के खतरे से सुरक्षित रहते हुए भोजन कर सके।
इस कहानी को समाप्त करने से पहले, मैं एक चेतावनी देना चाहूँगा, जो निश्चित रूप से केवल भारत, अफ्रीका और अन्य देशों में रहने वाले लोगों पर लागू होगी, जहां जंगली जानवरों को बचपन में ही पकड़कर पालतू जानवर के रूप में रखा जा सकता है। मैं एक ऐसी महिला को जानता हूँ जिसने एक पैंथर के बच्चे को तब तक पाला जब तक वह इतना बड़ा और खतरनाक नहीं हो गया कि उसे रखना असंभव हो गया। वह उस जानवर से बहुत लगाव रखती थी, और जानवर भी उससे उतना ही प्यार करता था। वह उसे किसी चिड़ियाघर या सर्कस में देने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी, क्योंकि उसे पूरा विश्वास था कि दोनों ही जगहों पर उसके साथ बुरा बर्ताव किया जाएगा। उसे गोली मारना तो उसके लिए नामुमकिन था। इसलिए वह उसे कार से एक बड़े जंगल में ले गई और वहाँ उसे आज़ाद कर दिया। संयोग से, उसने बाद में मुझे आँखों में आँसू लिए बताया कि जैसे ही कार चली गई, पैंथर उसके पीछे-पीछे दौड़ता हुआ उसके पास वापस आने की कोशिश करने लगा।
मुझे आश्चर्य होता है कि क्या इस नेक इरादे वाली, लेकिन दुर्भाग्य से गुमराह महिला को इस बात का पूरा एहसास था कि वह क्या कर रही है। उसने अभी-अभी एक बेहद खतरनाक जानवर को आज़ाद किया था, जिसे उसने बचपन से ही उबला हुआ मांस, चावल, रोटी, हलवा, दलिया और न जाने क्या-क्या खिलाकर पाला था, और मिठाई, आइसक्रीम जैसी स्वादिष्ट चीज़ों का ज़िक्र तक नहीं किया था। यह बेचारा जानवर खुद की देखभाल करने और अपने शिकार को पकड़ने और मारने में पूरी तरह असमर्थ था। इसके साथ केवल तीन ही बातें हो सकती थीं, और तीनों ही सोचना बेहद भयावह था। हो सकता है कि यह किसी भी इंसान से दोस्ती के भाव से मिले और इसी वजह से मारा जाए। दूसरा, हो सकता है कि यह भूख से मर जाए, हालाँकि इसकी संभावना बहुत कम है, क्योंकि भूख से बेहाल होने पर आत्मरक्षा की प्रवृत्ति इतनी प्रबल हो

जाता है कि पैंथर अंततः किसी न किसी को मार ही डालेगा। तीसरा, और सबसे बुरा, हो सकता है कि यह जानवर आदमखोर बन जाए।
उसने मुझे बताया कि अपने पालतू जानवर को आज़ाद करने के एक हफ़्ते से भी कम समय में उसने क्या किया था। मैंने उसे अगले एक महीने तक अखबारों को ध्यान से पढ़ने की सलाह दी। मैंने भी ऐसा ही किया।
कुछ दिनों के भीतर हम दोनों ने एक छोटी सी खबर पढ़ी जिसमें एक बेहद कमजोर पैंथर के अजीब व्यवहार का जिक्र था। वह पैंथर एक गाँव में भटक गया था (जो उस जगह से कुछ मील की दूरी पर था जहाँ उसने अपने पालतू जानवर को छोड़ा था) और घास की झोपड़ी में सो गया था। फिर आया दुखद घटनाक्रम। ग्रामीणों ने झोपड़ी का दरवाजा बंद कर दिया, छत पर केरोसिन तेल डाला और आग लगा दी, जिससे बेचारा जानवर जलकर मर गया।
अपने पालतू जानवर की भयानक मौत से वह महिला बहुत दुखी थी। लेकिन मैं सोचती हूँ कि अगर उसे यह पता चलता कि वह जानवर इंसानों का कातिल बन गया था, और उसे उस समय आज़ाद छोड़ देने की मूर्खता के कारण इस घिनौनी आदत को अपनाने पर मजबूर होना पड़ा था, जब वह पूरी तरह से खुद का बचाव करने में असमर्थ था, तो उसे कैसा महसूस होता।

तीन

कैंप फायर के पास एक रात

मेरी पत्नी कहती है कि मैं सनकी हूँ। मेरे दोस्त भी यही कहते हैं। और मुझे लगता है कि वे सब काफ़ी हद तक सही हैं। लेकिन, अगर मैं सच में सनकी हूँ तो क्या हुआ? मुझे कभी-कभी सनकी होना अच्छा लगता है।
मेरी एक आदत, जो आज भी बनी हुई है, जब मुझे बहुत सारे लोगों और उनके शोर से चिढ़ होती है, तो मैं अपनी कार में बैठकर पास के किसी जंगल में चला जाता हूँ। वहाँ मैं कार छोड़ देता हूँ, जंगल में भटकता रहता हूँ, रात होने पर अपने लिए एक बड़ी सी आग जलाता हूँ और रात के अंधेरे में बस आग के पास बैठा रहता हूँ। मैं ज़रूरत के हिसाब से आग में ताज़ी लकड़ियाँ डालता रहता हूँ, जिन्हें मैं अंधेरा होने से पहले ही इकट्ठा कर लेता हूँ। आखिरकार लकड़ियाँ खत्म हो जाती हैं या मुझे नींद आने लगती है। दोनों ही मामलों में एक ही उपाय है। वो है आग के पास सो जाना। अंगारे मुझे गर्म रखते हैं, जबकि सुबह की ठंड और ओस असहनीय हो सकती है। वे मुझे हाथियों और साँपों से भी बचाते हैं, जो कि ऐसे जीव हैं जिनसे डरने की ज़रूरत होती है, जब आसपास कोई आदमखोर जानवर न हों। सुबह होते ही मैं वापस कार में जाता हूँ और घर लौट आता हूँ और सोचता हूँ कि मैंने ऐसा मूर्खतापूर्ण और अजीब काम क्यों किया और इससे मुझे क्या मिला।
लेकिन मैंने यह किया है, और मैं इसे बार-बार करता रहूंगा।
इस पागलपन के अन्य रूप हैं चाँदनी रातों में, और अंधेरी रातों में भी, जंगल में जाना, किसी पेड़ के पीछे, या किसी चट्टान पर, या किसी पानी के गड्ढे के किनारे बैठना, और बस देखना और सुनना।
जिन लोगों को कभी भी खुले आसमान के नीचे, अलाव के पास बैठने का सौभाग्य मिला हो, भले ही वहां घात लगाए बैठे जानवरों या जहरीले सांपों का कोई खतरा न हो, वे इस शौक के प्रति मेरे लगाव को समझ सकते हैं। ऐसे क्षणों में जो आनंद मिलता है, उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। यह हमारे भीतर छिपे किसी तार को छू लेता है और आत्मा को प्रज्वलित कर देता है!
शायद ऐसे ही अवसरों पर, और ऐसे ही एकांत में, मनुष्य का अंतर्मन अनंत के सबसे निकट पहुँचता है। तब मैं ईश्वर के बहुत निकट महसूस करता हूँ, किसी भी चर्च की तुलना में कहीं अधिक निकट, जहाँ पादरी, चाहे मासिक वेतन के आधार पर हो या

अन्य पारिश्रामिक के माध्यम से, मेरे भटकते और पापी मन के उत्थान के लिए स्वतः ही उपदेश दोहराता रहता है।
खैर, मैं अपने बारे में बात नहीं करना चाहता। शायद आप मेरे साथ जंगल में इन रात्रिकालीन सैरों में से किसी एक पर चलना चाहेंगे—आप इन्हें 'कैंप फायर ट्रिप' भी कह सकते हैं।
स्टूडेबेकर में छह गैलन पेट्रोल भरा हुआ है। इसमें छह सिलेंडर का इंजन है और इसकी हॉर्सपावर रेटिंग अच्छी है, हालाँकि इतने कठिन वर्षों के बाद उनमें से कितने घोड़े जीवित बचे हैं, यह मैं नहीं जानता, और न ही अनुमान लगाने की कोशिश करता हूँ। बस कुछ सैंडविच, पानी की बोतल और अगर मिल सके तो गर्म चाय का थर्मस ले आइए। मुझे आप और भी अच्छे लगेंगे। ठंड लगने पर पहनने के लिए एक ओवरकोट और टोपी भी ले आइए, और अगर आप धूम्रपान करते हैं तो एक पाइप, तंबाकू और माचिस भी ले आइए। बस इतना ही आवश्यक है। दोपहर के 3 बज रहे हैं, लेकिन हमें केवल लगभग पचास मील की दूरी तय करनी है।
मैं आपको कुंदुकोट्टई नामक स्थान पर ले जा रहा हूँ, जहाँ एक सुंदर जंगल है। वहाँ पहाड़ियों की दो श्रृंखलाएँ मिलती हैं; और अलग-अलग दिशाओं से आने वाली दो धाराएँ मिलकर एक बड़ी नदी बनाती हैं। स्थानीय भाषा में इस बड़ी नदी को डोड्डाहल्ला (बड़ी खोखली घाटी) कहते हैं, लेकिन मैंने इसे गुप्त नदी नाम दिया है। इस क्षेत्र के आसपास के जंगल में बाइसन को छोड़कर लगभग हर प्रजाति के कुछ जानवर पाए जाते हैं। मुझे बताया गया है कि बाइसन भी कभी यहाँ हुआ करते थे, लेकिन बहुत पहले उनका शिकार कर लिया गया था, हालाँकि वन क्षेत्र अधिकारी का कहना है कि वे जंगल में चरने वाले गाँव के मवेशियों से फैले फुट-एंड-माउथ रोग से खत्म हो गए। आखिर बेचारा सच कैसे मान सकता है? आखिर वह वन क्षेत्र अधिकारी है।
हम निकल पड़े हैं, और अपने रास्ते के पहले पच्चीस मील तक हम पक्की सड़क पर चलते हैं। बैंगलोर से उन्नीसवें मील पर यह सड़क मैसूर राज्य को पीछे छोड़कर मद्रास राज्य में प्रवेश करती है। ठीक पच्चीसवें मील पर हम होसुर नामक छोटे कस्बे में पहुँचते हैं, जो उस क्षेत्र का तालुक मुख्यालय भी है। होसुर से हम मुख्य सड़क से अलग होकर अगले सोलह मील तक एक ऐसी सड़क पर चलते हैं जिसे भारत में कच्ची सड़क कहा जाता है—यानी रेत और पत्थरों से बनी सड़क, जहाँ किसी न किसी कारण से ये दोनों घटक कभी भी उचित अनुपात में नहीं होते जिससे यह एक अच्छी सड़क बन सके। बारी-बारी से कोई एक हावी हो जाता है। पत्थर गाड़ी के टायरों को काटते हैं, जबकि रेतीले हिस्से गाड़ी को मुश्किल बना देते हैं। बरसात के मौसम में ये रेतीले हिस्से उन ड्राइवरों के लिए बहुत मनोरंजक हो जाते हैं जिनमें हास्यबोध होता है, अगर ऐसा कोई व्यक्ति हो, क्योंकि तब वे इधर-उधर फिसलते रहते हैं, या अगर वे सावधान नहीं रहे तो शायद पहिए तक रेत में धंस जाते हैं। लेकिन यह बारिश का मौसम नहीं है और हम उन सोलह मील की दूरी को उचित समय में तय कर लेते हैं, और डेनकनिकोटा नामक छोटे शहर में पहुँच जाते हैं, जो जंगल के विभिन्न ब्लॉकों को नियंत्रित करने वाले दो वन रेंज अधिकारियों का मुख्यालय है।
अब हम पत्थर और रेत की पक्की सड़क को छोड़कर एक ऐसी सड़क पर चलते हैं जो सड़क जैसी बिल्कुल नहीं है, क्योंकि यह तो बस बैलगाड़ी के लिए बनी एक साधारण सी पगडंडी है। डेनकनिकोटा से लगभग साढ़े तीन मील दूर यह पगडंडी उन दो धाराओं में से एक के ऊपरी हिस्से को पार करती है जिनका मैंने पहले ज़िक्र किया है। यहाँ कोई जटिल और महँगे पुल नहीं हैं; पगडंडी सीधे धारा को चीरते हुए आगे बढ़ती है। यह तब तक ठीक है जब तक भारी बारिश न हुई हो। भारी बारिश

होने पर धारा उफान पर आ जाती है और पानी दस फीट तक गहरा हो सकता है। ऐसी स्थिति में आपको बस डेनकनिकोटा वापस लौटना होगा और दो दिन बाद फिर से कोशिश करनी होगी, जब पानी का स्तर कम हो चुका होगा। ज़रा सोचिए कि आप कितने भाग्यशाली थे कि आप डेनकनिकोटा की तरफ़ थे। मान लीजिए कि आप दूसरे किनारे पर होते; तो आपको बाढ़ उतरने तक वहीं रहना पड़ता।
हम दो बार और उस धारा को पार करते हैं जो पगडंडी के किनारे-किनारे टेढ़ी-मेढ़ी बहती है। आठवें पड़ाव पर हम कुंदुकोट्टई गाँव से गुज़रते हैं, जो एक चट्टानी पहाड़ी की छाया में बसा है, जो दो चीज़ों के लिए प्रसिद्ध है—तेंदुए और बड़ी चट्टानी मधुमक्खी।* और याद रखें कि इनमें से मधुमक्खियाँ उत्तेजित होने पर कहीं अधिक खतरनाक होती हैं।
अब रास्ता चट्टानी पहाड़ी की ढलानों के चारों ओर घूमते हुए एक घाटी में तेज़ी से नीचे उतरता है। लेकिन हमें अब केवल एक मील और चलना है, और वहाँ, नौवें मील के पत्थर के पास, हमें स्टुडेबेकर को पहले पीछे करके और वापसी यात्रा के लिए घुमाकर छोड़ना होगा - यह एक बड़ा मुश्किल काम है क्योंकि रास्ता कार की लंबाई से मुश्किल से ही चौड़ा है, और एक तरफ़ गहरी ढलान है।
आखिरकार काम हो गया। हमने गाड़ी को गियर में ही छोड़ दिया है, और चारों पहियों के पीछे चार पत्थर रख दिए हैं, ताकि कोई लापरवाह राहगीर नियंत्रणों से छेड़छाड़ न कर दे। साथ ही, हमें बैटरी का एक तार भी अलग करना होगा, क्योंकि राहगीर आपके लिए बत्ती जला सकता है और उसे जलने दे सकता है। अपने साथ लाए थोड़े से सामान को लेकर, हमें डोड्डाहल्ला धारा की ओर तेज़ी से ढलान पर उतरना होगा, जिसके दो हिस्से एक मील से भी कम दूरी पर ऊपर जाकर मिल जाते हैं और एक जलधारा बनाते हैं, जिसे मैंने गुप्त नदी नाम दिया है।
वास्तव में, इसके आगे के मार्ग में भूवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहस्य छिपे हैं। लेकिन आप मुझे उन्हें प्रकट करने के लिए प्रेरित नहीं करेंगे, क्योंकि यदि मैंने ऐसा किया, तो जंगल और नदी के इस सुंदर क्षेत्र पर अतिक्रमण हो जाएगा और इसका व्यवसायीकरण करके इसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाएगा।
अंततः हम छोटी नदी के तले तक पहुँचते हैं और उसे किसी परीलोक जैसा पाते हैं। इस मौसम में इसमें ज़्यादा पानी नहीं है; बस एक पतली सी धारा बहती है जो कभी रेतीले तल के बीचोंबीच बहती है, तो कभी किनारों से किनारों तक मुड़ती हुई आगे बढ़ती है। दोनों किनारे ऊँचे-ऊँचे, टेढ़े-मेढ़े पेड़ों से घने हैं—ज़्यादातर इमली, जुमलम और मुट्टी के पेड़ हैं, और कहीं-कहीं वन-वन, फिकस, बरगद, नीम और महोवा के पेड़ भी हैं। पेड़ों के बीच बाँस के लंबे, पंख जैसे तने रेतीले किनारों पर खूबसूरती से झुके हुए हैं। ठंडी हवा के अचानक झोंके घाटी से नीचे आते हैं और नदी के तल पर बहते हैं। जब ऐसा होता है, तो पेड़ों की शाखाएँ और बाँस के ऊँचे गुच्छे एक साथ झूलते और हिलते हैं, जिससे दूर से आती झरनों की सरसराहट जैसी आवाज़ आती है, या किसी अशांत सागर में दूर की चट्टानों पर लहरों की गड़गड़ाहट जैसी।
अभी शाम के सिर्फ 5 बजे हैं, लेकिन अंधेरा होने से पहले हमें बहुत काम करना है। सबसे पहले हम एक शिविर स्थल चुनते हैं: रेतीले किनारे पर थोड़ी ऊंचाई पर एक जगह। और अब बारी आती है हमारी आग के लिए लकड़ियाँ इकट्ठा करने की। ध्यान रहे कि हम जितनी ज़्यादा लकड़ियाँ इकट्ठा करेंगे, आग उतनी ही देर तक जलती रहेगी, और उतनी ही तेज़ और चमकदार होगी। लकड़ियाँ इकट्ठा करने में कोई कठिनाई नहीं है, क्योंकि वे हर जगह प्रचुर मात्रा में पड़ी हैं, दोनों किनारों पर और यहाँ तक कि नदी के चौड़े तल पर भी, पत्थरों और पेड़ों के तनों के बीच फंसी हुई हैं,

जिन्होंने बारिश के बाद नदी में आए उफान के दौरान रास्ता रोक दिया था और अपने साथ सब कुछ बहा ले गई थी—पेड़ों के तने, लट्ठे, शाखाएँ, जड़ें—सब कुछ।
शाम के 6:15 बज रहे हैं और हम तैयार हैं। अंधेरा भी हो रहा है। लेकिन अभी आग न जलाएं, क्योंकि इससे पक्षी घबरा जाएंगे। इसके बजाय, आइए कुछ देर उनकी आवाज़ सुनें: भूरे जंगली मुर्गों की चुनौती भरी पुकार, स्पूरफाउल की घुड़दौड़, मोर की कर्कश, दर्द भरी म्याऊं, हमेशा चौकस रहने वाले प्लोवर की बेचैन चीखें या 'क्या तुमने किया?' की आवाज़, और दूर से आती हुई 'दिमागी बुखार' वाले पक्षी की उत्तेजित कर देने वाली तेज़ आवाज़।
अब लगभग अंधेरा हो चुका है और नाइट्जार पक्षी इधर-उधर फुदक रहे हैं। एक पक्षी एक चट्टान पर बैठा है और पत्थर के साथ घुलमिल जाने वाले अपने बेजोड़ छलावरण में नज़रों से ओझल हो जाता है। लेकिन हमें जानते हैं कि वह वहीं है क्योंकि हम उसकी आवाज़ सुनते हैं, 'चक! चक! चक! चक! चक-ऊऊऊ!'
अचानक दूर से आती हुई कई आवाज़ों का मिश्रण हमारे कानों में पड़ता है। बेसुरी नहीं, बल्कि अजीब तरह से रोमांचकारी; शायद डरावनी।
'ऊऊऊ-ऊऊ-ऊऊह! 'वूउ-वूउ-वूओह!'
'कहाँ? कहाँ? कहाँ? कहाँ? कहाँ?'
'यहाँ! यहाँ! यहाँ! प्रभु! प्रभु! प्रभु! प्रभु!'
'Hee-yah! Hee-yah! Heeee-yah!'
'हाँ! हाँ! हाँ-आह! हाँ-आह! हीईईईई याह! 'हीईई-याह!'
यह भोजन की तलाश में बेचैन सियार झुंड का सामूहिक गायन है। सरदार कर्कश स्वर में पुकारता है—'ऊ-कहाँ? ऊ-कहाँ? ऊ-कहाँ?'—और झुंड मानो जवाब देता है: 'यहाँ! यहाँ! यहाँ! ही-याह! याह! याह! याह!'
लंबी चीख फिर फूट पड़ती है और उसका जवाब कर्कश, कर्कश और शोरगुल भरी प्रतिध्वनि से मिलता है। क्रूर पुकार और दर्द भरी प्रतिक्रिया आसपास के जंगल के भयानक अंधेरे में गूंजती रहती है, जंगल की गलियों में कभी तेज़ तो कभी धीमी होती जाती है। शोर का चीखता हुआ चरम उन्माद में बदल जाता है और एक लंबे, अवर्णनीय कोलाहल में तब्दील हो जाता है। यह चिपचिपे, घेरने वाले, ढँकने वाले कालेपन में समा जाता है। इसे कोई रोक नहीं सकता। वह बेतहाशा सुंदर और असीम रूप से क्रूर कोरस ठहरता है, मंद पड़ जाता है और फिर चरम पर चीखता है, सिसकता है, धीमा होता है और फिर बढ़ता है; बेकाबू आवाज़ों का एक अंतहीन मिश्रण।
रात हो चुकी है। आग जलाने का समय आ गया है, सियार के डर से नहीं, क्योंकि उनकी डरावनी आवाज़ों के बावजूद वे हानिरहित हैं; न ही किसी भटकते हुए बाघ या तेंदुआ के डर से, क्योंकि इस क्षेत्र में फिलहाल कोई आदमखोर जानवर नहीं है और न ही वे आपको नुकसान पहुंचाएंगे। आग जलाने का कारण दो अलग-अलग प्रकार के जीव हैं, जिनमें से एक बहुत बड़ा और दूसरा काफी छोटा है, जो अगर ग़लती से भी आपके बहुत करीब आ गए तो आपको निश्चित रूप से नुकसान पहुँचाएंगे: एक अकेला भटकता हुआ हाथी और एक रेंगता हुआ ज़हरीला साँप। हम कोई हथियार नहीं लाए हैं, और अँधेरे में यह एक सुखद अनुभव नहीं होगा अगर कोई हाथी हम पर हमला कर दे या कोई ज़हरीला साँप हमें अपने रास्ते में रुकावट के रूप में पा ले।
आग जल्द ही चटकने लगती है। कुछ चिंगारियाँ आसमान की ओर उड़ती हैं और उसकी चमक हमारे चारों ओर के पेड़ों के तनों को धीरे-धीरे रोशन करती है, मानो वे चौकस जंगल के मूक प्रहरी हों। सियार उस चमक को देखते हैं, या शायद धुएँ की गंध महसूस करते हैं। उनकी चीख-पुकार अचानक बंद हो जाती है। आग ने सब कुछ

शांत कर दिया है, सिवाय जंगली झींगुरों के जो गिरे हुए पत्तों के बीच अपने आश्रयों से लगातार चहचहा रहे हैं।
बड़े जानवर कम से कम आठ बजे के बाद ही हिलना-डुलना शुरू करेंगे, इसलिए हमारे पास बातचीत के लिए लगभग एक घंटा है। दोस्तानी बातचीत के लिए अलाव से बेहतर कोई जगह नहीं है। लाल अंगारे, लपटों की चटक, आग में लकड़ी का नया टुकड़ा डालने पर छिटपुट चिंगारियों की बौछार, ऊपर आकाश की ओर सर्पिलाकार रूप में उठते धुएं की तीखी गंध—ये सब मिलकर मन को स्वयं से, प्रकृति से और ईश्वर से जुड़ाव का अहसास कराते हैं।
शायद आप चाहेंगे कि मैं आपको इन जंगलों में रहने वाले कुछ जीवों के अधिक अंतरंग और व्यक्तिगत स्वभाव के बारे में बताऊं। अब तक मैंने आपको उनके शिकार और गोलीबारी की कहानियां सुनाई हैं जिनसे यह धारणा बनती है कि ये जानवर निःसंदेह क्रूर, निर्दयी और तर्कहीन हैं, जो केवल मारने और नष्ट करने की लालसा में डूबे रहते हैं। मैं भी अपने बचपन में ऐसा ही सोचता था। लेकिन उस पुराने समय से मैंने इनमें से अधिकांश जीवों को पालतू जानवर के रूप में रखा है, हालांकि बचपन से ही, लेकिन काफी उम्र तक विभिन्न तरीकों और क्षमताओं में; उनमें से हर एक ने उल्लेखनीय समझदारी और स्नेह के गुण दिखाए हैं, बशर्ते मालिक उनकी छोटी-छोटी विशेषताओं और कमियों को समझ सके।
चलिए, मैं आपको इनमें से कुछ के बारे में बताकर अपनी बात को स्पष्ट करने की कोशिश करता हूं।
मैं ब्रूनो से शुरुआत करूंगा, जो मेरी पत्नी का पालतू स्लॉथ बियर है। मैंने उसे गलती से उसके लिए ले लिया था।
मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ जंगली सूअर का शिकार करने गया था। मैसूर शहर से लगभग तीस मील दूर एक जगह है जहां गन्ने के खेतों में जंगली सूअर भरे पड़े हैं, जिनसे फसलों को बहुत नुकसान होता है। सूअर दिन में गन्ने के खेतों में आराम करते हैं और हमने उन्हें 'बीटर्स' (जो खेतों के मालिक और उनके किराए के लोग होते हैं) की मदद से भगाया। हम उन्हें तब गोली मार देते थे जब वे आस-पास के खेतों के बीच से निकलते या आसपास के झाड़ियों वाले जंगल में भागने की कोशिश करते थे। समझौते के अनुसार, आधा मांस बीटर्स को मिलता है और बाकी हम ले लेते हैं।
लगभग दो साल पहले, ऐसे ही एक गश्ती क्षेत्र में, सूअरों का एक झुंड अचानक बाहर निकला और उनमें से कुछ को गोली मार दी गई, जबकि बाकी भाग गए। सबको लगा कि मज़ा खत्म हो गया है, तभी अचानक एक ज़ोरदार 'भौंक! भौंक!' की आवाज़ आई और एक अकेला सुस्त भालू पीछे-पीछे आया, जो दोपहर की तेज़ धूप में बिल्कुल काला और बेहद गर्म दिख रहा था।
मैं तो बिना सोचे-समझे किसी सुस्त भालू को गोली नहीं मारूंगा, लेकिन दुर्भाग्य से उस बेचारे जानवर के लिए, मेरे एक साथी की ऐसी राय नहीं थी, और उसने तुरंत मौके पर ही भालू को गोली मार दी।
जब हम गिरे हुए जानवर को देख रहे थे, तो हमें आश्चर्य हुआ कि उसकी पीठ पर मौजूद काले बाल हिले और उसके गिरे हुए शरीर से अलग हो गए। फिर हमने देखा कि वह एक छोटा भालू था जो अपनी माँ की पीठ पर सवार था जब अचानक चली गोली ने उसकी माँ को मार डाला। वह नन्हा जीव अपनी गिरी हुई माँ के चारों ओर दौड़ता हुआ दयनीय आवाजें निकाल रहा था।
मैंने उसे पकड़ने की कोशिश में दौड़ लगाई। वह गन्ने के खेत में भाग गया। मैंने उसे डंडों से पीटते हुए उसका पीछा किया और आखिरकार उसकी गर्दन पकड़ ली,

जबाके वह मुझ पर झपटने लगा और अपने लंबे, नुकीले पंजों से मुझे खरोंचने की कोशिश करने लगा।
हमने उसे मांस के लिए लाए गए बोरे में से एक में रख दिया, और जब मैं बैंगलोर वापस आया तो मैंने उसे अपनी पत्नी को भेंट कर दिया। वह बहुत खुश हुई! उसने तुरंत उसके गले में रंगीन रिबन बांध दिया, और जब उसे पता चला कि शावक नर है, तो उसने उसका नाम ब्रूनो रख दिया।
ब्रूनो ने जल्द ही बोतल से दूध पीना शुरू कर दिया। यह उसके लिए एक कदम आगे बढ़ने जैसा था और कुछ ही दिनों में उसने सब कुछ खाना-पीना शुरू कर दिया। और 'सब कुछ' कहना बिल्कुल सही होगा, क्योंकि वह किसी भी सामग्री से बना दलिया, सब्जियां, फल, मेवे, मांस (विशेषकर सूअर का मांस), करी और चावल, चाहे उसमें मसाले हों या मिर्च, रोटी, अंडे, चॉकलेट, मिठाई, हलवा, आइसक्रीम आदि सब कुछ खाता था। पेय पदार्थों की बात करें तो: दूध, चाय, कॉफी, नींबू का रस, कार्बोनेटेड पानी, छाछ, बीयर, मादक पेय और वास्तव में, हर तरल पदार्थ। वह सब कुछ बड़े चाव से पीता था।
भालू हमारे दो अल्सेशियन कुत्तों और हमारे बंगले में रहने वाले किरायेदारों के सभी बच्चों से बहुत लगाव रखता था। अपने बचपन में उसे पूरी आज़ादी मिली हुई थी और वह अपना समय खेलने, रसोई में दौड़ने और हमारे बिस्तरों में सोने में बिताता था।
एक दिन उसके साथ एक हादसा हो गया। मैंने अपनी लाइब्रेरी में घुस आए चूहों और गिलहरियों को मारने के लिए ज़हर (बेरियम कार्बोनेट) डाला था। ब्रूनो ने भी ऐसा ही किया; और उसने थोड़ा ज़हर खा लिया। उसे इतना लकवा हो गया कि वह अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो पा रहा था। लेकिन वह अपने ठूंठों के बल घिसटता हुआ मेरी पत्नी के पास पहुँचा, जिसने मुझे बुलाया। मैं समझ गया कि क्या हुआ है। मैं तुरंत कार से पशु चिकित्सक के पास भागा। ज़हर का मामला! पालतू भालू—बेरियम कार्बोनेट—अब क्या करें?
उन्होंने अपनी चिकित्सा पुस्तकें निकालीं और इंडेक्स को तेज़ी से देखना शुरू किया: 'आपने किस ज़हर की बात की, महोदय?' 'बेरियम कार्बोनेट'। 'अरे हाँ-बेरियम-बेरियम लवण-अरे! बेरियम कार्बोनेट! लक्षण-लकवा-उपचार-इंजेक्शन...एक मिनट रुकिए, महोदय। मैं अपनी सिरिंज और दवा लाता हूँ।'
गाड़ी में वापस भागने का प्रयास। ब्रूनो अभी भी अपने ठूंठों पर लड़खड़ा रहा था, लेकिन स्पष्ट रूप से तेजी से कमजोर हो रहा था; उसे उल्टी हो रही थी, सांस लेने में तकलीफ हो रही थी, उसके पेट के किनारे फूल रहे थे और मुंह खुला हुआ था।
सब लोग उसे पकड़ो! इंजेक्शन लगाया गया—ब्रूनो चीख उठा—10 सीसी एंटीडोट उसके शरीर में बिना एक बूंद भी बर्बाद किए चला गया। दस मिनट बाद: हालत में कोई बदलाव नहीं! 10 सीसी और इंजेक्शन लगाया गया! दस मिनट बाद: सांस लेने में घरघराहट कम हुई—ब्रूनो अपने हाथ-पैर थोड़ा हिला सकता है, हालांकि वह अभी खड़ा नहीं हो सकता। तीस मिनट बाद: ब्रूनो उठा और खूब खाया! वह हमें तिरस्कार भरी नजरों से देखता है, मानो कह रहा हो, 'मेरे जैसे बड़े काले भालू के लिए बेरियम कार्बोनेट क्या है?' ब्रूनो अभी भी खा रहा है।
एक बार उसे लगभग एक गैलन पुराना इंजन ऑयल मिला, जिसे मैंने स्टुडेबेकर के इंजन के निचले हिस्से से निकाला था और दीमकों से बचाव के लिए रखा था। उसने तुरंत सारा तेल पी लिया। लेकिन इसका उस पर कोई बुरा असर नहीं हुआ।
महीने बीतते गए और ब्रूनो अपने आने के समय से कई गुना बड़ा हो गया था। वह अल्सेशियन कुत्तों के बराबर लंबा हो गया था और उनसे भी लंबा हो गया था। लेकिन उतना ही प्यारा, उतना ही शरारती और उतना ही चंचल था। और वह हम सभी को

बहुत प्यार करता था। सबसे बढ़कर, वह मेरी पत्नी से बहुत प्यार करता था, और मेरी पत्नी भी उससे बहुत प्यार करती थी! उसने उसका नाम ब्रूनो से बदलकर बाबा रख दिया था, जो एक हिंदुस्तानी शब्द है जिसका अर्थ है 'छोटी लड़का'। और वह कुछ करतब भी जानता था। 'बाबा, कुश्ती करो' या 'बाबा, मुक्केबाज़ी करो' कहने पर, वह किसी भी ऐसे व्यक्ति को जोश से पकड़ लेता जो उससे लड़ने के लिए आगे आता। उसे एक छड़ी दो और कहो 'बाबा, बंदूक पकड़ो', और वह छड़ी तुम्हारी ओर कर देता। उससे पूछो, 'बाबा, बच्चा कहाँ है?' और वह तुरंत लकड़ी का एक टुकड़ा निकालता और प्यार से उसे सहलाता, जिसे उसने अपने पुआल के बिस्तर में छिपा रखा था। लेकिन किराएदार के बच्चों के कारण, बेचारे ब्रूनो, या बाबा को ज्यादातर समय ज़ंजीर से बांधकर रखना पड़ता था।
तब मैंने और मेरे बेटे ने मेरी पत्नी को सलाह दी, और दोस्तों ने भी उसे यही सलाह दी, कि बाबा को मैसूर के चिड़ियाघर में दे दिया जाए। वह घर में रखने के लिए बहुत बड़ा हो गया था। कुछ हफ्तों की सलाह के बाद आखिरकार वह मान गई। जल्दी से, और इससे पहले कि वह अपना मन बदल पाती, चिड़ियाघर के क्यूरेटर को एक पत्र लिखा गया। क्या उन्हें अपने संग्रह के लिए एक पालतू भालू चाहिए? उन्होंने जवाब दिया, 'हां।' चिड़ियाघर ने मैसूर से अस्सी-सात मील की दूरी तय करके एक लॉरी में पिंजरा भेजा, और बाबा को भेज दिया गया।
हम सभी को उनकी बहुत याद आ रही थी; लेकिन एक तरह से हमें राहत भी मिली। मेरी पत्नी का दिल टूट गया था। वह रोती और परेशान होती रही। पहले कुछ दिनों तक उसने कुछ नहीं खाया। फिर उसने क्यूरेटर को कई पत्र लिखे। बाबा कैसे हैं? जवाब आया: 'ठीक हैं, लेकिन परेशान हैं; उन्होंने खाना भी छोड़ दिया है।'
उसके बाद, मैसूर घूमने आए दोस्तों से मैंने गुज़ारिश की कि वे चिड़ियाघर ज़रूर जाएँ और बाबा का हीलचाल देखें। उन्होंने बताया कि बाबा ठीक तो हैं, लेकिन बहुत दुबले-पतले और उदास दिख रहे हैं। चिड़ियाघर के सभी कर्मचारियों ने कहा कि वे परेशान हैं। तीन महीने तक मैं अपनी पत्नी को मैसूर जाने से रोकता रहा। फिर एक दिन उसने कहा: 'मुझे बाबा को देखना ही है। या तो आप मुझे गाड़ी से ले जाइए; या मैं खुद बस या ट्रेन से चली जाऊंगी।' तो मैं उसे गाड़ी से ले गया।
दोस्तों ने अंदाज़ा लगाया था कि भालू उसे पहचान नहीं पाएगा। मैंने भी यही सोचा था। लेकिन जब वह उसके पिंजरे से कुछ ही गज दूर थी, बाबा ने उसे देख लिया और पहचान लिया। वह खुशी से चिल्ला उठा। वह दौड़कर उसके पास गई, पिंजरे की सलाखों के बीच से उसे सहलाया, और वह खुशी से सिर के बल खड़ा हो गया।
अगले तीन घंटों तक वह उस पिंजरे से बाहर नहीं निकली। उसने उसे चाय, नींबू पानी, केक, आइसक्रीम और न जाने क्या-क्या दिया। फिर 'बंद होने का समय' आ गया और हमें जाना पड़ा। मेरी पत्नी फूट-फूटकर रोई; बाबा फूट-फूटकर रोए; यहाँ तक कि सख्त मिजाज क्यूरेटर और रखवाले भी उदास हो गए। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने आगे जो होने वाला था, उसे स्वीकार कर लिया था।
'ओह, महोदय,' उसने क्यूरेटर से पूछा, 'क्या मुझे मेरे बाबा वापस मिल सकते हैं?'
हिचकिचाते हुए उसने जवाब दिया: 'महोदया, यह चिड़ियाघर का जानवर है और अब सरकारी संपत्ति है। मैं सरकारी संपत्ति किसी को नहीं दे सकता। लेकिन अगर मेरे बॉस, बैंगलोर के अधीक्षक, सहमत हों, तो निश्चित रूप से आप इसे वापस ले सकती हैं।'
इसके बाद बैंगलोर की वापसी यात्रा हुई और अधीक्षक के बंगले पर मुलाकात हुई। वहां उन्होंने रोते हुए विनती की: 'बाबा और मैं दोनों एक-दूसरे के लिए बहुत चिंतित हैं। क्या आप कृपया इसे मुझे वापस दे देंगे?' वह दयालु व्यक्ति थे और मान गए।

इतना ही नहीं, उन्होंने क्यूरेटर को पत्र लिखकर भालू को बैंगलोर ले जाने के लिए हमें एक पिंजरा उपलब्ध कराने का अनुरोध किया।
हम अधीक्षक के पत्र के साथ फिर से मैसूर लौट आए। बाबा को एक छोटे से पिंजरे में बिठाकर गाड़ी के ऊपर चढ़ाया गया; पिंजरे को मज़बूती से बांध दिया गया, और धीरे-धीरे सावधानीपूर्वक बैंगलोर की वापसी यात्रा पूरी की गई।
घर लौटने पर, हमारे परिसर में विशेष काम के लिए मजदूरों की एक टुकड़ी को लगाया गया। बाबा के लिए एक द्वीप बनाया गया। यह बीस फीट लंबा और पंद्रह फीट चौड़ा था, और इसके चारों ओर छह फीट चौड़ा और सात फीट गहरा एक सूखा गड्ढा या खाई थी। मुर्गियों के रहने वाला एक लकड़ी का बक्सा लाया गया और बाबा के रात में सोने के लिए द्वीप पर रख दिया गया। उन्हें गर्म रखने के लिए अंदर पुआल बिछाया गया, और उनका 'बच्चा', टेढ़ा-मेढ़ा पेड़ का ठूंठ, और उनकी 'बंदूक', बांस का टुकड़ा, जिन्हें चिड़ियाघर भेजे जाने के बाद से भावनात्मक रूप से सहेज कर रखा गया था, उनके खेलने के लिए वापस रख दिए गए।
कुछ दिनों में कुलियों ने पिंजरा उठाकर द्वीप पर रख दिया और बाबा को छोड़ दिया गया। वह बहुत खुश हुआ; अपने पिछले पैरों पर खड़े होकर उसने अपनी 'बंदूक' तान दी और अपने 'बच्चे' को गोद में उठा लिया। मेरी पत्नी घंटों वहाँ कुर्सी पर बैठी रहती थी और वह उसकी गोद में बैठा रहता था। वह पंद्रह महीने का था और काफी भारी भी था!
मेरी पत्नी जिस तरह से द्वीप पर पहुँचती है और वापस आती है, वह बहुत दिलचस्प है। मैंने एक आम के पेड़ की लटकती हुई शाखा से एक रस्सी बाँधी है, जिसके एक सिरे पर एक फंदा है। वह एक पैर फंदे में डालकर दूसरे पैर से धक्का देती है, जिससे वह आसपास के गड्ढे की छह फुट चौड़ी खाई को पार कर लेती है। वापसी की यात्रा भी इसी तरह होती है।
लेकिन अब कौन कह सकता है कि सुस्त भालू में स्नेह की भावना नहीं होती, उसकी याददाश्त नहीं होती और उसमें कोई व्यक्तिगत विशेषता नहीं होती?
अब मैं आपको एक बिल्कुल अलग तरह के जानवर के बारे में बताऊँगी—एक लकड़बग्घे के बारे में—जो अभी हमारे साथ है और मेरा पालतू जानवर है। उसका नाम जैकी है, और वह मुझे कुछ बेहद दुखद परिस्थितियों में मिली था।
लगभग चौदह महीने पहले मैं जंगल में एक रात बिता रहा था। लेकिन जगह और हालात अलग थे। यह सलेम जिले में चिनार नदी के किनारे स्थित सोपथी नामक एक पथरीली जगह थी, और रात चांदनी से जगमगा रही थी। मैंने अलाव नहीं जलाया था, बल्कि नदी के रेतीले किनारे पर लटके एक बड़े पत्थर पर बैठा था। मैं अकेला था और अपने साथ कोई हथियार नहीं लाया था।
लगभग दस बजे मैंने देखा कि कोई अनजानी सी चीज़ रेत पर मेरी तरफ़ सरक रही है। जैसे-जैसे वह नज़दीक आती गई, उसकी अजीब सी लचकदार चाल, झुके हुए शरीर और धूसर रंग के शरीर से, जिस पर चांदनी में काली धारियाँ मुश्किल से दिखाई दे रही थीं, मैंने अंदाज़ा लगाया कि वह एक लकड़बग्घा है। जब वह लगभग मेरे सामने आ गई, तो वह अचानक रुक गई और मुँह फेरकर जंगल में किसी चीज़ को टकटकी लगाकर देखने लगी। मैं उसके बड़े, सीधे खड़े, चमगादड़ जैसे कानों को साफ़ देख सकता था, जो हल्की सी भी आवाज़ सुनने के लिए तत्पर थे।
जल्द ही उसके इस व्यवहार का कारण स्पष्ट हो गया। चांदनी रात में लकड़बग्घे की तरह दिखने वाला एक जंगली कुत्ता, हालांकि वास्तव में वह लाल-भूरे रंग का जानवर था जिसकी पूंछ लगभग काली और घनी थी, नदी के घने किनारे से निकलकर रेतीले तल की ओर बढ़ा। देखते ही देखते उसके साथ पांच और कुत्ते आ गए। लकड़बग्घा

मुड़ा और उस चट्टान के पास उग रहे पेड़ों की ओट में छिपने की कोशिश करने लगा जिस पर मैं बैठा था। लेकिन जंगली कुत्तों ने उसकी हरकत भांप ली और तुरंत उस पर हमला कर दिया।
मैंने पहले भी कहा है कि जंगली कुत्ते खूंखार और निर्दयी शिकारी होते हैं। मनुष्य, हाथी और बाइसन को छोड़कर, वे बाघों और तेंदुओं समेत किसी भी हिलती-डुलती चीज़ पर हमला कर देते हैं, और उन्हें इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं होती कि लड़ाई में उन्हें कितना नुकसान उठाना पड़ेगा, जब तक कि वे अंततः अपने शिकार को पकड़कर, उसके टुकड़े-टुकड़े करके, उसे लगभग ज़िंदा ही खा न लें। उस समय तक मेरा अपना अनुभव यह था कि जंगली कुत्ते लकड़बग्घों को या तो रिश्तेदार समझते थे या उन्हें तुच्छ समझते थे और उन्हें अकेला छोड़ देते थे। लेकिन वह रात एक अपवाद थी, क्योंकि छह कुत्तों ने लकड़बग्घे पर तुरंत हमला कर दिया।
लकड़बग्घे ने भागने की कोशिश की, लेकिन उसके लड़खड़ाते पैर बहुत धीमे थे और पलक झपकते ही कुत्ते उस पर टूट पड़े। पहला हमलावर बहुत करीब आ गया था। बिजली की तरह, लकड़बग्घे ने पलटी मारी, अपना सिर एक कोण पर झुकाया और अपने मज़बूत जबड़े कुत्ते की गर्दन पर गड़ा दिए। जब शक्तिशाली दांत उसके गले में धंसे तो मैंने उस घायल जानवर की मरणासन्न चीख सुनी। हड्डियों के टूटने की तेज़ आवाज़ आई और गर्दन सूखी टहनी की तरह टूट गई। लेकिन बाकी पांच कुत्ते भी उस बेचारे लकड़बग्घे पर टूट पड़े।
हाइना स्टिएंटा, जिसका पूरा लैटिन नाम यही है, लड़ाकू नहीं है। बल्कि, यह स्वभाव से डरपोक, छिपकर चलने वाला और दुबका रहने वाला प्राणी है, जो जंगल में रेंगता हुआ, मृत जानवरों की तलाश में लंबी दूरी तय करता है—चाहे उनकी मृत्यु किसी भी कारण से हुई हो या वे किसी भी अवस्था में सड़ रहे हों। हाइना एक मृतभक्षी है। कभी-कभार ही वह किसी भटकती हुई बकरी, भेड़ या गांव के कुत्ते पर हमला करके उसे मार डालता है और खा जाता है, लेकिन ऐसा वह केवल अत्यधिक भूख लगने पर ही करता है। वह किसी भी कीमत पर लड़ाई से बचने की कोशिश करता है।
यह बेचारा लकड़बग्घा, जिसकी दुर्दशा मैं देख रहा था, चुपके से भागने की कोशिश कर रहा था, लेकिन कुत्ते बहुत फुर्तीले थे। अब जब उसे समझ आ गया कि वह बच नहीं सकता, तो उसने अपनी जान की बाजी लगा दी। कुत्ते अपनी अजीबोगरीब अदाओं से चीख-पुकार मचाकर अपने साथियों को आकर्षित करने की कोशिश कर रहे थे, वहीं लकड़बग्घा अपने गले से गुर्राते हुए दाएं-बाएं झपट रहा था और अपने हमलावरों को बुरी तरह काट रहा था, जिससे वे दर्द से चीख रहे थे। लेकिन वे पांच कुत्ते बहुत ज़्यादा थे। उन्होंने लकड़बग्घे के शरीर को घेर लिया, गुर्राते हुए, काटते हुए और मांस को हड्डियों से नोचते हुए। मुझे पता था कि एक मिनट में ही वह जानवर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।
मैं मदद करना चाहता था, लेकिन मेरे पास कोई हथियार नहीं था—एक लाठी या पत्थर भी नहीं। एक पल के लिए मैंने सोचा कि जिस चट्टान पर मैं बैठा था, वहां से नीचे उतरकर हमलावरों को चिल्लाकर भगाते हुए उनकी मदद के लिए दौड़ पड़ूं। लेकिन यह संभव था कि गुस्से में आकर वे मेरी दखलअंदाजी से नाराज़ हो जाएं और मुझ पर हमला कर दें। इसलिए मैं अपने छिपने की जगह से उठा, खुद को सबके सामने लाया और सीटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा।
लड़ाई में लगे कुत्ते एक-दूसरे को नोंच-नोंच करने में इतने मशगूल थे कि उन्हें मेरी आवाज़ सुनने में काफ़ी देर लग गई। फिर, एक-एक करके, कुत्तों ने लकड़बग्घे पर हमला करना बंद कर दिया और मुड़कर उस चट्टान की ओर देखने लगे जिस पर मैं खड़ा था। चांदनी में मैं देख सकता था कि लकड़बग्घे की हालत बहुत खराब थी: अब

वह धूसर नहीं था, बल्कि उस पर बड़े-बड़े काले धब्बे थे जो इतनी दूरी से भी चमक रहे थे। मैं जानता था कि ये धब्बे कई घावों से बहते खून के कारण थे। पाँचों कुत्ते भी घायल थे। उनमें से कुछ मुझे और फिर अपने शिकार को देखते हुए खुद को या एक-दूसरे को चाट रहे थे।
लकड़बग्घे ने मौके का फायदा उठाया, सूखे नदी के किनारे लड़खड़ाते हुए पार किया और दूसरी तरफ जंगल में गायब हो गया। कुछ मिनट बाद पाँचों कुत्ते भी उसके पीछे-पीछे चले गए, निस्संदेह अपना काम पूरा करने के इरादे से। लेकिन मुझे आगे कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी, और लड़ाई के शोर और मेरे द्वारा मचाए गए शोर के बाद, पूरी रात कोई और जानवर दिखाई नहीं दिया।
भोर होते ही मेरे मन में यह विचार आया कि मैं लकड़बग्घे के पदचिह्नों का पीछा करके देखूँ कि क्या हुआ था। यह अपेक्षाकृत आसान था, क्योंकि यद्यपि दूसरी ओर की ज़मीन इतनी कठोर थी कि पैरों के निशान दिखाई नहीं दे रहे थे, फिर भी घास पर खून की एक स्पष्ट लकीर थी और झाड़ियों के पत्तों पर खून के धब्बे लगे हुए थे। यह लकीर एक छोटी पहाड़ी की ओर जाती थी जो शायद आधा मील दूर थी। इस पहाड़ी की चोटी के पास कुछ बड़े-बड़े पत्थर एक दूसरे के ऊपर ढेर थे, जिनके चारों ओर भालाकार घास उग रही थी। यहीं पर लकड़बग्घे ने आखिरी बार बहादुरी से मुकाबला किया और निर्दयी पीछा करने वालों के फिर से करीब आने पर उसकी मृत्यु हो गई।
लाल रंग के कुत्तों में से एक मरा पड़ा था, लंबी भाले जैसी घास में अकड़ा हुआ, जो तनों के सिरों से टपकती ओस की बूंदों के भार से झुकी हुई थी। केवल कुछ हड्डियाँ और लकड़बग्घे की खोपड़ी ही बची थी। भूरे और काले रंग की धारियों वाले उसके शरीर के टुकड़े मेरे चारों ओर बिखरे पड़े थे, जिनमें से अधिकतर खून से गहरे जंग लगे लाल रंग के हो गए थे। लेकिन न तो शव दिखाई दे रहा था और न ही मांस। कुत्ते सब कुछ खा गए थे।
लगभग दस गज की दूरी पर बिखरे पत्थरों के बीच एक खुला रास्ता था। निस्संदेह, यह वही मांद थी जिसमें लकड़बग्घे हमलावरों के आने से पहले जा रहे थे। जब मैं उस भयावह दृश्य को देख रहा था, तभी मेरी नज़र मांद के प्रवेश द्वार पर हुई एक हल्की हलचल पर पड़ी। मैंने ऊपर देखा तो दो नन्हे लकड़बग्घों के डरे हुए, उदास चेहरे दिखाई दिए।
तो पिछली रात इतनी मुश्किलों का सामना करने वाला बहादुर जानवर एक मादा लकड़बग्घा था, न कि नर, जैसा कि मैंने सोचा था। इसके अलावा, वह एक माँ थी और अपने पीछे दो अनाथ बच्चे छोड़ गई थी। उनके आकार से मैं समझ गया था कि वे खुद की देखभाल करने के लिए बहुत छोटे थे और तीन-चार दिनों में भूख से मर जाएँगे। मैंने उन्हें पकड़ने का निश्चय किया। मैं लकड़बग्घे के बच्चों की नज़रों के सामने, जिस रास्ते से आया था, उसी रास्ते से नीचे की ओर लौट गया। फिर मैंने रास्ता बदला और दूसरी तरफ़ से पहाड़ी की ओर बढ़ा। आखिरकार मैं पत्थरों के ढेर के पीछे छिप गया और बच्चों के बाहर आने का इंतज़ार करने लगा। मुझे पता था कि ऐसा बहुत जल्द होगा, जैसे ही उन्हें भूख लगेगी।
आखिरकार मेरा मौका आ ही गया। वे अपने मांद से साथ-साथ बाहर आए और कुछ कदम आगे बढ़कर अपनी माँ के अवशेषों को उदास और आश्चर्य भरी निगाहों से देखने लगे। तभी मैंने उन पर झपट्टा मारा। सौभाग्य से मैंने एक पिल्ले को उसकी गर्दन से पकड़ लिया। लेकिन बदकिस्मती से दूसरे ने मेरी आहट सुन ली या महसूस कर ली और वापस गुफा में भाग गया।
अपने छटपटाते हुए पिल्ले को पकड़े हुए, मैं पत्थरों के ढेर के पीछे वापस चला गया और दूसरे पिल्ले के फिर से बाहर आने का इंतजार करने लगा। लेकिन लगभग एक

घंटे तक वहाँ रहने के बावजूद, वह नहीं निकला।
इसी बीच, लगातार छटपटाते रहने के कारण, मेरे हाथों में पकड़ा हुआ पिल्ला संभालना मुश्किल हो गया। वह लगातार काटता, खरोंचता और छटपटाता रहा। एक-दो बार तो वह लगभग मेरी पकड़ से फिसल ही गया था, और मुझे पता था कि अगर ऐसा हुआ तो मैं उसे दोबारा कभी नहीं पकड़ पाऊँगा। इसलिए, पंद्रह मिनट बाद मैंने अनिच्छा से दूसरे पिल्ले को उसके हाल पर छोड़ने का फैसला किया और लगभग पाँच मील पैदल चलकर पेन्नाग्राम गाँव वापस चला गया, जहाँ मैंने अपनी कार खड़ी की थी।
इस तरह मुझे जैकी मिला, जैसा कि मैंने उसका नाम रखा था, क्योंकि वह नर निकला, और मैं उसे बैंगलोर ले आया। कुछ दिनों तक मैंने उसे बोतल से बकरी का दूध पिलाया, क्योंकि मैंने पाया है कि गाय का दूध अधिकांश मांसाहारी जंगली जानवरों को रास नहीं आता, क्योंकि उसमें प्रोटीन की कमी होती है। मैंने बकरी के दूध के साथ कुछ आने कच्चा, कीमा बनाया हुआ मटन भी दिया, जो आसानी से पच जाता था और साथ ही आवश्यक प्रोटीन भी प्रदान करता था।
जैकी की ताकत और आकार दोनों में तेजी से वृद्धि हुई, और जल्द ही उसे बकरी के दूध और कीमा बनाया हुआ भेड़ का मांस खाने की आवश्यकता नहीं रही। अब से उसका आहार कच्चे गोमांस और हड्डियों से बना था, और इससे उसे जरा भी फर्क नहीं पड़ता था कि यह ताजा था या सड़ चुका था, कीड़ों से भरा हुआ और मक्खियों से घिरा हुआ था।
फिर जैकी के साथ पहली दुर्घटना घटी जिसमें उसकी जान बाल-बाल बची। बैंगलोर से लगभग तेरह मील पूर्व में व्हाइटफील्ड नाम की एक छोटी सी बस्ती है, जिसमें लगभग सभी एंग्लो-इंडियन परिवार रहते हैं। इस जगह पर एक छोटा सा पांच कमरों वाला कॉटेज, जिसमें बरामदा और रसोईघर था और आधे एकड़ से अधिक जमीन थी, 5,000 रुपये में बिक रहा था, जो अंग्रेजी मुद्रा में लगभग 375 पाउंड के बराबर है। मेरी पत्नी को यह जगह बहुत पसंद आई, उसने इसे 'छोटा सा' कॉटेज कहा और चाहती थी कि मैं इसे खरीद लूँ। मैंने इसे खरीद लिया, साथ ही एक गाँव की कुतिया को भी, जिसे उसके पिछले मालिक ने छोड़ दिया था लेकिन वह वहीं रह गई थी। यह कुतिया मुझसे तुरंत घुलमिल गई। मैंने उसका नाम जिप्सी रखा, जो उसके पूर्वज के लिए उपयुक्त था।
मैं हर हफ्ते कुछ दिनों के लिए इस कॉटेज में रहने आता था और बाकी दिनों के लिए बैंगलोर स्थित अपने घर लौट जाता था, और इन यात्राओं के दौरान मैं जैकी को अपने साथ कार से ले जाता था।
यह झोपड़ी कुछ समय से खाली पड़ी थी, और इसी वजह से आसपास के ग्रामीणों ने इसे लगभग अपनी संपत्ति मान लिया था। वे न केवल परिसर में मवेशी और बकरियां चराते थे, जिससे बगीचा नष्ट हो रहा था, बल्कि वे जलाऊ लकड़ी के लिए पेड़ काटते थे और अपने मवेशियों के लिए घास काटते थे, साथ ही दिन के समय चरवाहों के मिलने का अड्डा भी बन गए थे। मैंने यह सब रोकने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ। फर्क सिर्फ इतना था कि ग्रामीण दिन के उजाले में लकड़ी चुराने के बजाय चांदनी रातों में ऐसा करने आते थे, जबकि उनकी महिलाएं सुबह होते ही घास काटने आती थीं, ठीक वैसे ही जैसे सुबह जल्दी उठने वाला पक्षी कीड़ा पकड़ लेता है। इससे पुलिस में शिकायतें हुईं और एक-दो बार आमना-सामना भी हुआ। इसलिए ग्रामीणों ने मुझे सबक सिखाने का फैसला किया।
अब मुझमें कई बुरी आदतें पड़ गई हैं, और उनमें से एक यह है कि मैं अपने कुत्ते को रात में घर के अंदर ही रखता हूँ, उसे आँगन में खुला नहीं छोड़ता। मैं ऐसा इसलिए

करता हूँ क्योंकि पहले भी मेरे कुत्ते साँप के काटने से या जंगली इलाकों में तेंदुओं द्वारा उठा ले जाने से मर चुके हैं। इसलिए जिप्सी मेरे पलंग के नीचे चटाई पर सोती है।
एक सुबह तड़के, मैं बाथरूम के दरवाजे पर उसके धीरे-धीरे गुर्राने की आवाज़ से जाग गया। बाहर तेज़ चाँदनी थी और सुबह के 3:10 बज रहे थे। भला कोई कुत्ता बिना वजह इस तरह गुर्राता नहीं है। इसलिए, मैंने टॉर्च लेकर धीरे से दरवाजा खोला और बाथरूम में चला गया। जिप्सी मेरे पास से गुज़री, बाथरूम के बाहरी दरवाजे पर रुक गई, जो कि बंद था, और अब भी खतरनाक तरीके से गुर्रा रही थी।
मुझे यकीन था कि कहीं न कहीं कोई साँप ज़रूर होगा। तभी मुझे याद आया कि दरवाजे का एक तख्ता, जो लगभग दो इंच चौड़ा और जमीन से लगभग तीन फीट ऊपर था, गायब था। मैं झुककर उस दरार से अंदर झाँका। जो मैंने देखा, उससे मेरे मन में मिली-जुली भावनाएँ उमड़ आईं। तेज़ चाँदनी में ग्यारह आदमी खड़े थे—मैंने उन्हें आसानी से गिन लिया—लाठियों और बाँसों से लैस। ज़ाहिर है, ये नाराज़ ग्रामीणों का एक समूह था, जो मेरे अडिग रवैये के कारण मुझे पीटने आए थे।
मेरी आँखों के सामने ही, एक आदमी दूसरे के कंधों पर चढ़ गया और वहाँ से टाइलों वाली छत पर पहुँच गया, जो उस जगह से ज़मीन से लगभग नौ फीट ऊपर थी। मैंने अंदाज़ा लगा लिया कि वह क्या करने वाला है: एक-दो टाइलें हटाकर उस दरार से घर में घुस जाएगा और फिर अपने साथियों को अंदर आने देने के लिए बाहरी दरवाजे की कुंडी खोल देगा। मुझे बहुत गुस्सा आया।
दबे पांव वापस अपने बेडरूम के कोने में रखी .12 बोर की शॉटगन के पास जाकर, मैंने दो-तीन नंबर 8 गेज के कारतूस अपने नाइटकोट की जेबों में डाले और बाथरूम में लौट आया। मैं सोच रहा था कि नंबर 8 की गोली से भीड़ के पैरों में एक के बाद एक वार कर दूं। लेकिन, ठीक समय पर, मुझे समझ आ गया कि इसका क्या नतीजा होगा; बेशक, कई लोगों के पैर छर्रों से दुखेंगे, और शायद एक-दो को अस्पताल जाना पड़ेगा, लेकिन इससे पुलिस का मामला बिगड़ जाएगा और तरह-तरह के कानूनी झंझट शुरू हो जाएंगे। मैंने गोली क्यों चलाई? मैंने इतने लोगों को क्यों घायल किया? क्या यह सचमुच आत्मरक्षा थी? मुझे यह साबित करना होगा। वे लोग कसम खा सकते हैं कि उनका कोई बुरा इरादा नहीं था। लेकिन उन्हें यह समझाना होगा कि वे रात के उस समय कैसे और क्यों आए थे। कुल मिलाकर यह एक पेचीदा मामला होगा, जिसके लिए मुझे पुलिस स्टेशन और अदालत में पेश होना पड़ेगा। इसलिए मैंने उनके पैरों पर गोलियां चलाने के प्रबल प्रलोभन पर काबू पाया और उनके सिर के ऊपर गोली चलाने का फैसला किया।
उस सन्नाटे में बंदूक की आवाज और चमक सुनकर, जो नौ लोग अभी भी एक साथ खड़े थे, वे पूरी रफ्तार से भागने लगे। जिस आदमी ने अपने साथी को छत पर चढ़ाया था, वह पूरी तरह से घबरा गया और चिल्लाया कि उसे गोली लग गई है और वह मर गया है, फिर उसने जल्दी से अपना बयान बदलकर कहा कि वह मर रहा है। वह इतना डरा हुआ था कि उसकी चलने-फिरने की शक्ति जवाब दे गई और वह वहीं जड़वत खड़ा रहा, जोर-जोर से चिल्लाता रहा। ग्यारहवां साहसी, जो मेरी छत पर चढ़ गया था, नीचे उतरने में जरा भी देर नहीं की। वह कूदा, धड़ाम से जमीन पर गिरा और खुद को संभालते हुए बिजली की तरह भाग निकला। इससे सन्नाटा टूटा और उसका साथी आखिरकार होश में आया और तेजी से उसके पीछे भागा। यह सब कुछ ही सेकंड में हुआ और फिर जिप्सी और मैं अकेले रह गए।
मैंने बाथरूम का दरवाजा खोला और बाहर जाकर देखा कि कहीं कोई और बदमाश तो आसपास नहीं छिपा है। उनका कोई निशान नहीं था। लेकिन युद्ध के मैदान में कुछ 'स्मृति चिन्ह' बचे थे—या शायद मैं उन्हें 'लूट का माल' कहना ज़्यादा सही

समझूँ। तीन बाँस के डंडे, एक ठोस लकड़ी का डंडा जो अगर मेरे मोटे सिर पर पड़ता तो ज़रूर फूट जाता, और सबसे अजीब बात, चप्पलों के दो जोड़े, या खुरदुरे चमड़े के सैंडल, जैसे दक्षिण भारत के देहाती लोग आमतौर पर पहनते हैं।
अगली सुबह मैंने घर-घर जाकर फल, सब्ज़ियाँ और अंडे बेचने वाले विक्रेताओं से कहा कि ठीक तीन दिन बाद, मैं पहले आने वाले को दो जोड़ी अच्छी चप्पलें बहुत सस्ते में बेचने वाला हूँ। बिक्री के लिए तय सुबह दो 'खरीदार' आए और उन्हें खरीदने की पेशकश की। मैंने घोषणा की कि मैं उन्हें बहुत कम दामों पर बेच रहा हूँ—केवल एक रुपया और आठ आना प्रति जोड़ी—लगभग दो शिलिंग! कीमत सबको मंज़ूर हो गई और हर आदमी ने अपने पैसे दिए, अपनी चप्पलें लीं, उन्हें पहना और संतुष्ट होकर चले गए। मुझे पूरा यकीन था कि वे उन चप्पलों के असली मालिक थे जिन्हें उन्होंने उस यादगार रात को फेंक दिया था। उसके बाद मेरी छोटी सी झोपड़ी में सेंध लगाने की कोई कोशिश नहीं हुई और हर तरह के घुसपैठिए गायब हो गए।
यह सब बताने का मेरा मकसद यह है कि मुझे जिप्सी से काफी लगाव हो गया। यह सब जैकी को पाने से कुछ समय पहले हुआ था, इसलिए जब मैंने उसे बैंगलोर से व्हाइटफील्ड लाना-ले जाना शुरू किया, तब वह काफी छोटा था, जबकि जिप्सी एक पूरी तरह से बिगड़ी हुई लड़की थी, जो बिगड़ने की कगार पर थी।
जैकी पर पहली विपत्ति तब आई जब उसने जिप्सी की खाई हुई हड्डी चुराने की कोशिश की। जिप्सी ने उसे काट लिया और उसका एक दांत उसकी बाईं आंख के पास से गुजरा, जिससे आंख के ठीक नीचे एक गहरा घाव हो गया। एक फोड़ा बन गया और मुझे लगा कि मैं जैकी को खो दूंगी, या कम से कम उसकी आंख तो चली ही जाएगी, क्योंकि उसे तेज़ बुखार हो गया था। पशु चिकित्सक ने उसे पेनिसिलिन के इंजेक्शन दिए, एक बार में चार लाख यूनिट, जब तक कि उसे पांच इंजेक्शन नहीं लग गए। फिर फोड़ा फूट गया - सौभाग्य से बाहर की ओर - और उसकी आंख के साथ-साथ उसकी जान भी बच गई।
उसके बाद वह तेजी से बढ़ने लगा और जल्द ही जिप्सी से भी लंबा हो गया। लेकिन उसने कभी भी, चाहे खेल में हो या गुस्से में, उसे काटने की कोशिश नहीं की। वह उसके साथ उतनी ही कोमलता से पेश आता है जितना एक महिला के साथ पेश आना चाहिए, और उसके साथ खेलना-कूदना उसे बहुत पसंद है।
जैकी को खाना खिलाना अब एक समस्या बन गया था, क्योंकि उस समय वह प्रतिदिन आठ से दस पाउंड कच्चा गोमांस खा रहा था, और बैंगलोर में गोमांस की कीमत आठ आना प्रति पाउंड थी, यानी लगभग आठ पेंस! मुझे उसके लिए कच्चा गोमांस खरीदने पर प्रतिदिन लगभग सात शिलिंग खर्च करना उचित नहीं लग रहा था।
इसलिए मैंने उसे व्हाइटफील्ड स्थित अपनी कुटिया में स्थायी रूप से रख लिया, जहाँ मैंने बड़ी चतुराई से दो स्थानीय कसाइयों से दोस्ती कर ली थी। उन्होंने मुझे प्रतिदिन दस पाउंड वज़न का गोमांस, जिसमें फेफड़े, आंतें, त्रिकास्थि, जिगर आदि शामिल थे, छह आना में देने का जिम्मा लिया। यानी, दस पाउंड गोमांस के लिए लगभग छह पेंस प्रतिदिन!
यह व्यवस्था काफी समय तक ठीक-ठाक चलती रही, लेकिन एक दिन मुझ पर और जैकी पर गंभीर मुसीबत आ पड़ी।
मैं आपको बता दूँ कि भारत के कुछ हिस्सों में, जिनमें मैसूर राज्य भी शामिल है, जिसे 'गाय-वध' कहा जाता है, वह निषिद्ध है। इन स्थानों पर मवेशियों का वध करना प्रतिबंधित है, हालांकि कानून गोमांस खाने पर रोक नहीं लगाता, बशर्ते वह इसे ऐसे स्थान से प्राप्त कर सके जहाँ यह प्रतिबंध लागू नहीं है। जिस प्रकार शराब पर प्रतिबंध

भारत के कुछ राज्यों और हिस्सों में लागू है और अन्य में नहीं, उसी प्रकार एक स्थान पर 'गाय-वध' पर प्रतिबंध पड़ोसी राज्य या ऐसे हिस्से से मांस की आपूर्ति के फलते-फूलते व्यापार का खुला निमंत्रण है जहां यह कानून लागू नहीं है। इस प्रकार, मद्रास राज्य को कानून द्वारा सीमा पार मैसूर राज्य और बैंगलोर में गोमांस की आपूर्ति करने की अनुमति है, जहां गाय-वध निषिद्ध है। ऐसा कहा जाता है कि मैसूर राज्य के कुछ हिस्सों, जैसे बैंगलोर जिले में, जहां शराब पर प्रतिबंध लागू नहीं है, कुछ व्यक्ति (हालांकि इस बार कानूनी रूप से नहीं) निषिद्ध वस्तु को सीमा पार मद्रास राज्य में आपूर्ति करके इसका प्रतिफल देते हैं, जो पूरी तरह से 'शराब-मुक्त' क्षेत्र है।
बैंगलोर को अब इसी तरह से गोमांस मिलता है! लेकिन व्हाइटफील्ड का क्या? वहां के कसाई दावा करते हैं कि उन्हें गोमांस की आपूर्ति मद्रास सीमा के उस पार से भी मिलती है, जो लगभग बीस मील दूर है। लेकिन एक दिन व्हाइटफील्ड की पुलिस को शक हुआ और उन्होंने उस कसाईखाने पर छापा मारा जहां मांस रखा जाता था और दरवाज़े सील कर दिए। उन्होंने बताया कि वहां मवेशियों को काटा जा रहा था। तो जैकी के लिए मांस नहीं बचा था और वह बुरी तरह भूखा था। मैं क्या करता?
उस रात मैंने एक बोरी ली और कसाइयों के घरों की ओर चल पड़ा। पुलिस ने सामने के दरवाज़े सील कर रखे थे। लेकिन क्या पीछे के दरवाज़े, खिड़कियाँ और रोशनदान जैसी कोई चीज़ नहीं होती? और क्या छत से किसी इंसान के आने-जाने के लिए टाइलें नहीं हटाई जा सकतीं? उस सुबह मुझसे मिलने आए सज्जनों ने ही मुझे यह विचार दिया था।
संक्षेप में, मैं अपने कंधों पर गोमांस से भरा एक बोरा लादकर, जिसके लिए मुझे भारी कीमत चुकानी पड़ी थी, खेतों के पार, व्हाइटफील्ड कब्रिस्तान के बाहरी इलाके से होते हुए और फिर एक पहाड़ी को पार करके अपनी छोटी सी कुटिया की ओर चल पड़ा। आखिरकार मैं खून से लथपथ घर पहुंचा, क्योंकि बोरा खून से भीग चुका था। रात के उस समय, अगर मैं पकड़ा जाता, तो निस्संदेह मुझ पर हत्या का संदेह होता। लेकिन मैंने जैकी को पूरे एक हफ्ते तक खिलाने के लिए पर्याप्त मांस जुटा लिया था, हालाँकि चौथे दिन के बाद मेरी छोटी सी कुटिया से सड़े हुए मांस की भयानक बदबू आने लगी थी। लेकिन तब तक पुलिस को पता चल चुका था कि गोमांस मद्रास से आया था, न कि व्हाइटफील्ड के अवांछित मवेशियों से।
जैकी अब मेरे साथ है और काफी बड़ा हो गया है, और देखने में थोड़ा अजीब लगता है। लेकिन वह बिल्कुल भी हिंसक नहीं है। इसके विपरीत, उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य उछल-कूद और खेलना है। मैं उसे कभी-कभी खुला छोड़ देता हूँ और वह मेरे पीछे-पीछे घूमती है, शाम को लंबी सैर पर निकलता है और बच्चों, भेड़ों, बकरियों या अन्य कुत्तों को नुकसान नहीं पहुंचाता। उसे पिल्लों, बिल्ली के बच्चों, मुर्गियों और ऐसे ही छोटे जीवों से बहुत लगाव है।
कभी-कभी उसके खेलने-कूदने के तरीके हद से ज़्यादा शोर-शराबे वाले होते हैं। हालाँकि जिप्सी अब उससे बहुत दोस्ताना व्यवहार करती है, फिर भी उसे उसका उबड़-खाबड़ खेल बिल्कुल पसंद नहीं आता और वह उस पर गुर्राती है, भले ही वह उससे कद में लंबा हो।
इसलिए उसके लिए एक साथी के रूप में, मैं एक कसाईखाने से एक मादा पिल्ला घर ले आया, जो भारत में 'आवारा कुतिया' के नाम से जानी जाती है। वह लगभग चार महीने की है, जबकि जैकी अब एक साल से अधिक का है, और उसका आकार लगभग जैकी के आकार का पांचवां हिस्सा है। मैंने उसका नाम जिल रखा है। लेकिन वह जैकी को खूब कसरत करवाती है, कभी उसका पीछा करके तो कभी खुद उसका पीछा करवाकर; उछल-कूद करके, खेलकर और यहाँ तक कि जब जैकी

थोड़ा ज्यादा शरारती हो जाता है तो उसे काट भी लेती है। जैको यह सब चुपचाप सह लेता है। वह छोटी जिल से बहुत प्यार करता है, जो उसके मुँह से कच्चा मांस भी छीन लेती है। उसने उसे कभी नहीं काटा; कभी उस पर गुर्राया भी नहीं।
और उसने मेरे साथ इनमें से कोई भी काम नहीं किया है। वह थोड़ा मूर्ख है, औसत कुत्ते की तुलना में उसकी बुद्धि बहुत कम है। लेकिन वह प्यारा और नेक स्वभाव का है, अपने भूरे रंग के शरीर, काली धारियों, नुकीले कानों वाले बड़े सिर, गर्दन और पीठ पर फैली लंबी लटों, छोटे पिछले पैरों और लड़खड़ाती चाल के साथ कुत्तों में एक मसखरे जैसा दिखता है। तो आप देख सकते हैं, लकड़बग्घा उतना भयानक, क्रूर और घृणित प्राणी नहीं है जितना लोग सोचते हैं।
हमारे पास कुल मिलाकर लगभग आठ पैंथर के शावक थे, जिनमें से अधिकांश को उनकी माँओं के मारे जाने के बाद उनकी मांद से बचाया गया था। मुझे याद है कि हमने पहले दो शावकों को प्राप्त करने के कुछ ही समय बाद पेट की सूजन (गैस्ट्राइटिस) से खो दिया था! वे पेट दर्द के भी बहुत आसानी से शिकार हो जाते हैं। उम्मीदों के विपरीत, पैंथर का शावक अत्यंत नाजुक होता है और आसानी से मर जाता है, क्योंकि वह भालू या लकड़बग्घे जितना मजबूत नहीं होता। गाय का दूध उन्हें बिल्कुल भी रास नहीं आता और कुछ ही दिनों में उनकी मृत्यु हो जाती है। बकरी का दूध उन्हें कुछ हद तक रास आता है, लेकिन जब वे बहुत छोटे होते हैं तब भी उन्हें एक चम्मच कीमा बनाया हुआ भेड़ का मांस और भेड़ का खून देना पड़ता है - गोमांस नहीं। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, भेड़ के मांस की जगह गोमांस दिया जा सकता है, लेकिन एक बार में दी जाने वाली मात्रा को नियंत्रित करना आवश्यक है। शुरुआती चरणों में भेड़ के मांस की आवश्यकता इसलिए होती है क्योंकि, जैसा कि मैंने अपनी पिछली पुस्तक में उल्लेख किया है, जंगली परिस्थितियों में माँ अपने शिकार का मांस पहले खुद खाकर और फिर उसे उल्टी करके शावकों के लिए बाहर निकाल देती है, जिससे शावकों की पाचन क्रिया में सहायता होती है। शावक बहुत अधिक खाने वाले होते हैं और तब तक खाते रहते हैं जब तक कि वे मुश्किल से हिल-डुल पाते हैं। इसी समय उन्हें कभी-कभी पेट दर्द हो जाता है, और जैसा कि मैंने कहा है, पेट दर्द या आंत्रशोथ होने पर यह घातक हो सकता है।
पैंथर के बच्चे बेहद चंचल और शरारती होते हैं। वे अपने मालिक को दूसरों के बीच से पहचान लेते हैं। हालांकि, बड़े होने पर उनका खेल बेहद उग्र हो जाता है, लेकिन मेरे पास जितने भी पैंथर के बच्चे रहे हैं, उनमें से कोई भी जरा भी हिंसक नहीं था।
मुझे उनमें से एक याद है, एक मादा जिसे हमने स्पॉटी नाम दिया था और लगभग नौ महीने तक अपने पास रखा था। वह बहुत प्यारी और समझदार थी। जब हम पढ़ रहे होते थे या किसी और काम में व्यस्त होते थे, तो वह हमारा पीछा करती थी, जब उसे लगता था कि हम उसकी मौजूदगी से अनजान हैं। वह दरवाजे के पीछे छिप जाती थी, या कुर्सी या मेज के पीछे से रेंगकर हमारे करीब आ जाती थी। फिर वह बनावटी सख्ती से हम पर हमला करती या झपट पड़ती थी। ऐसे मौकों पर उसने हमें कभी नहीं काटा, बल्कि कोमल रहने की पूरी कोशिश की। फिर भी उसके पंजे उसकी सोच से कहीं ज्यादा तेज थे और अक्सर हम पर कुछ खरोंचें आ ही जाती थीं।
कुछ लोगों का मानना है कि अगर पैंथर के बच्चे को उबला हुआ मांस और नरम भोजन खिलाया जाए तो वह हिंसक नहीं बनेगा। लेकिन, यह धारणा पूरी तरह गलत है, क्योंकि बच्चा शायद मर ही जाएगा! पैंथर को प्रोटीन की आवश्यकता होती है, और हमने जितने भी बच्चे पाले हैं, उन सभी को कच्चा मांस खिलाया गया है और बड़े होने पर उन्हें खून पीने को दिया गया है। फिर भी, इस आहार के बावजूद उनमें से कोई भी हिंसक नहीं हुआ।

जिस मादा हिरण के बारे में मैं आपको बता रहा था, स्पॉटी, उसकी एक दिन दुखद मौत हो गई, और यह इस तरह हुआ। मेरे बेटे डोनाल्ड ने एक विशाल सांभर हिरण का शिकार किया, और किसी कारणवश हम देखना चाहते थे कि स्पॉटी उसके शव को कितना खा सकती है। इसलिए हमने उसे जी भर के खाने दिया। उसने इतना खाया कि वह मुश्किल से रेंग पा रही थी। उसी रात उसे उल्टी होने लगी और पेट खराब हो गया। कुछ घंटों में वह गुर्राने लगी और फिर दर्द से चीखने लगी और पेट दर्द के मारे बुरी तरह काटने लगी। सुबह तक उसकी मौत हो चुकी थी।
कुछ समय बाद हमें एक और शावक मिला, इस बार नर। हमने उसका नाम स्पॉट्टी II रखा। अपनी पिछली गलतियों से सबक लेते हुए, हमने उसके आहार को नियंत्रित किया और उसे दस महीने से अधिक समय तक बैंगलोर स्थित अपने घर में रखा। इस पूरे समय में उसने कभी किसी जीव को नुकसान नहीं पहुँचाया। लेकिन हमारी कुछ जिम्मेदारियाँ थीं। घर में किराएदार रहते थे और उनके बच्चे थे। बच्चे पैंथर के पास आने की जिद करते थे। स्पॉट्टी II उन्हें बहुत प्यार करता था और उनके साथ खेलता था। लेकिन हमें एहसास हुआ कि हम एक बड़ा जोखिम उठा रहे हैं। अंततः, बहुत दुख और अनिच्छा से, हमने उसे अपने एक मित्र, एक स्विस सज्जन को दे दिया, जिन्होंने बाद में उसे एक जर्मन पशु व्यापारी को बेच दिया। आखिरी खबर जो हमें मिली वह यह थी कि स्पॉट्टी को यूरोप के किसी चिड़ियाघर में भेज दिया गया था।
हाल ही में डोनाल्ड एक और पैंथर का बच्चा घर लाया है। उसे हमारे पास आए लगभग एक महीना हो गया है और वह अभी तीन महीने का भी नहीं हुआ है। लेकिन हमने इसका नाम ग्रम्पी रखा है और वह अभी हमारे साथ है।
फिर आती है एला नाम की सियार। वह कुत्तों, बिल्लियों और बाकी सबके साथ खेलती है, लेकिन उसे अंधेरे कोनों में छिपना बहुत पसंद है, जैसे कि अलमारी के नीचे। एला कभी-कभी रात में अपनी 'सियार जैसी आवाज' निकालती है, लेकिन मादा होने के कारण वह नर सियार की पूरी और अनोखी आकर्षक आवाज के बजाय 'अधूरी आवाज' जैसी आवाज निकालती है।
एक दिन एक ग्रामीण पाँच सियार के पिल्ले बेचने के लिए लाया, जिनकी उम्र शायद चार से छह सप्ताह थी। मुझे लगा कि एला को अपने जैसे साथियों की कमी के कारण अकेलापन महसूस हो रहा होगा, इसलिए मैंने उन्हें एला के लिए खरीद लिया। उस दोपहर एला बहुत खुश हुई और बड़े प्यार से उनकी देखभाल करने लगी। लेकिन आधी रात के आसपास, मैंने पिल्लों के चीखने की आवाज़ सुनी और पाया कि एला ने एक पिल्ले को मार डाला था और उसे खा रही थी। मैंने बाकी चार को बचा लिया और अगले दिन, क्योंकि मेरे पास उन्हें रखने की जगह नहीं थी, मैंने उन्हें जेकी नाम के लकड़बग्घे के पास रख दिया। उन्होंने जेकी का दूध पीने की कोशिश की, जिससे बेचारा जेकी बुरी तरह घबरा गया। तब से वे काफी बड़े हो गए हैं, और जेकी भी। मैंने उन्हें काफी समय तक साथ रखा और यह देखना दिलचस्प था कि कैसे जेकी ने इन चार शरारती बच्चों की देखभाल का गंभीर दायित्व अपने कंधों पर ले लिया। खाना खिलाने के समय, जेकी मुश्किल से अपना खाना खत्म कर पाता था कि चारों सियार, जो अपना हिस्सा पहले ही निगल चुके होते थे, बचे हुए खाने को चुराने के लिए उसके चारों ओर जमा हो जाते थे। हमेशा की तरह, जब वह उनमें से एक को मज़ाक में भगाता था, तो बाकी तीन बचा हुआ सारा खाना चट कर जाते थे। जेकी की हालत इतनी खराब हो गई कि मुझे मजबूर होकर चारों सियार को वहां से हटाकर ब्रूनो नाम के सुस्त भालू के पास रखना पड़ा। ब्रूनो खाने के समय लकड़बग्घे जितना शांत स्वभाव का नहीं होता और अगर सियार उसके पंजे की पहुंच में आ जाएं तो उन पर

झपट्टा मारता है, हालांकि दोपहर और रात में वे उसके लकड़ी के बक्से में उसके आसपास और कभी-कभी उसके ऊपर भी सो जाते हैं।
इसी बीच, वयस्क मादा सियार एला भी काफ़ी चालाक हो गई है। वह खाने की मेज़ पर कूदती है, चायदानी से कवर हटाती है, फिर ढक्कन हटाकर सारी चाय पी जाती है।
हमने हिरण परिवार की सभी प्रजातियों को रखा है। वे प्यारे और शांत स्वभाव के होते हैं, लेकिन मांसाहारी हिरणों या भालू ब्रूनो जितने दिलचस्प या बुद्धिमान नहीं होते।
मेरे पिताजी के पास लगभग दस साल तक एक सांभर हिरणी थी। उन्होंने उसका नाम फ्लोरा रखा था। वह उनकी खास लाडली थी और उनसे बहुत प्यार करती थी। लेकिन जैसे-जैसे वह बूढ़ी होती गई, उसे अजनबियों पर हमला करने की बुरी आदत पड़ गई। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ी होकर अपने अगले खुरों से उनके सिर पर वार करती थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि हिरणी होने के कारण उसके सींग नहीं उगते थे। दरअसल, जब उसने इस तकनीक में महारत हासिल कर ली, तो वह अक्सर बाजार से लौट रही हमारी भारतीय रसोइया को रास्ते में रोक लेती थी। बेचारी औरत या तो फ्लोरा के हाथों गिर जाती या जान बचाकर भागती। दोनों ही मामलों में वह अपने साथ ले जा रही खाने-पीने की टोकरी गिरा देती और फ्लोरा मांस और लकड़ी को छोड़कर बाकी सब कुछ खा जाती।
मैं अपने एक और अजीब पालतू जानवर का ज़िक्र करना चाहूँगी—और वो अब भी मेरे साथ है। उसका नाम है जेमिमा, अजगर। भारत में हम उसे 'चट्टानी साँप' कहते हैं। मैंने उसे येम्मेदोड्डी के जंगल में पानी की नहर के पास पकड़ा था और सात साल से ज़्यादा समय से वो मेरे पास है। वो काफ़ी शांत और आसानी से पाली जा सकती है। डॉन उसके लिए महीने में एक बार खरगोश का शिकार करता है। मैं बाज़ार में एक आदमी से एक बैंडिकूट खरीदती हूँ—जो एक बड़ी किस्म का चूहा होता है, गिनी-पिग से भी बड़ा—चार आना प्रति बैंडिकूट के हिसाब से, हर पंद्रह दिन में एक बार। वो बस इतना ही खाती है। एक रात डॉन ने एक चूहे-हिरण का शिकार किया। उसने उसे पूरा निगल लिया और लगभग एक महीने तक कुछ नहीं खाया।
अब जबकि आपने मेरी पत्नी और मेरे द्वारा पाले गए कुछ विचित्र जानवरों और सरीसृपों के बारे में सुन लिया है, तो चलिए चाय की चुस्की लें और अपने सैंडविच का थोड़ा सा स्वाद लें; क्योंकि इसके बाद जंगल से मिलने वाली बातों को सुनने का गंभीर काम शुरू होगा।
काफी देर तक सन्नाटा छाया रहता है, बीच-बीच में आग की चटकने की आवाज़ या तेज़ 'पुट-पुट' की आवाज़ आती है, जिसके बाद लकड़ी के हरे टुकड़ों या नमी से भरे टुकड़ों से भाप की हल्की फुफकार सुनाई देती है। फिर, पहाड़ी की चोटी पर, सड़क के ऊपर जहाँ हमने कार खड़ी की थी, कहीं से एक सींगदार उल्लू बार-बार बोलता है, एक गूंजती हुई, अजीब सी आवाज़ जो आमतौर पर किसी पक्षी से नहीं आती। 'हू-हू! हू-हू!' काफी देर तक फिर सन्नाटा छा जाता है, बीच-बीच में विशाल उल्लू की अविज़ आती है, और कभी-कभी चहचहाते, फुदकते हुए नाइटजार पक्षियों की आवाज़ आती है, जिन्हें आग की रोशनी से कोई फर्क नहीं पड़ता।
हमारे कैंप फायर से थोड़ी दूर उगी झाड़ियों में और नदी के ऊपरी किनारे से हमें हल्की सरसराहट और खड़खड़ाहट सुनाई देती है। ये आवाजें रुक-रुक कर आती हैं। लेकिन ऐसा लगता है जैसे ये हमेशा मौजूद हैं, एक पल के लिए भी पूरी तरह बंद नहीं होतीं। चिंता की कोई बात नहीं है, क्योंकि ये आवाजें झाड़ी वाले चूहों और बांस के चूहों की हैं जो इन जंगलों में हजारों की संख्या में रहते हैं। ये छोटे जीव हानिरहित और जिज्ञासु होते हैं, लेकिन अगर हम आग न जलाते तो भोजन की तलाश में हमारे

शरीर पर दौड़ पड़ते, अगर हम काफ़ी देर तक स्थिर बैठे रहते और हिलते-डुलते नहीं। इनकी मौजूदगी ही एक कारण है कि यहाँ हर तरह के साँप, ज़हरीले और गैर-ज़हरीले, बहुतायत में पाए जाते हैं। चूहे और मेंढक भी इनके लिए भोजन का भरपूर स्रोत हैं।
अचानक, कहीं दूर से, हमें एक तेज़ आवाज़ सुनाई देती है: चटकने, टूटने और गिरने की आवाज़। हाथी! वे पेड़ों की पूरी शाखाओं को तोड़ रहे हैं, सिर्फ़ तनों के सिरों पर फूटने वाली कुछ रसीली नई कोंपलों को खाने के लिए।
'क्रिक! क्रिक! क्रिक!' एक हल्की, तीखी आवाज़ उसी दिशा से आती है जहाँ से हमने अभी शाखा टूटने की आवाज़ सुनी थी। इसका मतलब है हाथी के बच्चे; नन्हे हाथी!
लेकिन घबराने की कोई वजह नहीं है। अगर यहाँ बच्चे हैं, तो यह साफ़ संकेत है कि उनकी माँएँ आस-पास ही हैं। दरअसल, हाथियों का झुंड है; क्योंकि हाथी के बच्चे अकेले नर हाथी के साथ नहीं रहते। और हाथियों का झुंड बिल्कुल हानिरहित होता है, जब तक कि आप गलती से किसी माँ के पास न पहुँच जाएँ, जो अपने बच्चे की रक्षा में आप पर हमला कर सकती है। लेकिन यहाँ, आग के पास बैठे हुए, हम घर की तरह सुरक्षित हैं और हमें बिल्कुल भी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। अगर चरते हुए हाथी हमारी तरफ़ आ भी जाएँ, तो वे हमारी आग का धुआँ सूंघ लेंगे या लपटें देख लेंगे, और बिना देर किए भाग जाएँगे।
अकेला घूमता हुआ नर हाथी ही खतरनाक होता है। आमतौर पर, अकेले रहने का कारण या तो 'मस्त' होता है, जो नर हाथियों में होने वाली एक आवधिक बीमारी है और लगभग तीन महीने तक रहती है, जब वे यौन रूप से उत्तेजित हो जाते हैं और अन्य नर हाथी उन्हें झुंड से बाहर निकाल देते हैं; या फिर वह एक पक्का 'विद्रोही' हाथी होता है जिसे अकेले रहना पसंद होता है। दोनों ही मामलों में सावधान! पूरे भारतीय जंगल में इससे ज्यादा क्रूर, इतना भयानक और इतना निर्दयी विनाशकारी हाथी कोई और नहीं है। लेकिन अगर कोई 'विद्रोही' हाथी होता तो मुझे पता चल जाता, क्योंकि वन विभाग प्रेस में नोटिस जारी करने के अलावा सभी शिकार लाइसेंस धारकों को ऐसे जानवरों की उपस्थिति की सूचना देता है। इसके अलावा, एक विद्रोही हाथी भी जलती हुई आग के पास जाने से हिचकिचाएगा।
हम हाथियों के चरने की आवाज़ें सुनते हैं। थोड़ी-थोड़ी देर में किसी बड़ी शाखा के टूटने या बांस के तने के चटकने की तेज़ आवाज़ आती है, जिसके बाद विशालकाय हाथियों द्वारा पत्तियों को नोचने और फाड़ने की आवाज़ सुनाई देती है। वे चुपचाप चरते हैं, जबकि दूर से आती गड़गड़ाहट जैसी आवाज़ बताती है कि उनके विशाल पेट के अंदर पाचन क्रिया चल रही है। बछड़े बेचैनी से अपनी माताओं से लिपटते हुए दूध के लिए उन्हें परेशान करते हैं, जबकि लंबे अंतराल पर झुंड के सांड़ों में से कोई एक धीरे से दहाड़ता है, एक बैल की दहाड़ जैसी आवाज़, लेकिन कहीं अधिक तेज़ और गहरी। यह केवल संतुष्टि की पुकार है, यह बताने के लिए कि सब ठीक है; या शायद, छोटा बच्चा अपने पिता को परेशान करने में लगा है, जो दहाड़कर उसे धीरे से डांट रहे हैं।
क्रोधित हाथी, जो हमला करने ही वाला होता है, एक बिल्कुल अलग तरह की आवाज़ निकालता है। वह चीखता है, और उसकी वह तीखी 'तुरही' जैसी आवाज़ धरती को हिला देती है। यह मानो विनाश की पुकार है, और उसे भयानक आवाज़ में समाए क्रोध, द्वेष और विनाश की भावनाओं को समझने में कोई संदेह नहीं है।
डरा हुआ हाथी भी चीखता और चिंघाड़ता है, लेकिन आवाज़ में बहुत अंतर होता है। यह तीखी और पतली होती है, और ऐसा लगता है जैसे हाथी के डर और घबराहट को व्यक्त कर रही हो। इसमें वह ज़ोरदार चीख नहीं होती जो किसी क्रोधित नर हाथी के

हमले से पहले सुनाई देती है। थोड़ी देर बाद हमें एक धीमी, खोखली सी आवाज़ सुनाई देती है: हाथियों का झुंड नदी के तल तक पहुँच गया है, जो शायद हमसे आधा मील नीचे है, और जो आवाज़ें हमने अभी सुनी वह उनमें से किसी एक हाथी द्वारा वहाँ पड़े एक गिरे हुए पेड़ के तने को पलटने के कारण हुई थी।
हाथियों की आवाज़ को हम जिस तल्लीनता से सुन रहे थे, वह अचानक एक कर्कश, गहरी आवाज़ वाले हिरण की पुकार से भंग हो जाती है, जिसे मुंटजैक, काकर या जंगली भेड़ भी कहा जाता है। नदी के दूसरी ओर पहाड़ी की चोटी से कहीं से वह 'खर्र! खर्र!' की तेज़ आवाज़ में चेतावनी भरे स्वर में दोहराता है। घाटी में एक सांभर भी चौंककर 'व्ही-ओंक!' की आवाज़ निकालता है, और फिर रुक-रुक कर 'धंक! धंक!' की आवाज़ में आने वाले खतरे की सूचना फैलाता है।
उन आवाज़ों का मतलब तीन ही हो सकती है: या तो जंगल का बादशाह बाघ शिकार की तलाश में है—या उसका छोटा चचेरा भाई, एक तेंदुआ। ये आवाज़ें जंगली कुत्तों के झुंड की मौजूदगी का संकेत भी हो सकती हैं, जो जंगल के सबसे खूंखार शिकारी होते हैं, लेकिन रात चाँदनी नहीं है। जंगली कुत्ते दिन में या चाँदनी में शिकार करते हैं, अंधेरे में कभी नहीं। इसलिए इस मामले में वे खतरे की वजह नहीं हैं; या तो बाघ है या तेंदुआ।
घाटी में सांभर के पीछे-पीछे जाते हुए, शोरगुल मचाने वाले पैंथर की पहचान थोड़ी देर बाद एक कर्कश, आरी जैसी आवाज़ से उजागर हो जाती है। 'आह! हा!, आह! हा! आह!-हा!' दो चौकस हिरणों द्वारा अपनी उपस्थिति का पता चलने से निराश होकर, पैंथर आरी जैसी कर्कश, खुरदरी साँसों की एक श्रृंखला में अपना गुस्सा निकालता है। कुछ देर के लिए फिर से सन्नाटा छा जाता है। हम हाथियों के झुंड के बारे में लगभग भूल ही गए थे कि तभी पेड़ की छाल के टूटने की आवाज़ ने हमें याद दिलाया कि वे अभी भी नदी के किनारे चर रहे हैं और हमारे शिविर की आग के करीब आ रहे हैं। लेकिन जैसा कि अनुमान था, उनमें से एक हाथी को या तो धुएं की गंध आती है या आग की चमक दिखाई देती है। हाथी अपनी सूंड को ज़मीन पर ज़ोर से मारता है और उसी से ज़ोर से हवा बाहर निकालता है। इससे एक अजीब सी धातु जैसी आवाज़ निकलती है, जैसे जस्ता या जस्ती लोहे की चादर अचानक दो टुकड़ों में मुड़ गई हो। यह हाथी का खतरे का प्रारंभिक संकेत देने का तरीका है।
दो बार फिर सूंड ज़मीन पर ज़ोर से टकराती है, और दो बार फिर धातु जैसी आवाज़ आती है। फिर हाथी एक बार चिंघाड़ता है—डर और खतरे की पतली, तीखी आवाज़। बच्चे इसे समझ जाते हैं और चुप हो जाते हैं। बस एक हल्की, अस्पष्ट, सरसराहट और रगड़ने जैसी आवाज़ सुनाई देती है। यह आवाज़ उनके विशाल शरीरों से आती है जब वे नदी के किनारे झाड़ियों के बीच से चुपचाप निकलने की कोशिश करते हैं, माताएं अपने बड़े बच्चों को आगे धकेलती हैं, या छोटे बच्चों को अपनी सूंड से उठाती हैं, जिसे वे अपने बच्चों के पेट के चारों ओर लपेटकर उन्हें ज़मीन से ऊपर उठा लेती हैं। कुछ सेकंड बाद हल्की सरसराहट और सरसराहट बंद हो जाती है। झुंड गायब हो जाता है। एक बार फिर सन्नाटा छा जाता है। हमें अब पैंथर या हिरण की कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती।
हमारी आग कुछ पल के लिए मंद पड़ जाती है, बस जलते अंगारों की हल्की रोशनी रह जाती है। हम नदी के दूसरी ओर अंधेरे में टकटकी लगाए देखते हैं, लेकिन एक पल के लिए कुछ दिखाई नहीं देता, क्योंकि हम आग को घूर रहे थे और हमारी आँखें अभी तक अंधेरे के अनुकूल नहीं हुई थीं। तभी रहस्यमय छोटी-छोटी रोशनी दिखाई देती हैं, जो हमारी आग की रोशनी से परे पेड़ों की शाखाओं के बीच अकेली, दो-तीन के समूह में घूमती हुई नज़र आती हैं। जैसे ही हमारी आँखों की पुतलियाँ अंधेरे को

भेदने के लिए फैलता है, हम दिखाई देने वाली छोटी-छोटी रोशनी की संख्या देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। ऐसा लगता है मानो हजारों रोशनी हों, क्योंकि वे चमकती हैं, झिलमिलाती हैं, फीकी पड़ जाती हैं और फिर से प्रकट होती हैं, कभी गुच्छों में तो कभी असंख्य संख्या में, जब एक क्षण के लिए वे ऊँचे पेड़ों और उनकी शाखाओं को रोशन कर देती हैं, जो अब तक अंधेरे में अस्पष्ट दिखाई दे रही थीं।
जुगनू! हज़ारों की संख्या में! कभी यहाँ, कभी वहाँ, कभी दिखते और फिर गायब हो जाते, फिर अचानक प्रकट होते हैं। ये एक ऐसा अलौकिक आकर्षण पैदा करते हैं जो आबादी वाले इलाकों में कभी नहीं देखा जा सकता। निस्संदेह, नदी के आसपास की नमी ने इन्हें आकर्षित किया है। कई बार, जब मैं जंगल में बिना आग जलाए देख रहा था, तो मैंने इन असंख्य छोटे जीवों की संयुक्त चमक को इतना तीव्र पाया कि आसपास का जंगल जगमगा उठा और उसकी हर चीज़ पल भर के लिए स्पष्ट दिखाई देने लगी। हालाँकि इस तरह की एक साथ चमक बहुत लंबे अंतराल पर होती है और केवल एक सेकंड के लिए ही रहती है, फिर भी यह एक ऐसा अनुभव है जिसे महसूस करने पर ही विश्वास किया जा सकता है, और यह मन में सुंदरता और आश्चर्य का एक अवर्णनीय अहसास जगाती है।
हमें कुछ सुनाई नहीं देता और घंटे धीरे-धीरे बीतते जाते हैं। आग जल रही है, जिसे हम ढेर से ताज़ी लकड़ियाँ डालकर जलाते रहते हैं, फिर भी हवा ठंडी होती जा रही है और जलती हुई लकड़ियों से उत्पन्न गर्मी के घेरे से बाहर उग रहे पेड़ों की पत्तियों से ओस की बूँदें टपकने लगी हैं। मैं अपनी घड़ी पर नज़र डालता हूँ। सुइयाँ आधी रात पर हैं।
क्या आप हमारे वनक्षेत्रों में रहने वाले आदिवासियों के कुछ अंधविश्वासों के बारे में जानना चाहेंगे? वे आत्माओं के अस्तित्व में दृढ़ विश्वास रखते हैं; लेकिन एक अंतर के साथ—उनके लिए सभी आत्माएँ बुरी होती हैं। यहाँ तक कि किसी प्रियजन की मृत्यु के तुरंत बाद उसकी आत्मा भी एक दुष्ट शक्ति बन जाती है, जो जीवित लोगों को गंभीर शारीरिक क्षति पहुँचाने में सक्षम होती है, और कभी-कभी तो ऐसा करने पर तुली भी रहती है। इसी कारण वे मानव शव, कब्रिस्तान या श्मशान घाट से दूर रहते हैं। किसी आदिवासी को अपने साथ किसी अधखाए हुए शव के पास बैठने के लिए कहना, जो लौट रहे नरभक्षी को लुभाने के लिए चारा के रूप में रखा गया हो, उसे आत्महत्या करने के लिए कहने के समान है। वास्तव में, यह उससे कहीं अधिक बुरा है; क्योंकि उसे लगता है कि उसका अंत भयानक और हिंसक होगा।
वह समझाएगा कि तुम दुष्ट आत्मा से सुरक्षित हो, क्योंकि तुम एक विदेशी हो। दुष्ट आत्माएँ भी विदेशियों को नापसंद करती हैं, विशेषकर यदि वे श्वेत पुरुष हों। लेकिन वह, जो एक बेचारा, असहाय जंगली आदमी है, तुम्हारे पास बैठे-बैठे ही निश्चित रूप से एक हिंसक अंत को प्राप्त होगा। यह अनुमानित अंत तब होगा जब अदृश्य आत्मा पीछे से हमला करेगी: तब पीड़ित गिर पड़ेगा, बेहोश हो जाएगा, खून की उल्टी करेगा और सुबह तक मर जाएगा। वह कहता है कि यदि तुम दिन के उजाले में उसकी पीठ की जाँच करोगे, तो उसकी काली त्वचा के बावजूद, तुम्हें उस आत्मा के हाथ के पाँच उंगलियों के निशान स्पष्ट रूप से दिखाई देंगे जिसने उसे मारा था। यह मृत व्यक्ति का भूत होगा जो यह काम करेगा, क्योंकि वह अपने हिंसक अंत का बदला लेने के लिए बेताब है।
देश के घनी आबादी वाले इलाकों, कस्बों और शहरों में भी यह आम बात है कि कोई व्यक्ति रात में कारखाने में नाइट शिफ्ट से घर लौटते समय या सिनेमा हॉल में देर रात तक जागने के बाद किसी दुर्घटना का शिकार हो गया। पीड़ित बताता है कि उसे पीठ पर किसी भारी हाथ का ज़ोरदार प्रहार महसूस हुआ। वह लड़खड़ाते हुए घर पहुंचता

है, अपने रिश्तेदारों को घटना के बारे में बताता है और फिर गिर पड़ता है। रात भर उसे खून की उल्टी हो सकती है; और अगले दिन उसे तेज़ बुखार हो जाता है। लेकिन कुछ अपवादों को छोड़कर, अड़तालीस घंटों के भीतर उसकी मृत्यु हो जाती है।
इस तरह की घटनाएं अक्सर मेरे संज्ञान में आती रही हैं और मैंने इनके कारणों की जांच करने की कोशिश की है, लेकिन सफलता नहीं मिली। यह महत्वपूर्ण है कि ऐसी समस्याओं का सामना केवल अज्ञानी, गरीब श्रमिक वर्ग ही करता है। विशेष रूप से नौकर वर्ग।
एक यह भी मान्यता है कि अगर कोई व्यक्ति सूअर का मांस खाकर या छूकर रात में नंगे पैर बाहर निकलता है, तो उसे बुरी आत्मा का प्रकोप होने का खतरा रहता है, क्योंकि बुरी आत्मा को सूअर का मांस बिल्कुल पसंद नहीं होता। यह धारणा सर्वव्यापी है। मैंने इसे पहली बार बचपन में सुना था। मुझे याद है कि मैंने बिना देर किए कच्चा सूअर का मांस खरीदा, अपने पिता से कहा कि मैं सिनेमा देखने जा रहा हूँ, लेकिन इसके बजाय मैं सूअर का मांस लेकर कब्रिस्तान के द्वार पर चला गया। वहाँ मैंने अपने जूते उतार दिए, द्वार फांदकर कब्रिस्तान के बीच बनी छोटी सी गली में चला गया, बहुत डरते हुए सूअर का मांस पकड़े हुए। आज तक मैं उस रात जितना डरा हुआ था, उतना कभी नहीं डरा। हर पल मुझे लग रहा था कि कोई बुरी आत्मा पीछे से आकर मुझे ज़ोरदार थप्पड़ मारेगी: लेकिन जब तक मैं अपने जूतों तक पहुंचा, तब तक किसी आत्मा ने मुझे नहीं मारा था। अगले दिन मुझे बुखार आ गया। यह 'ब्लू फंक' बुखार था!
मृतकों की आत्माओं के अलावा, जिन्हें इन सब कामों का श्रेय दिया जाता है, जंगलों में रहने वाले आदिवासी और दक्षिण भारत के गरीब श्रमिक वर्ग पश्चिमी देशों के अध्यात्मवादियों द्वारा 'तत्वीय' कहे जाने वाले प्राणियों में दृढ़ विश्वास रखते हैं। इन प्राणियों को तमिल में मिनिस्पुरम कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि ये नर और मादा दोनों रूपों में पाए जाते हैं: नर मिनिस्पुरम् अपेक्षाकृत छोटा होता है, शायद ही कभी दिखाई या सुनाई देता है, और सौम्य और हानिरहित होता है, जबकि मादा मिनिस्पुरम् अत्यंत लंबी (दस फीट से अधिक) बताई जाती है और कभी-कभी बिना सिर, हाथ-पैर वाली एक लंबी काली आकृति के रूप में, और कभी-कभी बिना सिर, हाथ-पैर वाली एक लंबी सफेद आकृति के रूप में प्रकट होती है। मादा मिनिस्पुरम का एक अन्य रूप बौने के रूप में दिखाई देता है, जो पारदर्शी, चमकीले रंग की साड़ी पहने और फूलों और आभूषणों से सजी होती है। ये कुओं, तालाबों और नदियों में रहते हैं और ऐसा माना जाता है कि ये युवाओं को पानी के किनारे तक फुसलाकर लाते हैं और फिर उन्हें पानी में धकेल कर डुबो देते हैं। सभी प्रकार की स्त्री मिनिस्पुरम मनुष्य जाति, विशेषकर पुरुषों के प्रति शत्रुतापूर्ण होती हैं।
मेरे दोस्त बायरा, जो पुजारी हैं, ने मुझे बताया कि एक बार वह सलेम जिले में सांभर का शिकार कर रहे थे, तभी एक मादा मिनीस्पुरम हिरण उनके सामने आ गई। बताया जाता है कि वह नदी के किनारे बनाए गए अपने गुप्त ठिकाने पर बैठे थे। उस समय नदी सूखी थी, सिवाय उस कृत्रिम पानी के गड्ढे के जो उन्होंने दिन में रेत में एक गहरा गड्ढा खोदकर बनाया था। इस गड्ढे में पानी रिसता था। शाम ढलते ही उन्होंने थोड़ा पानी आसपास की रेत पर छिड़क दिया, ताकि पानी की गंध प्यासी हिरणों को आकर्षित करे। ऐसा होते ही वह अपनी बंदूक से पहली हिरण को मार गिराते!
बायरा ने बताया कि आधी रात के कुछ ही समय बाद उन्हें बाईं ओर से घंटियों की झंकार सुनाई दी। चिनार नदी के उस मोड़ पर एक घुमाव था, इसलिए उन्हें उत्सुकता हुई कि उस समय और उस स्थान पर कौन आ रहा होगा। उन्होंने देखा और कुछ ही देर में सफेद धुंध का एक विशालकाय खंभा सा दिखाई दिया, जो मोड़ से मुड़ा और

सूखी नदी के बीचोंबीच तैरने लगा, जबकि घंटियों की झंकार तेज होती चली गई। बायरा ने कहा कि उन्हें सहज ही एहसास हो गया था कि यह एक मादा मिनीस्पुरम है। उन्होंने बताया कि कुछ पलों के लिए उन्होंने भागने का सोचा, लेकिन अगर वे ऐसा करते तो मिनीस्पुरम उन्हें देख लेती और उनका पीछा करती। इसलिए उन्होंने छिपने का फैसला किया।
इसी बीच विशाल सफेद खंभा पास आता हुआ दिखाई दिया। वह उसके ठीक सामने आकर रुका, और घंटियों की झनझनाहट अब जंजीरों के ज़मीन पर घिसटने जैसी आवाज़ में बदल गई। उसने अभी-अभी यह सोचकर खुद को बधाई देना शुरू ही किया था कि मिनीस्पुरम (छोटा खंभा) अब गुजर जाएगा, तभी वह भयानक रूप से ऊंचा सफेद खंभा नदी के तल पर ठीक उसके सामने आकर रुक गया। उसने एक कर्कश स्त्री की आवाज़ में राक्षसी हंसी सुनी।
बायरा ने बताया कि वह बेहोश हो गया था। जब उसे होश आया तो मिनीस्पुरम गायब हो चुका था। उसकी जगह, हल्की चांदनी में साफ दिखाई दे रहा था, एक झिझकता हुआ लकड़बग्घा खड़ा था, जो अंत में भाग गया। बायरा का कहना है कि मिनीस्पुरम को अगर खोज लिया जाए तो वे जानवरों में बदल जाते हैं। उसने उजाला होने तक हिलने की हिम्मत नहीं की। उसके बाद अंधेरा होने पर वह नदी के उस हिस्से के पास कभी नहीं गया।
दक्षिण भारत में, विशेषकर पश्चिमी तट और हैदराबाद राज्य में, काला जादू और मंत्रोच्चार में विश्वास सर्वव्यापी है। हालांकि, ये जादूगर चुड़ैलें नहीं हैं। वे ऐसे पुरुष हैं जिन्होंने अपने पिता से यह कला सीखी है या वर्षों के दीक्षा संस्कार के बाद स्वयं को इस अभ्यास के प्रति समर्पित कर दिया है।
किसी को इन जादूगरों के वश में करना एक आसान काम माना जाता है। इस प्रक्रिया का खर्च इस बात पर निर्भर करता है कि आप कितना नुकसान पहुंचाना चाहते हैं। सबसे आसान तरीका है पीड़ित को बीमार करना, उसकी नौकरी छीन लेना या पति-पत्नी के बीच दरार पैदा करना। एक और तरीका है उसे आत्माओं द्वारा परेशान करना, जो रात में और कभी-कभी दिन में भी उसकी छत पर पत्थर फेंकती हैं, बर्तन तोड़ती हैं, खाना खाते समय उसमें रेत डाल देती हैं, और कभी-कभी फर्नीचर को हिंसक रूप से हिलाती हैं या उसे बिस्तर से नीचे फेंक देती हैं।
जादू का सबसे बुरा रूप वह होता है जब पीड़ित इतना बीमार हो जाता है कि उसकी मृत्यु हो जाती है। ऐसे मामलों में चिकित्सा सहायता व्यर्थ होती है, क्योंकि कोई भी डॉक्टर बीमारी का निदान करने में सक्षम नहीं होता। मैंने जादू-टोने के कई मामले देखे हैं और मैं आपको उनमें से दो के बारे में बताऊंगा।
ऑस्कर ब्राउन नाम का एक व्यक्ति था, जिससे मेरी मुलाकात 1936 में हुई थी। ओस्सी एक सौम्य, मिलनसार, हंसमुख, बेफिक्र और खुशमिजाज इंसान था। हम दोनों के अच्छे दोस्त बन गए। एक दिन ओस्सी ने मुझे एक कहानी सुनाई। उसने बताया कि करीब तीन साल पहले वह कालीकट के एक दफ्तर में काम कर रहा था। कर्मचारियों को हर महीने की पहली तारीख को वेतन मिलता था, और कई भिखारियों ने हर वेतन दिवस पर दफ्तर में आकर कर्मचारियों से जितना हो सके दान लेने की प्रथा बना ली थी।
उनमें से एक लंबे बालों वाला, भगवा वस्त्र पहने, कुछ हद तक झगड़ालू दिखने वाला व्यक्ति था। यह आदमी हर महीने की पहली तारीख को अवश्य आता था और भीख मांगने के बजाय भीख की गुहार लगाता था। उसका व्यवहार ऐसा था मानो उसे इस पर पूरा अधिकार हो। उसकी इस आदत से मेरा मित्र ओस्सी बहुत परेशान हो गया था, और एक दिन उसने उसे पुलिस के हवाले करने की धमकी दी। इस पर भगवा

वस्त्र पहने उस व्यक्ति ने जवाब दिया, 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे गाली देने की! मैं तुम्हें श्राप देता हूँ। मैं तुम्हारे अंदर एक ऐसा व्यक्ति डाल दूँगा जो तुम्हारी मृत्यु तक तुम्हारा साथी रहेगा।' इतना कहकर वह चला गया। ओस्सी घर गया और इस सब के बारे में भूल गया।
उस रात ओस्सी की नींद खुली और जिस मच्छरदानी के नीचे वह लेटा था, उसके आर-पार उसने अपने बिस्तर के पास एक बहुत लंबे काले आदमी की आकृति देखी। उसे लगा कि कोई चोर है, इसलिए ओस्सी उठ बैठा और बिस्तर से कूदने की तैयारी में मच्छरदानी को हटाने लगा। तभी वह आकृति उसके ऊपर झुकी और अगले ही पल मानो उसमें समा गई। ओस्सी ने खुद कहा, 'वह मेरे अंदर समा गया।' फिर उसने कहा: 'एंडी, क्या तुम्हें पता है कि वह अब मेरे अंदर है? वह दिन-रात मेरे साथ रहता है। मैं उससे छुटकारा नहीं पा सकता। वह जाता नहीं। कभी-कभी वह मुझ पर हावी हो जाता है और मुझे वश में कर लेता है। तब मुझे पता नहीं चलता कि मैं कौन हूँ या क्या कर रहा हूँ। दोस्त कहते हैं कि मेरी आवाज़ और रूप बदल जाते हैं। मेरा व्यवहार अलग तरह का, उग्र हो जाता है। मेरे लिए सब कुछ खाली है। जब मैं होश में आता हूँ, तो मुझे याद नहीं रहता कि क्या हुआ था। मुझे कुछ भी याद नहीं रहता।'
मुझे शक होने लगा कि मेरा नया दोस्त मानसिक रूप से थोड़ा असंतुलित है। फिर मैं यह सब भूल गया।
कुछ महीनों बाद मैंने ओस्सी को जंगल की एक छोटी यात्रा पर अपने साथ चलने का न्योता दिया। एक अजीब संयोग से, हमने इसी नदी के किनारे डेरा डाला, जिसे मैं 'गुप्त नदी' कहता हूँ, लेकिन यहाँ से लगभग बीस मील दूर, एंचेटी गाँव से आगे, उस स्थान पर जहाँ यह मुख्य नदी, कावेरी से मिलती है। हमने अपना भोजन समाप्त कर लिया था और आग के पास बैठे इधर-उधर की बातें कर रहे थे। मेरी .405 विंचेस्टर राइफल, भरी हुई लेकिन 'हाफ-कॉक' स्थिति में, एक मेहंदी के पेड़ से पाँच-छह फीट की दूरी पर रखी थी।
मुझे याद नहीं कि हम दोनों में से आखिरी किसने बात की थी। लेकिन मुझे याद है कि मैं कावेरी नदी को देख रहा था जो हमसे कुछ ही फीट दूर बह रही थी। तभी एक अजीब, कर्कश आवाज़ ने पूछा, 'तुम कौन हो? मैं कहाँ हूँ?'
मैं लगभग डर के मारे उछल पड़ा। मैंने ओस्सी की तरफ देखा। क्या यह वही था जिसने अभी बात की थी? वह बिल्कुल अलग लग रहा था। उसकी आँखें अजीब तरह से चमक रही थीं। उसका चेहरा विकृत और बिगड़ा हुआ था।
'क्या हुआ है ओस्सी?' मैंने खुद को हकलाते हुए सुना।
'मुझे ओस्सी मत बुलाओ। यह मेरा नाम नहीं है,' वह गुर्राया। 'तुम कौन हो? मैं कहाँ हूँ?'
मैंने उसे शांत करने की कोशिश की। 'क्या तुम्हें याद नहीं?' मैंने पूछा। 'हम गोली चलाते हुए आए थे।'
'गोलीबारी? झूठ मत बोलो! बंदूक कहाँ है?'
मुझे अचानक ही सब समझ आ गया। ओस्सी निस्संदेह पागल हो चुका था। मैंने सुना था कि पागलों में असाधारण ताकत आ जाती है; अगर उसे मेरी राइफल मिल जाती तो वह मुझे वहीं गोली मार सकता था। सौभाग्य से उसने राइफ़ल नहीं देखी थी, क्योंकि वह उसके पीछे थी। मैंने रणनीति अपनाई। 'मेरे पीछे, वहाँ,' मैंने लापरवाही से इशारा करते हुए अपनी पीठ के पीछे अस्पष्ट रूप से कहा।
ओस्सी, या जो भी मुझसे बात कर रहा था, मेरे पास से तेज़ी से गुज़रा, मेरी राइफल (जिसे उसने 'बंदूक' कहा था) को ढूंढने के इरादे से। मैं जल्दी से हथियार की ओर झपटा। मैंने उसे पकड़ लिया और घूम गया। ओस्सी मेरी ओर मुड़ा और मुझे घूर रहा

था। मैंने जितना हो सके खुद को काबू में रखते हुए नरमी से कहा: 'मुझे मिल गई। यह यहीं पड़ी थी।'
'मुझे इसे देखने दो,' उसने मांग की थी।
'नहीं, मैं नहीं कर सकता,' मैंने उससे झूठ बोला। 'यहाँ बाघ और हाथी हैं और मुझे हमेशा अपने हाथों में यह राइफल रखनी होगी।'
उसने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि आग की ओर चला गया और अंगारों पर नदी की रेत डालकर उसे बुझाने की कोशिश करने लगा।
'बस करो, ओस्सी,' मैंने उस पर चिल्लाते हुए कहा। 'हमें आग की जरूरत है। हाथी आ सकते हैं।'
'मैं ओस्सी नहीं हूं,' उसने सपाट लहजे में जवाब दिया।
फिर वह अचानक मुड़ा और मेरी ओर तेज़ी से बढ़ने लगा। मैं कुछ कदम पीछे हट गया और उसे रुकने के लिए चिल्लाया। लेकिन उसने कुछ नहीं किया।
'मुझे वह बंदूक चाहिए,' उसने बस इतना ही कहा और आगे बढ़ गया।
उसे रोकना नामुमकिन लग रहा था, और मैं हथियार छोड़ना भी नहीं चाहता था। तभी मेरे मन में एक विचार आया। जब वह मुझसे पाँच गज से भी कम दूरी पर था, मैंने राइफल उठाई और तेज़ी से उसके सिर के ऊपर गोली चला दी। वह वहीं रुक गया। फिर वह बुरी तरह काँप उठा, मानो उसे बुखार हो गया हो। लगभग यंत्रवत ही उसने अपना हाथ आँखों पर रखा और आह भरी। कुछ ही सेकंड बाद ओस्सी ने मुझसे फिर बात की, लेकिन इस बार वह ओस्सी था जिसे मैं जानता था।
'क्या हुआ, एंडी?' उसने पूछा। 'तुम डरे हुए लग रहे हो।'
मैं चुप रहा, इतना सदमे में था कि कुछ बोल नहीं पा रहा था।
'ओह, मैं समझ गया,' उसने आगे कहा। 'मुझे अपना एक दौरा पड़ गया था, है ना? मेरे दूसरे रूप ने मुझ पर कब्ज़ा कर लिया था। अब क्या आपको उस बात पर यकीन हुआ जो मैंने आपको उस दिन बताई थी?'
'बिल्कुल सही,' मैंने जवाब दिया। 'मुझे लगा कि मेरा आखिरी पल आ गया है और तुम मुझे गोली मार दोगे—या मुझे मजबूर कर दोगे कि मैं तुम्हें गोली मार दूं!' फिर मैंने आगे कहा: 'हाथी हों या न हों, मेरे दोस्त, मैं तुम्हारे साथ एक और रात अकेले नहीं बिताऊंगा। चलो, एंचेटी की ओर चलें। अगर मुझे साँप पर भी पैर रखना पड़े, तो भी यह उस अनुभव से बेहतर है जो मैंने अभी तुम्हारे साथ झेला है।'
मैंने यह घटना डॉक्टरों को बताई है, जिन्होंने कहा कि लक्षण और मरीज़ का आखिरी क्षण में काँपना हिस्टीरिया के विशिष्ट लक्षण हैं। मैंने यह बात उन लोगों को भी बताई है जो तंत्र-मंत्र के बारे में कुछ जानकारी होने का दावा करते हैं। वे कहते हैं कि यह 'आत्मा के वश में होने' का एक स्पष्ट मामला है और शरीर से बाहरी शक्ति के अस्थायी रूप से निकलने पर ही काँपना होता है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि किस पर विश्वास करूं।
लेकिन इस कहानी का अगला भाग यह है कि घटना के कुछ समय बाद ही ओस्सी बैंगलोर छोड़कर चला गया। दो साल बाद मुझे पता चला कि उसकी कलकत्ता में मृत्यु हो गई। उसने तीन मंजिला इमारत की बालकनी से छलांग लगा दी थी!
दूसरी घटना को संक्षेप में बताया जा सकता है। शिमोगा में तैनात एक तेल कंपनी में काम करने वाले मेरे एक मित्र को अपने एक सहकर्मी से पदोन्नति मिल गई, जिससे वह बेहद नाराज़ था। दुखी व्यक्ति उसी शहर के एक तांत्रिक के पास गया। अगली अमावस्या को ही पदोन्नत व्यक्ति के घर में अजीबोगरीब घटनाएं घटने लगीं। उसकी छत पर पत्थर बरसने लगे; खाना खाते समय उसके खाने में रेत फेंकी जाने लगी, मानो कहीं से भी; बर्तन, मेज, कुर्सियाँ और यहाँ तक कि पलंग भी अपनी जगह से हिलने

लगे; उसका छोटा बेटा उठकर नीचे गिर गया, सौभाग्य से उसे कोई चोट नहीं आई। यह सिलसिला छह महीने से अधिक समय तक चलता रहा, जब तक कि परेशान व्यक्ति को कोई उपाय या मदद न मिलने पर, घोर निराशा में उसने पदोन्नत पद से इस्तीफा दे दिया। उसी समय, सभी घटनाएं बंद हो गईं।
भारत में यह आम धारणा है—खासकर भारतीय और एंग्लो-इंडियन दोनों ही वर्गों के शिक्षित और उच्च वर्ग के लोगों में—कि एक स्त्री किसी पुरुष को अपने प्रेम में इस कदर उलझा सकती है कि वह इतना मोहित हो जाए कि उसे अपने किए का एहसास ही न रहे। एक महिला ने एक पादरी के साथ ऐसा ही किया, जिसके कारण उसने अपनी पत्नी और तीन बच्चों को छोड़ दिया। भारत में इस प्रथा को 'पिलिंग' के नाम से जाना जाता है।
जिस महिला का मैंने ज़िक्र किया है, उससे मेरे एक नेक इरादे वाले दोस्त ने पूछताछ की और इस पूरे मामले का विरोध किया। इस पर उस महिला ने आक्रामक भाव से मेरे दोस्त को विस्तार से बताया कि उसने वे 'सामग्री' कैसे बनाईं जिनसे यह गड़बड़ हुई और उसने उन्हें काली कॉफी में कैसे मिलाया था। मेरे पास वह नुस्खा है; यह कोई सेहतमंद मिश्रण नहीं है।
लेकिन मुझे वह दूसरा नुस्खा नहीं मिला है, जिसका इस्तेमाल कोई पुरुष किसी महिला को प्रभावित करने के लिए कर सकता है—अर्थात, 'ऊडुम्बु' नामक बड़ी छिपकली की पूंछ के पाउडर का उपयोग कामोत्तेजक के रूप में करने के अलावा, जिसके बारे में मेरे पुराने मित्र, पुजारी बायरा ने मुझे बहुत समय पहले बताया था, और निश्चित रूप से, 'कुलु' नामक जंगली पौधे की जड़ों के पाउडर का उपयोग, जिसका उल्लेख मैंने इस पुस्तक की एक अन्य कहानी में किया है।
रहस्यमयी बातों की बात करें तो, मैं बताना चाहूंगा कि कुछ साल पहले मैं और मेरा बेटा डोनाल्ड नीलगिरी घाट की तलहटी में स्थित सेगुर से ऊटाकामंड की चोटी तक चौदह मील की खड़ी चढ़ाई पर पैदल यात्रा के लिए निकले थे। रात के ग्यारह बज चुके थे और हमने भोर से पहले ऊटी पहुंचने की योजना बनाई थी। लेकिन जब हम लगभग आधे रास्ते में कलहट्टी नामक स्थान पर पहुंचे, तो बारिश शुरू हो गई और हमने खड़ी सड़क से थोड़ी ही दूरी पर एक पगडंडी के अंत में बने यात्रियों के बंगले में शरण ली।
इस बंगले के भूतिया होने की अफ़वाह लंबे समय से फैली हुई थी। कहा जाता है कि इसकी शुरुआत इस प्रकार हुई। क्रिसमस से एक रात पहले, एक यूरोपीय सज्जन, जो बुरी तरह नशे में थे, वहां डेरा डाले हुए थे। लगभग 2:30 बजे, उन्होंने बंगले के बरामदे पर एक जानवर को खड़ा देखा, जिसे उन्होंने एक सुस्त भालू समझा। नशे की हालत को देखते हुए, उन्होंने ठीक-ठाक निशाना साधते हुए भालू को गोली मार दी, जो चीखने लगा। इसके बाद उन्होंने अपनी पिस्तौल से चार और गोलियां चलाईं, लेकिन जानवर की चीख बंद हो गई क्योंकि वह मर चुका था। लेकिन पूरी घटना में एकमात्र गड़बड़ी यह थी कि उन्होंने जिस जानवर को गोली मारी थी, वह सुस्त भालू नहीं था; बल्कि वह एक आदमी था, बंगले का चौकीदार, जिसे सरकार ने विश्राम गृह की देखभाल के लिए वहां तैनात किया था।
स्थानीय बड़ागा लोगों का कहना था कि उस अभागे आदमी की बेचैन आत्मा ही कुछ रातों को बंगले में भटकती है। मुझे याद है जब डॉन और मैं बारिश से बचने के लिए बरामदे में भागे, तो हम पूरी तरह भीग चुके थे और कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। साथ ही, हमें बहुत भूख भी लग रही थी। उस समय हमारे मन में तंत्र-मंत्र का कोई ख्याल नहीं था। हम उस आदमी को ढूंढना चाहते थे जो वहां का प्रभारी था, जिसने उस

बचाए को जगह ली थी जिसे गोली मार दी गई थी, ताकि पता चल सके कि क्या वह हमारे लिए गर्म चाय बना सकता है।
तो हम सबने मिलकर चिल्लाया: 'चौकीदार! पहरेदार!'
लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। फिर डॉन एक तरफ गया और मैं दूसरी तरफ, बंगले के चारों ओर उसे ढूंढने के लिए। हम इमारत के पीछे मिले। जाहिरा तौर पर चौकीदार वहां नहीं था। हम दोनों हल्की बारिश से बचने के लिए सामने वाले बरामदे में लौट आए। बरामदे के अंत में एक काली आकृति हमारा इंतजार कर रही थी। हम दोनों ने उस आदमी को साफ-साफ देखा। अगले ही पल, वहां कोई नहीं था। रात के ठीक 2:30 बज रहे थे।
खैर, अब इस विषय पर बात बंद करते हैं। लगभग एक बज चुका है और तुम नींद में लग रहे हो। शायद मेरी कहानियाँ सुनते-सुनते थक गए हो। ऐसे में हम मेरी थर्मस में बची हुई चाय खत्म कर सकते हैं, बची हुई लकड़ी आग में डाल सकते हैं और थोड़ी देर के लिए सो सकते हैं। कोई भी हमारे पास नहीं आएगा, क्योंकि आग बुझने के बाद भी अंगारे सुलगते रहेंगे। लेकिन तुम्हें ठंड लगेगी, इसलिए इसके लिए तैयार रहना।
हम ठीक यही करते हैं। चाय खत्म करते हैं, बची हुई सारी लकड़ियाँ आग में डालते हैं जब तक कि आग तेज़ न हो जाए, और फिर जलती हुई लकड़ियों के जितना हो सके पास रेत में दुबक जाते हैं। उस समय तो असहनीय गर्मी लगती है, लेकिन थोड़ी देर में, जैसे-जैसे लपटें धीमी होती जाती हैं और केवल अंगारे रह जाते हैं, हमें ठंड लगने लगती है।
मैं भोर से पहले कई बार जाग जाता हूँ। एक बार मुझे दूर से भयभीत चित्तीदार हिरणों की आवाज़ सुनाई देती है। जंगल में दूर कहीं उनमें से एक अपनी आखिरी चीख निकालता है, मानो किसी सफल मांसाहारी शिकारी का शिकार हो गया हो।

---

* जॉर्ज एलन एंड अनविन, लंदन द्वारा प्रकाशित पुस्तक "द ब्लैक पैंथर ऑफ शिवानीपल्ली" देखें।

चार

मोयार घाटी का काला बदमाश

उसके बारे में कहा जाता था कि वह एकदम काला है, और जब तक मैंने उसे खुद नहीं देखा, तब तक मुझे इस बात पर पूरी तरह यकीन नहीं हुआ। वह वाकई काला था, यकीनन मैंने जंगली या कैद में अब तक जितने भी हाथी देखे हैं, उनमें सबसे गहरे रंग का हाथी वही था। साथ ही, एक पूरी तरह से विकसित हाथी के हिसाब से वह असाधारण रूप से बालों वाला था, खासकर उसके भारी सिर के ऊपरी हिस्से के आसपास। हाथी के बच्चे तो बालों वाले होते हैं, लेकिन बड़े होने पर उनके बाल कम होने लगते हैं। हालांकि, 'काला बदमाश', जैसा कि मैंने उसे नाम दिया है, पूरी तरह से विकसित होने के बावजूद, अपने शरारती दिनों में भी एक अलग ही तरह का झबरा रूप लिए हुए था, क्योंकि सबसे बढ़कर, वह निश्चित रूप से एक 'बदमाश' था, और वह भी बहुत ही बुरा बदमाश।

लेकिन शुरू करने से पहले, मैं आपको आगाह करना चाहता हूँ कि इस कहानी का अंत काफी दुखद और अप्रत्याशित है। इसका अंत एक ऐसे अनुभव के साथ होता है जो मैंने पहले कभी नहीं किया और जिसे मैं दोबारा बिल्कुल नहीं दोहराना चाहता।

मोयार नदी पश्चिम से पूर्व की ओर एक गहरी घाटी से होकर बहती है, जो पूरी तरह से घने जंगल से ढकी है और दक्षिण भारत में पाई जाने वाली हर प्रकार की छोटी-बड़ी वन्यजीव प्रजातियों का घर है, सिवाय नीलगाय के, जिसे कभी-कभी 'ब्लू-बुल' भी कहा जाता है। यह मृग परिवार का एक सदस्य है जो सांभर के आकार तक बढ़ सकता है। इन जंगलों में बाइसन और हाथियों के बड़े-बड़े झुंड बहुतायत में पाए जाते हैं, और सांभर और चित्तीदार हिरण भी प्रचुर मात्रा में हैं। बाघ और तेंदुआ हमेशा यहाँ मौजूद रहते हैं, हालाँकि उनकी संख्या बहुत अधिक नहीं है। यह एक विचित्र बात है, जब हम उन वन्यजीवों की प्रचुरता पर विचार करते हैं जो इन दोनों बिल्ली प्रजातियों के भोजन के रूप में काम आ सकते हैं। शायद साल भर घाटी में पाए जाने वाले छोटे-बड़े दोनों प्रकार के टिक्स और नम क्षेत्रों में, विशेष रूप से मानसून की बारिश के दौरान पाए जाने वाले जोंक, बाघों और तेंदुओं को नदी के निचले इलाकों में ज्यादा देर तक रहने से रोकते हैं। मांसाहारी जानवर इन कीटों से घृणा करते हैं।

मैं जिस घटना का वर्णन करने जा रहा हूँ, वह मैसूर राज्य के जंगलों में घटी, जो मोयार नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित हैं, उत्तर-पूर्व में कोयंबटूर जिले में, और नीलगिरी के जंगलों में, जिन्हें 'नीले पहाड़' भी कहा जाता है, जो इसी नदी के दक्षिण में, भवानी

नामक एक अन्य धारा में इसके संगम तक फैले हुए हैं। इस प्रकार आप देखेंगे कि इसमें न केवल जंगल का एक विशाल क्षेत्र, बल्कि कई विशाल क्षेत्र शामिल थे, बल्कि तीन अलग-अलग वन विभागों का अधिकार क्षेत्र भी था। कोयंबटूर और नीलगिरी क्षेत्रों का अपना-अपना प्रशासन है, हालांकि दोनों मद्रास राज्य के अंतर्गत आते हैं; जबकि मैसूर, जो हाल तक एक महाराजा द्वारा शासित एक स्वतंत्र क्षेत्र था, अब एक स्वतंत्र इकाई है जिसका अपना राज्य प्रशासन है।
वहाँ दो बड़े वन्यजीव अभयारण्य मौजूद हैं। इनमें से एक, नदी के उत्तर में, मैसूर राज्य की सीमा के भीतर आता है और इसे बांदीपुर वन्यजीव अभयारण्य कहा जाता है। इससे सटा हुआ, नदी के दक्षिण में, मद्रास राज्य के नीलगिरी जिले में मुदुमलाई अभयारण्य है। उत्तर-पूर्व में स्थित कोयंबटूर के जंगल आरक्षित वन कहलाते हैं, जहाँ केवल लाइसेंस के तहत ही शिकार की अनुमति है। इस हिस्से को भी अन्य दो समीपवर्ती अभयारण्यों की तरह अभयारण्य बनाने का प्रस्ताव है, जहाँ शिकार पूरी तरह से प्रतिबंधित होगा, ताकि तीनों अभयारण्य मोयार नदी के दोनों किनारों पर वन्यजीवों की बेहतर सुरक्षा कर सकें। बांदीपुर और मुदुमलाई अभयारण्यों की उपस्थिति ने काले हाथी को तब तक सुरक्षा प्रदान की जब तक वह उनके भीतर था, ताकि उसका शिकार तभी किया जा सके जब वह कोयंबटूर के जंगलों में प्रवेश कर जाए, या मोयार नदी के किनारे पूर्व में नीलगिरी के जंगलों में, भवानी नदी की ओर और मुदुमलाई अभयारण्य की सीमा से आगे चला जाए।
हर जगह हाथियों की बहुतायत के कारण, तीनों क्षेत्रों के जंगलों में काम करने वाले आदिवासी और अन्य लोग हमेशा सतर्क रहते थे। फिर भी, किसी के हाथी द्वारा पीछा किए जाने की खबरें आना आम बात थी, जबकि कभी-कभार छिटपुट दुर्घटनाएँ भी होती थीं जिनमें लोग मारे जाते थे। हालाँकि, ऐसी घटनाएँ बहुत कम होती थीं और कोई उन पर ज्यादा ध्यान नहीं देता था, सिवाय इसके कि जंगली हाथी की नज़र, आवाज़ या गंध से दूर रहने के लिए बहुत सावधानी बरती जाए।
काले हाथी का पहली बार प्रकट होना या उसके उग्र स्वभाव का पता लगाना अस्पष्ट है। दो प्रचलित मत हैं। पहला यह है कि मुदुमलाई अभयारण्य के भीतर दो दिन और दो रातों तक रुक-रुक कर एक भयंकर युद्ध हुआ, जिसकी आवाज मैसूर-ऊटाकामुंड मार्ग पर स्थित छोटे से गांव तिप्पाकाडु के निवासियों ने सुनी। इस स्थान पर मोयार नदी पर एक संकरा, काले रंग का लोहे का पुल बना हुआ है, और युद्ध के दूसरे दिन दोपहर को तिप्पाकाडु के निवासी पुल पर इकट्ठा होकर नदी के किनारे कुछ सौ गज की दूरी पर दो नर हाथियों को भयंकर रूप से लड़ते हुए देखने लगे। उन्होंने बताया कि दोनों हाथी विशालकाय थे, लेकिन उनमें से बड़ा हाथी स्पष्ट रूप से युद्ध में हावी हो रहा था, जबकि उसका प्रतिद्वंद्वी, उससे थोड़ा छोटा, काला हाथी, अपने प्रतिद्वंद्वी के दांतों से लगी कई चोटों के कारण सिर और बगल से बहते खून से लाल हो गया था।
दूसरी कहानी कोयंबटूर के उत्तर-पूर्वी जंगलों में बसे तल्लामलाई गाँव से आती है, जहाँ के एक निवासी ने गर्व से दावा किया कि उसी ने इस हाथी को बागी बनने की राह दिखाई। एक अकेला नर हाथी गाँव के आसपास के खेतों में फसलों पर हमला करके उन्हें नष्ट करने की आदत बना चुका था। हाथियों का शिकार करना, यहाँ तक कि शिकार लाइसेंस धारकों के लिए भी, सरकार द्वारा सख्ती से प्रतिबंधित है। फिर भी, नुकसान से तंग आकर, इस व्यक्ति ने एक रात अपने खेत के बीचोंबीच खड़े हाथी पर अपनी पुरानी बंदूक से गोली चला दी। गोली अवश्य लगी होगी, क्योंकि अगली सुबह खेत से जंगल तक खून के बड़े-बड़े धब्बे दिखाई दिए। ज़ाहिर है, घायल जानवर को देखने कोई नहीं आया।

कई लोगों ने इस जानवर को देखा था और सभी का कहना था कि यह एक बेहद काला और घने बालों वाला हाथी था। उस समय तक इसने किसी पर हमला नहीं किया था। घायल होने के बाद, हाथी तल्लामलाई के आसपास के इलाके से चला गया; कुछ लोगों का कहना था कि वह जंगल में मरने चला गया, जबकि अन्य का मानना था कि वह इलाका छोड़कर चला गया।
तीन महीने से भी अधिक समय बाद, अपने मवेशियों को चराते हुए एक चरवाहे पर एक काले हाथी ने हमला कर उसे मार डाला। तब लोगों को याद आया कि एक हाथी, जो उनकी फसलों को नष्ट करने का आदी था और बाद में घायल हो गया था, वह भी काले रंग का था। इसलिए सभी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यही हाथी घायल हुआ था, जबकि बंदूक के मालिक को खूब वाहवाही मिली और वह खुद पर बहुत गर्व करने लगा।
दूसरी कहानी शायद सच है, क्योंकि इसमें पहली हत्या की घटना का प्रमाण मिलता है, हालांकि यह भी संभव है कि तिप्पाकाडु में बुरी तरह पिटने वाला हाथी मोयार नदी के किनारे भटकता हुआ उत्तर-पूर्व के जंगल में निकला हो और चिड़चिड़े मूड में उस दुर्भाग्यपूर्ण चरवाहे के पास पहुंचकर अपना क्रोध उस पर निकालते हुए उसे बुरी तरह कुचल दिया हो।
इसके बाद मैंने जिन तीनों क्षेत्रों का उल्लेख किया है, उन सभी में छिटपुट हमले हुए। लेकिन यह ध्यान देने योग्य है कि इनमें से अधिकांश हमले कोयंबटूर वन क्षेत्र में हुए। वहां हाथी ने डिंबम से तल्लामलाई जा रही एक बैलगाड़ी को चकनाचूर कर दिया। चमत्कारिक रूप से गाड़ी पलटने पर उसमें सवार दोनों यात्री बच गए और अपनी जान बचाकर भाग गए, लेकिन सारथी और दो बैलों में से एक, साथ ही गाड़ी भी हाथी के प्रकोप का शिकार हो गई। सारथी के शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गए। हाथी ने स्पष्ट रूप से अपना अगला पैर उसके शरीर पर रखा और अपनी सूंड से उसकी दोनों भुजाएँ और एक टांग तोड़ दी। बैल को उसके एक विशाल दांत से बुरी तरह घायल कर दिया गया था और सूंड के प्रहार से उसकी रीढ़ की हड्डी टूट गई थी। गाड़ी के टुकड़े-टुकड़े हो गए थे।
यह अजीब बात थी कि बचे हुए बैल को कुछ नहीं हुआ। जब जुताई टूटी तो वह बस सरपट भाग गया, लेकिन ग्रामीणों ने कहा कि उसके भागने का कोई कारण ज़रूर था। वह बिल्कुल काले रंग का था, जबकि मारा गया जानवर सफेद और भूरा था, और गाड़ीवान ने सफेद धोती, सफेद बनियान और सफेद पगड़ी पहनी हुई थी। यह इस बात का पर्याप्त सबूत था कि सभी जंगली हाथियों को सफेद रंग बिल्कुल पसंद नहीं होता। इसलिए, भारत में हाथी वाले इलाकों में यात्रा करते समय आप देखेंगे कि सभी मील और फर्लांग के पत्थर, जो आमतौर पर सफेद रंग के होते हैं और उन पर काले अंक लिखे होते हैं, अब काले रंग के हैं और अंक आमतौर पर पीले रंग के हैं। सरकार को इसका खामियाजा भुगतना पड़ा है कि जंगली हाथी सफेद पत्थरों को लगाते ही उखाड़ देते हैं।
अपनी जान बचाकर भागे दोनों आदमी घटना की जानकारी देने के लिए दौड़ते हुए वापस दिंबुम पहुँच गए, जहाँ से उन्होंने यात्रा शुरू की थी। उन्होंने ज़ोर देकर बताया कि हाथी लगभग पूरी तरह काला था। उन्होंने यह भी बताया कि बायाँ दाँत दाएँ दाँत से छोटा था और अंदर की ओर मुड़ा हुआ था, जबकि हाथी कम से कम नौ फ़ीट ऊँचा था और उस पर असामान्य रूप से ज़्यादा बाल थे। हाथी का यह अब तक का सबसे विस्तृत विवरण था, जिसे वन विभाग ने सही मान लिया। आखिरकार, जब क्रोधित हाथी ने बैलगाड़ी को पलट दिया था, तब ये दोनों आदमी दस फ़ीट की दूरी पर ही थे; अगर किसी को पता होता, तो शायद यही लोग जानते कि हाथी कैसा दिखता था।

कोयंबटूर के कलेक्टर, जो इसी नाम के जिले का मुख्यालय है, को वन विभाग द्वारा यह विवरण दिया गया और उनसे अनुरोध किया गया कि वे जानवर को 'अशांत' घोषित कर दें और जिला शिकार लाइसेंस धारक किसी भी व्यक्ति द्वारा उसका शिकार करने की अनुमति दें। लेकिन घोषणा होने से पहले ही हाथी ने फिर हमला कर दिया, इस बार मुडियानूर बस्ती और अपेक्षाकृत बड़े गांव तलवाड़ी के बीचोंबीच, जो दोनों डिंबुम से तल्लामलाई जाने वाले एक ही मार्ग पर स्थित हैं, लेकिन उस स्थान से लगभग अठारह मील आगे जहां गाड़ीवान मारा गया था।
जिस ग्रामीण पर हमला हुआ, वह साइकिल चला रहा था। वह तलवाड़ी से मुडियानूर जा रहा था और लगभग आधे रास्ते तक पहुँच चुका था। उसने सफेद कमीज पहनी हुई थी जो उसकी सफेद शॉर्ट्स के बाहर ढीली लटक रही थी। हाथी ने जाहिर तौर पर उसे आते हुए देख लिया था और रास्ते के किनारे इंतजार कर रहा था; क्योंकि जैसे ही वह उसके पास पहुंचा, हाथी गुस्से से चीखते हुए साइकिल सवार पर झपटा।
उस आदमी ने हाथी को आते हुए देखा और सुना, और सहज रूप से वही किया जिससे उसकी जान बच गई। उसने अपनी साइकिल से छलांग लगा दी। सौभाग्य से, उस जगह पर रास्ता एक ढलान के किनारे से होकर गुजरता था और ग्रामीण उस ढलान पर घनी झाड़ियों और लंबी घास में कूद गया। जैसे ही हाथी उसकी गिरी हुई साइकिल के पास पहुंचा और उसे कुचलकर धातु के एक बेजान, मुड़े-तुड़े ढेर में बदलने लगा, वह घनी झाड़ियों में ओझल हो गया। हाथी लगातार जोर-जोर से चिंघाड़ रहा था। ग्रामीण ने समझदारी दिखाते हुए बिल्कुल शांत लेटा रहा। शायद वह इतना भयभीत था कि हिलने-डुलने में असमर्थ था। साइकिल को नष्ट करने की जल्दबाजी में हाथी उसे भूल गया, और उसने यह काम बड़ी व्यवस्थित और पूरी तरह से किया। अंत में, साइकिल को खाई में फेंककर, लगभग उसके भयभीत मालिक के ऊपर, वह विशालकाय हाथी लड़खड़ाता हुआ चला गया।
ग्रामीण एक घंटे से अधिक समय तक झाड़ियों में छिपा रहा, जब तक उसे यकीन नहीं हो गया कि हमलावर चला गया है। फिर, कांटों से लगे अनगिनत खरोंचों से दर्द से कराहते हुए, वह दर्द से कराहते हुए वापस रास्ते पर लौटा, जहाँ उसने चारों ओर बेचैनी से देखा, मानो किसी भी क्षण अपने भारी-भरकम हमलावर को देख ले। लेकिन वहाँ कोई नहीं था। फिर वह अपनी पूरी ताकत से भागा और तलवाड़ी की ओर वापस दौड़ पड़ा, जहाँ से वह लगभग ढाई घंटे पहले निकला था।
हाथी का उसका वर्णन गाड़ी से बच निकलने वाले लोगों द्वारा दिए गए वर्णन से काफी हद तक मेल खाता था। उसने पुष्टि की कि हाथी के दांत आकार और स्थान में एक समान नहीं थे, और हाथी बहुत काला था। इसके कुछ ही समय बाद कोयंबटूर के कलेक्टर ने घोषणा जारी की कि हाथी एक उपद्रवी हाथी है और शिकार लाइसेंस रखने वाला कोई भी व्यक्ति उसका शिकार कर सकता है।
जैसे ही उसे एहसास हुआ कि उसके सिर पर इनाम रखा गया है, वह काला बदमाश तुरंत उस इलाके से गायब हो गया और लगभग तीन महीने बाद तक फिर कभी वहां नहीं देखा गया। इसी बीच उसने ऊटाकामुंड-मैसूर राज्य सीमा से आधे मील की दूरी पर, लेकिन मुदुमलाई अभयारण्य के भीतर, एक करुंबा का पीछा किया और उसे मार डाला, जब वह शहद चुरा रहा था। हालाँकि, इस घटना को गंभीरता से नहीं लिया गया, क्योंकि यह माना गया कि चोर को उसके कुकर्मों का उचित दंड मिल गया था।
मैसूर शहर से ऊटाकामंड तक जाने वाली मुख्य सड़क, जो नीलगिरी पर्वतमाला पर स्थित एक खूबसूरत पहाड़ी स्टेशन है और समुद्र तल से 7,500 फीट ऊपर है, बांदीपुर और मुदुमलाई अभयारण्यों के मध्य से होकर गुजरती है। ये अभयारण्य नीलगिरी पर्वतमाला के उत्तरी तलहटी में स्थित हैं। तिप्पाकाडु गांव से निकलने के

बाद, जहां दो हाथियों के बीच ऐतिहासिक युद्ध हुआ था, सड़क लगभग चालीस मील की चढ़ाई शुरू करती है। रास्ते में गुडालूर नामक स्थान आता है और ऊटाकामंड पहुंचने से पहले कॉफी, चाय और चिनकोना के विशाल बागानों से गुजरते हुए कई घुमावदार मोड़ आते हैं। यह सड़क तारकोल से बनी है और मैसूर राज्य और मद्रास के नीलगिरी जिले की सरकारों द्वारा इसका रखरखाव बहुत अच्छे से किया जाता है। इस पर मध्यम स्तर का यातायात रहता है, जिसमें ऊटाकामंड जाने वाले कई पर्यटकों की निजी कारें शामिल हैं।
तिप्पाकाडु से एक और सड़क दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है और ऊटाकामंड पहुँचने से पहले इक्कीस मील का छोटा रास्ता तय करती है। यह मोयार नदी पर बने काले पुल को पार करती है, जहां से ग्रामीणों ने हाथियों की लड़ाई देखी थी। यह सड़क मासिनीगुडी, महवनहल्ला और सेगुर नामक तीन गाँवों से होकर गुजरती है और फिर ऊटाकामंड तक एक बेहद खड़ी ढलान वाली सड़क पर चढ़ती है। मुख्य सड़क की आधी लंबाई होने के बावजूद, यह रास्ता अपनी अत्यधिक ऊंबड़-खाबड़ और खड़ी ढलान, विशेष रूप से हेयरपिन मोड़ों के आसपास, के कारण बहुत कम इस्तेमाल होता है; यह निश्चित रूप से असाधारण रूप से कुशल चालकों के लिए खतरनाक है जो उच्च हॉर्सपावर और उत्तम स्थिति वाले ब्रेक वाले वाहनों का उपयोग करते हैं।
बांदीपुर से गुडालूर जाने वाली मुख्य सड़क और खड़ी घाट की तलहटी में स्थित तिप्पाकाडु से सेगुर जाने वाले शॉर्टकट मार्ग पर, कोयंबटूर के कलेक्टर द्वारा उसे आधिकारिक तौर पर दुष्ट हाथी घोषित किए जाने के लगभग तीन महीने बाद तक वह समय-समय पर आता-जाता रहा। लेकिन यह घोषणा केवल मोयार नदी के उत्तर-पूर्व में स्थित जंगलों पर लागू होती थी, जो कि जैसा कि मैंने आपको बताया है, कोयंबटूर जिले के अंतर्गत आते हैं। यह मैसूर और नीलगिरी क्षेत्रों पर लागू नहीं होती थी, जहाँ हाथी को अभी तक दुष्ट हाथी घोषित नहीं किया गया था और इसलिए वह अभी भी संरक्षित था। लेकिन हर बार और अधिक साहसी होते हुए, काले हाथी ने अपनी घोषणा को जल्दी करने का फैसला किया और कभी-कभी दोनों सड़कों पर मोटरगाड़ियों का पीछा भी करने लगा।
सेगुर में उसने लगभग एक अंग्रेज, मेरे दोस्त कोलेट को भी अपने शिकारों की सूची में शामिल कर लिया था। यह सज्जन शाम को अपनी बंदूक और पाँच आवारा कुत्तों के साथ टहलने निकले थे, इस उम्मीद में कि उन्हें रात के खाने के लिए एक मोर, जंगली मुर्गा या शायद एक खरगोश या दो तीतर मिल जाएँगे। उन्हें क्या मिला, यह तो मुझे नहीं पता, लेकिन शाम ढलते-होते वह मोयार नदी की सहायक नदी सेगुर के किनारे एक पेड़ से पीठ टिकाकर बैठे थे और उनके पाँच कुत्ते उनके चारों ओर थे, तभी पानी पीने के लिए वही काला बदमाश नीचे आया। उसने कोलेट को तुरंत देख लिया और अपनी हमेशा की तरह गुस्से और नफरत से भरी चीख के साथ उसे पर झपट पड़ा।
मेरे दोस्त के पास सिर्फ एक शॉटगन थी जो हाथी के सामने बेकार थी; उसके दाहिने पैर में स्थायी चोट भी थी, जिसके कारण वह थोड़ा लंगड़ाकर चलता था। इससे वह दौड़ नहीं पाता था और न ही जल्दी से पेड़ पर चढ़ पाता था। अगर पांच देसी कुत्ते हाथी पर पलटवार न करते तो एक और हत्या का मंजर बन जाता। वे हाथी के चारों ओर चक्कर लगाते हुए जोर-जोर से भौंकने लगे। इससे हाथी इतना विचलित और क्रोधित हो गया कि वह अपने शिकार को भूल गया और कुत्तों को कुचलने या उनमें से किसी एक को अपनी सूंड में पकड़ने की कोशिश करने लगा। लेकिन कुत्ते उसकी पहुंच से दूर रहे और नाराज हाथी व्यर्थ ही इधर-उधर भागने लगा। जैसे ही वह किसी एक कुत्ते को पकड़ने पर ध्यान केंद्रित करता, बाकी चार कुत्ते उसके पीछे भौंकने लगते। कोलेट एक पेड़ के तने के पीछे छिप गया और जब हाथी नहीं देख रहा था, तो

वह जंगल में एक पगडंडी तक पहुंचने में कामयाब हो गया, जिस पर वह अपनी लंगड़ाती हुई ताकत से तेजी से पीछे हट गया। उसके बंगले पर पहुंचने के कुछ ही समय बाद, पांचों कुत्ते वहां आ गए, सभी unharmed थे और अपनी मेहनत से खुशी से हांफ रहे थे।
लगभग तीन महीने बाद हाथी कोयंबटूर के जंगलों में वापस आ गया और वहाँ भी उसने जल्द ही एक और शिकार को अपना शिकार बना लिया, जो जीरगल्ली नामक एक छोटे से गाँव का निवासी था, जो मुडियानूर और दक्षिण-पश्चिम में स्थित उस गहरी घाटी के लगभग मध्य में स्थित है जिससे होकर मोयार नदी बहती है।
इस घटना के कुछ समय बाद, बैंगलोर घूमने आए एक अमेरिकी पर्यटक मुझसे मिलने आए और मुझसे पूछा कि क्या मैं उन्हें किसी ऐसी जगह ले जा सकता हूँ जहाँ वे बाइसन की तस्वीरें ले सकें। उन्होंने अफ्रीका के कुछ प्रसिद्ध वन्यजीव अभ्यारण्यों का दौरा किया था और उनके पास वहाँ के सभी वन्यजीवों, जिनमें गैंडा, शेर और अफ्रीकी हाथियों के विशाल झुंड शामिल थे, की वीडियो रीलों का एक शानदार संग्रह था, जो उन्होंने मुझे दिखाया। उन्होंने कहा कि अब उन्हें बाघों और भारतीय बाइसन की एक-दो रीलें चाहिए। मैंने उन्हें समझाया कि शेरों के विपरीत, जो खुले मैदानों में रहते हैं, बाघ जंगलों में रहते हैं जहां आसानी से तस्वीरें नहीं ली जा सकतीं। लेकिन मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि बाइसन की तस्वीरें लेना अपेक्षाकृत आसान होगा। इस मुलाकात का नतीजा यह हुआ कि वे मेरे साथ अपनी कार में तीन दिन की यात्रा पर चलने के लिए सहमत हो गए और हम अगली सुबह रवाना हो गए।
अब मुझे बाइसन की तस्वीरें खींचने के लिए कोयंबटूर के जंगलों से बेहतर कोई जगह नहीं पता। न केवल वहां ये जानवर बहुत बड़ी संख्या में पाए जाते हैं, बल्कि जंगल मैसूर के कुछ हिस्सों की तुलना में कम घना है और निश्चित रूप से बहुत कम कंटीले हैं। रास्ते में मैंने अपने पुराने जंगल के दोस्त और साथी, राचेन नाम के एक शोलागा को गेदेसाल गांव में उसकी झोपड़ी से लिया और डिंबम के लिए निकल पड़ा, जहां से हम पश्चिम की ओर मुड़कर होनाथेट्टी नामक एक अन्य गांव की ओर चल दिए, जो डिंबम-तल्लामलाई सड़क पर लगभग सात मील दूर स्थित है। मुझे पता था कि वहां बाइसन विशेष रूप से बहुतायत में पाए जाते हैं।
दो टायर पंक्चर होने और कुछ अन्य छोटी-मोटी देरी के कारण, हम शाम के लगभग 4 बजे अपने गंतव्य पर पहुँचे। बाइसन की तलाश शुरू करने का समय बिल्कुल नहीं था। इसके अलावा, जैसा कि सभी जानते हैं, शाम का समय फोटोग्राफी के लिए सबसे अच्छा नहीं होता। इसलिए मैंने अपने अमेरिकी मित्र से कहा कि हम गाँव के पास एक पेड़ के नीचे रात बिताएंगे और अगली सुबह काम शुरू करेंगे। इसी बीच, हमारी वहां के कुछ निवासियों से बातचीत हुई, जिन्हें मैंने अपने उद्देश्य के बारे में बताया। यह सुनकर वे बहुत निराश हुए कि हम किसी नियमित शिकार यात्रा पर नहीं आए थे और उन्होंने हमें उस रात पानी के गड्ढे के पास बैठकर उनके लिए मांस के लिए एक सांभर का शिकार करने के लिए लुभाने की बहुत कोशिश की। पानी के गड्ढे के पास शिकार करना न केवल वर्जित है, बल्कि यह बहुत ही अनुचित भी है, और हमने विनम्रतापूर्वक लेकिन दृढ़ता से मना कर दिया।
उस रात खाना खाने के बाद गाँव के कई शोलागा लोग हमारे कैंप फायर के चारों ओर जमा हो गए, और उनमें से एक ने अगले दिन सुबह राचेन को अपने साथ ले जाने की पेशकश की ताकि पास के बाइसन झुंड के पदचिह्नों का पता लगाया जा सके। योजना यह थी कि झुंड का तब तक पीछा किया जाए जब तक कि वे दिन भर के लिए आराम न कर लें और फिर वापस आकर हमें बताएँ। बाइसन दोपहर की तेज़ गर्मी में ज़्यादा दूर नहीं जाते हैं, इसलिए हमारे लिए अपने शोलागा गाइडों के साथ जाना, बाइसन के

आराम करने की जगह के हवा की दिशा में जाना और सावधानी से उनके करीब जाना, ताकि झुंड के डरकर भागने से पहले हम कुछ तस्वीरें ले सकें, काफी आसान होगा।
योजना बन जाने के बाद, हम अन्य विषयों पर चर्चा करने लगे और बातचीत के दौरान उस काले बदमाश का ज़िक्र हुआ। ज़ाहिर है, उसकी बदनामी दूर-दूर तक फैल चुकी थी, लेकिन उसने अब तक होनाथट्टी के किसी भी निवासी को परेशान नहीं किया था, हालाँकि उनमें से कुछ लोगों ने उसे कभी-कभार देखा था। हालाँकि, यह घटना कुछ महीने पहले हुई थी और आम राय यही थी कि वह हमेशा के लिए चला गया है। उसके बाद किसी ने उसके बारे में ज़्यादा नहीं सोचा।
सुबह होने ही वाली थी कि गांव का शोलागा अपने वादे के मुताबिक आ गया और रॉचेन को अपने साथ लेकर रात के दौरान वहां से गुजरे किसी भी बाइसन के पदचिह्नों की तलाश करने निकल पड़ा। उसने हमें भरोसा दिलाया कि उसे बाइसन ज़रूर मिल जाएंगे, क्योंकि उसके गांव के आसपास की निचली पहाड़ियों और जंगल में बाइसन बहुतायत में पाए जाते थे।
मेरे दोस्त के पास शिकार का लाइसेंस नहीं था और मुझे भी पक्षियों का शिकार करने में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए हमने अगले कुछ घंटे शिविर में आराम करते हुए बिताए और सुबह-सुबह जंगली मुर्गों की बांग और मोरों की ककेश आवाजें सुनीं। सूरज काफी ऊपर आ चुका था और काफी गर्मी हो रही थी, तभी दो शोलागा लोग दस बजे से ठीक पहले वापस लौटे और हमें बताया कि उन्हें बाइसन के एक बड़े झुंड के पदचिह्न मिले हैं, जिनका वे लगभग दो मील तक पीछा करते रहे, जब तक कि वे उन जानवरों के पास नहीं पहुँच गए जो एक छोटी सी पहाड़ी के किनारे एक छोटी सी धारा के पास दिन भर आराम कर रहे थे। उन्हें अपने अनुभव से पता था कि बाइसन शाम तक वहीं आराम करेंगे, फिर आगे बढ़ेंगे।
शोलागा लोगों के अनुसार, हमें इस जगह तक पहुँचने के लिए कम से कम चार मील पैदल चलना था। शोलागा लोग, बाकी सभी आदिवासियों की तरह, दूरियों का ठीक-ठीक अंदाज़ा नहीं लगा पाते, इसलिए मुझे पता था कि अगर हम छह मील से कम में वहां पहुँच गए तो हम खुद को भाग्यशाली समझेंगे। मुझे याद है कि उस सुबह सूरज बहुत तेज़ था, इसलिए मैंने आलस के मारे अपनी राइफल वहीं छोड़ दी। बारह मील तक उसे ढोना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। इसके अलावा, जैसा कि मैंने आपको बताया है, हम फोटोग्राफी के लिए आए थे, गोली चलाने के लिए नहीं।
हम उसी के अनुसार चल पड़े, मेरे दोस्त और मैंने उसका कैमरा और अन्य उपकरण आपस में बाँट लिए। जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, दो मील नहीं बल्कि तीन मील से भी अधिक दूरी तय करने के बाद हमें पशुओं का झुंड मिला। घास निश्चित रूप से ताज़ी थी। जिन घासों को जानवरों ने चरकर खाया था और उनके गोबर से यह बात स्पष्ट रूप से पता चल रही थी।
हम चौड़े रास्ते पर चलने लगे और लगभग तीन मील का सफ़र तय करने के बाद रॉचेन और दूसरे शोलागा ने उस नीची पहाड़ी की ओर इशारा किया जहाँ हम खड़े थे। कम से कम एक मील दूर हमें पेड़ों से लगभग छिपी हुई पानी की हल्की चमक दिखाई दी, जो उस धारा का संकेत थी जहाँ झुंड ने दिन भर आराम करने का फैसला किया था।
अगला काम था हवा की दिशा का पता लगाना ताकि हम अपने शिकार के ठीक सामने पहुँच सकें। बाइसन की सूंघने की शक्ति बहुत तेज़ होती है, और हवा के विपरीत दिशा से उनके पास जाने का मतलब था कि वे निश्चित रूप से हमारे आने का पता लगा लेंगे और छिपने की जगह छोड़ देंगे। सौभाग्य से हमने पाया कि हवा ऊपर

की ओर बह रही थी; यानी बाइसन से हमारी ओर। इसका मतलब था कि हमें चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा बल्कि पिछली रात के उनके पदचिह्नों का पीछा करते हुए चुपके से झुंड के पास नीचे की ओर जाना होगा।
मैंने बताया था कि नदी लगभग एक मील दूर थी। पहाड़ी ढलान धीरे-धीरे नीचे की ओर जा रही थी। यह काफी खुला, पार्क जैसा इलाका था, जिसमें बिखरे हुए छोटे-छोटे पेड़, लंबी हरी घास और जगह-जगह कुछ चट्टानें थीं। होनाथेट्टी का शीलागा आगे-आगे चल रहा था, क्योंकि उसे रास्ता पता था, उसके ठीक पीछे अमेरिकी और राचेन थे, जबकि मैं सबसे पीछे था। आसमान एकदम साफ और नीले रंग का था, और सूरज की तेज रोशनी हम पर पड़ रही थी। सब कुछ शांत और निर्मल लग रहा था।
दोनों शीलागाओं की क्षमताओं पर पूरा भरोसा रखते हुए, जो कि कुशल ट्रैकर और जंगल के ज्ञान में निपुण थे, मैं यूं ही चलता रहा, बिना किसी खास बात के, तभी अचानक मेरी नज़र राचेन पर पड़ी, जिसने पीछे मुड़कर उस रास्ते को देखा जिससे हम आए थे। वह अचानक रुक गया और उसने अशुभ शब्द कहे: 'दोराई, अन्नाई वरुदु!', जिसका अर्थ है, 'महोदय, एक हाथी आ रहा है!'
उसी दिशा में देखते हुए, मैं यह देखकर दंग रह गया कि एक हाथी सचमुच बिखरे हुए पेड़ों के बीच से होते हुए सीधे हमारी ओर आ रहा था। वह हमसे मात्र एक फर्लांग की दूरी पर प्रतीत हो रहा था। उसकी धीमी दौड़ में दृढ़ संकल्प स्पष्ट था। उसमें कोई झिझक नहीं थी, न ही डर या भय का कोई संकेत, न ही हमसे बचने या छिपने का कोई प्रयास। यह हाथी जितनी जल्दी हो सके हम तक पहुँचने के लिए दृढ़ संकल्पित था।
मुझे पता था कि उसका अगला कदम क्या होगा। जैसे ही उसे लगेगा कि वह काफी करीब आ गया है, वह गुस्से से चीखते हुए हम पर झपट पड़ेगा। एक सामान्य हाथी का व्यवहार बिल्कुल अलग होता। जैसे ही उसे इंसानों की गंध आती या वह उन्हें देखता, वह भागने की पूरी कोशिश करता। लेकिन यह जानवर जानबूझकर हमारा पीछा कर रहा था, और उसके इरादे में एक भयावह और शैतानी झलक रही थी। इसमें कोई शक नहीं था कि यही वह दुष्ट हाथी था जिसके बारे में मैंने इतना कुछ सुना था। इतनी दूरी से भी वह गहरे काले रंग का लग रहा था।
आगे चल रहे शीलागा और मेरे अमेरिकी मित्र, दोनों को ही उसकी उपस्थिति का आभास नहीं था, क्योंकि पास आते समय उसने कोई आवाज़ नहीं की। सौभाग्यवश, राचेन ने पीछे मुड़कर उसे देख लिया था। अन्यथा, उस दिन हममें से कम से कम एक की बहुत दर्दनाक मृत्यु हो जाती!
मैं हताशा से चारों ओर देखने लगा, बचने का रास्ता ढूँढ़ रहा था। जैसा कि मैंने बताया, पेड़ छोटे थे। एक भी ऐसा पेड़ नहीं था जिसे हाथी आसानी से न गिरा सके। लेकिन लगभग 200 गज दूर, हमारे दाहिनी ओर, मुझे एक चट्टान दिखाई दी जो बीच के पेड़ों के तनों से आधी छिपी हुई थी। मुझे यह जानने का कोई साधन नहीं था कि वह कितनी बड़ी या कितनी ऊँची थी। लेकिन वह एक चट्टान थी और वही हमारी एकमात्र शरण थी।
मैं चिल्लाने से बच रहा था, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि हाथी मुझे सुन ले और शायद हमला कर दे। मैंने अपने अमेरिकी दोस्त को धीरे से पुकारा: 'मेरे पीछे दाईं ओर उस चट्टान तक आओ। वह उग्र हाथी हमारे पीछे है। भागो!'
सामान्य परिस्थितियों में इसका उस पर पड़ने वाला प्रभाव मनोरंजक कहा जा सकता था। वह एकदम रुक गया और असमंजस में इधर-उधर देखने लगा।
'यह क्या है?' उसने पूछा। 'कहाँ?'

आगे दौड़ते हुए, मैंने उसका हाथ पकड़ा और उसे चट्टान की ओर धकेलने लगा, जबकि मैं खुद भी भागने की कोशिश कर रहा था। इसी बीच, राचेन ने दूसरे शोलागा को धीमी आवाज़ में चेतावनी दी।
हाथी लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ रहा था और हमसे बस आधा फर्लांग से थोड़ा ही दूर था। निस्संदेह उसने हमारी तेज़ चाल देख ली थी और समझ गया था कि उसकी मौजूदगी का पता चल गया है। क्योंकि बिना देर किए उसने ज़ोर से चिंघाड़ा। फिर उसने हमला कर दिया!
मेरे दोस्त ने अपना कैमरा नीचे फेंक दिया और हम चारों जितनी तेज़ी से दौड़ सकते थे, उस चट्टान की ओर भागे। लंबी घास, कांटों और बीच में आने वाले पेड़ों की परवाह किए बिना, हम बड़ी तेज़ी से आगे बढ़े, और हाथी लगातार चिंघाड़ता हुआ हमारे पीछे था। चट्टान से बस थोड़ी ही दूरी पर होने के कारण हम अपनी बढ़त बनाए रखने में कामयाब रहे और अपने पीछा करने वाले से लगभग 100 गज पहले अपने लक्ष्य तक पहुँच गए।
यह एक नीची, ढलान वाली चट्टान थी, जिसका एक सिरा ज़मीन से मुश्किल से तीन फीट ऊपर था और दूसरा लगभग पाँच फीट। लेकिन बचने का कोई और रास्ता नहीं था, इसलिए हम लगभग एक साथ चट्टान पर कूद पड़े। यह लगभग तीस फीट लंबी रही होगी। बिना रुके, हम ढलान पर दौड़ते हुए ऊपरी सिरे तक पहुंच गए। चट्टान में एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक दरार थी। इस ढलान में मोटी घास उगी हुई थी।
हम हाँफते-हाँफते चट्टान के ऊपरी सिरे तक पहुंचे और फिर मुड़कर देखने लगे कि हाथी क्या करेगा। क्रोधित हाथी सीधे हमारी ओर बढ़ा, और जैसे ही हम पीछे हटकर उसकी सूंड की पहुंच से बाहर हुए, वह अपनी छाती का निचला हिस्सा पत्थर से सटाकर रुक गया। इसी स्थिति में वह लगातार ज़ोर-ज़ोर से चिंघाड़ता रहा और बारी-बारी से अपनी सूंड से हम पर हवा के झोंके फेंकता रहा। कुछ क्षण बाद हाथी को एहसास हुआ कि हम उसकी पहुंच से बाहर हैं। उसने पास उग रही झाड़ियों को उखाड़ दिया और उन्हें अपनी सूंड के सिरे से पकड़कर हम पर वार करने की कोशिश की। ज़ाहिर है, हम और पीछे हट गए, लेकिन उसे चट्टान के निचले सिरे तक आने का ख्याल नहीं आया। इसके बजाय उसने एक ढीला पत्थर उठाया और उसे हम पर फेंक दिया, जो मेरे दोस्त को बाल-बाल बचा गया।
उस जानवर को दूसरी तरफ से हम तक पहुंचने का विचार आने में दस मिनट लग गए; फिर असल में काम शुरू हुआ। ज़ाहिर है, यह विचार उसे अचानक आया, क्योंकि उसने अचानक चिंघाड़ना बंद कर दिया और अपने भारी-भरकम शरीर के बावजूद आश्चर्यजनक तेज़ी से चट्टान के चारों ओर घूमकर दूसरे छोर पर पहुंच गया। वहाँ उसने चट्टान को केवल तीन फुट ऊँचा पाया। ग्रेनाइट पर अपना एक भारी अगला पैर रखकर उसने सावधानी से उसकी स्थिरता जाँची और अगले कुछ ही सेकंड में वह चट्टान पर चढ़ गया और सीधे हमारी ओर आने लगा।
अब राचेन ने अद्भुत सूझबूझ और सूझबूझ का परिचय दिया। उसने तमिल में पुकारा: 'जल्दी से नीचे कूदें जीओ। हाथी उस रास्ते से हमारा पीछा करने की कोशिश नहीं करेगा। वह रास्ता बहुत ढलान वाला है और उसे पैर टूटने का डर रहेगा!'
अपनी बात को अमल में लाते हुए, वह कूद गया, और हम तीनों ने बिना देर किए उसका पीछा किया। तभी मेरा दोस्त भागने लगा, लेकिन मैंने उसे पकड़ लिया और कहा: 'रुको। वह अपने भारी वजन के साथ पांच फीट की ऊंचाई से जमीन पर कूदने की कोशिश नहीं करेगा; लेकिन अगर हम इस चट्टान को छोड़ देंगे तो वह घूमकर खुले में हममें से किसी एक को पकड़ लेगा।'

वह बदमाश चट्टान के किनारे तक पहुंच गया, जहां से वह हम सबके ऊपर खड़ा था —यह सचमुच एक अद्भुत दृश्य था! उसने एक बार फिर अपनी सूंड से हम तक पहुँचने की कोशिश की और फिर छलांग लगाने के इरादे से अपना एक अगला पैर हवा में हिलाया। लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया और गुस्से से चीखते हुए खुद को रोक लिया। हम उसकी पहुँच से दूर खड़े रहे और उसके अगले कदम का इंतज़ार करते रहे।
लगभग एक मिनट बाद वह घूमा और तेज़ी से नीचे की ओर भागा। फिर हिचकिचाते हुए, उसने धीरे से कदम रखा और चट्टान के चारों ओर घूमकर हमें पकड़ने के लिए मुड़ा। इस तरह हम पाँच फीट ऊपर चढ़े और उसके फिर से हमारे नीचे पहुंचने से कुछ ही सेकंड पहले शिखर पर पहुँच गए, ठीक उसी जगह पर जहाँ वह पहली बार पहुंचा था।
क्रोधित बैल दो बार फिर चट्टान के चारों ओर चक्कर लगाकर नीचे से ऊपर चढ़ गया। हम दो बार फिर उन पाँच फुट की दूरी से नीचे कूदे और उसकी पहुंच से ठीक बाहर, आधार पर खड़े हो गए। यह सचमुच एक पकड़म-पकड़ी का खेल था, जिसमें एक पल की भी देरी होने पर, चाहे कूदने में हो या फिर से चढ़ने में, कुचले जाने और टुकड़े-टुकड़े हो जाने से भयानक मौत का खतरा मंडरा रहा था। अगर इस रोमांचक खेल में हम केवल एक या दो ही होते, तो शायद इतना बुरा न होता। लेकिन हम चार थे, इसलिए हम एक-दूसरे के रास्ते में आते रहे, खासकर जब पाँच फुट की चट्टान पर चढ़ने की बात आती थी। एक सेकंड के अंश की भी देरी होने पर दर्दनाक मौत का दंड था, इसलिए हर कोई अपनी जान बचाने में लगा था।
सबसे भयानक बात शायद हाथी की दिल दहला देने वाली चीख थी। उसकी आवाज़ से पूरा वातावरण कांप रहा था और डर के मारे अपनी जगह पर जम जाने से बचने के लिए बड़ी मुश्किल से हिम्मत जुटानी पड़ी। सौभाग्य से, तीसरे प्रयास के बाद, क्रोधित जानवर या तो थक गया या उसे एहसास हो गया कि इस तरह वह हमें पकड़ नहीं सकता। हालांकि, यह एक गलती थी, क्योंकि अगर वह ऐसा करता रहता तो हम थक जाते और देर-सवेर वह हममें से किसी एक को पकड़ ही लेता।
लेकिन वह रुक गया और अब उस चट्टान के चारों ओर घूमने लगा जिस पर हम खड़े थे, बार-बार उसके पास आकर अपनी सूंड से हम तक पहुंचने की कोशिश करता। हर बार जब वह ऐसा करता, हम झुंड बनाकर दूसरी तरफ भाग जाते, जहाँ हम उसके वापस आने का इंतज़ार करते और फिर वापस भाग आते। यह सब चल रहा था और मैं अपनी राइफल न लाने की अपनी घोर लापरवाही पर खुद को कोस रहा था। सूरज लगभग सिर के ठीक ऊपर था और साफ आसमान से हम पर तेज़ धूप पड़ रही थी। चट्टान से गर्मी की लहरें उठ रही थीं और शांत हवा में झिलमिला रही थीं। मैंने जल्दी से अपनी घड़ी देखी। लगभग दोपहर हो चुकी थी।
आखिरकार हाथी को भी गर्मी और धूप का असर महसूस होने लगा। उसने अपनी ज़ोरदार कसरत रोक दी और कुछ ही गज दूर एक पेड़ की छाँव में खड़ा हो गया। वह वहीं रुका रहा। इस तरह एक घंटा बीत गया। जिस ग्रेनाइट चट्टान पर हम खड़े थे, वह असहनीय रूप से गर्म हो गई। गर्मी मेरे जूतों के रबर के तलवों तक पहुँच गई, जिससे मैं मुश्किल से ही दो पैरों पर खड़ा हो पा रहा था। दो शोलागाओं की हालत तो और भी खराब थी, क्योंकि वे दोनों नंगे पैर थे; गर्मी से उनके नंगे तलवे जलने लगे थे, इसलिए वे चट्टान पर लगभग उछल-कूद कर चल रहे थे।
मुझे एक अजीब सा विचार आया कि उस राक्षस को डराकर भगा दिया जाए। मैंने अपने तीनों साथियों से कहा कि वे पूरी ताकत से चिल्लाना शुरू कर दें, और मैं भी उनके बेमेल चीखों में शामिल हो गया। लेकिन हमारी आवाज़ों से हाथी घबराने के

बजाय फिर से हम पर झपट पड़ा, और इस बार वह तीन फुट चौड़े किनारे से सीधे चट्टान पर आ गया। हम सब एक साथ दूसरे किनारे से नीचे कूद गए और उसकी पहुँच से बाहर खड़े हो गए, जबकि वह हमारे ऊपर चट्टान के किनारे पर गुस्से से नाच रहा था। हम चारों जानते थे कि अगर उसने छलांग लगा दी, तो हममें से कम से कम एक तो अगली सुबह का उजाला देख ही नहीं पाएगा। लेकिन गुस्से में होने के बावजूद, हाथी सतर्क था और कूदा नहीं। वह चट्टान पर ही बैठा रहा और चीखता रहा और अपनी सूंड फैलाकर हमारे चेहरों पर हवा फेंकता रहा।
संभवतः कुछ देर बाद पत्थर की गर्मी उसके मजबूत पैरों के मोटे तलवों को भी भेदने लगी थी, क्योंकि वह एक-एक करके, तेजी से अपने पैर ऊपर उठाता रहा। फिर वह मुड़ा और चट्टान के निचले सिरे से नीचे उतर गया। हम चारों एक साथ जलते हुए पत्थर पर फिर से चढ़ गए। इस बार हम चुप रहे और उस क्रूर प्राणी को देखते रहे जो हमें भी देख रहा था।
यह गतिरोध कुछ मिनटों तक जारी रहा, फिर वह बदमाश हाथी अचानक मुड़ा और उसी पहाड़ी से लड़खड़ाते हुए चला गया जहाँ से वह आया था और नज़रों से ओझल हो गया। मैं खुद को बधाई देने लगा कि हम उससे छुटकारा पा चुके हैं, तभी दोनों शोलागा लोगों ने कहा कि उन्हें लगता है कि यह एक चाल थी और हाथी हमें चट्टान से दूर खींचने की कोशिश कर रहा था। इसलिए इस बात की जांच करने के लिए, हम चारों नीचे उतरे और लगभग पचास गज दूर चले गए। अचानक लकड़ी के टूटने की तेज़ आवाज़ आई, घृणा की चीख सुनाई दी, और वह बदमाश हाथी बिल्कुल दूसरी दिशा से हम पर हमला करने के लिए दौड़ पड़ा। हम एक बार फिर चट्टान पर चढ़ गए।
हाथी ने हमें आधे घंटे तक रोके रखा। फिर वह दोबारा चलने लगा, इस बार उस धारा की ओर जहाँ बाइसन का झुंड शरण लिए हुए था। ढलान होने के कारण हम उसे कुछ दूरी तक देख सके, जब तक कि उसका काला शरीर अंत में बीच के पेड़ों में छिप नहीं गया। हमें शक था कि वह अपनी पुरानी चाल चल रहा है, इसलिए हम चट्टान से नहीं हटे, बल्कि शोलागाओं से कहा कि वे दो सबसे ऊँचे पेड़ों पर चढ़ जाएँ ताकि अगर वह रास्ता बदलकर दूसरी दिशा से आने की कोशिश करे तो वे उसे देख सकें। उन्होंने ऐसा किया और थोड़ी देर बाद इशारा किया कि रास्ता साफ है।
जब शोलागास हमसे दोबारा मिले, तो राचेन ने बताया कि हाथी को शायद गर्मी लग गई थी और वह पानी पीने और नहाने के लिए नदी की ओर चला गया था। उसके बाद, उसने कहा, वह शायद वापस आकर रात होने तक चट्टान के पास ही रहेगा।
घोर अंधेरे में उस काले राक्षस के साथ लुका-छिपी का वो भयानक खेल खेलने का ख्याल ही मुझे डरा रहा था। उसे ठीक से देख न पाने की वजह से, मुझे पूरा यकीन था कि हममें से कोई न कोई पकड़ा जाएगा। मैंने सुझाव दिया कि उस बदमीश के वापस आने से पहले हम भाग जाएं, और इस योजना को सभी ने सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया।
मैंने राचेन से अमेरिकी का कैमरा लाने को कहा, जो उसने तुरंत ला दिया। फिर हम चारों चट्टान से नीचे उतरे और गाँव की ओर चल पड़े। दौड़ते हुए हम होनाथेट्टी की ओर बढ़ रहे थे और बार-बार पीछे मुड़कर देख रहे थे कि कहीं कोई हमारा पीछा तो नहीं कर रहा। लेकिन हाथी सचमुच पानी पीने गया था, क्योंकि वह कहीं नज़र नहीं आया। दोपहर की भीषण गर्मी में पसीने से तरबतर और हाँफते हुए हम पौने तीन बजे गाँव पहुँचे और एक भयानक मौत से बच निकलने पर बहुत खुश थे।
मैं थका हुआ और गुस्से में था। सबसे बढ़कर, मुझे शर्म आ रही थी। लगभग तीन घंटे से मैं और मेरे साथी चूहे-बिल्ली का खेल खेल रहे थे, जिसमें हम ही चूहे बने हुए थे।

अब जब मेरी राइफल मेरे हाथों में थी, तो थकावट के बावजूद मैंने ठान लिया कि मैं शोलागाओं के साथ तुरंत वापस जाऊँगा और काले हाथी को फिर से ढूँढकर खेल जारी रखूँगा, लेकिन इस बार स्थिति उलट जाएगी। मैं बहुत जल्द इस घमंडी हाथी को दिखा दूँगा कि अब वही चूहा बनने वाला है।
मेरे अमेरिकी दोस्त हमारे साथ वापस आना चाहते थे और अगर हो सके तो हाथी की इस परेशानी की तस्वीरें लेना चाहते थे। लेकिन उनकी मौजूदगी एक अनावश्यक ज़िम्मेदारी होती, साथ ही इससे मेरी आवाजाही में भी बाधा आती। मैंने बड़े ही विनम्रता से, लेकिन दृढ़ता से उन्हें याद दिलाया कि वे फोटोग्राफर हैं, शिकारी नहीं। एक अच्छे खिलाड़ी होने के नाते, वे समझ गए और उन्हें बुरा नहीं लगा, हालांकि उनके चेहरे पर निराशा साफ झलक रही थी।
तेज़ चलते हुए, और कभी-कभी दौड़ते हुए, राचेन, दूसरा शोलागा और मैं चट्टान की ओर बढ़े। इस बार हम उस जगह को घेरने वाले पर्कि जैसे जंगल के इलाके से होते हुए साहसपूर्वक आगे बढ़े और एक घंटे के भीतर वहाँ पहुँच गए। वहाँ कोई हाथी नज़र नहीं आया। अभी चार बजे थे और हमारे पास हाथी को खोजने के लिए दिन के उजाले में दो घंटे से थोड़ा अधिक समय था, जो कहना आसान है, करना मुश्किल, क्योंकि उसके सामने पूरा जंगल फैला हुआ था। लेकिन मुझे याद आया कि मेरे साथ दो शोलागा थे। ये आदिवासी, जो पीढ़ियों से जंगलों में रहते आए हैं, दुनिया भर में सबसे कुशल ट्रैकर्स में से हैं, इसलिए हमारे लक्ष्य तक पहुँचने की अच्छी संभावना थी।
हम उस दिशा में बढ़े जिधर वह विशालकाय जानवर गायब हो गया था। जंगल सूखा था, और वह चर नहीं रहा था बल्कि सीधे नदी की ओर जा रहा था, इसलिए अपने भारी-भरकम शरीर के बावजूद, घनी झाड़ियों और लंबी घास से उसका गुजरना किसी अनाड़ी की नज़र में स्पष्ट नहीं होता। लेकिन राचेन और उसके साथी को उसे ढूंढने में कोई कठिनाई नहीं हुई। यह देखना दिलचस्प था कि कैसे उनकी पारखी नज़र ने घास के हर उस तने को पहचान लिया जो गुजरते हुए जानवर के कारण मुड़ गया था या टूट गया था, और हर उस पत्ते या टहनी को जो उन विशाल पैरों के नीचे कुचल गई थी।
इस निशान का पीछा करते हुए, हमें उस जगह तक पहुँचने में ज़्यादा समय नहीं लगा जहाँ काला हाथी नदी तक पहुँचा था। वहाँ सरकंडे जैसी लंबी घास उगी हुई थी और हम साफ़ देख सकते थे कि वह कैसे उसमें से रास्ता बनाते हुए पानी के किनारे तक पहुँचा था। राचेन घुटनों से थोड़ा ऊपर तक पानी में उतर गया और जिस जगह हाथी ने पानी पिया था, वहाँ से मुड़कर वह कुचले हुए सरकंडों और जलीय पौधों से बने निशानों पर नदी के विपरीत दिशा में चलने लगा, जबकि मैं और दूसरा शोलागा नदी के किनारे उसके समानांतर चलते रहे।
किसी कारणवश हाथी नदी पार नहीं कर पाया, बल्कि लगभग सौ गज पानी में चलने के बाद वापस उसी किनारे पर आ गया जहाँ हम खड़े थे। ज़ाहिर है उसने जी भरकर पानी पी लिया था, क्योंकि उसके थाली जैसे पदचिह्न, जो नदी के किनारे पर छपे हुए थे और अभी भी कीचड़ भरे पानी से धुंधले थे, थोड़ी दूरी के बाद छोटी नदी को छोड़कर वापस जंगल की ओर चले गए थे।
हम इस निशान का बारीकी से पीछा करते रहे, यह जानते हुए कि वह हाथी अब चर रहा होगा और अगर वह बहुत दूर अंदरूनी इलाके में नहीं चला गया है तो हम उसे जल्द ही सुन सकेंगे। गर्मी बहुत थी और हो सकता है वह दोबारा पानी पीने के लिए भी जाए। लेकिन ऐसा थोड़ा बाद में, सूर्यास्त के समय होगा, जब हाथी आमतौर पर पानी पीते हैं। हमारे पास एक घंटे से अधिक का समय था और हम उम्मीद कर सकते थे कि हमारा शिकार नदी से काफी दूर, अंदरूनी इलाके में चर रहा होगा।

जैसा हमने अनुमान लगाया था, रास्ता जंगल में मुड़ गया। हाथी को कोई जल्दी नहीं थी, क्योंकि वह बीच-बीच में छायादार पेड़ों के नीचे रुकता था और जाहिर तौर पर धूप से बचने के लिए आराम कर रहा था।
लगभग एक मील का रास्ता इसी तरह तय करने के बाद, हमें पहली बार एक शाखा के टूटने की स्पष्ट आवाज़ सुनाई दी। शाखा पर छाल की मोटी परत थी, क्योंकि टूटने की आवाज़ के बाद एक झनझनाहट की आवाज़ आई, जैसे हाथी पेड़ से लकड़ी को फाड़ रहा हो, और जब शाखा आसानी से नहीं टूटी तो वह छाल को खींचकर अलग कर रहा था। आवाज़ की तीव्रता और उसकी दिशा से, हमारा शिकार आसानी से दो फर्लांग दूर था।
अगर आप कभी किसी जंगली हाथी के पास जाना चाहें, तो सबसे ज़रूरी है हवा की दिशा का पता लगाना। ऐसा करने के बाद, आपको इस तरह से खड़ा होना चाहिए कि हवा हाथी से आपकी ओर बहे। अगर आप ऐसा नहीं करते और हवा की विपरीत दिशा में या आंशिक रूप से विपरीत दिशा में जाते हैं, तो हाथी की सूंघने की तीव्र शक्ति उसे आपके आने का पता लगा लेगी। तब दो में से एक बात होगी। एक सामान्य हाथी, और अक्सर दुष्ट हाथी भी, जब उसकी सहज प्रवृत्ति उसे चेतावनी देती है कि आप कोई साधारण राहगीर नहीं बल्कि दुश्मन हैं, तो वह चुपचाप वहां से गायब हो जाएगा, और जब आप उस जगह पहुंचेंगे जहां वह खड़ा था, तो आपको कुछ नहीं मिलेगा। या फिर, हाथी किसी चट्टान, पेड़ या बांस के झुंड के पीछे चुपचाप घात लगाकर आप पर हमला कर सकता है, जब तक आप उसके बहुत करीब न आ जाएं, तब तक वह चीखता हुआ आप पर झपटेगा और अपने रास्ते में आने वाली हर बाधा को कुचल देगा। यह दुष्ट हाथियों की पसंदीदा आदत है, खासकर उस हाथी की जिसने पहले ही कई लोगों को मार डाला हो और उस सबसे घृणित दो पैरों वाले प्राणी, मनुष्य की पूरी तरह से लाचारी को समझ लिया हो!
मैंने ज़मीन से मुट्ठी भर घास तोड़ी, उसे हाथ में ऊपर उठाया और फिर धीरे-धीरे टूटी हुई पत्तियों और तनों को छोड़ दिया, जिससे वे एक-एक करके ज़मीन पर गिर गईं। वे सभी दाएं से बाएं की ओर बहने लगीं। इसका मतलब था कि हवा दाईं ओर से बह रही थी और मैं बीच में था, न तो हवा के विपरीत दिशा में और न ही हवा के विपरीत दिशा में, क्योंकि मेरा शिकार सीधे हमारे आगे था। यह काफी नहीं था, इसलिए हम सब बाईं ओर मुड़े और एक कतार में, जितना हो सके चुपचाप, बीच में आने वाली झाड़ियों और पेड़ों के तनों के चारों ओर से आगे बढ़े। इस तरह हम दो फर्लांग से अधिक दूरी तय कर चुके थे कि तभी हमें आधी दाईं ओर से एक और चटकने की आवाज़ सुनाई दी। इस बार आवाज़ धीमी थी।
मैंने एक बार फिर हवा की दिशा जाँची, यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसने अपना रास्ता नहीं बदला है। फिर हम सब आगे की ओर मुड़े और चुपके से एक कतार में, उस दिशा से नब्बे डिग्री के कोण पर आगे बढ़े, जिस दिशा में हम अभी-अभी चल रहे थे। इस तरह हम लगभग 200 गज की दूरी तय कर चुके थे कि हाथी ने तीसरी शाखा तोड़ दी। इस बार आवाज़ ठीक दाईं ओर से आई। हम काफ़ी चक्कर लगा चुके थे और अब सीधे हवा की दिशा में थे। जब तक वह खुद किसी दूसरी जगह न चला जाए, तब तक उसे हमारी गंध नहीं मिल सकती थी। अब हमें बस यह सुनिश्चित करना था कि उसके पास जाते समय हम कोई शोर न करें, और फिर वह मेरी दया पर होगा।
हम एक कतार में आगे बढ़े, राचेन सबसे आगे, मैं बीच में और हनाथेट्टी का शोलागा मेरे पीछे। आखिरी आवाज़ों के आधार पर, हाथी कम से कम एक चौथाई मील या उससे अधिक दूर था। हमने वह दूरी धीरे-धीरे तय की, लेकिन आगे कोई आवाज नहीं

सुनाई दी। शायद उस शरारती हाथी ने पहले ही काफी शाखाएँ तोड़ ली थीं जिससे उसे हरे पत्तों का स्वादिष्ट भोजन मिल गया था और वह उन्हें खाने में व्यस्त था।
कुछ कदम आगे बढ़ने पर ज़मीन एक छोटी घाटी में उतर जाती थी, जो दो छोटी पहाड़ियों से बनी थी। हाथी स्पष्ट रूप से घाटी में था। लेकिन ऐसी जगहें हाथी जैसे तीव्र सूंघने की क्षमता वाले जानवर का पीछा करने के लिए अनुकूल नहीं होतीं, क्योंकि दोनों ओर की पहाड़ियाँ अक्सर हवा को रोक देती हैं, जिससे शांत हवा में मनुष्य की गंध, विशेषकर जब तीन मनुष्य एक साथ हों, हाथी तक पहुंच जाती है। ठीक यही हुआ, हाथी को हमारी आहट मिल गई। सहज रूप से उसे पता चल गया कि उसका दुश्मन पास आ रहा है और वह चुपके से खिसक गया।
जब हम उस जगह पहुँचे जहाँ वह चर रहा था, तो हमें टूटी हुई डालियाँ और उसका ताजा गोबर मिला, लेकिन हाथी का कोई निशान नहीं था। अब दोनों शोलागा एक साथ मिलकर उसके पदचिह्नों का पीछा करने लगे, और मैं उनके पीछे-पीछे सुरक्षा के लिए चल रहा था। यह आसान काम था। हाथी छोटी सी घाटी से होते हुए आगे बढ़ा, जो जल्द ही एक बड़े नाले के सूखे तल में जाकर खत्म हो गई। उसके बड़े-बड़े पदचिह्न, जो सूखी मिट्टी में साफ दिखाई दे रहे थे, यह दर्शाते थे कि वह नाले की ओर मुड़ गया था, जो स्पष्ट रूप से उस धारा की ओर जाता था जहाँ से हम अभी-अभी आए थे, और जो अब एक मील से भी अधिक दूर थी। हम जानते थे कि अगर वह धारा तक पहुँच गया, तो वह उसे पार करके शायद दूसरी तरफ भाग जाएगा। शाम हो चुकी थी और दिन का उजाला मुश्किल से एक घंटा ही बचा था। हमारे पास एकमात्र रास्ता यही बचा था कि हम सावधानी को दरकिनार करके उसका पीछा करें और बहुत देर होने से पहले उस पर गोली चला दें। इसलिए हम नाले की ओर दौड़ने लगे।
निस्संदेह, हमारी आवाज़ सुनकर और पूरी तरह से घबराकर उस दुष्ट हाथी ने भी अपनी गति बढ़ा दी। लगभग आधा मील चलने के बाद मैं बुरी तरह थक गया था, हालांकि मेरे साथ मौजूद दोनों जंगली लोगों पर थकान का कोई निशान नहीं दिख रहा था। नाला मुड़ा और फिर सीधा हो गया। मुझसे काफी आगे, पूरी ताकत से लड़खड़ाता हुआ, मैं उस काले दुष्ट हाथी को—या यूँ कहें कि उसके पिछले हिस्से को—नदी की ओर जाते हुए देख सका। मैं गोली नहीं चलाना चाहता था, क्योंकि मैं ज़्यादा से ज़्यादा उसे पीछे से घायल कर सकता था, और मुझे किसी भी जानवर को, यहाँ तक कि एक दुष्ट हाथी को भी, जानबूझकर घायल करना पसंद नहीं है। इसलिए, हाँफते-हाँफते और बुरी तरह साँस फूलते हुए, मैं जितना हो सका, उसके पीछे भागा। अगले मोड़ पर हाथी गायब हो गया। कुछ देर बाद हम उसी मोड़ पर पहुँचे, उसे पार किया और कुछ सौ गज आगे नदी दिखाई दी। लेकिन नदी से ठीक पहले हाथी था, या यूँ कहें कि उसका आधा हिस्सा, क्योंकि उसकी पीठ अभी भी हमारी ओर थी, जबकि उसका शरीर बिना किसी प्रगति के इधर-उधर मुड़ता-घुमड़ता रहा।
हम सब अचंभित हो गए और सोचने लगे कि आखिर उसे क्या रोक रहा है, इसलिए हमने अपनी रफ्तार बढ़ा दी, या यूं कहें कि मेरे साथियों ने। मेरी बात करें तो, मैं तो इतनी तेजी से दौड़ ही नहीं पाता, चाहे हाथी मेरे पीछे ही क्यों न होता! खैर, आखिरकार मैं उनके बराबर पहुँच गया और देखा कि हाथी एक दलदल में बुरी तरह फँस गया था जो उसके पेट तक पहुँच गया था। इसका कारण सीधा-सा था। नाले और नदी के मिलने की जगह दलदल बन गई थी, क्योंकि नाले की नरम रेत नदी के पानी से पूरी तरह भीग गई थी। डर के मारे भागता हुआ हाथी सीधे उसी दलदल में गिर गया था।
दक्षिण भारत में दलदली भूमि, अपने सही अर्थों में, शायद ही कहीं पाई जाती है, हालांकि कुछ स्थानों पर इससे मिलती-जुलती परिस्थितियाँ अवश्य देखने को मिलती

हैं। उदाहरण के लिए, सलीम जिले के अंचटी गांव के ऊपर, सीक्रेट नदी के ऊपरी इलाकों में एक ऐसी जगह है जहाँ नदी के लगभग सूख जाने पर उसे पार करना बेहद खतरनाक होता है। मुझे इसका खामियाजा भुगतना पड़ा है, क्योंकि एक बार मैंने नदी पार करने की कोशिश की थी और अचानक खुद को कमर तक कीचड़ में डूबा हुआ पाया था। दो वन रक्षकों की मदद के बिना, मुझे लगता है कि मैं अनिश्चित काल तक वहीं फंसा रहता या शायद डूब ही जाता। मुझे आज भी अच्छी तरह याद है कि मैंने अपनी पूरी ताकत से संघर्ष किया, लेकिन अपने पैरों को उस चिपचिपे कीचड़ से एक इंच भी बाहर नहीं निकाल पाया।
हमारे सामने बुरी तरह छटपटा रहे हाथी के लिए हालात बेहद बदतर थे। उसका विशाल शरीर और वज़न, साथ ही उसकी बेताब कोशिशें, हर पल हालात को और भी बदतर बना रही थीं। धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके, वह हमारी आँखों के सामने कीचड़ में धंसता जा रहा था। अपनी सूंड से वह अपने सामने कीचड़ को दाएं-बाएं पटक रहा था, मानो खुद को बाहर निकलने का कोई रास्ता ढूंढ रहा हो। वह दहशत से चीख रहा था, उसकी छोटी-छोटी आँखें डर से चौड़ी हो गई थीं, क्योंकि उसकी अंतरात्मा उसे बता रही थी कि उसका अंत निश्चित है। और हर पल, इंच-इंच करके, वह और नीचे धंसता जा रहा था, जबकि उसकी चीखें, जो पहले डर से भरी थीं, अब दया और गुहार में बदल गई थीं।
हालांकि वह एक हत्यारा था, उसकी दयनीय हालत देखकर हम तीनों को गहरा दुख हुआ। मानो कल की ही बात हो, मुझे याद है जब मैं उस दिन सीक्रेट नदी की गीली रेत में धंस गया था। उस भयानक हालत में, जब वह अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रहा था, उसे गोली मारना एक कायर और हत्यारे का काम लग रहा था। मेरे मन में उसे बचाने की एक अजीब और प्रबल इच्छा जाग उठी।
लेकिन हम कुछ नहीं कर सकते थे। आखिर वह एक जंगली हाथी था और उसकी सूंड के पास आना ही उसकी निश्चित मृत्यु थी। देखते-देखते यह दृश्य और भी भयावह होता जा रहा था। बेचारा जानवर अब सचमुच गीली रेत में गर्दन तक डूबा हुआ था और उसकी पीठ लगभग रेत की सतह के बराबर थी। दृश्य को और भी भयावह बनाने के लिए, अंधेरा तेजी से छा रहा था। बेचारे जानवर के लिए बचना नामुमकिन था। या तो वह जल्द ही रेत में डूबकर दम घुटकर मर जाता, जो वास्तव में कम बुरी नियति थी, या अगर आखिरी क्षणों में उसके पैर जमीन पर पड़ भी जाते, तो वह भूख से मरते-मरते बचता। मैं उसे बचा नहीं सकता था, लेकिन मैं उसके कष्टों का अंत जरूर कर सकता था। और मुझे यह तुरंत करना होगा, क्योंकि जल्द ही इतना अंधेरा हो जाएगा कि कुछ दिखाई नहीं देगा।
एक ऐसा घातक निशाना होता है, जिसे सही ढंग से लगाने पर विशालकाय हाथी भी अपनी जगह पर ही गिर जाता है, हालांकि ऐसा निशाना लगाना बहुत मुश्किल होता है: कान के पीछे का निशाना, जहां गोली माथे की मोटी हड्डियों से सुरक्षित न रहते हुए सीधे मस्तिष्क में प्रवेश करती है। घुटने टेककर, मैंने बाएँ कान के पीछे सावधानीपूर्वक निशाना साधा, उसके हिलना बंद होने का इंतजार किया, अपनी सांस रोकी और धीरे से ट्रिगर दबा दिया।
धमाके की आवाज़ अभी पूरी तरह शांत भी नहीं हुई थी कि हाथी बुखार से पीड़ित की तरह कांप उठा। उसकी सूंड बेजान सी होकर कीचड़ पर गिरी, हालांकि उसका सिर अभी भी किसी विशालकाय इल्ली की तरह पत्ती को टटोलते हुए सवालिया निगाहों से कुछ खोज रहा था। मैं कुछ कदम दाहिनी ओर भागा, फिर से घुटनों के बल बैठा और दोबारा गोली चलाई, इस बार दाहिने कान के पीछे।

हम तीनों ने राहत की सांस ली। कम से कम बेचारे जानवर को अब और कष्ट नहीं सहना पड़ा। वह मर चुका था।
हम उस भयानक जगह से निकल आए और अंधेरे में टटोलते हुए वापस होनाथेट्टी पहुंचे। लेकिन शोलागा जनजाति के लोग, जिनका वह गांव था, उन्होंने हमें सही-सही रास्ता दिखाया। आखिरकार हम वापस आ गए और मैंने अपने अमेरिकी दोस्त को अपने उस भयानक अनुभव के बारे में बताया। लेकिन उसने खुद न देखा था, इसलिए उसने कहा कि काश वह वहां होता और तस्वीरें ले पाता, और वह अगली सुबह उस जगह पर जाकर देखना चाहेगा कि क्या कोई तस्वीर ली जा सकती है।
यह जानने की उत्सुकता से भरा हुआ कि क्या उन दुष्ट रेत ने आखिरकार अपना शिकार बना लिया है या नहीं, मैं अगले दिन उसके साथ चला गया। हम उस जगह पर पहुंचे, लेकिन हमें केवल शांत, बिना हिले-डुले गीली रेत की सतह दिखाई दी, जो सुबह की पहली किरण में मासूमियत से चमक रही थी। हाथी पूरी तरह गायब हो चुका था, और भीगी हुई रेत अपने गहरे रहस्य को छिपाए बैठी थी।

पाँच

जंगल के दिन और रात

इन एकांत स्थानों में, जहाँ मुख्य मार्ग से हटकर कई साल बिताए हैं, अनेक छोटी-छोटी घटनाएँ घटित हुई हैं। ये घटनाएँ अपने आप में कोई रोमांच तो नहीं हैं, लेकिन स्मृतियों के लंबे सफ़र में मील के पत्थर ज़रूर हैं, जो अक्सर मेरे शांत क्षणों में मुझे याद आ जाती हैं। मैं उनमें से कुछ का वर्णन करना चाहूँगा, जिनमें से कुछ दुखद हैं, कुछ हास्यपूर्ण, और एक घटना तो ऐसी भी है जिसमें मैंने बेहद शर्मनाक व्यवहार किया था।

यह घटना कई साल पहले घटी थी, लेकिन उस घटना की याद आज भी मुझे सताती है और मैं उसे भुला नहीं पा रहा हूँ। कहते हैं कि पापों का पश्चाताप करने से अंतरात्मा को शांति मिलती है। इसलिए मैं अब यही करने जा रहा हूँ।

लेकिन हर बुरे काम करने वाले को अपना बचाव करने की अनुमति दी जानी चाहिए, और मेरा बचाव एक प्रस्तावना में निहित है, एक घटना जो पहले घटी थी, जिसका परिणाम मेरी स्मृति में बहुत मजबूती से बसा हुआ था और दूसरी घटना घटने पर इसने मुझे बहुत प्रभावित किया।

यह पहली घटना लगभग पच्चीस साल पहले घटी थी। मेरे दोस्त देवा सुंदरम और मैं अपनी फोर्ड कार में बैंगलोर से लगभग अट्ठाईस मील दक्षिण में स्थित गुम्मलापुर नामक स्थान पर पैंथर के बारे में खबर लेने गए थे। खबर शब्द से घबराइए मत; यह हिंदुस्तानी भाषा में समाचार या जानकारी के लिए इस्तेमाल होने वाला एक साधारण शब्द है।

गुम्मलापुर मद्रास राज्य के सलेम जिले में स्थित है और मैसूर राज्य की सीमा से लगभग तीन मील दूर है। गुम्मलापुर से दो मील पश्चिम में कई ऊबड़-खाबड़, खंडित पहाड़ियाँ हैं, जिनकी निचली ढलानें घनी झाड़ियों से ढकी हैं और ऊपरी भाग में ग्रेनाइट के बड़े-बड़े पत्थर और छोटी-छोटी गुफाएँ हैं। इन पहाड़ियों के बीच से एक संकरी धारा बहती है जिसका नाम थोड़ा कठिन है: मुथियालम्मा होले। इसमें केवल बरसाती मौसम में ही पानी रहता है, कहीं-कहीं यह पथरीली है, तो कहीं-कहीं यह अद्भुत रूप से मुलायम रेत से भरी है। दोनों किनारों पर जंगल घना हो जाता है और पेड़ ऊँचे और हरे-भरे होते हैं।

जब मेरे पिता युवा थे और मैं भी बहुत छोटा था, तब इस जंगल में बाघ, हाथी, बाइसन और पैंथर के अलावा, इस क्षेत्र में पाए जाने वाले सभी सामान्य जंगली जानवर भी

मौजूद थे। लेकिन उसके बाद बाघ और बाइसन गायब हो गए, जिन्हें पास के बेंगलोर से आने वाले कई शिकारियों ने मार गिराया। सरकार द्वारा संरक्षित हाथी अभी भी मौजूद हैं, लेकिन उनकी संख्या कम हो गई है, और वे केवल मानसून के महीनों में ही दिखाई देते हैं जब वे कावेरी नदी से उत्तर की ओर प्रस्थान करते हैं। पैंथर कई कारणों से अभी भी मौजूद हैं। पहला, वे पहाड़ियों वाले क्षेत्रों में आम हैं। दूसरा, गुम्मलपुर से जंगल में चरने के लिए लाए गए घरेलू मवेशियों के कई झुंडों में उनके लिए भरपूर भोजन उपलब्ध है। तीसरा, लोग पैंथर का शिकार करने में उतने इच्छुक नहीं हैं जितने कि वे बड़े जंगली जानवरों का शिकार करने में होते हैं।
देवा सुंदरम और मैं वहां स्थानीय चरवाहों से यह जानने के लिए गए थे कि क्या हाल ही में उनके कई जानवर पैंथरों के हमले में मारे गए हैं, और हम उस रात के खाने के लिए कुछ शिकार, या जंगली भेड़ या सूअर ढूंढने की उम्मीद में झाड़ीदार जंगल में सुबह की सैर के लिए भी आए थे।
मुझे अब याद नहीं कि चरवाहों से हमें क्या जानकारी मिली थी, लेकिन हमने नदी पार की और झाड़ियों के बीच से एक ढलान पर चढ़ना शुरू किया जो हमें जल्द ही एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर ले आया। इस ऊँचाई से हमने नीचे फैले जंगल को देखा और ऊपर की पहाड़ियों की पेड़ों से ढकी ढलानों का जायजा लिया।
फिर हमने कुछ देखा, शायद करीब एक मील दूर और मैसूर राज्य की सीमा से सटे जंगल के पास। गिद्ध आसमान में चक्कर लगा रहे थे, बहुत सारे। बीच-बीच में कोई एक नीचे उतरता, अपने पंख फैलाकर पहाड़ियों की गोद में बसी एक छोटी सी घाटी में गायब हो जाता। हवा के उन फैले हुए पंखों से टकराने की तेज़, खड़खड़ाहट की आवाज़ इतनी दूर थी कि सुनाई नहीं दे रही थी। इसका केवल एक ही कारण हो सकता था। घाटी में कोई मृत वस्तु पड़ी थी। गिद्धों ने उसे ढूंढ लिया था और दावत के लिए जल्दी से वहाँ पहुंच रहे थे।
क्या यह किसी पैंथर का शिकार हो सकता है? शायद उन कई मवेशियों में से एक, जिन्हें झाड़ियों में चराने के लिए ले जाया गया था, और जिनके मालिक को अभी तक उनकी कमी महसूस नहीं हुई थी।
देव और मैं एकमत होकर उस जगह की ओर चल पड़े। उसे ढूँढना मुश्किल नहीं था। ज़मीन पर आपस में जूझते और धक्का-मुक्की करते गिद्धों का झुंड फुफकारता और कभी-कभी चीखता हुआ हमें सीधे शव तक ले गया। लेकिन हमारे लिए एक बहुत बड़ा आश्चर्य इंतज़ार कर रहा था, क्योंकि वे विशाल पक्षी भारी-भारी पंख फड़फड़ाते हुए बड़ी मुश्किल से हवा में उड़ने लगे। बेशक, वहाँ एक शव पड़ा था, लेकिन वह किसी बैल या गाय का शव नहीं था जिसे किसी तेंदुआ ने मार डाला हो। वह एक मानव शव था, और जैसे ही हम पास पहुंचे, हमने देखा कि वह एक महिला का शव था।
ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी हत्या कर दी गई थी और फिर उसके हाथों और पैरों को बांस के खंभे से बांध दिया गया था। रस्सी के पारंपरिक तरीके के बजाय जंगली लताओं का इस्तेमाल किया गया था। फिर उसे जंगल में, एक बड़े चंदन के पेड़ के तने के पास फेंक दिया गया था। गिद्धों ने जाहिर तौर पर कुछ समय तक उसका मांस नोच डाला था, क्योंकि उन्होंने शरीर से मांस के टुकड़े नोच डाले थे। आंखें निकाल ली गई थीं, नाक गायब थी, और गालों और गले की त्वचा में छेद कर दिए गए थे, जिससे नीचे की हड्डियां दिखाई दे रही थीं। लेकिन खोपड़ी का अधिकांश भाग बचा हुआ था, जिस पर लंबे काले बाल अभी भी चिपके हुए थे।
शव नग्न अवस्था में था, पक्षियों ने पतली साड़ी और जैकेट को फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया था। आंतें बाहर निकाल कर खा ली गई थीं, जिससे पेट में एक गहरा गड्ढा

दिखाई दे रहा था, और बाँहों, जाँघों और टाँगों का भी काफ़ी मांस खा लिया गया था, जिससे केवल सफ़ेद हड्डियाँ ही दिखाई दे रही थीं। अगर हम एक घंटा या उससे थोड़ा ज़्यादा देर से आते, तो हमें हड्डियों के सिवा कुछ नहीं मिलता। गिद्ध उन्हें भी खा जाते।
देव और मैं शव पर झुककर यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि महिला की मृत्यु कैसे हुई। लेकिन कुछ ही मिनटों में हमने यह प्रयास छोड़ दिया। गिद्ध बहुत देर से अपना काम कर रहे थे और उन्होंने हत्या के तरीके के सभी सुरागों को लगभग पूरी तरह नष्ट कर दिया था; यानी, अगर हत्यारे या हत्यारों ने कोई सुराग छोड़ा भी हो तो।
लेकिन एक बात तो निश्चित थी। लूटपाट मकसद नहीं था। भारी चांदी की पायलें अभी भी टखनों की हड्डियों में थीं, जहाँ से मांस गल चुका था; सोने की प्रतीत होने वाली एक अंगूठी अभी भी दाहिने हाथ की एक उंगली में थी; और कानों में कीमती बालियाँ थीं। शायद उसने नाक में भी कोई आभूषण पहना था। लेकिन वह अब गायब था—नाक के साथ! उसके दोनों हाथों में कोहनियों तक कई रंग-बिरंगी और सुंदर डिज़ाइन की कांच की चूड़ियाँ थीं।
शांत वातावरण में सड़न और दुर्गंध का घनापन छाया हुआ था और देव, जो मूल रूप से एक दफ्तर में काम करने वाला व्यक्ति था और ऐसी गंधों का आदी नहीं था, उल्टी करने की कगार पर था। उसने अपने नाक और मुंह पर रुमाल रखा और पीछे हट गया।
हमारी सरसरी जाँच का कोई फ़ायदा नहीं हुआ। ज़ाहिर है, उस बदकिस्मत औरत की हत्या करने के बाद, अपराधियों ने लाश को रात में इस सुनसान जगह पर लाया था, बजाय इसके कि वे कब्र खोदने और उसे दफ़नाने की परेशानी और खतरे का सामना करें। वे अच्छी तरह जानते थे कि सुबह होते ही गिद्ध अपराध के सारे सबूत मिटा देंगे। अगर एक-दो हड्डियाँ भी बच गईं, तो सियार और अगली रात उस रास्ते से गुज़रने वाला कोई भी लकड़बग्घा उन्हें भी खा जाएगा। सब कुछ योजना के मुताबिक हो हुआ था, सिवाय उस सबसे दुर्भाग्यपूर्ण और अप्रत्याशित घटना के कि उसी दिन, देव और मैंने जंगल में घूमने का फैसला किया था।
अब हम क्या करते? ज़ाहिर है, जनहितैषी होने के नाते, हमने पुलिस को सूचना दी। यही सोचकर हम गुम्मलापुर वापस जाने के लिए निकल पड़े। पहली पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर मैंने घाटी का पता याद कर लिया, ताकि ज़रूरत पड़ने पर उसे दोबारा ढूंढ सकूँ। यह करने के बाद हम तेज़ी से आगे बढ़े। गाँव पहुँचते ही पता चला कि वहाँ का इकलौता पुलिसकर्मी बीमार पड़ गया था और उसे होसुर कस्बे के अस्पताल ले जाया गया था।
जैसा कि मैंने आपको बताया, यह इलाका मद्रास राज्य के सलेम जिले में पड़ता था। होसुर शहर इसका तत्काल मुख्यालय था, लेकिन यह हमारे रास्ते से काफ़ी दूर था। देव और मुझे उसी दोपहर अपने-अपने काम पर वापस जाना था। इसलिए हमने गुम्मलापुर गाँव के पटेल या मुखिया को अपनी खोज और उसके स्थान के बारे में सूचित करने का फैसला किया, फिर बैंगलोर लौटकर होसुर पुलिस स्टेशन को डाक से एक लिखित रिपोर्ट भेजने का निर्णय लिया। चूंकि बैंगलोर स्वयं मैसूर राज्य में है, इसलिए बैंगलोर पुलिस को भेजी गई ऐसी रिपोर्ट मद्रास पुलिस को भेजने के निर्देश के साथ वापस कर दी जाएगी।
तो हमने पटेल को बताया और अगली सुबह बैंगलोर से एक रिपोर्ट भेजी। दो दिन बाद असल में घटनाएँ घटने लगीं। मेरे घर पर एक पुलिस वैन आई जिसमें तीन अलग-अलग तरह के पुलिसकर्मी थे, सभी ने अलग-अलग वर्दी पहनी हुई थी। मद्रास राज्य के होसुर के पुलिसकर्मी थे, जिन्होंने ऊँची लाल पगड़ी पहनी हुई थी। बैंगलोर छावनी के पुलिसकर्मी थे, जो उस समय ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण में एक ब्रिटिश-प्रशासित

क्षेत्र था, उन्होंने नीला और सफ़ेद पगड़ी पहनी हुई थी। और मैसूर राज्य के पुलिसकर्मी थे जिन्होंने नीली पगड़ी पहनी हुई थी जिस पर लाल और पीले रंग की पट्टियाँ लगी हुई थीं।
फिर सवालों की झड़ी लग गई। क्या मैं मिस्टर एंडरसन था? मेरा पूरा नाम, पेशा और आमदनी क्या थी? मिस्टर देवा सुंदरम कहाँ थे? उनका पूरा नाम, पेशा और आमदनी क्या थी? हम गुम्मलापुर क्यों गए थे? हमें मृत महिला कैसे मिली? क्या वह कोई करीबी दोस्त थी या महज़ एक आम जान-पहचान वाली? हमें उस खास जगह पर क्यों जाना चाहिए था? जब हमने उसे पाया तो क्या वह जीवित थी? क्या वह मर चुकी थी? उसकी मौत कैसे हुई? क्या मुझे यकीन था कि हममें से कोई उसे पहले नहीं जानता था? उसका नाम क्या था? वह कहाँ से आई थी? क्या वह एक युवती थी? अब एक बहुत ही महत्वपूर्ण सवाल आया जिसका जवाब मुझे बहुत सावधानी से देना था: क्या उसे गोली के घाव थे? हमने गुम्मलापुर के पुलिसवाले को मामले की सूचना क्यों नहीं दी? हम तुरंत होसूर जाकर मामले की सूचना देने में अपनी ड्यूटी निभाने में क्यों नाकाम रहे? हम उस दिन और पिछले दिन कहाँ थे? क्या हम अक्सर गुम्मलापुर जाते थे?
सवालों की बौछार को रोकने में मुझे कुछ समय लगा। मैंने बताया कि देव और मैंने अपने संयुक्त बयान में सभी प्रासंगिक तथ्यों को स्पष्ट रूप से लिख दिया था। मैंने उन तथ्यों को फिर से दोहराया।
सवाल-जवाब का सिलसिला जारी रहा। हमें कैसे पता चला कि वह महिला सचमुच मर चुकी है? क्या वह शायद जीवित नहीं थी; शायद बेहोश थी? क्या हमने प्राथमिक उपचार देने की कोशिश की थी? हत्यारे (हमारे हिसाब से, और अगर ऐसा कोई था भी) शव को खंभे से बांधकर जंगल में इतनी दूर तक क्यों ले गए? क्या उसे दफनाना ज़्यादा आसान नहीं होता?
मुझे गुस्सा आने लगा। मैंने स्पष्ट किया कि मैं कोई जासूस नहीं हूँ और मैंने एक जनहितैषी नागरिक के रूप में अपनी रिपोर्ट दर्ज कराई है। मैंने उनसे कहा कि हमारे लिए चुप रहना बहुत आसान होता। लेकिन सब व्यर्थ था। फिर एक आदेश आया, जो अनुरोध के रूप में छिपा हुआ था। क्या मैं कृपया उन्हें देवा सुंदरम के घर ले चलूँ, जिसके बाद हम दोनों को होसूर पुलिस स्टेशन जाना होगा।
अब मुझे सचमुच गुस्सा आ गया। मैंने तीनों पुलिसवालों से कहा कि मैं उन्हें देवा सुंदरम के घर तक जरूर ले जाऊँगा, लेकिन उसके बाद मैं होसूर नहीं जाऊँगा जब तक वे मुझे गिरफ्तार न कर लें, जिसके लिए उन्हें वारंट की आवश्यकता होगी।
हमने फिलहाल समझौता करते हुए देव के घर जाने का फैसला किया, जहाँ सब कुछ फिर से शुरू हो गया। पूछताछ के दौरान हमें अचानक, और बड़े आश्चर्य के साथ पता चला कि होसूर पुलिस अभी तक शव की तलाश में घटनास्थल पर नहीं गई थी। हमने उन्हें तुरंत ऐसा करने का सुझाव दिया और उन्हें स्पष्ट निर्देश दिए।
तीनों प्रकार के कानून प्रतिनिधियों के बीच इस बात को लेकर काफी झिझक और विचार-विमर्श हुआ कि हम दोनों के साथ क्या किया जाना चाहिए, या यूं कहें कि क्या किया जा सकता है। होसूर से आए दल हमें अपने साथ वापस ले जाना चाहते थे, लेकिन बैंगलोर छावनी के दल का मानना था कि वारंट के बिना ऐसा संभव नहीं है। मैसूर राज्य के पुलिसकर्मी तटस्थ रहे और किसी भी स्थिति में सहायता के लिए तैयार थे। अंत में, दल ने हम दोनों को आगे की पूछताछ के लिए उपलब्ध रहने की चेतावनी देकर प्रस्थान किया।
दो दिन बाद वे फिर लौटे। उन्हें कोई शव नहीं मिला! हड्डियाँ भी नहीं! यहाँ तक कि वह बाँस का खंभा भी नहीं मिला जिससे हमने कहा था कि शव बंधा हुआ था। क्या सचमुच वहाँ कोई शव था भी?

नतीजा यह हुआ कि मैंने उनसे कहा कि मैं उन्हें उस जगह ले जाऊँगा। देव व्यस्त था और नहीं आ सका। मैं पुलिस वैन में बैठकर गुम्मलपुर गया। वहाँ से मैं दल के साथ उसी रास्ते पर चल पड़ा जिस रास्ते से देव और मैं उस सुबह लौटे थे। हम आखिरी पहाड़ी पर चढ़े और वहाँ से मैंने घाटी का नज़ारा देखा। आखिरकार हम उस विशाल चंदन के पेड़ तक पहुँचे जिसके नीचे हमें मृत महिला मिली थी।
वहाँ कोई शव नहीं था; न हड्डियाँ, न फटी हुई साड़ी का एक टुकड़ा, और सबसे बढ़कर, न ही कोई बांस का खंभा। कुछ भी नहीं! हर तरह के पुलिसकर्मी मुझे संदेह भरी निगाहों से घूर रहे थे। क्या यह कोई मज़ाक था? क्या मैं उन्हें बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहा था?
मैं ठीक उसी जगह पर गया जहाँ शव पड़ा था और उसकी अच्छी तरह तलाशी ली। वहाँ मुझे टूटी हुई चूड़ी का आधा टुकड़ा मिला और थोड़ी देर में लंबे, काले बालों के कुछ गुच्छे मिले—निस्संदेह ये किसी महिला के बाल थे। मैंने पुलिसकर्मियों को ये चीजें दिखाकर अपनी रिपोर्ट की सत्यता साबित की। मैंने सुझाव दिया कि हत्यारे गुम्मलापुर में हैं और उन्हें हमारी खोज के बारे में तब पता चला होगा जब देव और मैं उस सुबह लौटते समय गाँव के पुलिसकर्मी के बारे में पूछताछ कर रहे थे। उन्होंने पटेल को दी गई हमारी रिपोर्ट के बारे में भी सुना होगा। जाहिर है, वे वापस गए और जाँच में बाधा डालने के लिए शव को वहाँ से हटा दिया।
मेरी थ्योरी पर पुलिसकर्मियों की प्रतिक्रिया पहले से कहीं ज़्यादा अप्रत्याशित थी। वे जानना चाहते थे कि मैं वापस कैसे आ पाया और उन्हें ठीक उसी जगह तक कैसे ले गया। वे यह भी जानना चाहते थे कि मैंने टूटी हुई चूड़ी का टुकड़ा और बालों के गुच्छे ढूंढने के लिए इतनी खोजबीन क्यों की।
ये सवाल सुनकर मैंने गहरी सांस ली और बहुत धीरे-धीरे दस तक गिना। फिर मैंने उनसे कहा कि मैं अपने वकील के ज़रिए जवाब दूंगा। लेकिन इससे उनका शक पहले से कहीं ज़्यादा बढ़ गया। संक्षेप में कहें तो, देव और मुझे हत्यारा मानना बंद करने में उच्च अधिकारियों के साथ करीब तीन महीने का पत्राचार और होसुर पुलिस स्टेशन के दो चक्कर लगे। मद्रास पुलिस ने जो हल निकाला, वह वाकई बड़ी चालाकी भरा था। उन्होंने कहा कि हत्या मैसूर राज्य के अधिकार क्षेत्र में हुई होगी और शव को सीमा पार लाकर मद्रास के जंगलों में फेंक दिया गया होगा। जब शव मिलने की खबर फैली, तो अपराधी उसे वापस ले गए।
मैसूर पुलिस ने इस बात को सिरे से खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि सीमा के उस पार किसी की हत्या नहीं हुई थी और मद्रास वाली बात सच्चाई को छिपाने के लिए गढ़ी गई थी। अपराध चाहे कहीं भी हुआ हो और जिसने भी किया हो, सच्चाई यही है कि न तो पीड़ित और न ही अपराधी कभी पकड़े गए।
जंगल में मिली किसी चीज़ की रिपोर्ट करने पर मुझे सरकारी दण्ड का सामना करना पड़ा, यह दूसरी बार था। इससे पहले मुझे एक अविकसित हाथी मृत मिला था। उसे बंदूक की गोली से कान के पीछे मारा गया था। घाव साफ दिखाई दे रहा था। मैंने स्थानीय वन विभाग को इसकी सूचना दी थी, साथ ही मृत जानवर की एक तस्वीर भी भेजी थी जिसमें घाव दिख रहा था। उस रिपोर्ट के कारण मेरा शिकार लाइसेंस लगभग रद्द हो गया था, क्योंकि मुझ पर हाथी को खुद मारने का संदेह था। बाद में कहा गया कि मैंने अपनी गलती छिपाने के लिए रिपोर्ट की थी। उस मामले में भी काफी पत्राचार हुआ था। मुझे एक उच्च अधिकारी से मिलना पड़ा और उन्हें अपनी कहानी बतानी पड़ी। मुझे आज भी लगता है कि उन्होंने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया। लेकिन चूंकि स्थानीय वन रक्षकों ने मृत हाथी के शव पर सूखी लकड़ी रखकर उसे जला दिया था, क्योंकि उस जगह से लगभग एक मील तक दुर्गंध फैल गई थी,

इसलिए मेरा अपराध साबित नहीं हो सका। इसलिए मुझे संदेह का लाभ देते हुए मेरा शिकार लाइसेंस बरकरार रखा गया, लेकिन मुझ पर कड़ी आशंका बनी रही।
इन दो घटनाओं का 'प्रस्तावना' के रूप में वर्णन करने के बाद, अब मैं आपको उस मुख्य घटना के बारे में बताऊंगा जो लगभग पाँच वर्ष पूर्व घटी थी, और जिसमें मुझे लगता है कि मैंने बेहद शर्मनाक व्यवहार किया था। हम चार लोग बिलिगिरिरंगन पर्वत पर स्थित दो बड़े काफ़ी बागानों के प्रबंधक, अल्फ़ी मॉरिसन नामक एक बागान मालिक मित्र से मिलकर लौट रहे थे। हमारे साथ हमारी कार का मालिक, मेरे बेटे का दोस्त रुस्तम दुधवाला, एक अन्य मित्र विली वोलन, मेरा बेटा डोनाल्ड और मैं थे। हमने अल्फ़ी मॉरिसन के साथ रात का भोजन किया, उसके बाद कॉफ़ी और नाश्ता किया और उनकी बेहतरीन व्हिस्की का थोड़ा सा सेवन किया, जिसके बाद हम कुछ घंटों तक बातें करते रहे। आधी रात के काफ़ी बाद हम उनके बागान से निकले, और पुंजुर नामक स्थान पर पहुँचने से पहले हमें बीस मील से अधिक घने जंगल को पार करना पड़ा। यह एक संकरी, घुमावदार सड़क थी, जो कई जगहों पर खड़ी ढलान वाली थी, जिसके दोनों ओर बांस का घना जंगल था, जो मुख्य रूप से हाथी, बाइसन और सांभर का निवास स्थान था, और कभी-कभार बाघ या अन्य छोटे मांसाहारी जानवर भी दिख जाते थे। रुस्तम गाड़ी चला रहा था और मैं उसके बगल में बैठा था। बाकी दोनों पीछे थे।
हम पुंजुर के लगभग आधे रास्ते पर थे। जंगल बेहद घना और सघन था। समय रात के 1:15 बज रहे थे। अचानक, जैसे ही रुस्तम ने सड़क के एक तीखे मोड़ पर गाड़ी मोड़ी, हमने देखा कि एक इंसान सड़क पर पड़ा हुआ है, जो कार की तेज़ रोशनी में साफ़ दिखाई दे रहा था। उसने उस आदमी को कुचलने से बचने के लिए जोर से ब्रेक लगाया, और हम सब यह देखने के लिए बाहर निकले कि मामला क्या है।
हमने पाया कि सड़क के बीचोंबीच पड़ी हुई आकृति किसी पुरुष की नहीं बल्कि एक स्त्री की थी; वास्तव में, वह लगभग अठारह वर्ष की एक लड़की थी। उसकी लाल और काली साड़ी की घटिया गुणवत्ता से स्पष्ट था कि वह गरीब थी। उसकी साड़ी और जैकेट दोनों जगह से फटी हुई थीं और साड़ी पर काफ़ी खून लगा हुआ था। कार की रोशनी में यह दिखाई नहीं दे रहा था क्योंकि, जैसा कि मैंने आपको बताया है, वह काली और लाल साड़ी थी और कृत्रिम रोशनी में दूर से इन दोनों रंगों में खून दिखाई नहीं देता। करीब से देखने पर पता चला कि लड़की के साथ बेरहमी से छेड़छाड़ और बलात्कार किया गया था। वह पूरी तरह बेहोश थी, शायद किसी चोट या आघात के कारण। सांस लेने पर उसकी नंगी छाती बहुत कम हिल रही थी और उसकी नब्ज बहुत कमजोर थी।
अब क्या किया जाए? हम चारों की सहज प्रतिक्रिया यही थी कि उसे कार में बिठाकर बाकी दस मील का सफर तय करके पुंजुर ले जाएं और वहां पुलिस को सूचना दें, फिर उसे कुछ मील दूर चामराज नगर के अस्पताल ले जाएं। लेकिन दूसरे विचार मन में उठने लगे। हमारे सामने एक युवती पड़ी थी। उसके साथ बेरहमी से बलात्कार किया गया था। कार में हम चारों थे और हम सब पुरुष थे! अगर हम उस लड़की को उस हालत में और रात के समय सहित मौजूद सबूतों के साथ पुंजुर के पुलिस स्टेशन ले जाते, तो पुलिस शायद कहती कि बलात्कार हम चारों ने किया है। वे यह भी कह सकते थे कि हमने उसे कार से टक्कर मारी और फिर उसके साथ बलात्कार किया। बेशक, अगर लड़की को होश आ जाता, चाहे पुंजुर के पुलिस स्टेशन में या चामराज नगर के अस्पताल में, तो वह हम पर से शक दूर कर देती। लेकिन क्या सच में ऐसा होता? क्या होता अगर उसके हमलावर अचानक उस पर हमला कर देते? क्या होता अगर वह उन्हें जानती ही न होती? याद रखिए, हमें यह पता लगाने का कोई तरीका

नहीं था कि उस पर हमला कहां हुआ था। यह घटना कहीं और भी हो सकती थी और अपराधी उसे बेहोशी की हालत में बैलगाड़ी में लाकर सड़क के बीचोंबीच फेंक सकते थे। जब वह होश में आती—अगर वह होश में आती भी—तो वह शायद सचमुच हमें ही दोषी मानती और हम पर आरोप लगाती। अंत में, और सबसे बुरी बात यह होती कि मान लीजिए वह इतनी गंभीर रूप से घायल हो जाती कि कभी ठीक ही न हो पाती। हम बलात्कार और हत्या के आरोपों के साथ एक भयानक मुसीबत में फंस जाते। हम पर सालों तक चलने वाला मुकदमा चलता। हमें जेल भी हो सकती थी। हमें फांसी भी हो सकती थी।
हम लगभग एक घंटे तक सड़क के बीचोंबीच स्थिति पर बहस करते रहे, इस उम्मीद में कि लड़की को होश आ जाए, तब हम उससे बात करेंगे, पता लगाएंगे कि क्या हुआ था और फिर उसे गाड़ी में बिठा लेंगे। लेकिन उसे होश नहीं आया। इसके विपरीत, उसकी सांसें धीमी होती गईं और उसकी नाड़ी लगभग न के बराबर हो गई।
एक इंसान को, जो स्पष्ट रूप से बेहद ज़रूरतमंद और मौत के कगार पर था, हाथियों से भरे घने जंगल के बीचोंबीच, आधी रात को, दूर-दूर तक, बिना किसी मदद के छोड़ देना, एक बहुत मुश्किल फैसला था। दूसरी ओर, मुझे गुम्मलापुर के पास मरे हुए हाथी और मारी गई महिला की घटना याद आ गई। दोनों ही मौकों पर मुझ पर आरोप लगे थे। अब हमारे खिलाफ सबूत, हालांकि परिस्थितिजन्य थे, निश्चित रूप से कहीं ज़्यादा और लगभग निर्णायक थे। हम बस यही बचाव कर सकते थे कि अगर हम दोषी होते, तो हम उस लड़की को वहीं छोड़ देते और उसे सुरक्षित स्थान पर नहीं लाते। लेकिन इस कार्रवाई को भी हमारे अपराध को छिपाने की एक चालाकी भरी चाल माना जा सकता था। दल के सबसे उम्रदराज सदस्य होने के नाते, मैं जानता था कि मैं दूसरों को संभावित खतरे को स्वीकार करने और लड़की को कार में पुंजूर और फिर चामराज नगर के अस्पताल ले जाने के लिए मना सकता था। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। इसके बजाय, मैं उनके साथ उस बेचारी लड़की को वहीं छोड़ने और अपने रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए सहमत हो गया।
बेशक, हमें कभी पता नहीं चला कि उस अभागी युवती का क्या हुआ। लेकिन उसे अकेला छोड़ देना और उसके भाग्य पर छोड़ देना, यह एक ऐसा कृत्य है जो आज तक मुझे अपराधबोध से भर देता है।
अब मैं इन यादों का मिजाज बदलने के लिए अपने बारे में दो छोटी कहानियां सुनाऊंगा, ऐसी कहानियां जो यह दर्शाती हैं कि एक बाघ का दिखना एक नौसिखिए के हौसले पर क्या असर डालता है।
पहली घटना तब घटी जब मैं पंद्रह साल का था। मेरे पिताजी मुझे मैसूर राज्य के कादुर जिले में लिंगधल्ली नामक स्थान पर बत्तख और चिड़िया के शिकार के लिए ले गए थे। पिताजी बड़े जानवरों के शिकारी नहीं थे, हालांकि उन्होंने ही मुझे बहुत कम उम्र में बंदूक चलाना सिखाया था। वे चिड़िया का बेहतरीन निशाना लगाते थे, जिसमें मैं आज तक पूरी तरह नाकाम रहा हूँ, और उन्हें बत्तख का शिकार और अन्य छोटे जानवरों का शिकार करना बहुत पसंद था।
लिंगधल्ली के पास दो-तीन तालाब हैं, जहाँ क्रिसमस के समय जंगली बत्तखों और टील पक्षियों की अच्छी-खासी संख्या देखी जा सकती है, और कभी-कभी हंस भी नज़र आते हैं। इसके आसपास संरक्षित वन भी हैं, जहां बाघ और तेंदुआ पाए जाते हैं। हमारे पास पिताजी की पसंदीदा .16 बोर की दोहरी बैरल वाली बंदूक और एक पुरानी .12 बोर की दोहरी बैरल वाली बंदूक थी, जो उन्होंने मुझे उस साल मेरे जन्मदिन पर उपहार में दी थी।

दूसरे दिन दोपहर को मुझे खबर मिली कि जिस तालाब के पास हम उसी सुबह बत्तख का शिकार करने गए थे, उसके बगल वाले सुपारी के बागान में एक बाघ ने एक बैल को मार डाला है। बागान मालिक ने मुझे इसके बारे में बताया, लेकिन मैंने पिताजी से यह बात छुपाई। मुझे पता था कि वह मुझे बाघ का शिकार करने नहीं देंगे। उस समय मुझे बड़े जानवरों के शिकार का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था, लेकिन जब बागान मालिक ने मुझे बाघ को मारने की कोशिश करने पर मचान बांधने का प्रस्ताव दिया, तो मैंने ठान लिया कि मैं जान देकर भी यह कोशिश करूंगा और उसे आगे बढ़ने के लिए कह दिया।
उस शाम मैंने पिताजी से झूठ बोला, कहा कि मैं एक ग्रामीण के साथ 'फ्लाइंग फ़ॉक्स' (भारतीय फल खाने वाले बड़े चमगादड़ का नाम) का शिकार करने जा रहा हूँ, और कहा कि मैं लगभग ग्यारह बजे लौट आऊँगा। मैंने बड़े चाव से कल्पना की कि मैं मरे हुए बाघ को अपने साथ वापस लाऊँगा। पिताजी को छोटे से घुमंतू बंगले में यह कहकर छोड़कर कि मैं फ्लाइंग फॉक्स का शिकार करने जाने से पहले मोर और खरगोश का शिकार करके अपनी किस्मत आजमाना चाहता हूँ, मैं शाम 5 बजे से कुछ पहले निकल पड़ा। एक घंटे से भी कम समय में मैं ऊँचे-ऊँचे लहराते सुपारी के पेड़ों के बीच मचान में अकेला था, और मरा हुआ बैल मेरे नीचे ज़मीन पर पड़ा था।
आज भी मुझे वह मचान याद है। वह ज़मीन से बारह फीट से ज़्यादा ऊँचा नहीं रहा होगा; एक ऊबड़-खाबड़, बिखरा हुआ, असुरक्षित मचान। यकीनन, ऐसा मचान जिसे बाघ आसानी से पहचान लेता और इसलिए उसके पास आने की हिम्मत नहीं करता। लेकिन हमने 'शुरुआती किस्मत' के बारे में तो सुना ही है, और उस यादगार शाम को मेरे साथ भी वही किस्मत थी।
शाम ढल रही थी जब बाघ आया, और आते ही उसने सबसे पहले ऊपर देखा और मुझे उस साफ़ दिखाई देने वाले चबूतरे पर बैठा पाया। वह गुर्राया और चलते-चलते रुक गया। मैं डर से कांप रहा था। मेरे शरीर का एक भी अंग हिल नहीं रहा था, न ही मेरी बात मान रहा था। मैं डर के मारे ज़ोर से चीखना चाहता था, लेकिन वह भी नहीं कर पाया। बाघ गुस्से और घबराहट भरी गुर्राहट के साथ भाग गया, क्योंकि .12 पिस्तौल मेरी कांपती उंगलियों से फिसलकर चबूतरे से लुढ़कते हुए ज़मीन पर ज़ोर से गिरी। सौभाग्य से ज़मीन गीली और नरम थी, और पिस्तौल आगे की तरफ से गिरी, इसलिए उसे कुछ नहीं हुआ। लेकिन मैं बहुत नाराज़ था और खुद को कायर समझकर खुद से नफ़रत कर रहा था, और उस रात 8 बजे से पहले जब मैं वापस यात्रियों के बंगले पर पहुँचा, तो मैंने पिताजी को इसके बारे में कुछ नहीं बताया।
जो कुछ हुआ था उससे मैं बहुत आहत था, और कुछ ही समय बाद मैं अपने से कुछ बड़े एक लड़के, जेरी बैरो के साथ शिकार पर गया। हम मैसूर राज्य के शिमोगा जिले में सागर कस्बे से कुछ मील दूर एक गाँव में गए। नौसिखिए होने के नाते, एक बार फिर हमारा भाग्य अच्छा था, क्योंकि हमारे पहुँचने के एक दिन के भीतर ही जंगल में दो अलग-अलग जगहों पर दो बाघों के शिकार की सूचना मिली, दोनों ही जगहें गाँव से मुश्किल से एक मील दूर थीं। हमने सिक्का उछाला और मुझे याद है कि मुझे गाँव के पश्चिम में हुआ शिकार मिला। वहाँ एक सुंदर, पूरी तरह से विकसित गाय नाले के किनारे पर पड़ी थी और उसका कुछ हिस्सा खाया हुआ था। संयोग से, पास में ही एक छोटा पौधा उग रहा था, और लिंगैधल्ली में जो कुछ हुआ था, उसे याद करते हुए, जब मैं बारह फीट ऊँचे मचान पर बैठा था, मैंने यह सुनिश्चित किया कि चबूतरा पेड़ की एक शाखा से कम से कम अठारह फीट ऊपर नाले के किनारे पर पड़े शिकार से बाँध दिया जाए। वह पौधा नदी के तल से सीधा ऊपर की ओर और नाले के किनारे से

समकोण पर उगा, जो स्वयं इस स्थान पर ढलानदार था और रेतीले तल से कम से कम एक दर्जन फीट ऊंचा था।
मैंने जल्दी ही अपनी जगह ले ली और घबराकर चौकन्ना हो गया। सभी नौसिखिए ऐसा ही करते हैं। धीरे-धीरे अंधेरा होने लगा और शाम के साथ ही दो बाघ—या यूँ कहें कि एक बाघ और एक बाघिन—एक के पीछे एक चलते हुए दिखाई दिए। दिक्कत बस इतनी थी कि वे नाले के ऊँचे किनारे पर चल रहे थे, जबकि मेरा मचान उसी नाले से लगभग अठारह फीट ऊपर था। और इस तरह मैं बाघ और उसकी साथी से सिर्फ छह फीट ऊपर रह गया। मैंने हालात सुधारने की कोशिश की थी, लेकिन अनजाने में उन्हें और बिगाड़ दिया था। कम से कम लिंगधल्ली में तो मैं जंगली अवस्था में देखे गए पहले बाघ से बारह फीट ऊपर था। अब मैं उनमें से दो को देख रहा था, और आधी दूरी पर! फिर भी, इस समय तक मैंने कुछ प्रगति कर ली थी, कम से कम अपनी घबराहट भरी प्रतिक्रियाओं के मामले में। मैंने बंदूक को मचान से गिरने नहीं दिया, हालाँकि घोर डर ने मुझे गोली चलाने से रोक रखा था।
एक अजीब संयोग से, लगभग वैसा ही अनुभव मेरे एक मित्र के साथ, बहुत पास ही एक जगह पर, कई साल बाद हुआ। और उसने भी मेरे जैसा ही व्यवहार किया—और वह भी एक नौसिखिया था।
अक्सर, दूसरे शिकारियों से बातचीत के दौरान, मैं किसी नौसिखिए या अनुभवहीन शिकारी के कारनामों के बारे में अपमानजनक टिप्पणियाँ सुनता हूँ: कि वह इसलिए गोली नहीं चला रहा क्योंकि उसे गोली चलाना नहीं आता, या बुरी तरह चूक गया क्योंकि वह काँप रहा था। तब मैं उन अनजान नौसिखियों के प्रति सहानुभूति जताते हुए, दो मौकों पर अपनी प्रतिक्रियाएँ अपने श्रोताओं को बताता हूँ। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि जंगल के राजा को उसके जंगली रूप में, उसकी पूरी शान में, नज़दीक से और अंधेरे में देखना ही विस्मयकारी होता है। यह चिड़ियाघरों और सर्कसों में दिखने वाले शांत, अधभूखे बाघों से बिल्कुल अलग नज़ारा होता है।
हमारी कुछ यात्राओं के दौरान हास्य से भरपूर छोटी-मोटी घटनाएं घटित हुईं; वहीं कुछ अन्य घटनाएं, जिनका अंत कहीं अधिक गंभीर हो सकता था, काफी मजेदार साबित हुईं।
मैं कई तरह के लोगों के साथ रहा हूँ। कुछ उदास और चिड़चिड़े साथी थे, जो ज़रा सी असुविधा पर भी बड़बड़ाते और शिकायत करते थे। वहीं कुछ बेहद सख्त मिजाज के थे, जैसे कि वे लोग जो सिर्फ घर का बना खाना खाना चाहते थे, सिर्फ उबला हुआ पानी या सोडा वाटर, चाय और कॉफी पीना चाहते थे, और मच्छरदानी के नीचे कैंप के पलंगों पर सोना चाहते थे। एक तीसरी किस्म के लोग, जो कि दुर्लभ हैं, बिल्कुल विपरीत छोर पर थे; वे इतने उत्साही थे कि चौबीसों घंटे लगातार चलते रहना चाहते थे। चाहे बारिश हो या धूप, बिना या बहुत कम भोजन के, और बिना आराम किए।
इसीलिए, सभी गंभीर शिकार यात्राओं पर मैं अकेले रहना पसंद करता हूँ। मुझे कहीं भी सोने की आदत हो गई है, यहाँ तक कि खुले में पेड़ के नीचे भी, और जो कुछ भी उपलब्ध हो, उसे खाने की भी, चाहे वह पका हुआ यूरोपीय या भारतीय भोजन हो या जामुन, जड़ें और यहाँ तक कि अधपका मांस जैसा आदिवासी भोजन। पानी के लिए, मुझे रेतीले नदी तल में गड्ढे खोदने पड़ते हैं, पानी जमा होने तक इंतजार करना पड़ता है, और फिर लेटकर खोदे गए गड्ढे से पानी चूसना पड़ता है, रुमाल के एक कोने को मुँह पर रखकर रेत के बारीक कणों और कभी-कभी पानी में मौजूद हरे रंग के कीचड़ को छानना पड़ता है।
एक बार मेरे एक मित्र, जो एक मेजर थे, और दो अन्य मित्रों, एक डॉक्टर और उनके बेटे ने मैसूर राज्य के शिमोगा जिले के जंगलों के एक बेहद दूरदराज इलाके में तीन

सप्ताह के बाघ शिकार की योजना बनाई थी। वहाँ मोटर योग्य सड़क से बहुत दूर एक छोटा सा वन बंगला था, और पास ही एक छोटा सा गाँव था। हम अपने साथ खाने-पीने का बहुत सारा सामान ले गए थे, लेकिन तीन सप्ताह लंबा समय होता है और हम सभी लगातार भूखे रहते थे और भरपेट खाते थे, साथ ही वहाँ शिकार के लिए जानवर भी बहुत कम थे और हम अंधाधुंध शिकार करके आसपास के बाघों को डराना नहीं चाहते थे, इसलिए दस दिनों के भीतर ही हमारा भोजन भंडार खत्म होने लगा। अंत में, सभी को आधा-आधा राशन देना पड़ा।
एक रात, अकाल के दौरान, मुझे बंगले के उस हिस्से से अजीबोगरीब आवाज़ें सुनाई दीं जिसे हम भोजन कक्ष के रूप में इस्तेमाल करते थे। मुझे हल्की-सी खड़खड़ाहट और घिसने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने अपनी इलेक्टिक टॉर्च उठाई, दबे पांव भोजन कक्ष की ओर जाने वाले दरवाजे तक गई और उसे चालू किया। वहाँ डॉक्टर का बेटा खाना चुरा रहा था। उसने ब्रेड के एक टुकड़े पर मक्खन लगाया, उस पर गाढ़ा दूध फैलाया और अंत में उस पर चीनी छिड़क दी।
फिर मैंने एक अशोभनीय काम किया। मैं चुपके से निकल गया। डर का नाटक करते हुए, मैं जोर से चिल्लाया: 'डॉक्टर, डॉक्टर; भोजन कक्ष में एक चोर है।'
डॉक्टर अपने बेटे को रंगे हाथों पकड़ने के लिए बाहर आया। लड़के को दी गई फटकार इतनी तेज़ और इतनी लंबी थी कि मुझे अगले एक घंटे तक नींद नहीं आई।
उस शिविर में भोजन पहले से भी कहीं अधिक दुर्लभ हो गया था, लेकिन हम उसे छोड़ना नहीं चाहते थे क्योंकि बाघों ने हमारे द्वारा उनके लिए बांधे गए जीवित शिकारों को मारना शुरू कर दिया था, हालांकि अभी तक हमें एक भी बाघ को मारने का सौभाग्य नहीं मिला था। हमने तय किया कि हमें ग्रामीणों के पास जाकर उनसे किसी भी कीमत पर किसी भी प्रकार का भोजन खरीदने का प्रस्ताव देना चाहिए। बेटा पहले गया और एक अंडा लेकर लौटा। अगले दिन डॉक्टर ने अपनी किस्मत आजमाई। वह बहुत गुस्से में लौटा। ग्रामीणों ने उसे बताया था कि पिछले दिन उन्होंने युवा साहब को सात अंडे बेचे थे। लड़का केवल एक अंडा वापस लाया था। अपने पिता के सामने उसने कबूल किया कि वह बहुत भूखा था और वापस आते समय उसने बाकी छह अंडे कच्चे ही खा लिए थे। ग्रामीणों ने डॉक्टर को यह भी बताया कि उनके पास बेचने के लिए अतिरिक्त भोजन नहीं है, क्योंकि भोजन की कमी थी और उन्हें खुद के लिए उसकी आवश्यकता थी।
तीसरे दिन मैं गया। ग्रामीणों ने मुझे वही बात बताई। उनके पास बेचने के लिए न तो मुर्गियाँ थीं और न ही रागी। सब कुछ उनके अपने उपभोग के लिए आवश्यक था। जब मेजर को भीख मांगने की बारी आई, तो उन्होंने कुछ नया करने का फैसला किया। उन्होंने उस दोपहर पूरे गाँव को पास के वन बंगले में आमंत्रित किया, जहाँ वे एक भव्य मनोरंजन कार्यक्रम देखने वाले थे, जिसमें नृत्य भी शामिल थे, जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखे थे, और जिनका प्रदर्शन पूरी तरह से उन्हीं के द्वारा किया जाना था। उन्होंने कहा कि यह एक निःशुल्क कार्यक्रम होगा; लेकिन अंत में भोजन के रूप में चंदा लिया जाएगा, चाहे वह किसी भी रूप में हो।
उस दोपहर कुछ बूढ़े और कुछ नौजवान धीरे-धीरे आने लगे। ये दर्शक बरामदे के फर्श पर बैठ गए। एक घंटे बाद लगभग तीस लोग जमा हुए। जब मेजर को लगा कि इतने ही लोग इकट्ठा हो पाएंगे, तो वह अंदर गए और कमर पर तौलिया बांधकर वापस आए। फिर, उन्होंने अपने होठों को दबाकर बैगपाइप की बहुत अच्छी नकल करते हुए गुनगुनाया और हाइलैंड फ्लिंग और कुछ रील नृत्य किए। अंत में, उन्होंने दो राइफलें फर्श पर रखकर तलवार नृत्य किया।

मुझे यकीन नहीं है कि दर्शकों ने शो को कितनी सराहना की, लेकिन उनके तमाम प्रयासों के बावजूद उनमें से कोई भी खाने-पीने का सामान नहीं लाया था, और रॉबी द्वारा चंदा इकट्ठा करने के लिए ले जाया गया थैला उनके अथक प्रयासों के बाद भी उतना ही खाली था जितना पहले था।
एक और छोटी सी घटना येम्मेदोड्डी में घटी, जो कदुर ज़िले में स्थित है। डॉन और मैं, अपने एक युवा मित्र सन्नी के साथ, सन्नी को एक बाघ दिखाने के लिए कुछ दिनों के लिए वहाँ गए थे, जिसका वह शिकार करने वाला था। यात्रा के पहले दिन सुबह सन्नी 3 बजे उठा, और मैंने उसे डॉन को जगाने और जंगल में टॉर्च की रोशनी में सैर के लिए उसमें रुचि पैदा करने की कोशिश करते सुना। कड़ाके की ठंड थी, और ऊपर से हल्की बूंदा-बांदी भी हो रही थी। डॉन को अपना गर्म बिस्तर ज़्यादा पसंद था, और उसने सन्नी को साफ-साफ बता दिया। मुझे उस लड़के पर दया आई, इसलिए मैंने आत्म-बलिदान की भावना से उसके साथ चलने का फैसला किया।
हम चल पड़े, सन्नी ने मेरी .405 राइफल ले रखी थी, जो उसने उधार ली थी, जबकि मैं बाघ की आँखों को देखने की उम्मीद में पाँच सेल वाली टॉर्च की रोशनी इधर-उधर घुमा रहा था। थोड़ी ही देर में हम एक संकरे रास्ते पर पहुँच गए जो लगभग चार मील दूर स्थित मद्दक टैंक नामक एक बड़ी झील से आने वाली जलधारा के समानांतर चलता था, और हम उस झील की ओर चलने लगे। सौभाग्य से हल्की बारिश रुक गई थी, लेकिन ठंड पहले से कहीं अधिक थी और चारों ओर घना अंधेरा था।
झील तक लगभग आधे रास्ते में मुझे पानी की नहर के दूसरी ओर जंगल से आती हुई दो रोशनी दिखाई दीं। वे धधकती लाल थीं। यह कौन सा जानवर था? उसकी आँखें इतनी लाल थीं। मैंने अपनी टॉर्च की रोशनी का इस्तेमाल करके उस जीव को हिलाने या उसका सिर घुमाने की कोशिश की ताकि उसकी पहचान पता चल सके। दोनों लाल रोशनी ज़रा भी नहीं हिलीं। एक पल के लिए मैंने टॉर्च की रोशनी उनसे हटा ली, ताकि जानवर हमें देख सके और हिल सके, लेकिन लाल रोशनी जलती रहीं। इससे समस्या हल हो गई। वे किसी जानवर की आँखें नहीं थीं, बल्कि आग के अंगारे थे। कुछ जंगली लोग वहाँ डेरा डाले हुए थे।
यह एक प्रचलित, लेकिन पूरी तरह से गलत धारणा है कि जंगली जानवरों की आंखें अंधेरे में अपनी ही चमक से जगमगाती हैं। ऐसा नहीं है। जब उन पर तेज रोशनी पड़ती है, तभी उनकी आंखों की भीतरी सतह, खुली पुतलियों के माध्यम से, प्रकाश को परावर्तित करती है और आंखें अलग-अलग रंगों से चमकती हैं - हरा, सफ़ेद-हरा, सफ़ेद-लाल या लाल-सफ़ेद, यह चमक जानवर और प्रकाश के कोण पर निर्भर करती है। लेकिन आंखें अपने आप नहीं चमकतीं। इसलिए, अगर टॉर्च की रोशनी नहीं है, तो किसी भी जानवर की आंखों से कोई परावर्तित चमक नहीं आ सकती। इसके विपरीत, अगर टॉर्च की रोशनी न होने पर भी चमक आती है, तो वह किसी भी जानवर की आंखों से नहीं आ सकती।
जैसा कि मैंने कहा, समाधान सरल था। हमारा सामना आग की चिंगारियों से हुआ था, न कि किसी जंगली जानवर से। सन्नी मेरे बगल में खड़ा था जब मैंने लापरवाही से और बेपरवाही से कहा, 'फायर'। अगले ही पल एक जोरदार धमाका हुआ, क्योंकि उसने मेरी राइफल से गोली चला दी। सौभाग्य से उसका निशाना बुरी तरह चूक गया।
अचानक नींद से जागे हुए लोगों ने चीख-चीख कर दहशत फैला दी। 'अय्यो! अय्यो!' वे घबराकर चिल्लाने लगे।
'तुम ये क्या कर रहे हो, बेवकूफ?' मैंने सन्नी पर चिल्लाते हुए कहा। 'मैंने तुमसे कहा था कि आग लगी है।'

'आपने ऐसा कुछ नहीं किया,' उसने जवाब दिया। 'आपने बस "फायर" कहा और मैंने फ़ायर कर दिया।'
वैसे तो, यह छोटी सी घटना दर्शाती है कि जंगली लोग उन बाघों को कितनी घृणा से देखते हैं जो आदमखोर नहीं होते। ये लोग खुले में, बिल्कुल असुरक्षित अवस्था में, ऐसे क्षेत्र में सो रहे थे जो बाघों के आश्रय स्थल के रूप में सर्वविदित है।
सन्नी नाम का यह आदमी खतरनाक किस्म का था। बिलकुल आवारा किस्म का, अगर आप समझ रहे हैं ना मेरा मतलब? एक बार हम तारिकेरे के पास झाड़ियों वाले जंगल के एक खास इलाके से गाड़ी चला रहे थे, खाने के लिए एक जंगली सूअर का शिकार करने की कोशिश कर रहे थे, क्योंकि येम्मायदोड्डी में हमारे कैंप में मांस की कमी हो रही थी। उस दोपहर खूब बारिश हुई थी, और चूंकि वह इलाका सूअरों के लिए मशहूर था, हमें लगभग यकीन था कि किसी भी पल कोई सूअर दिख जाएगा। रात के करीब 10 बज रहे थे। सन्नी मेरी कार के बाईं ओर के मडगार्ड पर एक पुरानी .12 गेज की शॉटगन लेकर बैठा था, जो उसने उधार ली थी। बेसिल जोन्स नामी का एक दोस्त पीछे की सीट पर दूसरी शॉटगन लेकर बैठा था। डॉन मेरे बगल में बैठा था, और मैं गाड़ी चला रहा था। हमारे पास स्पॉटलाइट नहीं थी, क्योंकि यह नियमों के खिलाफ थी, लेकिन यह माना गया कि अगर कोई सूअर हेडलाइट की रोशनी में सड़क पार करे तो उस पर गोली चलाना जायज है।
अचानक, कार के ठीक सामने कुछ गज की दूरी पर एक जंगली सूअर तेजी से भागा, जो हेडलाइट्स की तेज रोशनी में चमक रहा था। लेकिन सन्नी ने उसे नहीं देखा। वह शायद सपनों देख रहा था। हम सब चिल्लाए, 'गोली चलाओ', लेकिन तब तक सूअर जा चुका था। हमने सन्नी को खूब खरी-खोटी सुनाई और उसे अगले के लिए तैयार रहने को कहा।
लगभग एक मील आगे एक और सुअर सड़क पार कर गया। सन्नी ने उसे देख तो लिया, लेकिन गोली चलाने में देर कर दी। बेसिल जोन्स गाड़ी की डिक्की सीट पर खड़ा हुआ और हमारे सिर के ऊपर से गोली चलाई। शायद गाड़ी के हिलने-डुलने के कारण उसका निशाना चूक गया। इसके बाद एक ज़ोरदार धमाका हुआ और स्टुडेबेकर के रेडिएटर-कैप पर लगा धातु का हवाई जहाज गोलियों की बौछार में चकनाचूर हो गया।
तभी सन्नी मुझे रुकने के लिए ज़ोर-ज़ोर से इशारे करने लगा। मुझे लगा कि शायद बेसिल ने सुअर को टक्कर मार दी होगी और सन्नी ने उसे गिरते हुए देख लिया होगा। इसलिए मैंने अचानक ब्रेक लगा दिया। सन्नी मडगार्ड पर अपनी सीट से कूद गया, गाड़ी के आगे से घूमकर आया और अपनी .12 कैलिबर की पिस्तौल को हाथ की दूरी पर पकड़े हुए मेरी ओर बढ़ा।
'लो, ये घटिया बंदूक ले लो,' उसने गुस्से से कहा। 'इसमें कुछ खराबी है। ट्रिगर दबाने से पहले ही ये चल गई और तुम्हारे रेडिएटर कैप के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।'
'मुझे देखने दो,' मैंने सुझाव दिया। मैंने उससे हथियार लिया और उसका ब्रीच खोला। दोनों चैंबरों में कारतूस थे और उनमें से किसी से भी गोली नहीं चली थी। बेसिल की बंदूक के विस्फोट और रेडिएटर-कैप के टूटने से हुई आवाज़ ने सन्नी को यह सोचने पर मजबूर कर दिया था कि शायद उसी की बंदूक से गोली चली है।
इस नौजवान से जुड़ी तीसरी घटना सबसे मज़ेदार थी, हालांकि यह आसानी से एक त्रासदी में तब्दील हो सकती थी। इस बार हम बैंगलोर से लगभग पंद्रह मील दक्षिण में बैनरघट्टा के झाड़ीदार जंगल में सूअरों की तलाश में सुबह के समय गश्त कर रहे थे। गश्त के दौरान एक विराम आया। सन्नी एक छोटी सूखी खाई के तल पर खड़ा था। आर्थर स्टेनली नाम का एक और साथी उसके किनारे पर खड़ा था, सन्नी से लगभग

दस फीट ऊपर और उतना ही दूरी पर। वे बातें कर रहे थे, और किसी बात पर ज़ोर देने के लिए सन्नी ने उसी .12 बोर की शॉटगन का बट ज़मीन पर पटका, जिसे उसने एक बार फिर उधार लिया था। बंदूक के चलने की ज़ोरदार आवाज़ हुई, और झटके से बंदूक सन्नी के हाथ से छूट गई, जबकि आर्थर स्टेनली का धूप से बचने वाला हेलमेट दूर जा गिरा, सन्नी की बंदूक से निकली गोलियों से उसका किनारा आगे से टूट गया था।
आर्थर सदमे से बेहोश हो गया। हम सब उसके पास पहुँचे और उसे होश में लाए, साथ ही सन्नी को जन्मजात मूर्ख कहकर कोसते रहे। वह खाई के तल पर जड़वत खड़ा रहा, हम सबको हैरानी से देखता रहा और सोचता रहा कि आखिर हुआ क्या है। आर्थर जल्द ही होश में आया और खाई के किनारे पर खड़ा था, लगभग उसी जगह पर जहाँ से गोली चली थी।
'यह कैसे हो सकता है?' सन्नी पूछ रहा था। 'मैंने दाहिनी नली में केवल एक कारतूस भरा था और बंदूक के बट को धीरे से जमीन पर थपथपा रहा था कि अचानक, बिना किसी कारण के, बंदूक चल गई।'
ये शब्द कहते ही सन्नी ने यह दिखाना शुरू किया कि वह बंदूक के बट को धीरे से ज़मीन पर थपथपा रहा था, तभी अचानक, अप्रत्याशित रूप से, उसकी बंदूक से दूसरी बार गोली चल गई। गोली आर्थर के सिर के पास से गुज़रते ही वह बेहोश होकर पीछे गिर पड़ा।
'मुझे लगा था कि तुमने कहा था कि तुमने अपनी बंदूक में सिर्फ एक कारतूस भरा है?' डॉन ने बेहद व्यंग्यात्मक लहजे में पूछा।
'यह सच है,' सन्नी ने जवाब दिया। 'आप खुद ही देख लीजिए।'
ये कहते हुए उसने अपनी शॉटगन का ब्रीच खोला। फिर उसकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं। ब्रीच में दो गोलियां थीं, एक-एक बैरल में। और दोनों ही चलाई जा चुकी थीं।
एक बार रुस्तम दुधवाला की मॉडल ए फोर्ड कार में हमारा एक मजेदार अनुभव हुआ। यह घटना कोयंबटूर जिले के कोललेगल से लगभग तीस मील दूर, दोपहर के समय घटी। पंखे को कसने वाला नट ढीला हो गया और अचानक पंखे ने रेडिएटर में एक गोल छेद कर दिया, जिससे पानी की हर बूंद तुरंत रिसने लगी। हम जंगल के बीचोंबीच थे और यह स्पष्ट था कि हमें किसी तरह कार को मरम्मत के लिए कोललेगल वापस ले जाना होगा।
फिर रुस्तम को एक विचार आया, जिसे उसने एक अद्भुत शुरुआत बताया। उसने बोनट पूरी तरह से हटाकर रेडिएटर को सिलेंडर हेड से जोड़ने वाली नली को पकड़े हुए धातु के क्लैंप ढीले कर दिए। फिर उसने अपने पास मौजूद अतिरिक्त इनर ट्यूबों में से एक को एयर-इनलेट नोजल के पास से काट दिया और ट्यूब के एक खुले सिरे को सिलेंडर हेड से बाहर निकले धातु के नेक पर फिट कर दिया। उसने अतिरिक्त रबर को उसके चारों ओर मोड़ दिया और ढीले किए गए धातु के होज़ क्लैंप से ट्यूब को नेक से मज़बूती से जोड़ दिया। उसने कार के पीछे रखे दो गैलन के टिन से खोखली ट्यूब के नेक में पानी डाला, जब तक कि सिलेंडर हेड और आधी रबर की ट्यूब पानी से भर न गई। रुस्तम ने कार को घुमाया और कोललेगल की ओर वापस चल दिया, जबकि उसके एक मित्र विली वोलन को मडगार्ड पर बैठने और आधे भरे इनर ट्यूब के खुले सिरे को दोनों हाथों से पकड़ने के लिए कहा गया।
जल्द ही कुछ अजीबोगरीब घटनाएं होने लगीं। पानी गर्म हो गया और भाप निकलने लगी। नली खतरनाक तरीके से फूलने लगी और ऐसा लगा जैसे कुछ पल के लिए फट ही जाएगी। दबाव कम करने और कुछ भाप बाहर निकालने के लिए विली ने नली के सिरे पर अपनी पकड़ ढीली कर दी। लेकिन वह भूल गया था कि पानी का पंप चल

रहा था। भाप हो नहीं निकला, बल्कि खौलता हुआ गर्म पानी उसके हाथों पर गिर पड़ा। उसने गुस्से में नली को छोड़ दिया और सारा पानी फिर से बह गया। हम उसकी इस परेशानी पर खूब हंसे, लेकिन जब उसने नली को पकड़ने से साफ इनकार कर दिया तो हमारी हंसी रुक गई। खैर, हमने नली में थोड़ा पानी डाला और बारी-बारी से उसे पकड़े रहे जबकि रुस्तम कुछ मील तक गाड़ी चलाता रहा, बीच-बीच में रुककर पानी को ठंडा होने देता रहा। इस बीच हम हर नदी, टैंक या कुएं से दो गैलन पेट्रोल का डिब्बा भरते रहे। और इस तरह आखिरकार हम कोललेगल पहुंच गए।

मुझे एक सज्जन अच्छी तरह याद हैं जिन्हें मैं अपने साथ सैर पर ले गया था। वे थोड़े सनकी थे। उन्होंने कहीं पढ़ा था कि गाढ़ा दूध पोषक तत्वों से भरपूर होता है और सभी आवश्यक विटामिन प्रदान करता है; इसलिए उन्होंने कहा कि वे अपने साथ केवल डिब्बाबंद गाढ़ा दूध ही लाएंगे और पूरे सप्ताह उसी पर गुजारा करेंगे। उनके पोषक तत्वों के सिद्धांत शायद ठीक थे, लेकिन पाँचवें दिन उन्हें परेशानी होने लगी। गाढ़ा दूध कब्ज पैदा करता है। इसके अलावा, गर्मी (गर्मी का मौसम था) और पसीने में निकले नमक के कारण उनका शरीर डिहाइड्रेटेड हो गया था। उस शाम वे अचानक गिर पड़े और कहने लगे कि उन्हें बहुत अस्वस्थ महसूस हो रहा है। उनका तापमान तेजी से बढ़ गया और पेट में तेज ऐंठन होने लगी। लाख कोशिश करने के बावजूद भी वे शौच नहीं कर पाए। स्थिति बहुत गंभीर हो गई। तब हमने सोचा कि जो भी सामग्री उपलब्ध है, उसी का इस्तेमाल करें। कार के फुट-पंप के रबर के तार के दोनों सिरों पर लगे धातु के जोड़ काट दिए गए थे। हॉर्न के बल्ब को गुनगुने पानी से भरकर तार के एक सिरे पर दबाया गया, जिससे एक प्रभावी एनीमा का काम हुआ। बल्ब को फिर से भरने और दबाकर खाली करने की प्रक्रिया को दो-तीन बार दोहराना पड़ा, लेकिन इससे वांछित परिणाम प्राप्त हुआ और संभवतः उस व्यक्ति की जान बच गई। एक चम्मच ग्रेड 40 का इंजन ऑयल मुंह से देने पर भी फायदा हुआ।

कई साल बाद, सलेम जिले के गैरहेटी नामक स्थान पर मैंने एक बार फिर इस उपचार का प्रयोग किया, जब मेरे साथ हाथियों की तस्वीरें खींचने आए सेल्स नामक एक बुजुर्ग सज्जन अचानक लू लगने से बेहोश हो गए। हम दिन भर चिलचिलाती धूप में बाहर थे, और जब हम शाम ढलते ही जंगल के बंगले में वापस लौटे, तो उन्होंने तेज़ सिरदर्द और चक्कर आने की शिकायत की। जल्द ही उन्हें तेज़ बुखार और उल्टी होने लगी, और वे बेहोश हो गए। कार के पंप नोजल से उपचार और हर घंटे ठंडे पानी से स्पंज स्नान कराने से उनका तापमान कम हो गया, और अगली सुबह तक वे फिर से खड़े हो गए।

कुई साल पहले जब मैं अपने दोस्त बायरा (पुजारी) के साथ एक हफ्ते के लिए जंगल में गया था, तो मुझे खुद एक दिलचस्प अनुभव हुआ। बायरा से मेरी मुलाकात मद्रास राज्य के सलेम जिले के जंगलों में कुछ असामान्य परिस्थितियों में हुई थी।* मज़े के लिए मैंने तय किया था कि मैं न तो बंदूक ले जाऊंगा और न ही कोई खाना। मैं इन सात दिनों तक जंगल में ही रहना चाहता था, और उन चीजों पर निर्भर रहना चाहता था जो बायरा अपने पास मौजूद आदिम साधनों से जंगल से जुटा सकता था। मैंने यह शर्त रखी थी कि बायरा अपनी बहुमूल्य, लेकिन बिना लाइसेंस वाली, माचिस वाली बंदूक न लाए।

इस यात्रा की सबसे खास बात यह थी कि मुझे पूरे समय, हर घंटे और हर दिन ज़बरदस्त भूख लगती रही। मुझे यकीन है कि बायरा को मुझे और खुद को खिलाने में बहुत मेहनत करनी पड़ी होगी। सच कहूँ तो, मैंने उससे लगभग तीन गुना ज़्यादा खाया। हमने तरह-तरह के बेर और अलग-अलग लताओं की जड़ें खाईं जिन्हें उसने

खोदा था; हमने जंगली मधुमक्खियों के छत्ते खाए; हमने चिनार नदी के पास एक तालाब के किनारे रहने वाले छोटे-छोटे केकड़ों को खाया; हमने घोंघे और टिड्डे चबाए; हमने एक दीमक के टीले से एक बड़ी, लंबी, मोटी रानी चींटी खाई जिसे हमने साथ मिलकर खोदा था। बायरा ने दो ओडुम्बस (एक गज से ज्यादा लंबी छिपकली की प्रजाति, जिसे सही मायने में इगुआना कहते हैं) पकड़ीं, जिन्हें हमने पकाकर खाया; मुझे वे बहुत स्वादिष्ट और मुलायम लगीं।
फिर भी मुझे भूख लग रही थी। बायरा ने घोड़े के बालों से बुने हुए फंदे की मदद से एक जंगली मुर्गे को पकड़ा। उसका गला दबाकर उसने उसे 'मिट्टी में भूनने' की विधि अपनाई। मैं इसकी विधि बता रहा हूँ, जो वास्तव में बहुत सरल है, ताकि कोई साहसी लड़का या अन्य व्यक्ति इसे स्वयं आजमा सके।
बिना बर्तनों के रोस्ट तैयार करने के दो तरीके हैं। बेशक, आप चाहे जो भी तरीका अपनाएं, सबसे पहले आपको जिस पक्षी या जानवर को रोस्ट करना है, उसके पंख या बाहरी खाल और उसके अंदरूनी अंग निकालने होंगे। इसके बाद, आप अपनी पसंद के अनुसार 'स्टिक रोस्ट' या 'मड रोस्ट' कर सकते हैं। स्टिक रोस्ट में एक लंबी, नुकीली छड़ी को पक्षी या जानवर के शरीर में आर-पार गाड़ दिया जाता है। फिर दो Y-आकार की छड़ें काटकर उनके सिरों को जमीन में इतनी दूरी पर गाड़ दिया जाता है कि मांस को पिरोने वाली छड़ी का सिरा Y-आकार के सपोर्ट पर टिका रहे। फिर छड़ी और उस पर लगे भार को घुमाया जा सकता है। नीचे अंगारों की धीमी आग जलाई जाती है और मांस को जलने से बचाने के लिए छड़ी को धीरे-धीरे हाथ से घुमाया जाता है। आग में पत्तों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, क्योंकि वे मांस को काला और धुआंयुक्त बना देंगे।
इस विधि में कई कमियां हैं। पहली बात तो यह है कि इसमें लगातार ध्यान देने की आवश्यकता होती है। दूसरी बात, सींक को बार-बार पलटना पड़ता है। तीसरी बात, चाहे आप कितनी भी सावधानी बरतें, तैयार भुना हुआ मांस हमेशा सूखा और आंशिक रूप से जला हुआ निकलता है, जबकि अंदर का हिस्सा लगभग कच्चा रह जाता है। इसका एकमात्र फायदा यह है कि इसे जंगल में कहीं भी, कम समय में तैयार किया जा सकता है।
'मड रोस्ट' के लिए पक्षी या जानवर को इसी तरह तैयार किया जाता है। फिर नदी या तालाब के किनारे से ली गई या मिट्टी और पानी से बनाई गई मिट्टी की एक परत शव के ऊपर लगभग एक इंच मोटी कर दी जाती है। इससे मांस को पूरी तरह से ढकने वाला मिट्टी का गोला बन जाता है। इसके बाद अंगारों की आग तैयार की जाती है और मिट्टी के गोले को उसमें रख दिया जाता है। फिर गोले को और अंगारों से ढक दिया जाता है जब तक कि वह पूरी तरह से दिखाई न दे, सिवाय ऊपर के हिस्से के जहाँ मिट्टी थोड़ी सी दिखाई देनी चाहिए। मध्यम आँच तब तक रखी जाती है जब तक कि मिट्टी में दरारें न दिखने लगें। इसके बाद दस मिनट का समय दिया जाता है, फिर मिट्टी के गोले को आग से निकाल लिया जाता है, ध्यान रखें कि निकालते समय वह टूटे नहीं। वैकल्पिक रूप से, मिट्टी के गोले के चारों ओर और नीचे के अंगारों को हटाकर केवल गोला ही रहने दिया जा सकता है। इसे थोड़ा ठंडा होने दें और फिर एक और लकड़ी की मदद से ऊपर की परत को तोड़ दें। इस तरह भुना हुआ मांस बहुत स्वादिष्ट और न ज्यादा सूखा होगा, और मांस पूरी तरह से पक जाएगा।
इस विधि की एक कमी यह है कि मांस को पूरी तरह से ढकने के लिए उपयुक्त गाढ़ेपन वाली मिट्टी ढूंढना या बनाना मुश्किल होता है। यदि इसमें मोटे दाने वाली रेत अधिक हो, तो अंदर का मांस ठीक से भुनने से पहले ही परत गर्मी से बिखर जाएगी और मांस जल जाएगा। यदि मिट्टी बहुत पतली हो, तो वह मांस से चिपकेगी नहीं।

लेकिन याद रखें सही गाढ़ेपन का हो और मांस आपस में चिपका रहे, तो मांस अपने ही रस में बेहतरीन तरीके से पकता है। यह विधि मुर्गी या खरगोश जैसे छोटे जानवरों के लिए बहुत कारगर है, लेकिन बड़े जानवरों के लिए इसका इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, क्योंकि ऐसे मामलों में मिट्टी की परत बरकरार नहीं रहेगी।
जो साथी कीटाणुओं और पेचिश के डर से केवल उबला हुआ पानी पीने पर ज़ोर देते हैं और मलेरिया के डर से मच्छरदानी के नीचे सोते हैं, वे परेशानी का सबब बनते हैं। मेरी विनम्र राय में, वे तरह-तरह के रोगाणुओं की मौजूदगी की कल्पना करके बार-बार अपनी जान जोखिम में डालते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे 'गतिशील' नहीं होते। जंगल में, खासकर गंभीर शिकार के मामले में, कहीं भी और तेज़ी से जाने में सूक्ष्म होना ज़रूरी है, और इसका मतलब है कि जो भी उपलब्ध हो उसे खाना और जहां और जब भी मौका मिले, पानी पीना और सोना। डिब्बाबंद भोजन, पानी उबालने के बर्तन, मच्छरदानी, खाट और तंबू के बोझ से लदे शिकारियों का दल बोझिल हो जाता है। इन सभी सामानों को ढोने के लिए कुली या भारवाहक की ज़रूरत पड़ती है। इसका मतलब है कि ज़्यादा लोगों का पेट भरना पड़ेगा।
मुझे याद है कि एक बार मैं एक पति-पत्नी और उनके वयस्क बेटे को कावेरी नदी के किनारे मछली पकड़ने ले गया था। मैं उनकी कार में उनके साथ गया था। जब रात हुई—एक खूबसूरत चांदनी रात—मैंने नदी के रेतीले किनारे पर अपना बिस्तर लगाया। नदी से आती ठंडी हवाएँ ताजगी भरी थीं और मुझे नींद आ गई। लेकिन मेरे ग्राहकों ने मुझे जगा दिया, वे जानना चाहते थे कि क्या मगरमच्छों या जंगली जानवरों से कोई खतरा है। नींद में ही मैंने 'नहीं' में जवाब दिया और फिर सो गया। लेकिन कुछ ही मिनटों में उनके शोर से मेरी नींद टूट गई। ये लोग मच्छरदानी और डंडे लाए थे और उन्हें रेत में गाड़ रहे थे। ढांचे में अड़ी पट्टियाँ बाँधी गईं, फिर एक बर्फ जैसा सफेद पर्दा लाया गया और चारों कोनों पर डंडों से बाँध दिया गया। अंत में वे तीनों उसके नीचे लेटकर सो गए।
लेकिन सोने के बजाय, वह बूढ़ा आदमी थोड़ी-थोड़ी देर में उठकर मच्छरदानी उठाता और टॉर्च से चारों ओर रोशनी करता। मैं उनकी तरफ़ पीठ करके करवट लेकर लेट गया और फिर से सो गया। पर ज़्यादा देर नहीं। क्योंकि औरत की चीख सुनकर मैं चौंक गया, उसके बाद बहुत शोर हुआ। मैंने करवट बदली तो देखा कि परिवार के तीनों सदस्य अपने ही मच्छरदानी में उलझे हुए थे, जो खंभों समेत उनके ऊपर गिर पड़ी थी। औरत चिल्ला रही थी, 'बिच्छू! बिच्छू!', और टॉर्च की टिमटिमाती रोशनी कुछ गज दूर नदी की रेत पर पड़ रही थी।
उठकर मैंने थोड़ी अधीरता से शोर का कारण पूछा। महिला ने कहा कि टॉर्च की रोशनी में उसने कुछ ही दूरी पर रेत पर एक बड़ी बिच्छू रेंगते हुए देखा था। उसके पति से टॉर्च लेकर मैं उस जगह गया जहाँ उसने इशारा किया था। मुझे वहाँ कोई बिच्छू नहीं दिखा, लेकिन उसने बड़े विश्वास से कहा कि कुछ क्षण पहले वहाँ एक बिच्छू था। हो सकता है वह सही हो, हालाँकि मुझे इस पर संदेह है। लेकिन अगर बिच्छू था भी, तो वह गायब हो चुका था। मैंने थोड़ी देर तक खोजा, लेकिन कुछ न मिलने पर मैंने सुझाव दिया कि हम सब थोड़ी देर सोने की कोशिश कर लें।
लेकिन नहीं, वे मेरी बात मानने को तैयार नहीं थे। तीनों ने अडियल रवैया अपनाते हुए कहा कि वे पूरी रात अपनी कार में ही बैठना पसंद करेंगे। फिर उन्होंने एक चौंकाने वाला काम किया। उन्होंने अपनी मच्छरदानी को पूरी तरह से कार पर डाल दिया और उसके नीचे घुसकर दरवाज़े खोलकर गाड़ी में बैठ गए। उन्होंने कहा कि इस तरह उन्हें मच्छर नहीं काटेंगे। मैंने सोचा, ठीक है; अब मुझे थोड़ी नींद आ जाएगी। लेकिन मैं पूरी तरह गलत था। कार के अंदर से, खिड़कियों और मच्छरदानी के बीच

से, वे उस भयानक टॉर्च की रोशनी बार-बार मुझ पर चमकाते रहे। बात और बिगड़ गई जब थोड़ी देर बाद उन्होंने बिजली का हॉर्न बजाना शुरू कर दिया।
'आखिर तुम कर क्या रहे हो?' मैंने चिढ़कर पूछा।
उनमें से एक ने जवाब दिया, 'हमें जंगल में आवाजें सुनाई दे रही हैं। आसपास जंगली जानवर हैं। तुम सो रहे हो इसलिए सुन नहीं सकते, लेकिन हम सुन सकते हैं।'
उस शोर-शराबे, टॉर्च की रोशनी और बिजली के हॉर्न की वजह से मुझे पता था कि कोई भी जानवर आधे मील के दायरे में नहीं आएगा। लेकिन इस बात का ज़िक्र करना बेकार था। सुबह करीब 4 बजे उनकी सारी हिम्मत जवाब दे गई।
उस आदमी ने मुझे पुकारते हुए कहा, 'जाग जाओ, और चलो इस भयानक जगह से निकल चलते हैं। यहां रहना हमारे लिए खतरनाक है।'
एक बार फिर मैंने कुछ नहीं कहा, बस चुपचाप उठकर गाड़ी में बैठ गया। हमेशा, जब जंगल छोड़कर सभ्यता में लौटने का समय आता है, तो मुझे अफ़सोस होता है। लेकिन इस बार मामला अलग था। मैं बुरी तरह से तंग आ चुका था और इंजन स्टार्ट होते ही मुझे राहत महसूस हुई, जब हमने बैंगलोर की वापसी यात्रा शुरू की।
एक बार, जिस कारखाने में मैं पहले काम करता था, वहाँ के एक बहुत वरिष्ठ अधिकारी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उन्हें एक बहुत बड़े मगरमच्छ का शिकार करने ले जा सकता हूँ, क्योंकि उन्हें उसकी खाल की बहुत ज़रूरत थी। मैं मान गया और उसी रात हम उनकी कार में कावेरी नदी के किनारे स्थित होगेनैकल के लिए निकल पड़े, जहाँ ये सरीसृप अच्छी खासी संख्या में पाए जाते हैं। हम चार लोग थे: अधिकारी, उनकी महिला मित्र, मेरा बेटा डोनाल्ड और मैं।
अगली सुबह करीब नौ बजे जब सूरज बहुत तेज़ हो रहा था, हमने एक छोटी नाव किराए पर ली, उसके किनारों को टहनियों से ढक दिया और नदी के किनारे रेत के टीलों पर धूप सेंक रहे मगरमच्छों की तलाश में धीरे-धीरे नदी में बहने लगे। मैंने उस बड़े आदमी से कहा कि जब हमें कोई मगरमच्छ दिखेगा, तो उसे किनारे पर उतरना होगा, जंगल में जाना होगा और चुपचाप उसका पीछा करना होगा जब तक कि वह गर्दन पर गोली मारने के लिए काफी करीब न पहुँच जाए। छोटी नाव में सीधे उसके पास जाना उसे खोने जैसा होगा, क्योंकि मगरमच्छ बहुत चालाक होते हैं और खतरा आते ही पानी में वापस चले जाते हैं। गर्दन में गोली मारने से मगरमच्छ की रीढ़ की हड्डी लकवाग्रस्त हो जाती है और वह आखिरी क्षण में शरीर को घुमाकर पानी में वापस नहीं जा पाता, जिसके बाद वह फिर कभी दिखाई नहीं देता। यों तो धाराएँ शव को मीलों दूर बहा ले जाएँगी या मगरमच्छ नदी के तल में चट्टानों के बीच फंसकर वहीं मर जाएगा।
लेकिन उस महान व्यक्ति ने मेरी बात का तीखे शब्दों में खंडन किया। उन्होंने कहा कि उन्होंने एक किताब में पढ़ा है कि बाएं अगले पैर के ठीक पीछे, दिल में गोली मारना सबसे कारगर होता है। मैंने समझाने की कोशिश की कि इसमें कोई शक नहीं कि दिल में गोली लगने से मगरमच्छ मर जाएगा, लेकिन इससे पहले कि वह नदी में वापस कूद जाए और गायब हो जाए। लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी।
कुछ देर बाद हमें एक बड़ा मगरमच्छ रेत के टीले पर धूप सेंकता हुआ दिखाई दिया। हमने अपने आदमी को किनारे पर, नज़रों से ओझल और नदी से एक चौथाई मील ऊपर की ओर उतार दिया। फिर मैं अपनी छोटी नाव में बैठकर दूरबीन से सारा दृश्य देखने लगा। अपने भारी-भरकम शरीर के बावजूद उसने बड़ी कुशलता से शिकार किया। जिस टीले पर मगरमच्छ लेटा था, वह थोड़ा ऊंचा था, और काफी देर बाद मैंने शिकारी को टीले के ऊपर आते देखा। वह लेट गया और सावधानी से निशाना साधा।

अचानक मगरमच्छ अपनी पूंछ पर खड़ा हुआ और ज़ोरदार छपछपाहट के साथ पानी में कूद गया। अगले ही पल राइफल की तेज़ आवाज़ सुनाई दी।
मैंने छोटी नाव के मालिक को जल्दी से उस जगह पर चप्पू चलाने का आदेश दिया। वहाँ मेरा ग्राहक चौड़ी मुस्कान के साथ मुझसे मिला, गर्मी और मेहनत से उसका चेहरा गहरा लाल हो गया था। उसने कहा, 'मैंने उसे पकड़ लिया, ठीक बाएं कंधे के पीछे।'
'मुझे अफसोस है कि आपने ऐसा नहीं किया है,' मैंने जवाब दिया। 'इसमें कोई शक नहीं कि आपने उसे मारा होगा और वह मर जाएगा। लेकिन हम उसे कभी नहीं ढूंढ पाएंगे।'
'बकवास!' उसने रूखेपन से जवाब दिया। 'कुछ मछुआरों को बुलाओ और उनसे कहो कि वे नदी में जाल डालें, हम उसे जल्द ही पकड़ लेंगे।'
ओताईमलाई गाँव से मछुआरों को जालों के साथ लाने के लिए एक छोटी नाव भेजी गई। वे एक घंटे बाद आए और जाल डाले गए। लेकिन कोई मरा हुआ मगरमच्छ नहीं मिला। नदी बहुत गहरी थी और जाल तल तक नहीं पहुँच पाए। इसके अलावा, तेज़ धाराएँ भी थीं।
मैंने सांत्वना भरे लहजे में सुझाव दिया, 'चलिए एक और कोशिश करते हैं।'
'तुम मुझे नहीं जानते,' उस महान व्यक्ति ने कहा। 'जब तक मुझे सफलता नहीं मिल जाती, मैं कभी हार नहीं मानूंगा।'
शाम तक जाल बिछाए गए, लेकिन हमें कोई मरा हुआ मगरमच्छ नहीं मिला। उस रात खाने के समय मैंने सुझाव दिया कि चूंकि हमें अगले दिन काम पर वापस जाना था, इसलिए हमें लगभग दस बजे निकल जाना चाहिए।
मुझे बताया गया, 'तुम मुझे नहीं जानते। मैं तब तक हार नहीं मानूंगा जब तक मुझे सफलता नहीं मिल जाती। मैं तब तक इस जगह को नहीं छोड़ूंगा जब तक मुझे मेरा मगरमच्छ वापस नहीं मिल जाता।'
अगली सुबह मैंने फिर से सुझाव दिया कि हम एक और मगरमच्छ की तलाश करें। मेरे साथी ने मुझे तिरस्कार भरी निगाहों से देखा। जाल फिर से डाला जाने लगा, लेकिन दोपहर के भोजन तक कोई शव नहीं मिला। जब हम जंगल के बंगले में दोपहर के भोजन के लिए बैठे, तो वह महान व्यक्ति पसीने से तरबतर था और जोर-जोर से गालियाँ दे रहा था। उसने अपना बुश-कोट उतारकर एक कुर्सी पर फेंक दिया और कमर तक नंगे होकर बैठ गया। उस महान व्यक्ति को आराम से बैठे देखकर, डोनाल्ड ने भी वैसा ही किया और बैठने से पहले अपनी कमीज उतार दी, वह भी कमर तक नंगे होकर बैठ गया।
अचानक उस महान व्यक्ति ने पूछा: 'एंडर्सन, आपके कारखाने में सीधे आपके अधीन कितने लोग काम करते हैं?' प्रश्न की अचानकता पर आश्चर्यचकित होकर, मैंने स्वतः ही उत्तर दिया, 'लगभग 110।'
मुझे बेहद आश्चर्य और निराशा हुई जब उसने तीखे लहजे में जवाब दिया: 'यह बात मुझे वाकई हैरान करती है कि आप उन्हें कैसे नियंत्रित करती हैं जबकि आप अपने ही बेटे को नियंत्रित नहीं कर सकतीं।'
मेरे चेहरे पर हैरानी देखकर उसने ठंडे स्वर में कहा, 'तुम अपने बेटे को एक महिला की मौजूदगी में नग्न अवस्था में लंच टेबल पर बैठने की अनुमति देते हो!'
इससे पहले कि मैं जवाब दे पाता, डोनाल्ड बीच में ही बोल पड़ा, 'और तुम? क्या तुम भी नग्न नहीं हो? तुम्हें दूसरों को वह करने से रोकने के लिए खुद ऐसा करने के बजाय एक उदाहरण पेश करना चाहिए।'

उस आदमी का चेहरा गुस्से से पहले तो गहरा लाल हो गया, फिर लगभग बैंगनी पड़ गया। 'अरे यार, क्या तुम इस नासमझ को मुझसे, अपने वरिष्ठ अधिकारी से, इस तरह बात करने की इजाज़त देते हो?' फिर डॉन की ओर मुड़कर उसने गुस्से से कहा: 'चुप हो जाओ, नहीं तो मैं तुम्हें चुप करा दूंगा।'
यह बात डोनाल्ड के लिए कुछ ज़्यादा ही हो गई। वह जवान और बहुत फुर्तीला था। उसने जवाब दिया, 'अरे बूढ़े, मेरे पिताजी भले ही तुम्हारे नीचे काम करते हों, लेकिन मैं नहीं। बाहर आओ, मैं तुम्हें तुम्हारे उस घिनौने मगरमच्छ को खिला दूंगा।'
मुझे नहीं पता कि उस महान व्यक्ति को लकवा कैसे नहीं हुआ। शायद उनके दोस्त ने हमें तुरंत बैंगलोर लौटने का सुझाव देकर स्थिति को संभाला, और हमने वैसा ही किया। वह व्यक्ति उसके बाद दो साल से अधिक समय तक मेरा बॉस रहा, लेकिन उसने मुझसे फिर कभी बात नहीं की। डॉन और मैं आज भी इस घटना को याद करके हँसते हैं और सोचते हैं कि महान लोग इतने मूर्ख कैसे हो सकते हैं।
अब मैं आपको अपने दोस्त फ्रेडी गैलिफ और उस जंगली हाथी के बारे में बताता हूँ - जो आधा बदमाश और निश्चित रूप से एक खूंखार था - जो उसकी विशाल जागीर के एक कोने में रहता था, और जिसके लिए फ्रेडी के मन में एक खास लगाव था, क्योंकि इस बूढ़े राक्षस की उपस्थिति और उसकी रात की सैर लकड़ी चोरों की गतिविधियों को काफी हद तक हतोत्साहित करती थी, जो समय-समय पर उसकी जागीर के दूरदराज के हिस्सों में उगने वाली मूल्यवान लकड़ी और बांस के लिए धावा बोलते थे।
फ्रेडी गैलिफ के पास काफी बड़ी जागीर है, लगभग 600 एकड़ जमीन, जिसका लगभग आधा हिस्सा अछूता जंगल है। यह जागीर मैसूर राज्य के भीतर और कूर्ग की सीमा पर स्थित है, जो कुछ समय पहले तक मैसूर के बड़े क्षेत्राधिकार के पश्चिम में स्थित एक छोटा स्वतंत्र राज्य था। पश्चिमी घाट की पर्वत श्रृंखलाएं यहीं से शुरू होती हैं और यह इलाका जंगली, ऊबड़-खाबड़ और घने जंगलों से आच्छादित है। इसकी सुंदरता शब्दों में बयान नहीं की जा सकती। बड़े-बड़े इलाके पूरी तरह से बांस के जंगल से ढके हुए हैं, और बांस के तने बहुत ऊंचे और बेहद मजबूत होते हैं, कभी-कभी तो आपकी जांघ जितने मोटे।
फ्रेडी की संपत्ति के पश्चिम में बांस के जंगल का एक विशाल क्षेत्र स्थित है जिसे अन्नाय चौक कहा जाता है, जिसका अर्थ है 'हाथी का निवास', जो एक सरकारी आरक्षित वन है और लंबे समय से हाथियों के लिए एक बुरी प्रतिष्ठा रखता है और कई बदमाशों का जन्मस्थान रहा है, जब तक कि किसी को याद है।
मैंने इस हाथी को 'फ्रेडी का बदमाश' नाम दिया है। यह हाथी जाहिर तौर पर अन्नय चौक से आया था, लेकिन किसी अज्ञात कारण से फ्रेडी की जागीर में आ गया और उसकी ज़मीन के पश्चिमी कोने में लगभग स्थायी रूप से रहने लगा, जहाँ घना जंगल और कोमल बांस हैं, जो हाथियों का पसंदीदा भोजन हैं। मेरे मित्र ने, जिसने इस हाथी को कई बार देखा है, जो विवरण दिया है, उससे पता चलता है कि यह बदमाश हाथी बहुत बूढ़ा है, क्योंकि उसके कानों के ऊपरी सिरे मुड़े हुए हैं। जाहिर तौर पर इसकी ऊंचाई नौ फीट से अधिक है, जो एक भारतीय हाथी के लिए काफी बड़ी है।
फ्रेडी जिस छोटी सी झोपड़ी में रहता है, उससे कुछ ही दूरी पर एक प्राकृतिक झील है, जिसे भारत में 'तालाब' कहा जाता है। फ्रेडी ने इस तालाब का फायदा उठाते हुए एक तरफ मेड़ बना ली है और एक नाली के फाटक से पानी लेकर कई धान के खेतों की खेती करता है, जहां वह बेहतरीन गुणवत्ता वाले चावल उगाता है।
चांदनी रात में कुछ लुटेरे धान चुराने आए। वे बैलगाड़ी में आए थे, जिसमें धान भरकर ले जाने का उनका इरादा था। और उन्होंने ठीक वैसा ही किया। उन्होंने धान चुराया, गाड़ी में भरा और उसे लेकर चले गए। लेकिन बदकिस्मती से एक मील दूर उनकी

मुलाकात 'फ्रेडी के बदमाश' से हो गई। उसने एक चोर को मार डाला, गाड़ी को चकनाचूर कर दिया और हैरानी की बात यह है कि उसने धान को छुआ तक नहीं।
एक बार फिर लकड़ी चोरों ने फ्रेडी की ज़मीन पर उग रहे एक सागौन के पेड़ को काट डाला, उसकी डालियाँ तोड़ दीं और उसका सीधा तना उठा ले गए। तना भारी था, इसलिए वहाँ छह-आठ चोर रहे होंगे। एक बार फिर 'फ्रेडी का बदमाश' कोने से निकला। उसने उनमें से एक को कुचल दिया। दूसरे को उसने मज़ाक में उछाल दिया, जिससे ज़मीन पर गिरने पर चोर की जांघ टूट गई। अगली सुबह उसकी मदद की गुहार सुनकर फ्रेडी और उसके आदमी वहाँ पहुंचे। वहाँ उन्हें भारी सागौन का लट्ठा, कुचला हुआ चोर और उसका घायल साथी मिला।
तीसरी बार चोरी हुई। इस बार फ्रेडी के उन तगड़े बैलों में से एक, जिन्हें वह हल खींचने के लिए रखता था, शिकार बना। उसे फ्रेडी की झोपड़ी के पीछे अन्य बैलों के साथ रखा गया था; चोरों ने आधी रात को उसे खोल दिया और ले गए। लेकिन ज़्यादा दूर नहीं। शायद वे आधा मील ही गए होंगे कि न्याय की पुकार करते हुए 'फ्रेडी का बदमाश' प्रकट हुआ। उसने चोरों में से एक का पीछा किया, जो अपनी जान बचाने के लिए फ्रेडी की झोपड़ी में शरण लेने आया था। चोर ने फ्रेडी के दरवाजे पर जोर-जोर से दस्तक दी। अपना जुर्म कबूल करने के बाद उसने खुद को पुलिस के हवाले कर दिया।
एक दिन फ्रेडी के कुछ दोस्त, एक साहसी जोड़ा, उसकी जागीर में आया। उन्होंने बताया कि उन्होंने एक साल जंगल में रहने का फैसला किया है और फ्रेडी से उसकी जागीर के किसी सुनसान हिस्से में अपने लिए एक झोपड़ी बनाने की अनुमति मांगी। यह एक अजीब अनुरोध था, लेकिन फ्रेडी को अनुमति देने में कोई हर्ज नहीं था, इसलिए उन्होंने दयालुता से सहमति दे दी। हालाँकि, उन्होंने उन्हें एक खतरनाक हाथी के बारे में चेतावनी दी, लेकिन वे बिल्कुल भी नहीं डरे और बरगद के पेड़ की शाखाओं के बीच, ज़मीन से लगभग बीस फ़ीट ऊपर, टार्ज़न की तरह एक झोपड़ी बनाने में जुट गए। उनके लिए यह वाकई सौभाग्य की बात थी कि उन्होंने यह ऊंचाई चुनी।
लगभग दो महीने तक उन्होंने बांस और पत्तों से अपनी झोपड़ी बनाई और लताओं से चढ़ने-उतरने के लिए सीढ़ी भी बनाई। इस दौरान वे फ्रेडी की साधारण सी झोपड़ी में रहें। फिर आखिरकार गृहप्रवेश का अवसर आया। पेड़ पर बना उनका घर तैयार था। फ्रेडी उसमें चढ़े और उसे बेहतरीन बताया। उस रात उस साहसी जोड़े ने बरगद के पेड़ पर बने अपने प्रेम-आश्रय में अपनी पहली रात बिताई।
अंधेरे में किसी समय उन्हें नीचे से अजीब आवाज़ें सुनाई दीं और उनकी नींद खुल गई। उन्होंने अपने सामने के दरवाजे से नीचे झाँका तो देखा कि एक विशाल हाथी नीचे ज़मीन पर खड़ा है, उसकी सूंड हवा में लहरा रही है, जो उनसे कुछ ही फीट नीचे है। सौभाग्य से उन्होंने कोई आवाज़ नहीं की, जबकि हाथी क्रोधित नहीं था, बल्कि केवल थोड़ा जिज्ञासु था। निस्संदेह उसने उनकी गंध महसूस की होगी, लेकिन वह ठीक से पता नहीं लगा पाया कि वे कहाँ हैं। वह एक घंटे से अधिक समय तक नीचे ही रहा, फैली हुई सूंड से सूंघता रहा। अगर वह सर्कस के तमाशों की तरह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो जाता, तो वह अपनी सूंड के सिरे से उन तक पहुँच सकता था और उनके कमज़ोर से घर को ज़मीन पर गिरा सकता था। सौभाग्य से उसने ऐसा नहीं किया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि चुप रहकर दंपति ने अपनी जान बचाई, क्योंकि अंततः हाथी ने उस ढांचे में रुचि खो दी और वहाँ से चला गया। सुबह होते ही वे नीचे उतर गए, और उन्होंने उस छोटी सी पेड़ की झोपड़ी में एक और रात नहीं बिताई जिसे उन्होंने इतनी मेहनत से बनाया था।

फ्रेडी अपने इस हाथी से बहुत लगाव रखता है, जिसे वह 'शरारती' कहता है। वह लगातार अधिकारियों को इसकी सूचना देने से इनकार करता है, और अपनी ज़मीन पर खुद हाथी को गोली मारने की कोशिश भी नहीं करता—जबकि यह जायज़ है। फ्रेडी का दावा है कि यह हाथी उसका बिना वेतन वाला रखवाला है। यह महत्वपूर्ण है कि अब चोर रात में फ्रेडी की ज़मीन को अकेला छोड़ देते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि फ्रेडी खुद सूर्यास्त के बाद बाहर नहीं निकलता। वांकई, बिना वेतन वाला रखवाला बढ़िया काम कर रहा है! वह घुसपैठियों और मालिक दोनों को बंद दरवाजों के पीछे रखता है!

---

* देखें नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग, जॉर्ज एलन एंड अनविन, लंदन।

छह

जंगल के जीव

अफ्रीका के बड़े शिकार और मांसाहारी जानवरों के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है, और भारत में बाघों, तेंदुओं और हाथियों के बारे में भी काफी कुछ लिखा गया है। साहित्य के इस विशाल भंडार में छोटे जानवरों को अक्सर भुला दिया जाता है।
इनमें से एक, भारतीय जंगली कुत्ता, जिसका लैटिन नाम सायन दुखुएन्सिस है, एक अत्यंत रोचक जानवर है, जो दिखने और आदतों में पालतू कुत्ते से बहुत मिलता-जुलता और संबंधित है। इसका रंग लाल-भूरा होता है, जो पेट पर सफेद हो जाता है। पीठ के बाल गहरे भूरे या काले रंग के होते हैं, कानों के सिरे अक्सर काले होते हैं, और इसकी पूंछ छोटी और घनी होती है, जिसके सिरे पर काले बालों का गुच्छा होता है। कभी-कभी इस काले गुच्छे के भीतर और अंत में सफेद बालों का एक छोटा गुच्छा होता है। एक नर कुत्ते का वजन चालीस पाउंड से अधिक होता है और इसकी ऊंचाई लगभग दो फीट होती है। गर्दन और जबड़े मजबूत होते हैं, छाती गहरी होती है, लेकिन कमर पतली होती है, जो यह दर्शाता है कि यह जानवर तेज गति के लिए बना है। खोपड़ी और दांतों में इसकी संरचना पालतू कुत्ते से भिन्न होती है, और इसमें स्तन ग्रंथियां अधिक होती हैं। पैर और उंगलियां बालों वाली होती हैं, और इनके पदचिह्न पालतू कुत्तों की तुलना में अधिक नुकीले होते हैं।
गर्म मौसम में जंगली कुत्ते झुंड में अधिक संख्या में इकट्ठा होते हैं। शायद इसका कुछ सहज संबंध इस तथ्य से है कि उस समय जंगलों में पानी की कमी होती है और जिन हिरणों का वे शिकार करते हैं, वे पानी के स्रोतों के आसपास अधिक संख्या में पाए जाते हैं, जहाँ उन्हें मजबूरी में पानी पीना पड़ता है। अक्टूबर के आसपास ये झुंड दो-दो के समूह में बंट जाते हैं; यही प्रजनन का मौसम होता है और ठंडे मौसम में पिल्ले पैदा होते हैं। एक बार में लगभग पाँच पिल्ले हो सकते हैं, जिनका घर चट्टानों के बीच की गुफा या ज़मीन में बना गड्ढा होता है। दूध छुड़ाने के बाद मादा कुत्ता अपने पिल्लों को कच्चा मांस खिलाती है, जिसे वह पहले शिकार से प्राप्त करती है, आंशिक रूप से पचाती है और फिर अपने बच्चों के लिए उल्टी कर देती है। बच्चे बुद्धि और समझदारी में तेजी से बढ़ते हैं। छोटी उम्र से ही वे खून और कच्चे मांस की गंध या दृष्टि से अत्यधिक उग्र हो जाते हैं।
जंगली कुत्तों की देखने, सुनने और सूंघने की क्षमता बहुत तीव्र होती है, खासकर सूंघने की, जिससे उन्हें अपना शिकार ढूंढने में मदद मिलती है। वे जंगल में किसी भी जीवित

प्राणों पर हमला करते हैं, जिनमें वयस्क बाघ और तेंदुआ, और बाइसन के बच्चे भी शामिल हैं, लेकिन हाथी, मनुष्य, लकड़बग्घे और सियार से दूर रहते हैं, शायद उन्हें अपने करीबी रिश्तेदार मानते हैं। हालांकि, इस सामान्य व्यवहार का एक अपवाद तब सामने आया जब छह जंगली कुत्तों ने एक लकड़बग्घे—जैकी की माँ—पर हमला करके उसे मार डाला, जैसा कि मैंने पहले ही बताया है। इससे यह साबित होता है कि जंगली जानवरों के साथ कोई निश्चित नियम नहीं होते। अप्रत्याशित घटनाएँ अक्सर घटित होती रहती हैं।
मुझे आंध्र प्रदेश के चित्तौड़ जिले में एक से अधिक ऐसे मामले पता हैं जहाँ इन कुत्तों ने खुद काफी नुकसान उठाने के बाद एक बाघ को बुरी तरह से घायल कर दिया। संभवतः बाघ, जो हमेशा हमलावर रहने और अपने शिकार जानवरों को डराने का आदी होता है, जब खुद शिकार बनता है तो वह पूरी तरह से घबरा जाता है और कुत्तों के हमले से पहले ही मानसिक रूप से पराजित हो जाता है। तेंदुआ और बंदर पेड़ या चट्टान पर चढ़कर भाग जाते हैं, लेकिन भ्रमित बाघ को पता चलने से पहले ही वह कुत्तों के चंगुल में फंस जाता है।
जंगली कुत्ते दिन में शिकार करते हैं, खासकर सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे के बीच के गर्म समय में। वे कभी-कभी अन्य समयों पर और चांदनी रातों में भी शिकार करते हैं। मैंने उन्हें कभी अंधेरी रात में शिकार करते नहीं देखा। शिकार करते समय वे एक विशेष रूप से तीखी, ऊँची आवाज़ में भौंकते हैं जिसे पक्षी की आवाज़ समझा जा सकता है। यदि वे किसी बड़े जानवर, जैसे कि सांभर, का शिकार कर रहे हों, तो झुंड का मुख्य भाग आराम से पीछे-पीछे दौड़ता है जबकि 'किनारे वाले' आगे दौड़कर शिकार पर घात लगाते हैं। उनका हमला करने का तरीका बहुत क्रूर होता है, क्योंकि वे शिकार किए गए जानवर को जकड़ लेते हैं और उसे सचमुच जिंदा ही टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं। आंखें, नाक, गला, कान, पेट और अंडकोष उनके हमले के पसंदीदा स्थान होते हैं।
एक बार जब मैं एक सूखी नदी के किनारे बैठा था, तभी एक पूरी तरह से विकसित सांभर हिरणी झाड़ियों से निकलकर जंगली कुत्तों से घिरी हुई दौड़ती हुई गुजरी; उसकी आंतें रेत में घिसटती हुई उसके पीछे लगभग बीस फीट तक फैली हुई थीं। उसकी दोनों आँखें कुतर दी गई थीं, उसका चेहरा बुरी तरह से फटा हुआ था, और दो कुत्तों के दांत उसके पेट में धंसे हुए थे जिन्हें दौड़ती हुई सांभर हिरणी घसीट रही थी। ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ इन कुत्तों द्वारा शिकार किए गए हिरण अपने निर्दयी दुश्मनों से बचने के लिए गाँव में भाग जाते हैं, निर्दयी हत्यारों की बजाय मनुष्यों का साथ पसंद करते हैं। दुर्भाग्य से, केवल मांस में रुचि रखने वाले ग्रामीण इस बात को नहीं समझते और कुत्तों को भगाकर हिरणियों को खुद मार देते हैं।
एक बार मैं मामंदूर में दोपहर की तेज़ गर्मी से बचने के लिए एक पेड़ के नीचे आराम कर रहा था, तभी मुझे जंगली कुत्तों की अजीब सी आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ की तरफ़ तेज़ी से बढ़ते हुए, मैंने देखा कि एक पूरी तरह से विकसित सांभर हिरणी पानी के एक कुंड में खड़ी थी, जिसमें वह अपनी जान बचाने के लिए दौड़कर आई थी। कई कुत्ते उसकी तरफ़ तैर रहे थे, जबकि दो उस तक पहुँच चुके थे। उनमें से एक उसकी पीठ पर चढ़ गया था और उसकी गर्दन काट रहा था। विंचेस्टर राइफल से चलाई गई चार गोलियों में से चार मारे गए, जबकि बाकी जंगल में भाग गए। सांभर हिरणी अभी भी पानी में खड़ी थी, अपनी बड़ी-बड़ी, भयभीत आँखों से मुझे घूर रही थी। मैं कुंड में उतरा और उसके पास गया। फिर मैंने उसे छुआ, यह सोचकर कि वह भाग जाएगी। बेचारी डर से काँप रही थी और हिली तक नहीं। मैंने उसकी गर्दन पर हाथ फेरा, लेकिन उसने मेरी तरफ़ देखा तक नहीं। उसका सिर और बड़े कान उस जगह की

तरफ़ मुड़े हुए थे जहाँ कुत्ते गायब हुए थे। आख़िरकार मैंने उसे कुंड से बाहर धकेलना शुरू किया। जब वह किनारे पर पहुँची तब भी नहीं भागी, जब तक मैंने उसकी पीठ पर दो ज़ोरदार थप्पड़ नहीं मारे। इससे उसे होश आया और वह सरपट दौड़ने लगी। उसे बुरी तरह काटा गया था और घावों से मांस और चमड़ी के कई टुकड़े लटक रहे थे। जंगली कुत्तों के नुकीले दांत पालतू कुत्तों की तुलना में ज़्यादा पीछे की ओर मुड़े होते हैं। इससे न केवल उन्हें भागते हुए शिकार पर अपनी पकड़ बनाए रखने में मदद मिलती है, बल्कि हमला करते या शिकार करते समय मांस के बड़े-बड़े टुकड़े फाड़ने में भी मदद मिलती है।
ये जानवर बेहद शिकारी होते हैं। ये सड़ा हुआ मांस या मृत जानवर नहीं खाते, न ही दूसरे जानवरों के शिकार को छूते हैं। इनका तरीका है खुद शिकार करना, और बार-बार शिकार करना, ताकि ये गर्म, लाल खून और ताज़ा मांस का आनंद ले सकें। ये जंगल के सबसे विनाशकारी जीव हैं। इसी कारण पूरे प्रायद्वीप में इनके शिकार के लिए इनाम दिया जाता है, और मादा और पिल्लों के लिए इनाम और भी अधिक होता है। इनाम का दावा करते समय खाल और खोपड़ी पेश करनी पड़ती है।
अपनी भयंकर आक्रामकता के बावजूद, जंगली कुत्ते जंगल में किसी पालतू कुत्ते से मिलने पर उसके प्रति एक अजीब सी मित्रता दिखाते हैं। कई बार, जब मैं अपने कुत्ते निपर के साथ बाहर होता हूँ, तो वह एक या एक से अधिक जंगली कुत्तों के साथ मेरे पास दौड़ता हुआ लौट आता है, जो उसके पीछे-पीछे खेलते हुए मस्ती करते हैं—हमेशा पिल्ले ही नहीं, बल्कि पूरी तरह से विकसित जानवर भी होते हैं। ऐसे मौकों पर मेरा मन उन्हें गोली मारने का नहीं करता, बल्कि मैं चुपचाप खड़ा होकर देखता रहता हूँ कि आगे क्या होता है। वे मेरे बिल्कुल पास तक आ जाते हैं, अपनी पूंछ हिलाते हैं और निपर को निहारते हैं, और वैसी ही धीमी आवाज़ निकालते हैं जैसी कोई भी कुत्ता दोस्ती करने के लिए निकालता है। मैं बिना हिले-डुले खड़ा रहता हूँ और वे गोल-गोल दौड़ते रहते हैं, मेरी पहुँच से थोड़ा दूर, मुझे पूरी तरह से अनदेखा करते हुए, निपर से दोस्ती करने की कोशिश करते हैं। दुर्भाग्य से निपर कभी कोई प्रतिक्रिया नहीं देता, बल्कि बहुत डरा हुआ लगता है। यहाँ तक कि जब मैं निपर को अपने पैरों के बीच में रखकर चला जाती हूँ, तब भी वे मेरे पीछे-पीछे आते हैं, अपनी पूंछ हिलाते हैं और दोस्ताना अंदाज़ में धीमी आवाज़ निकालते हैं।
मैंने आज तक जंगली कुत्तों द्वारा किसी मनुष्य पर हमला करने या उसे काटने का एक भी मामला न तो सुना है और न ही जाना है, लेकिन वे अजीब तरह से मनुष्यों से बेखौफ होते हैं और मनुष्य को देखकर खड़े रहते हैं, भागते नहीं, जबकि बाघ, तेंदुआ या हाथी भाग जाते। मैंने जंगली कुत्तों पर गोली चलाई है और एक-दो को मार गिराया है, जबकि बाकी झुंड आसपास ही मंडराता रहा। कई बार, मैंने आड़ लेकर एक कुत्ते को गोली मारी है और भागने के बजाय, पूरा झुंड पास आकर मरे हुए जानवर को सूंघने लगा। मुझे बताया गया है कि ऐसी परिस्थितियों में वे अपने मरे हुए साथी को भी खा जाते हैं।
उत्तरी कोयंबटूर जिले के दिंबुम के पास, जब मैं अपनी स्टडबेकर कार से सड़क के मोड़ पर मुड़ रहा था, तो मेरी नज़र एक जंगली कुतिया पर पड़ी जो सड़क पार कर रही थी और उसके पीछे तीन अधेड़ पिल्ले थे। माँ और पिल्लों को गोली मारने का मन नहीं हुआ, इसलिए मैंने अचानक कार रोकी, बाहर निकला और उनका पीछा करने लगा। लेकिन जंगल में कुछ ही कदम आगे बढ़ने पर तीनों पिल्ले अपनी माँ से अलग होकर मेरे चारों ओर भौंकने लगे, अपनी पूंछ हिलाते हुए, लेकिन मेरी पहुँच से थोड़ा दूर रहे। उनके चेहरों के भावों से स्पष्ट था कि वे दोस्त बनाने के लिए बेताब थे, लेकिन पास आने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे। माँ अलग खड़ी थी, शांत भाव से मुझे और

अपने बच्चों को देख रही थी। मुझे बताया गया है कि अगर उन्हें छोटी उम्र में पकड़ लिया जाए तो उन्हें आसानी से पाला जा सकता है और वे अच्छे पालतू जानवर बन सकते हैं, लेकिन मुझे अभी तक इसे स्वयं आज़माने का अवसर नहीं मिली है।
यह एक विचित्र तथ्य है कि जंगल के किसी भी हिस्से में जंगली कुत्तों की संख्या में अत्यधिक उतार-चढ़ाव होता रहता है। कभी-कभी जंगल का एक हिस्सा उनसे भरा पड़ा होता है। तो कभी-कभी एक भी कुत्ता नज़र नहीं आता और न ही उनके कोई पदचिह्न मिलते हैं। कुछ आदिवासियों ने मुझे बताया है कि वे किसी विचित्र बीमारी से ग्रस्त हैं, और ऐसे समय में उन्होंने जंगल में सड़ते हुए कई जंगली कुत्तों के शव देखे हैं। कोई भी जानवर मरे हुए जंगली कुत्ते के पास उसे खाने नहीं जाता; यहाँ तक कि लकड़बग्घा या सियार भी नहीं। गिद्ध ही एकमात्र ऐसे प्राणी हैं जो ऐसे शव मिलने पर उन्हें खा जाते हैं। व्यक्तिगत रूप से, मैंने कभी भी किसी ऐसे जंगली कुत्ते का शव नहीं देखा है जिसे किसी अन्य जीवित प्राणी ने न मारा हो, और मेरा मानना है कि प्रकृति ने इन जानवरों को अत्यंत बेचैन और निरंतर गतिशील रहने के लिए बनाया है। यदि वे स्थायी रूप से किसी एक स्थान पर ही रहें तो जल्द ही वहाँ शायद ही कोई प्राणी जीवित बचेगा।
मैंने जंगली कुत्तों या लकड़बग्घों को रेबीज़ होने के बारे में कभी नहीं सुना, लेकिन सियार के जलभराव (हाइड्रोफ़ोबिया) से पीड़ित होकर मनुष्यों और अन्य जानवरों को काटने के कई मामले देखे हैं। संभवतः जानवरों के अवशेषों की तलाश में गांवों में घूमने के कारण उन्हें किसी रेबीज़ से पीड़ित ग्रामीण कुत्ते से यह बीमारी लग गई होगी, जिसके बाद उन्होंने इसे आपस में फैला दिया होगा।
बैंगलोर से लगभग तैंतालीस मील दूर, सलेम जिले में जंगल के किनारे जोवलागिरी नाम का एक गाँव है। जोवलागिरी के दक्षिण-पश्चिम में, लगभग तीन मील की दूरी पर, चट्टानी पहाड़ियों से घिरे जंगल में एक शांत तालाब है, जहाँ घाटियों में घने बांस उगते हैं। यह वह स्थान है जहाँ अक्सर पैंथर पानी पीने आते हैं। एक रात जब पूर्णिमा होने वाली थी, मैंने जल्दी खाना खाया और कुछ सैंडविच और अपने कुत्ते निपर को साथ लेकर जोवलागिरी के लिए निकल पड़ा। निपर को मैंने जोवलागिरी से लगभग नौ मील दूर देवराबेट्टा गाँव से बड़ी मुश्किल से हासिल किया था।* मेरा इरादा था कि मैं इस तालाब पर आधी रात तक बैठा रहूँ, इस उम्मीद में कि शायद कोई पैंथर आ जाए, लेकिन उससे भी ज़्यादा एकांत और चाँदनी का आनंद लेने का। मैं शाम 7 बजे तक जोवलागिरी पहुँच गया और एक घंटे से भी कम समय में तालाब तक पहुँच गया।
लेकिन मुझे पहले ही आगाह कर दिया गया था। शिकारी, जो पानी की तलाश में निकले किसी अनजान हिरण का शिकार करने आए थे, वहाँ पहले से ही मौजूद थे। तेज़ चाँदनी में मैंने काले कंबलों में लिपटे दो लोगों को जंगल से भागते हुए देखा, वे कमर झुकाए हुए थे, उनमें से एक के हाथ में बंदूक थी। मैं उस जगह की ओर बढ़ा जहाँ से वे भागे थे। एक बड़े पेड़ के नीचे मुझे पानी के गड्ढे के सामने एक अच्छी तरह से बनाया गया 'छिपने का स्थान' मिला। भागने की हड़बड़ी में शिकारी एक बिजली की टॉर्च, बारूद की एक छोटी बोतल, गोलियों के ढक्कनों का एक टिन का डिब्बा और सीसे के टुकड़ों से भरा एक कपड़े का थैला वहीं छोड़ गए थे, जो उनकी फ्लिंटलॉक बंदूक का गोला-बारूद था। इन वस्तुओं को 'युद्ध की लूट' समझकर मैं निपर के साथ छिपने के स्थान पर बैठ गया। रात के 10 बजे के ठीक बाद निपर चौकन्ना होकर उठ खड़ा हुआ। तभी कोने से एक चित्तीदार हिरणी पूरी रफ्तार से दौड़ती हुई आई, जिसके पीछे आधा दर्जन जंगली कुत्ते उसका पीछा कर रहे थे। वह अपनी जान बचाने के लिए तालाब में कूद गई, जबकि छह कुत्ते कुछ देर के लिए किनारे पर रुक गए।

तभी मैंने गोली चलाई और उनमें से तीन को मार गिराया। बाकी कुत्ते भागने लगे और मैं चौथी गोली चलाने ही वाला था कि अचानक कुछ अजीब होने लगा। कोई बहुत बड़ी चीज़ पेड़ से नीचे गिरी और मेरे बगल में, लगभग निपर के ऊपर ही जा गिरी, जो डर के मारे उछल पड़ा। वह एक इंसान था। एक पल के लिए मैं इतना हैरान रह गया कि उसे पकड़ नहीं पाया। बिजली की तरह वह उठा और भाग गया।
तब मुझे समझ आया कि क्या हुआ था। मेरे ऊपर पेड़ पर एक तीसरा शिकारी गहरी नींद में सो रहा था। उसे अपने दो साथियों के जाने और मेरे आने का ज़रा भी आहत नहीं था। मेरी तीन गोलियों की आवाज़ से वह इतना चौंक गया कि पेड़ से गिर पड़ा। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। बिलकुल भी नहीं। वह बेचारा आदमी एक मील दूर स्थित गाँव की ओर जाने के बजाय जंगल में भाग गया। जंगल में कहीं से मैंने उसकी चीखें सुनीं, वह गाँव वालों से मदद के लिए गुहार लगा रहा था और अजीबोगरीब झूठ बोल रहा था। उसने कहा कि कोई पानी के कुंड पर आया था और उसे गोली मार दी थी। उसने कहा कि वह भाग गया था, लेकिन उसे डर था कि कोई उसका पीछा करके उसे फिर से गोली मार देगा। वह अपने दोस्तों से गुहार लगा रहा था कि वे आकर उसे बचा लें।
कुछ ही देर में मुझे गाँव से जवाब में चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दीं। इस सारी अफरा-तफरी के बीच मुझे पता था कि पानी के गड्ढे तक किसी पैथर या किसी अन्य जीव के आने की कोई संभावना नहीं थी। जिस चित्तीदार हिरणी का कुत्तों ने पीछा किया था, वह भी भाग गई थी। मैं निपर के साथ छिपने की जगह से बाहर आया और उन तीन कुत्तों को देखा जिन्हें मैंने गोली मारी थी। मेरे लिए तीन शवों और अपनी राइफल को ले जाना असंभव था, इसलिए मैंने कुत्तों की खाल उतारने और केवल उनकी खाल लेने का फैसला किया।
मैंने यह काम शुरू ही किया था कि निपर ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा, और इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता, जंगल से आदमियों का एक बड़ा दल मेरी ओर दौड़ पड़ा। सबसे आगे मैंने पाँच बंदूकधारी देखे, सभी ने अपनी बंदूकें सीधे मेरी ओर तान रखी थीं। उनके पीछे कुल्हाड़ी, चाकू और लाठियों से लैस दूसरे आदमी भी थे। मुझे तुरंत समझ आ गया कि एकमात्र उपाय यही है कि मैं बेपरवाह दिखूं और जितना हो सके बहादुरी का दिखावा करूं। इसलिए मैंने जंगली कुत्ते की खाल उतारना जारी रखा, मानो मुझे उस समूह के दिखने से कोई फर्क ही न पड़ता हो। वे चारों ओर जमा हो गए। तभी उनमें से एक ने मुझसे रूखे स्वर में कहा:
'हमारे जिस साथी को तुमने गोली मारी है, उसका शव कहाँ है?' उसने पूछा।
'गोली मारी?' मैंने बड़े आश्चर्य और आक्रोश का नाटक किया। 'तुम्हारी दोस्त पेड़ से कूदकर भाग गया। मैंने उसे गोली नहीं मारी।'
उन्होंने जोर देकर कहा, 'हमने तीन गोलियों की आवाज सुनी।'
'क्या आपको पूरा यकीन है?' मैंने पूछा।
'बिल्कुल निश्चित,' उसने चिढ़कर जवाब दिया, और फिर दोहराया, 'तीन गोलियां।'
'आप बिलकुल सही हैं,' मैंने निष्कर्ष निकाला। 'मैंने तीन गोलियां चलाईं, और ये तीन मरे हुए जंगली कुत्ते हैं। मैं आपके दोस्त को कैसे मार सकता था?'
इस तर्क की सच्चाई धीरे-धीरे उनके दिमाग में बैठ गई। 'लेकिन उसने हमें चिल्लाकर बताया कि उसे गोली लगी है और तुम उसे मारने वाले हो।'
'मुझे पता है,' मैंने जवाब दिया। 'मैंने भी उसे सुना था। तुम्हारा दोस्त मूर्ख, कायर और झूठा है। वह जंगल में कहीं छिपा हुआ है। अभी उसे पुकारो, शायद वह जवाब दे दे।'
सब मिलकर पुकारने और सीटी बजाने लगे। थोड़ी देर बाद उसने भी जवाब दिया। जो लोग कुछ पल पहले इतने आक्रामक थे, अब एक-दूसरे को शर्मिंदगी से देखने

लगे। मैं समझ गया कि वे हार चुके हैं और मैंने उन्हें काबू में कर लिया है। मैंने पुलटवार करके अपनी बढ़त को और मजबूत करने का निश्चय किया।
मैंने अपनी विंचेस्टर पिस्तौल छुपकर ही छोड़ दी थी और मेरे पास कोई हथियार नहीं था। धीरे-धीरे मैं उठा और उनके नेता से बोला: 'तुमने एक साहब पर अपने मूर्ख मित्र की हत्या का आरोप लगाने की हिम्मत कैसे की?' मैंने गरजते हुए कहा। 'याद रखो, मैं इस जंगल में लाइसेंसधारक हूँ और मुझे यहाँ शिकार करने का अधिकार है, जबकि वह एक शिकारी है, जो रंगे हाथों पकड़ा गया है।'
फिर, इससे पहले कि वे कुछ कह पाते, मैंने अपनी बात जारी रखी: 'मैं अब आपको एक खेल-खेल में प्रस्ताव देता हूँ, क्योंकि मैं स्वयं एक खिलाड़ी हूँ। या तो आप इस आदमी को झूठ बोलने के लिए बुरी तरह पीटेंगे, या मैं उसे पीटूँगा। इसके अलावा, उसे ये तीन मरे हुए कुत्ते जोवलागिरी में मेरी कार तक ले जाने होंगे। यदि आप मेरी शर्तें मान लेते हैं, तो मैं आपको वचन देता हूँ कि मैं इस मामले को भूल जाऊँगा और किसी को कुछ नहीं बताऊँगा। यदि आप सहमत नहीं होते हैं, तो मैं न केवल उसकी, बल्कि आपके पूरे गाँव की शिकायत करूँगा कि उसने मुझे हथियारों से धमकाया है, और आपके हथियार ज़ब्त करवा दूँगा।'
वे एक-दूसरे को देखते हुए चुप रहे। फिर दोनों ने एक-दूसरे को बोलने का इशारा किया। अंत में नेता ने हिचकिचाते हुए कहा, 'मैं खुद उस मूर्ख को पीटूँगा और उससे तुम्हारे लिए तीनों कुत्तों को उठवाऊँगा। लेकिन क्या तुम वादा करोगे कि हमारी शिकायत नहीं करोगे?'
मैंने जवाब दिया, 'मैंने पहले ही वादा कर दिया है।' फिर पेड़ के नीचे छिपी जगह की ओर इशारा करते हुए मैंने कहा: 'वहाँ किसी की टॉर्च, बारूद की बोतल, गोलियों के ढक्कनों का डिब्बा और छर्रों की थैली है। इन्हें ले आओ और मेरी राइफल मेरे पास ले आओ।'
एक आदमी इस आदेश का पालन करने के लिए दौड़ पड़ा। तभी वह आदमी, जो इस सारे हंगामे का कारण था, बेखौफ़ होकर जंगल से बाहर निकला और बड़े ही शान से हमारी ओर बढ़ा। बेचारे को नहीं पता था कि उसके साथ क्या होने वाला है। जैसे ही वह करीब आया, सरदार ने उसके चेहरे पर ज़ोरदार प्रहार किया। वह ज़मीन पर गिर पड़ा, तभी एक दूसरे आदमी ने उसे बेरहमी से लात मारी। उसकी हैरानी जल्द ही दहशत भरी चीखों और दया की भीख में बदल गई। सरदार ने उसके बाल पकड़कर उसे ज़बरदस्ती खड़ा किया।
'मुझे दिखाओ कि तुम्हें कहाँ चोट लगी है?' उसने फुफकारते हुए कहा।
उस व्यक्ति ने डरते हुए उत्तर दिया, 'मैंने तीन गोलियों की आवाज सुनी और मुझे लगा कि मुझे गोली लग गई है।'
अंततः उन्होंने उसे पीटना बंद कर दिया और वह बुरी तरह घायल हो गया। फिर उन्होंने तीनों मरे हुए कुत्तों को उसकी पीठ पर लाद दिया और मुझे भी अपनी राइफल उसके गले में टांगने के लिए कहा। लेकिन वजन बहुत ज्यादा होता। मुझे पता था कि तीनों कुत्तों का वजन लगभग चालीस पाउंड (लगभग 40 पाउंड) थी, और मैं नहीं चाहता था कि वह आदमी गिर जाए और मेरी राइफल को नुकसान पहुंचे। इसलिए मैंने जवाब दिया कि मैं हमेशा अपनी राइफल खुद लेकर चलता हूँ।
उस रात या यूँ कहें कि अगली सुबह, क्योंकि सब कुछ खत्म होने तक आधी रात हो चुकी थी, मैंने अपने सबसे अच्छे दोस्तों से विदा ली, उन लोगों के समूह से जो शायद मुझे जान से मारने के इरादे से आए थे। फिर मैं जोवलागिरी और कार की ओर मुड़ा, जिसपर मेरे पीछे-पीछे था और बेचारा शिकारी तीन कुत्तों के बोझ तले लड़खड़ाता हुआ मेरे आगे था, कहीं वह अचानक कुत्तों को छोड़कर भाग न जाए।

एक और जानवर जिसके बारे में बहुत कम लिखा गया है, वह है भारतीय जंगली सूअर, जिसे आमतौर पर जंगली सूअर के नाम से जाना जाता है। पुराने समय में ऐसी कहानियां प्रचलित थीं कि कैसे साहसी निमरोद जनजाति के लोग 'पिगस्टिकिंग' करते थे—यानी घोड़ों पर सवार होकर भाले से जंगली सूअर का शिकार करते थे। इनमें से कुछ खूंखार शिकारी अपने इस शौक में विविधता लाने के लिए कुत्तों के झुंड पालते थे, जिनमें से कुछ मिश्रित नस्ल के होते थे, लेकिन ज्यादातर बुल टेरियर नस्ल के होते थे। वे इन कुत्तों का इस्तेमाल न केवल जंगली सूअर, बल्कि भालू और एक बार तो बाइसन को भी शिकार करने के लिए करते थे। जब शिकार किए जाने वाले जानवर पर कुत्ते झपट पड़ते थे, तो शिकारी मौके पर पहुंचकर घोड़े पर सवार होकर ही उसे गोली मारकर या भाले से मार गिराता था।
एक कुत्ते प्रेमी के तौर पर, मुझे लगता है कि यह तथाकथित खेल बेहद क्रूर था, खासकर जंगली सूअरों के खिलाफ इस्तेमाल किए जाने पर। एक पूरी तरह से उत्तेजित सूअर के सामने सबसे बहादुर कुत्ते का भी कोई चांस नहीं होती, और कई कुत्ते तो गुस्से में भरे सूअर के दांतों से टुकड़े-टुकड़े हो जाते थे। और यहां तक कि जब बहादुर सूअर को अंततः गोली मारकर या भाले से मार दिया जाता था, तब भी उसे अपनी बहादुरी दिखाने का उचित मौका नहीं मिलता था, क्योंकि वह कई कुत्तों के हमलों से खुद को बचाने में लगा रहता था।
भारतीय जंगल में जंगली सूअर सबसे साहसी जानवर है, शायद रैटल को छोड़कर, जो उससे काफी छोटा चौपाया जानवर है, आधा नेवला और आधा भालू। मुझे उसकी जो खूबी सबसे ज्यादा पसंद है, वह यह है कि जब वह लड़ने के लिए तैयार होता है, तो वह आखिरी दम तक लड़ता है। उसके बाद उसके लिए भागने का कोई रास्ता नहीं होता। वह या तो विजयी होकर उभरेगा या अपनी जान कुर्बान कर देगा। इसका यह मतलब नहीं है कि सूअर आक्रामक जानवर है, जो जंगल में लड़ाई और शिकार की तलाश में घूमता रहता है। अगर उसे अकेला छोड़ दिया जाए तो वह बिल्कुल भी नुकसान नहीं पहुंचाता। मैंने कई बार जंगली सूअरों का आमना-सामना आमने-सामने और अचानक किया है, लेकिन उन्होंने कभी भी हमला नहीं किया, जैसा कि सुस्त भालू हमेशा करते हैं। वे या तो स्थिर खड़े रहे या मुठभेड़ से बचने के लिए भाग गए। लेकिन जब उनका पीछा किया जाता है, उन्हें धकेला जाता है और परेशान किया जाता है, या जब वे घायल हो जाते हैं और उनका पीछा किया जाता है, तो वे लड़ने के लिए पलट जाते हैं। इसका मतलब है हमला करना। यहां तक कि जब एक घायल पैंथर हमला करता है, तो वह जानलेवा हमला नहीं होता; वह बस हमला करके भाग जाता है। लेकिन जंगली सूअर तब तक बार-बार हमला करता रहेगा जब तक कि वह अपने प्रतिद्वंद्वी को खत्म न कर दे।
कई बार मैंने बाघ और जंगली सूअर के बीच लड़ाई के परिणाम देखे हैं। आम तौर पर सूअर मारा जाता है, लेकिन ऐसा तब होता है जब वह अपने प्रतिद्वंद्वी को बुरी तरह घायल कर देता है और ज़बरदस्त लड़ाई लड़ता है। भागते हुए बाघ द्वारा छोड़े गए खून के निशान इस बात का प्रमाण हैं। कुछ मामलों में परिणाम अलग भी रहे हैं: बाघ मारा गया है या सूअर द्वारा बुरी तरह पीटे जाने के बाद लड़ाई छोड़कर भाग गया है। एक बार टारगथी में मुझे लगभग बीस गज की दूरी पर एक मरे हुए सूअर और एक मरी हुई बाघिन के अवशेष मिले। सूअर स्पष्ट रूप से पहले मरा था क्योंकि वह लड़ाई के मैदान की ओर मुंह किए हुए थी; फिर बाघिन रेंगकर दूर जाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन मौत ने उसे जकड़ लिया। सूअर के गले में चीरा लगा था और उसकी मौत हो गई थी; बाघिन का पेट बुरी तरह फट गया था और उसकी आंतें बाहर गिर गई

थीं, जबकि उसकी गर्दन की धमनी सूअर के नुकीले, मुड़े हुए दांतों के ऊपर की ओर वार से कट गई थी।
एक विशाल जंगली सूअर का वजन 300 पाउंड या उससे भी अधिक हो सकता है, जबकि उसके घुमावदार दांत आठ इंच तक लंबे होते हैं। वह बुद्धिमान और ताकतवर होता है, और उसमें एक कट्टर योद्धा का साहस होता है। अगर उन्हें अकेला छोड़ दिया जाए, तो जंगली सूअर मिलनसार जानवर होते हैं और झुंड में रहते हैं। वे अपने बच्चों से बहुत प्यार करते हैं और उनकी बहादुरी से रक्षा करते हैं। सूअरों को पानी बहुत पसंद होता है और वे हमेशा उसके आसपास ही पाए जाते हैं। उनका आहार बहुत विविध होता है, जिसमें जड़ें, कीड़े, अपशिष्ट और खेती की फसलें, छिपकलियां, सांप और बाघ या तेंदुआ द्वारा मारे गए जानवर, साथ ही खेतों में बीमारी से मरे हुए मवेशी भी शामिल हैं। उन्हें जंगली फल भी बहुत पसंद होते हैं, खासकर खट्टे, जंगल में उगने वाले आम और अंजीर, और जब ये पेड़ से गिरते हैं तो वे इन्हें बड़ी मात्रा में खा जाते हैं। मादा सूअर टहनियों, घास या गिरी हुई बांस की शाखाओं से अपना घोंसला बनाती है, जिसके नीचे वह बच्चे को जन्म देने से पहले बिल बनाती है।
बड़े-बड़े जंगली सूअर अक्सर झुंड के नेता बनने के लिए आपस में लड़ते हैं, अपने नुकीले दांतों का बेधड़क और बेरहमी से इस्तेमाल करते हुए एक-दूसरे को बुरी तरह घायल कर देते हैं। ठंड के मौसम में और बारिश के दौरान, वे एक-दूसरे से चिपककर गर्मी पाने के लिए झुंड बना लेते हैं, अक्सर पिरामिड की तरह एक-दूसरे के ऊपर सो जाते हैं। एक बार मैं लिंगधल्ली से केमंगोंडी घाट रोड पर गाड़ी चला रहा था। ज़ोरदार बारिश हो रही थी। अचानक हेडलाइट्स की रोशनी में मेरे सामने एक रुकावट दिखाई दी: सड़क के बीचोंबीच पत्थरों का ढेर जैसा कुछ दिखाई दिया, लेकिन असल में जंगली सूअरों का एक झुंड ठंड और बारिश से बचने के लिए एक साथ ढेर बनाकर बैठा था।
हमला करने से पहले जंगली सूअर दो-तीन तेज़, तीखी गुर्राहट करता है। फिर उसकी छोटी पूंछ पीछे की ओर उठ जाती है और वह आगे बढ़ता है। जब जंगली सूअर घिर जाते हैं, तो वे हमलावरों की पूरी पंक्ति पर हमला कर देते हैं, ऐसा कारनामा जो आदमखोर बाघ समेत सबसे खूंखार बाघ भी शायद ही कभी करते हैं। ऐसे उदाहरण भी सामने आए हैं जब घायल सूअर पीछा किए जाने पर रास्ता बदलकर पीछे से हमला कर देता है। मुझे इन अफ़वाहों पर तब तक विश्वास नहीं हुआ जब तक मैंने खुद इसका अनुभव नहीं किया। एक सुबह मैंने पनापत्ती के पास चिनार नदी के किनारे एक बड़े सूअर पर गोली चलाई, लेकिन वह बच निकला, हालांकि मुझे पता था कि गोली उसे लगी है। जहां मैंने उसे गोली मारी थी, वहां पहुंचकर मुझे खून मिला और मैंने उसके निशान का पीछा करना शुरू किया। निशान रेतीले तल से होते हुए नदी के किनारे तक और फिर दो छोटी पहाड़ियों के बीच एक नाले में जा रहे थे। मैं उस नाले में उसके पदचिह्नों का पीछा कर रहा था और उन्हें आगे जाते हुए साफ़ देख पा रहा था, तभी मुझे अपने ठीक पीछे से दो जानी-पहचानी गुर्राहट सुनाई दीं। मैंने ठीक समय पर मुड़कर देखा तो पाया कि कुछ ही गज की दूरी पर नाले के किनारे से एक जंगली सूअर मेरी ओर पीछे से दौड़ता हुआ आ रहा था। मैंने उसे ठीक समय पर गोली मार दी। अगर उसने गुर्राकर अपनी मौजूदगी का पता न चलने दिया होता, तो आज मैं यह नहीं लिख रहा होता। यह स्पष्ट था कि उसे पता था कि उसका पीछा किया जा रहा है, इसलिए वह नाले के किनारे से निकला, किनारे पर चढ़ा और पीछे से मुझ पर हमला करने के लिए वापस आ गया। यह सब उसकी बुद्धिमत्ता को दर्शाता है। उसे गोली मारने के बाद मैंने उसके खून के निशानों का पीछा करते हुए इस बात की पुष्टि की।

एक बार, मैं अपने चचेरे भाई स्टीवर्ट हर्स्ट और दोस्त विली थॉमस के साथ शेवरॉय हिल्स के येरकौड में सूअर का शिकार कर रहा था। एक विशाल सूअर मेरे पास से गुज़रा। मैंने गोली चलाई, लेकिन निशाना चूक गया। फ़िर स्टीवर्ट ने गोली चलाई, लेकिन उसका भी निशाना चूक गया। आखिर में विली थॉमस ने गोली चलाई; उसका निशाना नहीं चूका, लेकिन उसने सूअर को घायल कर दिया। तुरंत ही सूअर मुड़ा और मुझ पर हमला कर दिया। विली ने अपनी बंदूक की दूसरी नली से भी गोली चलाई, लेकिन वह उसे रोक नहीं पाया। अगले ही पल विली जमीन पर गिर पड़ा और सूअर के दांतों के तेज वार से उसकी ठुड्डी से कनपटी तक गहरा घाव हो गया। अगर स्टीवर्ट और मैं वहां उस बहादुर बूढ़े सूअर को मारने के लिए मौजूद न होते, तो वह ज़रूर वापस आता और विली की ज़िंदगी भी खत्म हो जाती। विली थॉमस, जिसने कई पैंथर और बड़े-बड़े जानवरों का शिकार किया है, इस मुठभेड़ को मौत के सबसे करीब का अनुभव मानता है। उसके शरीर पर आज भी उसे सूअर का निशान है।
सुस्त भालू एक ऐसा प्राणी है जिसमें मेरी हमेशा से गहरी दिलचस्पी रही है। शायद इसका कारण यह है कि वह काफी आम है और मैंने उसे अक्सर देखा है, चाहे वह जंगलों में जंगली अवस्था में हो या शहरी इलाकों में घुमंतू 'भालू-पालकों' के पास, जो प्रशिक्षित भालुओं को अपने साथ ले जाते हैं और उन्हें दर्शकों के सामने कुश्ती या नृत्य करवाते हैं। भालू के स्वभाव की सबसे बड़ी विशेषता है उसका पूरी तरह अप्रत्याशित होना! आप कभी निश्चित रूप से नहीं जान सकते कि वह आगे क्या करेगा। यही मुख्य कारण है कि जंगलों में घूमने वाले लोगों को, जहाँ भालू बहुतायत में होते हैं, अक्सर हमलों का सामना करना पड़ता है। भालू गहरी नींद सोते हैं, कभी-कभी लंबी घास में या अपने खोदे हुए गड्ढों में सोते हैं। जब वे सोते हैं तो गहरी नींद सोते हैं, अक्सर खर्राटे लेते हुए। राहगीर लगभग किसी भालू से टकरा ही जाता है, इससे पहले कि वह अचानक जाग जाए और अपने दुश्मन को इतना करीब पाए। फिर उस आदमी के साथ कुछ न कुछ बुरा हो ही जाता है।
भालुओं की दृष्टि और श्रवण शक्ति बहुत कमजोर होती है। उनकी सूंघने की क्षमता केवल कीड़े-मकोड़े, दीमक, जड़ और फल जैसे भोजन का पता लगाने तक ही सीमित है, और वे मनुष्यों की उपस्थिति को सूंघ नहीं पाते। अचानक डर जाने पर वे भागने का रास्ता ढूंढते हैं। लेकिन उनकी प्रतिक्रिया भी उतनी ही कमजोर होती है और शायद उन्हें लगता है कि घुसपैठिए को पहले मार गिराना ही उनके बचने का एकमात्र उपाय है। वे अपने दांतों और पंजों से हमला करते हैं, हमेशा चेहरे या छाती पर वार करते हैं। मैंने बिना किसी उकसावे के अचानक इस तरह के हमले में बुरी तरह से क्षत-विक्षत हुए लोगों के चेहरे देखे हैं। अक्सर उनकी एक या दोनों आँखें निकल जाती हैं।
मामंदुर में डेरा डाले हुए मुझे रात में खबर मिली कि दो आदमी, जो उस दोपहर जंगल से शहद ला रहे थे, नाला पार करते समय एक बाघ के हमले का शिकार हो गए और उनमें से एक की मौत हो गई। मैंने लालटेन लेकर एक बचाव दल निकाला, जिसमें वह आदमी भी शामिल था जो बच निकला था और जिसने जोर देकर कहा कि उसने बाघ ही देखा था। हम उस जगह पर गए जहाँ यह हादसा हुआ था। हमें शव मिला, लेकिन उसके बुरी तरह से क्षत-विक्षत चेहरे को देखकर हम आश्वस्त हो गए कि हत्यारा बाघ नहीं था। नाले की रेतीली जमीन की सावधानीपूर्वक जाँच करने पर पता चला कि एक भालू अपने बच्चे के साथ किनारे पर सो रही थी। न केवल उस आदमी के अचानक आने से भालू चौंक गई, बल्कि अपने बच्चे की मौजूदगी से भी, जिसे वह स्वाभाविक रूप से किसी भी संभावित हमले से बचा रही थी, उसने बिना किसी उकसावे के हमला कर दिया। सबूतों के सामने आने पर, मुझे घटनास्थल पर ले जाने वाले उस

आदमी ने कबूल किया कि उसने जानवर को देखने का इंतज़ार ही नहीं किया था। एक गुर्राहट की आवाज़ सुनकर, उसके बाद अपने दोस्त की दहशत और दर्द भरी चीख सुनकर, वह दौड़ने लगा और मामंदुर गांव पहुंचने तक नहीं रुका।
एक बार मैं अपने बेटे के साथ चमाला घाटी में डेरा डाले हुए था, जो उस समय लगभग चौदह वर्ष का था। घाटी में सांभर और चित्तीदार हिरण बहुतायत में पाए जाते हैं; दोनों ही प्रजातियों के अच्छे सिर वाले नर हिरण आम हैं। कुछ समय से डोनाल्ड मुझे एक नर हिरण का शिकार करने देने के लिए परेशान कर रहा था। हिरण का शिकार करने का मेरा शौक तो बहुत पहले ही खत्म हो चुका था और मैं उस अवस्था में पहुंच गया था जब मैंने इन सुंदर और निर्दोष प्राणियों को मारना छोड़ दिया था, इसलिए मैंने डोनाल्ड को अपने विचारों से प्रभावित करने की बहुत कोशिश की। लेकिन कम उम्र का होने के कारण वह और भी जिद्दी था और मुझे परेशान करता रहा, इसलिए अंततः मैं मान गया।
उन दिनों डोनाल्ड के पास अपनी राइफल नहीं थी। उसने मेरी राइफल उधार ली और अगली सुबह भोर से पहले ही अपने खून के प्यासे शिकार पर निकल पड़ा। मैं उसके पीछे-पीछे कुछ कदम चला, ताकि उसे मनचाहा निशाना लगाने का मौका मिल सके। चमाला घाटी में पार्क जैसे खूबसूरत इलाके हैं, जो मुझे विशेष रूप से पसंद हैं। हम ऐसे ही एक स्थान पर तब पहुँचे जब पूर्व की ओर स्थित एक बड़ी पहाड़ी, जिसे मंकी हिल के नाम से जाना जाता है, पर भोर की हल्की रोशनी फैल रही थी। डोनाल्ड मुझसे लगभग 100 गज आगे था, एक हिरण को देखने की उम्मीद में पेड़ों के तनों के बीच से होकर गुजर रहा था।
अचानक मैंने देखा कि वह एकदम रुक गया और ज़मीन से, मानो उसके पैरों के पास ही, एक काले रंग का रोएंदार जीव उभरा जिसे मैंने तुरंत एक सुस्त भालू के रूप में पहचान लिया। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा था, मानो उस पर हमला करने ही वाला था, लेकिन सौभाग्य से उसने अपना इरादा बदल दिया और उतनी ही तेज़ी से 'वूफ़! वूफ़!' की आवाज़ करते हुए भाग गया। उस समय छोटा बच्चा होने के कारण, डोनाल्ड भी भालू की तरह ही हैरान था। आज तक वह इसे अपने जीवन का सबसे बाल-बाल बचने वाला अनुभव मानता है।
भालू रात में घूमते हैं। कभी-कभी वे शाम या भोर में भी दिख जाते हैं—जैसे डोनाल्ड को उस सुबह भालू मिला था! लेकिन एक बार मेरी मुलाकात दोपहर करीब दो बजे हुई, जब दिन सबसे गर्म होता है। यह मुलाकात चमाला घाटी में हुई। मैं उस दिन अपनी पत्नी के साथ वहां गया था, और अपने पुराने दोस्त और शिकारी रंगा को भी साथ ले गया था, जो सलेम जिले से था। हम दोपहर में गुंडलपेटा नामक एक पानी के कुंड पर टहलने गए थे और पुलिबोन नामक स्थान पर वन विभाग के कुएं के पास अपने शिविर में लौट रहे थे। हम तीन लोग थे—मेरी पत्नी, रंगा और मैं—और रंगा ने काला कोट, काली शॉर्ट्स पहनी हुई थी और उसके पैर नंगे थे। मैं आगे था, मेरी पत्नी मेरे पीछे थी; रंगा सबसे पीछे था।
जिस रास्ते पर हम चल रहे थे, वह एक मोड़ पर मुड़ गया। वहाँ, कुछ गज़ की दूरी पर, दीमक का एक टीला था, और उसके पास खड़ा एक काला साया टीले के एक छेद में ध्यान से देख रहा था। उस पल के लिए मेरी पत्नी भूल गई कि रंगा उसके पीछे है, और यह सोचकर कि मेरा नौकर दीमक के टीले की जाँच कर रहा है, उसने तमिल में पुकारा: 'क्या देख रहे हो रंगा?'
काली आकृति मुड़ी और ज़ाहिर है, वह रंगा नहीं था। वह एक सुस्त भालू था। हम तीनों को देखकर आश्चर्यचकित होकर, वह एक कमज़ोर नज़र वाले इंसान की तरह मूर्खतापूर्ण ढंग से हमें घूरता रहा।

फिर रंगा—इस बार असली रंगा—पुकार उठा: 'कराडो! (भालू!) है! भागो!' ब्रुइन जान बचाकर भागा, गुस्से में, लेकिन चौंकते हुए, 'वूफ़! वूफ़!' बुदबुदाते हुए।
भालू दीमकों के टीलों को चूसना बहुत पसंद करते हैं। वे अपनी थूथन को दीमक के टीले में बने छेदों पर लगाते हैं, या कभी-कभी खुद ही छेद खोदते हैं, फिर मिट्टी में हवा भरते हैं, और अंत में पूरी ताकत से चूसना शुरू कर देते हैं। इससे निकलने वाली आवाज़ें विचित्र और मनोरंजक दोनों होती हैं। यह मधुमक्खियों या तितियों की भिनभिनाहट जैसी लगती है, और कभी-कभी बैगपाइप की धीमी गूंज जैसी भी। उनकी एक और अजीब आदत है कि वे अपने अगले पंजों को लगातार गुनगुनाते हुए चूसते रहते हैं। कुछ अनुभवी शिकारियों का मानना है कि वे लगातार खोदने से घायल या दर्द हुए पंजों को आराम देने के लिए ऐसा करते हैं, लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता, क्योंकि हमारा पालतू भालू ब्रूनो, जिसके बारे में मैंने इस किताब में कहीं और लिखा है, अक्सर अपने पंजे चूसता है, जबकि खोदने से उसके पंजे बिल्कुल भी घायल या दर्द नहीं करते। मुझे पूरा यकीन है कि पैर की उंगलियों के बीच से किसी प्रकार का स्राव निकलता है - चाहे वह चिपचिपा हो, मीठा हो या नमकीन हो, मुझे नहीं पता - जो इस आदत को सभी सुस्त भालुओं के लिए आकर्षक बनाता है।
भालू बहुत बुद्धिमान जानवर होते हैं। उनमें एक अद्भुत अंतर्ज्ञान होता है जो उन्हें जंगल में विभिन्न प्रकार के फलों के पेड़ों तक ले जाता है, खासकर जब उन फलों का मौसम होता है। बोरम बेरी इसका एक उदाहरण है। विशेष रूप से चमाला घाटी में, जब ये फल पककर जमीन पर गिरने लगते हैं, तो बड़ी संख्या में भालू दिखाई देते हैं। जंगली आमों के बारे में भी यही कहा जा सकता है, जो रेशेदार, खट्टे और मनुष्यों के स्वाद के लिए अरुचिकर होते हैं, हालांकि वे भालुओं के लिए एक स्वादिष्ट व्यंजन हैं; कटहल के बारे में भी यही कहा जा सकता है, जो आमतौर पर जंगलों में नहीं उगते बल्कि जंगल से सटे खेती वाले क्षेत्रों में लगाए जाते हैं; गन्ने के बारे में भी यही कहा जा सकता है, जिसे कृषि भूमि पर बड़े-बड़े खेतों में बोया जाता है; और विशेष रूप से जामुन या जुमलम के बारे में, जो अंगूर जैसे बैंगनी रंग के होते हैं और हर साल जुलाई और अगस्त में हजारों की संख्या में मूल पेड़ से गिरकर जमीन को बैंगनी-काले, हल्के कसैले फलों से ढक देते हैं।
सलेम जिले में चिनार नदी के किनारे जुमलम के पेड़ घनी संख्या में उगते हैं, और उन महीनों में बड़ी संख्या में भालू गिरे हुए फलों को खाने के लिए आते हैं। अपने शुरुआती दिनों में मैंने कुछ भालुओं का शिकार किया, लेकिन जल्द ही मुझे यह एक नीरस और नीरस शौक लगा। मैं दोपहर में अपने सहायकों, रंगा और बोयरा, और यदि उपलब्ध हो तो एक-दो और आदमियों के साथ पेड़ों पर जाता था, और गिरे हुए जुमलमों को मुख्य पेड़ के नीचे एक विशाल ढेर में इकट्ठा करता था। हम जितने अधिक फल इकट्ठा कर पाते और ढेर जितना बड़ा होता, मेरी योजना के लिए उतना ही अच्छा होता।
मैं बस या ट्रक के पुराने इनर ट्यूब से काटी गई रबर से बनी एक बहुत शक्तिशाली गुलेल और नदी की तलहटी से इकट्ठा किए गए चिकने कंकड़ों से भरी एक जेब लेकर तैयार रहता था। सूर्यास्त से पहले और चांदनी रात में, आपात स्थिति के लिए अपनी राइफल साथ लेकर, मैं पेड़ पर चढ़ जाता और सुस्त भालुओं के आने का इंतजार करता। लगभग आठ बजे वे एक-एक करके आते; बड़े, काले, बड़बड़ाते, गड़गड़ाते और भारी-भरकम जीव। उन्हें वहाँ कितना शानदार भोजन मिलता! मुझे यकीन है कि उन्होंने सोचा होगा कि वे स्वर्ग में हैं! जल्द ही जुमलम के ढेर पर चार, पाँच या उससे अधिक भालू टूट पड़ते।

और अब मस्ती का समय आ गया था। मैंने अपना हाथ जेब में डाला, एक उपयुक्त कंकड़ ढूंढा, उसे गुलेल के चमड़े के पट्टे में लगाया और अपने नीचे मौजूद सबसे बड़े भालू पर निशाना साधा—जो शायद बारह से पंद्रह फीट दूर था। मैंने पट्टे को पूरी तरह खींचा और फिर फेंक दिया। कंकड़ उस बड़े, काले भालू की गर्दन के पिछले हिस्से पर ज़ोर से लगा, और फिर तो जैसे मानो हंगामा मच गया!
'मेरे बगल में खड़े इस आदमी को धिक्कार है,' उसने शायद यही सोचा होगा, और इसी बीच उसने अपने निर्दोष पड़ोसी को बेरहमी से काट लिया।
'लड़ना चाहते हो ना?' पड़ोसी ने पूछा और फिर अपने अगले पड़ोसी को काट लिया। और यह सिलसिला चलता रहा, यहाँ तक कि मेरे नीचे भालुओं का एक झुंड ज़ोर-ज़ोर से चीख रहा था, जबकि मैं अपने पेड़ पर चूहे की तरह शांत बैठा था। किसी तरह उन्होंने विरोध की चीखों, दर्द भरी कराहों और गुस्से की कई गुर्राहटों के साथ खुद को अलग किया। खूब सूंघने, इधर-उधर भागने और फुफकारने की आवाज़ें आईं, लेकिन कुछ देर बाद वे उसी बेवकूफी भरी घटना को भूल गए और अपने सामने फैले फलों को खाने के लिए फिर से बैठ गए।
फिर गुलेल ने दूसरी बार वार किया, और चीखते-चिल्लाते, काटते-पीटते भालुओं का काला झुंड एक बार फिर एक-दूसरे पर टूट पड़ा, इस बार ज़्यादा देर तक। लेकिन आखिरकार वे खाने के लिए बैठ गए और एक-दूसरे की क्रूरता को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश करने लगे। फिर गुलेल ने तीसरी बार वार किया! यह सचमुच एक ज़बरदस्त लड़ाई थी! आखिरकार कुछ भालू अलग हो गए और इधर-उधर भटकने लगे। उन्हें वह जगह अस्वस्थ लगी।
लेकिन अचानक एक भालू ने ऊपर देखा और मुझे पहचान लिया। तो लकड़ी के ढेर में छिपा हुआ नीग्रो यही था! डर और गुस्से से चीखते हुए वह चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। उसका डर दूसरे भालुओं में भी फैल गया और वे सब एक साथ चीखने-चिल्लाने लगे। केवल एक बार एक भालू ने मेरे बारे में कुछ करने का सोचा। वह पेड़ के नीचे पहुंचा और तने पर चढ़ने लगा। मैंने सोचा कि मुझे उसे अपनी राइफल से गोली मारनी पड़ेगी, जिसे मैं एहतियात के तौर पर अपने साथ लाया था। लेकिन मैंने उसे भगाने की आखिरी कोशिश की। एक बार फिर गुलेल का इस्तेमाल करते हुए, मैंने उसके चेहरे पर ज़ोर से मारा। पूरे जंगल में ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए, वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा। फिर वह जल्दी से उठा और ज़ोर-ज़ोर से शिकायत करते हुए भाग गया।
जब एक भालू घायल हो जाता है तो दूसरे को काटना भालुओं का आम व्यवहार है। अगर दो भालू साथ हों और उनमें से एक को बंदूक या राइफल की गोली लग जाए, तो वह दूसरे पर बेरहमी से हमला कर देता है। सुस्त भालू जब चाहें आसानी से पेड़ पर चढ़ सकते हैं। वे मधुमक्खी के छत्ते चुराने के लिए ऊपर जाते हैं, जिन्हें वे ज़मीन पर गिरा देते हैं और फिर खा जाते हैं। उन्हें खजूर के पेड़ों पर लगे घड़ों से ताड़ी पीते हुए भी देखा गया है। इससे उन्हें कुछ नशा हो जाता है, ठीक वैसे ही जैसे महोवा फूल की मोटी पंखुड़ियाँ ज़मीन पर गिरने से होता है। हालाँकि वे बिना किसी परेशानी के पेड़ पर चढ़ सकते हैं, लेकिन उन्हें उतरने में कठिनाई होती है। कभी-कभी वे पीछे की ओर फिसलने की कोशिश करते हैं। कभी-कभी वे बस पेड़ छोड़ देते हैं और धड़ाम से ज़मीन पर गिर जाते हैं। ऐसा लगता है कि इस तरह से उन्हें कभी चोट नहीं लगती।
हालांकि वे चिड़चिड़े और आसानी से उत्तेजित हो जाते हैं, सुस्त भालू अपने बच्चों और एक-दूसरे के प्रति बेहद स्नेही होते हैं। जब वे अकेले होते हैं और घायल हो जाते हैं, तो एक भालू जोर से चीखता है और जंगल को अपनी पीड़ा के बारे में बताता है। उसके साथी भी सहानुभूति में चीखने लगते हैं। वे एक-दूसरे की मदद करने की कोशिश

करते हैं और मैंने एक नर भालू के बारे में सुना है जिसने गोली लगने से मरी अपनी मादा साथी के मृत शरीर को हटाने की कोशिश की थी। मादा भालू अपने बच्चों को - आमतौर पर एक बार में दो शावक पैदा होते हैं - अपनी पीठ पर तब तक रखती हैं जब तक वे काफी बड़े नहीं हो जाते, और अपनी जान की कीमत पर भी उनकी रक्षा करती हैं। सभी भालुओं, जिनमें नर भी शामिल हैं, की पीठ पर, कंधों के ठीक पीछे, बहुत लंबे बालों का एक गुच्छा होता है। संभवतः यह माँ के तेजी से चलने पर शावकों को बेहतर पकड़ प्रदान करने के लिए होता है।
यह सोचना गलत है कि सुस्त भालू पूरी तरह शाकाहारी होता है और उसका आहार केवल जड़ वाली सब्जियों, शकरकंद और कीड़ों तक ही सीमित होता है। ऐसा बिल्कुल नहीं है। कई बार, जब हम बाघ और तेंदुआ के शिकार के पास बैठे होते हैं, तो ब्रुइन आकर शव को खाना शुरू कर देता है, भले ही वह काफी ऊपर तक पहुंच गया हो। हमारा पालतू भालू ब्रुनो हर तरह का मांस बहुत पसंद करता है, खासकर सूअर का मांस, हिरण का मांस और जंगली बत्तखों का मांस।
स्लोथ भालू के पंजे, विशेष रूप से अगले पंजों के, सफेद, बहुत लंबे (लगभग चार इंच) और बेहद मजबूत होते हैं। उसके पिछले पैरों के निशान बिना उंगलियों वाले मानव पदचिह्नों से काफी मिलते-जुलते हैं। खाल उतारने के बाद जानवर का शरीर काफी हद तक मानव शरीर जैसा दिखता है और बहुत सुगठित होता है।
भालुओं को गर्मी का कुछ हद तक एहसास तो होता ही है, क्योंकि उनके शरीर पर लंबे और घने काले बाल होते हैं। उन्हें पानी बहुत पसंद होता है और वे अक्सर सूखे नदी-तल की रेत में गड्ढे खोदते हैं ताकि उसमें से रिसने वाले थोड़े से पानी तक पहुँच सकें। वे शोर मचाने वाले जीव हैं और तरह-तरह की आवाज़ें निकालते हैं। जब वे जोड़े में चलते हैं, लेकिन एक-दूसरे से दूरी बनाए रखते हैं, तो वे लगातार तीखी, गड़गड़ाहट भरी आवाज़ों के मिश्रण से एक-दूसरे से संपर्क बनाए रखते हैं। अगर उनमें से कोई एक लकड़ी के लट्ठे या पत्थर के नीचे कीड़ों का घोंसला ढूंढ लेता है, तो वह तुरंत चीखों और खुशी भरी चहचहाहटों की एक श्रृंखला से दूसरे भालू को बुलाता है।
भारतीय जंगलों का एक बेहद अनोखा जीव है पांच पैर की उंगलियों वाला पैंगोलिन, जिसे लैटिन भाषा में Manis pentadactyla नाम से जाना जाता है। इसकी औसत लंबाई लगभग साढ़े तीन फीट होती है, जिसमें से लगभग आधी इसकी पूंछ होती है। इसका शरीर मोटी, एक-दूसरे पर चढ़ी हुई, नुकीली धार वाली पपड़ियों के कवच से ढंका होता है और छूने पर यह गेंद की तरह गोल हो जाता है। पैंगोलिन बहुत कम ही दिखाई देता है और ज्यादातर लोग, यहां तक कि अनुभवी शिकारी भी, इसके अस्तित्व से अनजान हैं। इसका कारण यह है कि यह पूरी तरह से निशाचर जीव है, इतना कि यह रात में 1 बजे से पहले अपने बिल से शायद ही कभी बाहर निकलता है, और वह भी हर रात नहीं, बल्कि कभी-कभार ही। इसका असली बिल एक सुरंग के अंत में, सतह से लगभग दस फीट नीचे होता है। इसे खोदकर बाहर निकालने की कोशिश करना व्यर्थ है, क्योंकि जितना गहरा खोदोगे, पैंगोलिन उतना ही गहरा चला जाएगा। आप इसे कभी पकड़ नहीं पाएंगे, क्योंकि प्रकृति ने इसे बिल खोदने के लिए विशेष रूप से अनुकूल पंजे दिए हैं।
पैंगोलिन को देखने या पकड़ने का सबसे अच्छा तरीका है किसी पानी के गड्ढे की कीचड़ में उसके पदचिह्नों को खोजना। जब वह पानी पीने के लिए किनारे की ओर बढ़ता है, तो उसके पदचिह्न एक अजीब समानांतर कतार में नुकीले निशान या छेद बना देते हैं। पानी का गड्ढा मिल जाने पर, आपको चांदनी रात में रात-रात भर जागते रहना होगा, जब तक कि आप उसे कीचड़ पर इधर-उधर लुढ़कते हुए पानी के

किनारे तक पहुंचते हुए न देख लें। पैंगोलिन की यह अजीब लुढ़कने वाली चाल इसलिए होती है क्योंकि वह अपने पैरों के पोरों पर चलता है, उसके अगले पैरों के पंजे अंदर की ओर मुड़े होते हैं, जबकि पिछले पैरों के तलवे बाहर और ऊपर की ओर मुड़े होते हैं। उसके गुज़रने का संकेत देने वाले समानांतर निशानों की कतारें अंदर की ओर मुड़े हुए पंजों के पिछले हिस्से से बनती हैं।
जब वह झाड़ियों से निकलकर कीचड़ के बीच में होता है, तो उस पर झपटना अपेक्षाकृत आसान होता है; वह तुरंत खुद को गेंद की तरह समेट लेता है। वैसे तो पैंगोलिन हानिरहित होता है, लेकिन अपने शरीर या पूंछ के एक झटके से वह अपने तेज़ धार वाले शल्कों से आपके हाथ को बुरी तरह काट सकता है। यदि आप पैंगोलिन को जंगल में वापस जाने देते हैं, तो वह आपसे बच सकता है, क्योंकि उसकी आदत होती है कि वह घनी घास या झाड़ी में तब तक छिपा रहता है जब तक आप वहां से गुजर नहीं जाते, और फिर वह विपरीत दिशा में रेंगता हुआ निकलता है और तेज चाल से भाग जाता है।
पकड़े जाने पर पैंगोलिन आमतौर पर फुफकारने जैसी आवाज़ निकालता है, जैसा कि ओडुम्बु या इगुआना करते हैं। चलते समय, इनकी खाल के शल्क आपस में हल्की सरसराहट करते हैं, जैसे साही के कांटे। भागते समय ये अपनी पूंछ को ज़मीन से ऊपर रखते हैं ताकि वह बाधा न बने। पूरी तरह से निशाचर और ज़मीन के गहरे नीचे रहने वाले इस जानवर से यही उम्मीद की जा सकती है कि तेज़ धूप में इन्हें ठीक से दिखाई नहीं देता। मैंने लकड़बग्घे में भी यही बात देखी है। पैंगोलिन को शक्तिशाली तैराक कहा जाता है, हालांकि मैंने इन्हें कभी पानी में नहीं देखा। लेकिन मैंने देखा है कि चट्टानों के नीचे बिल बनाते समय, ये इतने मज़बूत होते हैं कि अपने वज़न के बावजूद पत्थर को हटा देते हैं।
मुझे लकड़बग्घे से विशेष लगाव है, शायद इसका कारण यही है कि अधिकतर शिकारी उसे तुच्छ समझते हैं, यहाँ तक कि उसकी तस्वीर या गोली के लायक भी नहीं समझते। यह पूर्वाग्रह इतना प्रबल है कि मेरे कई परिचित शिकारी तो मानो उसके अस्तित्व को ही नकार देते हैं और कहते हैं कि दक्षिण भारत के जंगलों में लकड़बग्घे दुर्लभ हैं। मुझे समझ नहीं आता कि वे इतने गलत कैसे हो सकते हैं, क्योंकि मुझे शायद ही कोई ऐसा जंगल याद है जहाँ नदी के रेतीले तल पर या खड्डों और नालों को पार करते हुए लकड़बग्घे के पदचिह्न न मिलते हों।
भारत में लकड़बग्घे की केवल एक ही विशेष प्रजाति पाई जाती है - धारीदार लकड़बग्घा, हाइना स्ट्रिएटा। एक पूर्ण विकसित लकड़बग्घा लगभग ग्रेट डेन जितना लंबा होता है, जिसका सिर काफ़ी बड़ा और चौड़ा होता है। इसका रंग राख जैसा भूरा होता है जिस पर काली धारियाँ होती हैं और गले पर एक काला धब्बा होता है। इसके बड़े, लंबे, नुकीले कान, चौड़ा माथा, अत्यंत शक्तिशाली जबड़ा, चौड़ी छाती और बेहद मोटे और मजबूत अगले पैर होते हैं, जो बड़े, बालों वाले पंजों में समाप्त होते हैं। इसकी पीठ काफ़ी पतली होकर एक बेहद कमजोर कूल्हे और पिछले हिस्से तक जाती है, और इसके पिछले पैर अपर्याप्त और कमजोर दिखते हैं। इसलिए, इसके पदचिह्न पैंथर से बिल्कुल अलग होते हैं, हालांकि दोनों लगभग बराबर आकार के होते हैं, क्योंकि लकड़बग्घे के अगले पंजे उसके पिछले पंजों से लगभग दोगुने बड़े और गोल होते हैं, जबकि पिछले पंजे लंबे होते हैं। लकड़बग्घे के पैर के नाखूनों के निशान, जो पीछे नहीं हट सकते, पटरियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, जबकि पैंथर के पदचिह्न बिल्कुल अलग होते हैं। पैंथर के आगे और पीछे के पंजे लगभग एक ही व्यास के होते हैं, जबकि पैर का अगला हिस्सा लकड़बग्घे की तुलना में काफी बड़ा होता है, और उसके पंजे पीछे हट सकते हैं इसलिए दिखाई नहीं देते।

मुझे पूरा यकीन है कि लकड़बग्घा बेहद कम बुद्धि वाला जानवर है। उसकी दृष्टि बहुत कमजोर होती है (खासकर दिन के समय), सुनने की क्षमता भी कम होती है, और (इस मामले में मैं अन्य लेखकों से असहमत हूं) उसकी सूंघने की क्षमता भी औसत दर्जे की होती है। मैंने जैकी पर कई परीक्षण किए हैं, जिसमें मैंने कुछ ही गज की दूरी पर तेज गंध वाला मांस का टुकड़ा फेंका, लेकिन वह उसे ढूंढ नहीं पाया। इसमें कोई शक नहीं कि उसे मांस की हल्की सी गंध जरूर आई होगी, क्योंकि वह उसे ढूंढने की नाकाम कोशिश में इधर-उधर बेतरतीब ढंग से गोल-गोल घूमता रहा।
जैकी को सैर पर ले जाते समय मैंने उसमें एक आदत देखी है कि हर कुछ मिनटों में वह गोल-गोल घूमता है, और लगभग हमेशा घड़ी की विपरीत दिशा में। लेकिन उसकी कई अजीब आदतों में शायद सबसे अनोखी यह है कि जब भी वह किसी पेड़ के सूखे ठूंठ, खंभे या झाड़ी के पास से गुजरता है, तो वह सचमुच उसके चारों ओर घड़ी की विपरीत दिशा में नाचने लगता है, अपने अगले पैरों को सीधा और पिछले पैरों को मोड़कर, पिछला हिस्सा ज़मीन से थोड़ा ऊपर उठाकर। फिर वह रुक जाता है और कुछ सेकंड के लिए उसका पूरा गुदाद्वार बाहर निकल आता है, मानो वह मल त्याग करने वाला हो। लेकिन वह गैस छोड़ता है और फिर सीधा होकर आगे बढ़ जाता है। हो सकता है कि इसका उद्देश्य जंगली लकड़बग्घे को ऐसी जगहों को सूंघकर वापस लौटने में मदद करना हो, हालांकि उसकी सूंघने की क्षमता इतनी कमज़ोर होने के कारण यह सिद्धांत काफी कमजोर पड़ जाता है।
लेकिन अगर उसकी सूंघने की क्षमता वाकई इतनी कमजोर है, तो जंगली लकड़बग्घा जंगल में मरे हुए और सड़ते हुए जानवरों का पता कैसे लगाता है? शायद शिकार का पता लगाने से पहले गंध हवा के ज़रिए उस तक पहुंचती हो। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मैं एक बेहद विवादास्पद विषय पर चर्चा कर रहा हूं, क्योंकि दुनिया भर में लकड़बग्घों को दूर से भी मौत और सड़न की गंध सूंघने की अद्भुत क्षमता के लिए जाना जाता है, लेकिन जैकी पर किए गए मेरे प्रयोगों से एक बिल्कुल अलग निष्कर्ष निकला है।
इसमें कोई शक नहीं कि लकड़बग्घा अपने मांद से बहुत लगाव रखता है, जो ज़मीन में बना एक छेद हो सकता है, चट्टानों या पत्थरों के बीच हो सकता है, या एक छोटी गुफा हो सकती है, और वह सालों तक उसी जगह पर रहता है। मैं गुंडालम के पास, सीक्रेट नदी के किनारे रहने वाले एक जोड़े को जानता हूं, जो पाँच साल से ज़्यादा समय से उसी छोटी गुफा में रह रहे हैं और वहाँ कई बच्चों का पालन-पोषण कर चुके हैं। बाकी सभी जानवरों के विपरीत, ये जोड़े लंबे समय तक साथ रहते हैं। मैंने एक तरह से लकड़बग्घे के किसी खास घर के प्रति लगाव को इस बात से साबित किया है कि जैकी कई महीनों तक मेरे व्हाइटफील्ड स्थित छोटे से कॉटेज में रहा, जहाँ मैंने उसे रहने के लिए एक अतिरिक्त बाथरूम दिया था। हालांकि मैंने उसे शौच के लिए बाहर जाने देने के लिए बाहरी दरवाज़ा दिन-रात खुला रखा था (उसने कभी भागने की कोशिश नहीं की), फिर भी उसने चारों कोनों से ईंट की दीवार तोड़कर और अंदर-बाहर दोनों दरवाज़ों को काटकर उस छोटे से बाथरूम को काफी नुकसान पहुँचाया। इसलिए अंततः मैंने उसे बैंगलोर स्थित अपने घर में ले आया। इसके लिए मैंने परिसर में एक छोटा सा द्वीप खुदवाया, जिसके चारों ओर चार फुट चौड़ी और चार फुट गहरी खाई खोदी गई थी। द्वीप पर मैंने उसके लिए एक बड़ा ईंटों का घर बनवाया, जिसकी छत जूस्ता की चादरों की थी। द्वीप से खाई तक सीढ़ियाँ बनी हुई थीं, ताकि वह नीचे जाकर दौड़-भाग कर सके। लेकिन जैसे ही मैंने जैकी को उसके नए घर में रखा, उसने लगभग दो सप्ताह तक खाना-पीना पूरी तरह छोड़ दिया, हालांकि वह पानी पीता रहा।

अब यह तर्क नहीं दिया जा सकता कि वह मुझे ही याद कर रहा था, क्योंकि मैं उसके साथ बैंगलोर गया था। मैंने उसे दोपहर और सूर्यास्त के समय ही खाना खिलाया और वही पुराना खाना दिया - कई दिन पुराना, कीड़ों से भरा गोमांस। मुझे यह भी लगा कि शायद वह अपनी साथी, व्हाइटफील्ड में रहने वाली मेरी देसी कुतिया जिल की कमी महसूस कर रहा हो, इसलिए मैं जिल को बैंगलोर ले आया। जैकी उसे देखकर बहुत खुश हुआ, प्यार से अपनी पूंछ हिलाई और हमेशा की तरह जोश और मस्ती से उसके साथ खेलने लगा। लेकिन इन सबके बावजूद, उसने खाना नहीं खाया। जैसा कि उम्मीद थी, उसका वजन कम हो गया और वह दुबला-पतला दिखने लगा, जिससे मैं उसे वापस व्हाइटफील्ड ले जाने के बारे में सोचने ही वाला था। तभी मुझे एक विचार आया कि उसके मांस को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर उसे थोड़ा-थोड़ा करके खिलाऊं। पंद्रह दिन बाद उसने थोड़ा सा खाना खाया, ठीक उसी समय जब यह स्पष्ट हो गया था कि वह जल्द ही भूख से मर जाएगा। फिर धीरे-धीरे उसने दोबारा खाना शुरू कर दिया, हालांकि उसे अपनी सामान्य भूख वापस पाने में दो सप्ताह और लग गए। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्वेच्छा से भूखे रहने का यह महीना केवल इसलिए हुआ क्योंकि मैंने उसे व्हाइटफील्ड स्थित अपनी कुटिया के उसके छोटे से बाथरूम से हटा दिया था, जिससे उसे बचपन से ही लगाव हो गया था। उसे अपने उस सुरक्षित ठिकाने की याद आ रही थी।
उसके खाने के प्रति पूर्ण अरुचि को दूर करने के मेरे प्रयासों के दौरान, मैंने उसे बंगले के अंदर खुला छोड़ दिया। एक मिनट के लिए मेरी पीठ मुड़ते ही, उसने सबसे पहले डोनाल्ड की अलार्म घड़ी चबा डाली, जिससे मेरे बेटे को बहुत गुस्सा आया। जैकी ने मेरी पत्नी के पालतू जानवर, एला नाम की सियार से दोस्ती करने की कोशिश की और उसके साथ खेलना चाहता था; लेकिन, हालांकि वह आकार में उससे लगभग एक-छठा हिस्सा थी, एला ने उसे बेरहमी से काटना शुरू कर दिया, हालांकि उसने पलटकर नहीं काटा। मैं पहले ही बता चुका हूँ कि व्हाइटफील्ड में मेरे कुत्ते, जिप्सी और जिल, हालांकि वे उसके साथ खुलकर खेलते थे, कभी-कभी जब वह बहुत ज्यादा शरारत करता था तो अपना आपा खो देते थे और उसे काट लेते थे। उसने कभी भी अपने से बहुत छोटे और बेहद कमजोर जानवरों पर पलटवार करने की कोशिश नहीं की।
मैंने पहले भी बताया है कि जैकी के द्वीप के चारों ओर बनी खाई केवल चार फीट चौड़ी और चार फीट गहरी थी। व्हाइटफील्ड में मेरे साथ रहते हुए मैंने गौर किया था कि अपने छोटे और कमजोर पिछले पैरों के कारण वह दो फीट से ज्यादा ऊपर या अगल-बगल कूद नहीं पाता था। लेकिन मुझे लगता है कि लकड़बग्घे के शरीर की इस अजीबोगरीब बनावट के पीछे एक ठोस कारण है। मैं अक्सर जैकी को खाते हुए देखता था। वह अपने मजबूत अगले पैरों के बीच हड्डी को मजबूती से पकड़ता, अपने पिछले पैरों को नीचे मोड़ लेता और फिर अपने बेमेल शरीर के झुकाव या ढलान का इस्तेमाल करके हड्डी से मांस के बड़े-बड़े टुकड़े फाड़ लेता। कुत्ते की सीधी पीठ से उसे इतनी पकड़ या ताकत नहीं मिल सकती थी।
यदि आप मांद के पास जाते हैं, विशेषकर जब अंदर शावक हों, तो लकड़बग्घा आमतौर पर डर जाता है और एक गहरी, कंपनशील, गुनगुनाती हुई गुर्राहट निकालता है जो लंबे समय तक जारी रहती है। यदि वह बहुत भयभीत हो, उदाहरण के लिए किसी शिकार पर बाघ के प्रकट होने से, जहाँ वह लूटपाट कर रहा था, तो वह एक तेज़, गुर्राहट भरी आवाज़ निकालता है, जो किसी क्रोधित बाघ या शेर की छोटी गुर्राहट जैसी होती है, लेकिन उतनी तेज़ नहीं। यदि आप उसे ऐसा करते हुए देखते हैं, तो आप देखेंगे कि वह सचमुच डर से काँप रहा है। अक्सर वह अनजाने में पेशाब कर

देता है। यदि घुसपैठिया बाघ से कम खतरनाक हो, जैसे कि एक तेंदुआ या भालू, तो लकड़बग्घा एक उदास, शोकपूर्ण तरीके से चीख सकता है (शायद 'म्याऊँ' उस आवाज़ का वर्णन करने के लिए बेहतर शब्द है)। यदि आप किसी शिकार या पानी के गड्ढे के पास बैठे हों और लकड़बग्घा आपकी उपस्थिति को भांप ले, तो वह या तो तुरंत भाग जाएगा, जिसके बाद आप उसे सूखे पत्तों पर फुदकते हुए सुन सकते हैं, या फिर वह बहुत उत्तेजित हो जाएगा, जिसके बाद वह तरह-तरह की आवाजें निकालेगा जिन्हें केवल 'बड़बड़ाहट' ही कहा जा सकता है। अक्सर, वह तिरस्कार भरी फुफकार से शुरू करता है, एक तरह की उपहासपूर्ण, थूकने जैसी आवाज: 'चीः! शीः-एः!' और अक्सर इससे पहले या बाद में, आश्चर्य और उग्र उद्गारों की एक श्रृंखला निकालता है: 'हा! हा! हा! हा!' फिर, जैसे-जैसे उसका आक्रोश बढ़ता है, वह अन्य अजीब आवाजें निकालता है: 'गरार! गुर्र-र्र-आ! गुद्दार! गुद्दार! गुद्दार! गु-डु! गु-डु!'
वाकई अजीबोगरीब आवाजें! लेकिन डरने की कोई बात नहीं है। बेचारी लकड़बग्घा बस घबराया हुआ है और उम्मीद कर रहा है कि आपका भी यही हाल होगा। वह बस अपनी मसखरी जैसी आवाजों से आपको भगाने की कोशिश कर रहा है। वह आपको डराने की इतनी कोशिश करता है कि खुद ही डर जाता है। अपने मचाए शोर-शराबे के बावजूद वह आप पर हमला नहीं करेगा।
इससे हमें एक अक्सर बहस में रहने वाले सवाल पर आते हैं। क्या एक लकड़बग्घा किसी बाघ या तेंदुआ को उसके शिकार से भगा सकता है? या, अगर वह शिकार चुराते हुए पकड़ा जाए, तो क्या बाघ के प्रकट होते ही लकड़बग्घा भाग जाएगा, या वह असली शिकारी को डराकर भगाने की कोशिश करेगा? मेरे अनुभव में, इसका केवल एक ही जवाब है: लकड़बग्घा एक पल भी इंतजार नहीं करेगा, वह तुरंत गायब हो जाएगा।
लेकिन लकड़बग्घों का एक जोड़ा शोर मचा देता है। यह नर्वसनेस की लड़ाई होती है। कभी-कभी एक पैंथर शोर के इस अजीब मिश्रण को सहन नहीं कर पाता और स्वेच्छा से खिसक जाता है। लेकिन अगर पैंथर अपनी जगह पर डटा रहे, तो तब तक चीख-पुकार मचती है जब तक कि एक या दूसरे का धैर्य टूट न जाए। अगर पैंथर खतरा बन जाता है, तो लकड़बग्घे बिना हिचकिचाए भाग जाते हैं। आखिर वे बड़े, अनाड़ी और बुद्धिहीन कुत्ते ही तो हैं, और सीधी लड़ाई में एक पैंथर उन्हें आसानी से हरा सकता है। वे अपनी चाल में बहुत धीमे और इतने मूर्ख होते हैं कि एक दृढ़ हमले का सामना नहीं कर सकते, खासकर जब पैंथर बिजली की तरह फुर्तीला जानवर हो। यहां तक कि अगर दो या तीन लकड़बग्घे भी हों, तो उनमें अपने कार्यों को समन्वित करने और एक साथ लड़ने की बुद्धि की कमी होती है।
बाघ के सामने तो आधा दर्जन लकड़बग्घे भी टिक नहीं पाएंगे। हालांकि जंगली कुत्तों से कहीं बड़े, भारी और ताकतवर होने के बावजूद, उनमें बाघ जैसी तीक्ष्ण बुद्धि, फुर्ती और लगभग जानलेवा साहस की कमी होती है। फिर भी यह अजीब बात है कि जंगली कुत्ते आमतौर पर उन्हें परेशान नहीं करते। सियार और लकड़बग्घे को एक ही शिकार पर भोजन करते देखना आम बात है। ऐसे समय में वे एक-दूसरे की मौजूदगी को पूरी तरह से नजरअंदाज कर देते हैं, जबकि शिकार के असली मालिक के अचानक लौटने पर पैनी नजर रखते हैं, जो निस्संदेह तुरंत बदला लेगा।
अपने भद्दे शरीर के बावजूद, लकड़बग्घे आपातकालीन स्थिति में काफी तेज़ दौड़ सकते हैं। देखने वाले को वे घोड़े की तरह सरपट दौड़ते हुए और टेढ़े-मेढ़े भागते हुए दिखाई देते हैं। शायद इसका कारण यह है कि तेज दौड़ते समय लकड़बग्घा अपना सिर एक कोण पर रखता है, जिससे उसका पूरा शरीर टेढ़ा-मेढ़ा दिखाई देता है।

लकड़बग्घे जंगल के सफाईकर्मी होते हैं, जो शिकार किए गए और मृत जानवरों को खाकर उपयोगी काम करते हैं, अन्यथा वे धीरे-धीरे सड़ कर वातावरण को प्रदूषित कर देते। विशेष रूप से घने जंगलों में, जहाँ गिद्ध अपना काम नहीं कर पाते, क्योंकि घनी वनस्पति उन्हें शिकार को देखने से रोकती है, लकड़बग्घे, सियार, जंगली सूअर और कभी-कभी भालू भी सड़ते हुए शव को तेज़ी से साफ करने में मदद करते हैं।
लकड़बग्घे केवल मरे हुए जानवरों को खाते हैं। कभी-कभी वे हिरण के बच्चे, बछड़े, कुत्ते या बकरी को मार देते हैं—हमेशा ऐसे जानवर को जो उनसे बहुत कमजोर होता है। लकड़बग्घे किसी छोटे, असहाय जानवर को मारने के लिए उसके पास चुपके से जाते हैं, अचानक अपना सिर एक कोण पर झुकाते हैं और छोटे जीव का गला पकड़ लेते हैं। उनके जबड़ों की जबरदस्त ताकत और उनकी पकड़ इतनी मजबूत होती है कि वे हड्डी को भी आसानी से तोड़ सकते हैं या काट सकते हैं। लेकिन लकड़बग्घे में किसी भी जीवित प्राणी पर हमला करने का साहस नहीं होता, जब तक कि वह उनसे बहुत छोटा और बिल्कुल असहाय न हो।
लकड़बग्घे की गर्दन के पिछले हिस्से से लेकर घनी पूंछ की जड़ तक भूरे-काले बालों की लंबी गर्दन होती है। जब लकड़बग्घा घबराया हुआ, उत्तेजित या क्रोधित होता है, तो ये बाल सीधे खड़े हो जाते हैं, जिससे जानवर की ऊंचाई लगभग छह इंच बढ़ जाती है और उसका शरीर कुछ चपटा सा दिखने लगता है। भयंकर और डरावने चेहरे के बावजूद, उसकी आँखों में एक विशेष भावपूर्ण अभिव्यक्ति होती है। इतना घिनौना भोजन करने वाला होने के बावजूद, लकड़बग्घे का पूरा शरीर अत्यंत स्वच्छ और गंधहीन होता है। इस मामले में वे गिद्धों से भिन्न होते हैं, जो वास्तव में बहुत बदबूदार होते हैं। मैंने जैकी को भी जूँ, पिस्सू या अन्य कीड़ों से पूरी तरह मुक्त पाया है, या कम से कम उस पर बिल्लियों और हिरणों की तुलना में बहुत कम कीड़े हैं। एक वयस्क नर का वज़न छह स्टोन से अधिक होता है और मादा का लगभग एक स्टोन कम। वह एक बार में चार या पाँच पिल्लों को जन्म देती है और मांसाहारी जानवरों के बच्चों की तरह, आँखें खुलते ही वे अपनी माँ के दूध के साथ-साथ आंशिक रूप से पचा हुआ कच्चा मांस भी खाने लगते हैं, जिसे उनकी माँ खाती है और फिर उनके लिए उल्टी कर देती है। हालांकि जंगली अवस्था में ये निशाचर होते हैं, लेकिन मैंने कई बार लकड़बग्घों को सुबह की धूप में उनके मांद या गुफाओं के प्रवेश द्वार पर धूप सेंकते हुए देखा है। कभी-कभी, और विशेष रूप से नीलगिरी की तलहटी में सेंगुर और अनाइकुट्टी के आसपास, मैंने उन्हें दिन के उजाले में भी घनी घास में या किसी कंटीली झाड़ी के नीचे बिल बनाकर लेटे हुए पाया है।
पुस्तक की पहली कहानी एक सियार और बाघ की सक्रिय साझेदारी के बारे में है। यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या यह एक आम घटना है, क्योंकि इस प्रश्न पर अनुभवी भारतीय शिकारियों के बीच वर्षों से गरमागरम बहस होती रही है। मेरी अपनी राय है—और यह केवल मेरी राय है, इसलिए ज़रूरी नहीं कि सही हो—कि एक सियार, जो अत्यंत बुद्धिमान प्राणी है, पहले एक बाघ या तेंदुआ से परजीवी की तरह चिपक जाता है, यह जानते हुए कि इससे उसे भोजन मिलना निश्चित है, क्योंकि बाघ या तेंदुआ खाने के लिए शिकार करते हैं और जीने के लिए खाते हैं। अपने स्वभाव और दिन के उजाले में शिकार को छोड़ने की आदत के कारण, ये बड़ी बिल्लियाँ परजीवी के लिए पर्याप्त भोजन छोड़ देती हैं। इस पूरे समय के दौरान सियार अपनी दूरी बनाए रखने का पूरा ध्यान रखता है, और बाघ या तेंदुआ शुरुआती चरणों में शायद उसकी मौजूदगी से भी अनजान रहते हैं। समय बीतने के साथ, सियार—जो हमेशा दोनों जानवरों में अधिक बुद्धिमान होता है—पाता है कि अपने मेज़बान के पीछे-पीछे एक शिकार से दूसरे शिकार तक जाने की आदत उसे लगातार बहुत लाभ

पहुँचाता है। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि सियार संभावित शिकार को देखकर आवाज निकालने लगे, जिससे उसे अपने मेज़बान को सूचना मिल जाए। बाघ या तेंदुआ, यद्यपि भोजन के लिए सियार पर निर्भर नहीं होते, फिर भी वे उसकी उपस्थिति के अभ्यस्त हो चुके होते हैं और मुख्यतः बड़े शिकार का शिकार करके अपना पेट भरते हैं, इसलिए वे ऐसे जीव के बारे में ज्यादा चिंता नहीं करते जो अपने दम पर पर्याप्त भोजन न जुटा सके। जब सियार आवाज निकालने लगता है, तो सियार समझ जाता है कि कुछ होने वाला है और उसे शिकार की उपस्थिति का पता चल जाता है।
आम तौर पर यह माना जाता है कि बाघों और तेंदुओं की सूंघने की शक्ति बहुत तीव्र होती है, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। ये दोनों ही जानवर शिकार करने के बाद वहीं नहीं खाते। वे हमेशा अपने शिकार को किसी आश्रय स्थल, जैसे झाड़ी या नाले में घसीटकर ले जाते हैं। दूसरी बार खाने आते समय, शिकारी ज़मीन पर सूंघते हुए घसीटने के निशान का पीछा करता है। ऐसा लगता है कि उसे ठीक से याद रहता है कि उसने अपना शिकार कहाँ छोड़ा था, क्योंकि वह किसी भी दिशा से लौट सकता है, चाहे हवा किसी भी दिशा से बह रही हो, और ज़रूरी नहीं कि वह अपने ही पदचिह्नों पर वापस चले। इसके अलावा, मैंने अक्सर इन दोनों जानवरों के लिए अलग-अलग तरह के 'छिपाव' स्थलों में बैठकर, बिल्कुल स्थिर रहकर, हवा की दिशा चाहे जो भी हो, उन्हें लगभग छूने की दूरी तक आने दिया है, बिना उन्हें मेरी उपस्थिति का एहसास हुए। ऐसी परिस्थितियों में, सूंघने की थोड़ी सी भी क्षमता उन्हें मेरी निकटता के बारे में सचेत कर देती, लेकिन जब तक मैं बिल्कुल स्थिर रहा और कोई आवाज़ नहीं की, वे पूरी तरह अनजान बने रहे। इससे स्पष्ट होता है कि इन दोनों जानवरों में सूंघने की क्षमता बिल्कुल नहीं होती, हालांकि इनकी दृष्टि अत्यंत तीव्र होती है, जो सूक्ष्मतम हलचल को भी भांप लेती है, और श्रवण शक्ति भी अत्यंत तीव्र होती है, जो मंदतम ध्वनि को भी सुन लेती है। बाघों और तेंदुओं की अद्भुत रात्रि दृष्टि उन्हें घोर अंधेरे में भी घने जंगल में बिना आवाज किए शिकार करने में सक्षम बनाती है, यह गुण अपने आप में ही उन्हें अतिरिक्त क्षमताओं के बिना भी बेहद शक्तिशाली बनाता है।
शहर में रहने वाला अनजान व्यक्ति शायद यह सोचे कि बाघ के चटख रंग और पैंथर के उससे भी चमकीले फर के कारण वे जंगल में आसानी से दिखाई देंगे। लेकिन ऐसा नहीं है। बाघ, जो हमेशा रात या शाम के समय शिकार करता है, जब वह स्थिर हो जाता है या बिना हिले-डुले बैठ जाता है, तो वह अदृश्य हो जाता है, उसकी त्वचा झाड़ियों, घास, पेड़ों और मिट्टी के साथ घुलमिल जाती है। पैंथर तो दिन के उजाले में भी कम दिखाई देता है; वह अपने से छोटी झाड़ी के नीचे या सूखे पत्तों और घास के बीच इस तरह लेट सकता है कि जब तक वह हिलता-डुलता नहीं, तब तक वह बिल्कुल अदृश्य रहता है। रंगों का यह घुलमिल जाना, इन दोनों प्रजातियों के घायल जानवर का पीछा करने में एक बड़ा खतरा है; शिकारी को जानवर की मौजूदगी का एहसास होने से पहले ही लगभग उस पर पैर रखने का खतरा रहता है।
मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि क्या किसी इंसान के लिए बाघ की तरह इतनी सटीक आवाज निकालना सचमुच संभव है कि बाघ पास आ जाए? क्या इंसान के फेफड़ों में इतनी ताकत होती है कि वे इतनी ज़ोरदार आवाज निकाल सकें? इस सवाल का जवाब है, बिल्कुल 'नहीं'। इंसान के फेफड़े कभी भी बाघ के फेफड़ों के बराबर नहीं हो सकते। लेकिन इसका मतलब सिर्फ इतना है कि कोई इंसान इतनी ज़ोर से आवाज नहीं निकाल सकता कि दूर खड़े बाघ का ध्यान अपनी ओर खींच ले। अगर बाघ पास ही हो, तो अच्छी तरह से नकल की गई आवाज उसे ज़रूर पास ला सकती है। बाघ को असल में आकर्षित करने वाला कारक जिज्ञासा है। अगर कोई इतना अनुभवी और कुशल है कि बाघ की आवाज की हूबहू नकल कर सके, भले ही आवाज की टोन

थोड़ा अलग हो, तो वह उस 'बाघ को ढूंढने' की जिज्ञासा से ज़रूर आकर्षित होगा जो यह अजीब सी आवाज निकाल रहा है।
यही बात पैंथर या कई अन्य जंगली जानवरों के बारे में भी कही जा सकती है। आखिर, अमेरिका में कई ऐसे उपकरण बिकते हैं जो मूस, हिरण, जंगली बक और विभिन्न पक्षियों की आवाज़ की नकल करते हैं। मेरा एक चचेरा भाई है जो घास के एक तिनके की मदद से बिल्कुल जंगली मुर्गे या चिड़िया की तरह आवाज़ निकाल सकता है और नियमित रूप से इन पक्षियों को शिकार करने से पहले लुभाता है। बाघ की आवाज़ की नकल करने में बस इतना ही अंतर है कि इसमें किसी उपकरण का उपयोग नहीं किया जाता; लेकिन सिद्धांत वही है।
जानवरों के निशानों का पता लगाना एक बेहद दिलचस्प कला है, और जिन आदिवासियों के साथ मुझे बाहर जाने का सौभाग्य और आनंद मिला है, उनकी तुलना में मैं खुद को इस खेल में बिल्कुल नौसिखिया मानता हूँ। एक चौकस व्यक्ति जिसने कई बाघों और तेंदुओं के पदचिह्न देखे हों, वह शायद यह सवाल पूछेगा: 'ऐसा क्यों होता है कि बाघ कभी-कभी दोहरे पदचिह्न छोड़ता है, जिनमें चारों पैरों के निशान दिखाई देते हैं, जबकि कभी-कभी वह एक ही पदचिह्न छोड़ता है जैसे कि उसके मनुष्य की तरह केवल दो पैर हों? और तेंदुआ, विशेष रूप से गांवों के पास रहने वाले औसत आकार के जानवर, हमेशा दोहरे पदचिह्न ही क्यों छोड़ते हैं?'
मुझे लगता है कि इसका जवाब यह है कि बाघ, जो शिकार पर नहीं बल्कि आराम से टहल रहा होता है, शांति से चलता है और अपने पीछे दो पदचिह्न छोड़ जाता है। जैसे ही उसे अपने शिकार की मौजूदगी का एहसास होता है और वह उसका पीछा करना शुरू करता है, वह सावधानी बरतता है: वह अपनी गति धीमी कर लेता है और शायद हर अगले पैर को ज़मीन पर रखकर उसे 'महसूस' करता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह किसी ऐसी टहनी या पत्ते पर पैर न रखे जो चटक कर उसकी मौजूदगी का पता दे दे। अतिरिक्त सावधानी के तौर पर, वह अपना पिछला पैर उठाता है और उसे ठीक उसी जगह पर रखता है जहां से उसका अगला पैर अगले कदम के साथ हटता है। बेशक, वह यह सब सहज रूप से करता है, जानबूझकर नहीं।
पैंथर, जो अपने शिकार के अंतिम चरण में पेट ज़मीन से सटाकर रेंगता है, शायद उसे अपने अगले पैरों द्वारा छोड़ी गई जगहों पर अपने पिछले पैर रखने का मौका नहीं मिलता। एक तथ्य जो इस अनुमान को पुष्ट करता प्रतीत होता है—और मैं एक बार फिर इस बात पर ज़ोर देना चाहूँगा कि यह अंततः केवल एक अनुमान ही है—वह यह है कि जहां एक बाघ का पीछा करते हुए उसके अंतिम हमले के स्थान तक पहुंचा जा सकता है, वहीं पैंथर के पदचिह्नों का पीछा करते समय ऐसा करना शायद ही संभव होता है। पदचिह्नों के अंतिम कुछ फीट अस्पष्ट हो जाते हैं, जो यह दर्शाता है कि पैंथर रेंगना शुरू कर चुका था।
मुझसे अक्सर यह सवाल पूछा जाता है कि क्या कोई बाघ सचमुच सांभर की आवाज़ की नकल कर सकता है, और अगर करता है, तो क्या वह सांभर पर घात लगाने के लिए ऐसा करता है? इस सवाल के पहले हिस्से का जवाब बिल्कुल हां है। मैंने ऐसा होते हुए सुना है। लेकिन दूसरे हिस्से का जवाब देना मुश्किल है, क्योंकि मैंने एक बाघ को अपने शिकार, एक युवा बैल, के पास जाते समय सांभर जैसी आवाज निकालते हुए सुना है, वह भी टेगाथी के पास जंगल के एक ऐसे हिस्से में जहां कोई सांभर नहीं था। एक और मौके पर, चमाला घाटी में, एक बाघ ने अपने शिकार, एक मृत भैंस, के पास जाते समय सांभर जैसी आवाज निकाली, जबकि वह उससे कुछ ही फीट दूर था; उस जंगल के हिस्से में कई सांभर थे।* लेकिन यह बाघ शिकार नहीं कर रहा था; वह अपने शिकार के पास लौट रहा था। ये दोनों उदाहरण इस बात का संकेत देते हैं कि

बाघों द्वारा की गई 'पुक' की आवाज़, हालांकि सांभर की आवाज़ से काफ़ी मिलती-जुलती है, लेकिन हिरण की आवाज़ से ज़्यादा हिरणी की आवाज़ जैसी है, और यह किसी असली सांभर को लुभाने के उद्देश्य से नहीं की गई थी। इसलिए यह आवाज़ किसी उम्मीद, संतुष्टि, भूख या आनंद को व्यक्त कर सकती है। शायद यह किसी बाघिन को दावत में आमंत्रित करने की आवाज़ हो, या यह किसी प्रकार की मिलन की आवाज़ हो सकती है, हालांकि मुझे ऐसा नहीं लगता, क्योंकि ऊपर बताए गए दोनों ही मामलों में कोई बाघिन आस-पास नहीं थी।
यहां मैं साधारण नर बाघ की बात कर रहा हूं, न कि आदमखोर बाघ की। बाघ आमतौर पर शांत स्वभाव का होता है और मनुष्य से दूर रहने की पूरी कोशिश करता है। अगर कोई इंसान उसकी निजता में दखल भी दे, तो बाघ चुपचाप खिसक जाता है। बाघिन भी ऐसा ही करती है, हालांकि वह गुर्रा सकती है या कुछ हद तक नाराज़गी दिखा सकती है। लेकिन इस सामान्य नियम का एक अपवाद है, और वह है संभोग का समय, और विशेष रूप से संभोग की क्रिया। उस समय बाघ बहुत उग्र हो जाते हैं और देखते ही हमला कर देते हैं, और तब तक हमला करते रहते हैं जब तक कि वे उस व्यक्ति को मार न डालें जिसने उनकी निजता में दखल दिया है। यह बाघिन को 'दिखावा' करने की इच्छा हो सकती है, हालांकि मुझे लगता है कि यह उनके अंदर उमड़ रही अत्यधिक यौन उत्तेजना के कारण होता है। खैर, उस विशेष क्षण में किसी के द्वारा देखे जाने पर बाघ का नाराज होना स्वाभाविक है।
मैं बाल-बाल बच गया जब मैं अपने एक जर्मन फोटोग्राफर दोस्त के साथ गया था, जो रात में बाघ अभयारण्य में घूमकर टॉर्च की रोशनी में तस्वीरें लेना चाहता था। मैंने उसे यह कहकर रोकने की कोशिश की कि बाघ देखने में बिल्कुल भी आकर्षक नहीं होते, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ा रहा। हम अक्टूबर की शुरुआत में गए थे, जो बाघों के प्रजनन के सामान्य मौसम से कुछ पहले था, जो नवंबर के अंत से जनवरी के अंत तक चलता है। हम दोनों पैदल थे और हमारे पास टॉर्च कैमरे के अलावा कोई हथियार नहीं था, क्योंकि अभयारण्य में शूटिंग सख्त वर्जित है और किसी भी प्रकार का हथियार लेकर घूमना मना है।
लेकिन संयोगवश, अचानक हमारी मुलाकात दो बाघों से हो गई। सौभाग्य से वे संभोग नहीं कर रहे थे, लेकिन फिर भी उन्हें हमारा दखल पसंद नहीं आया। वे गुर्राए और साथ-साथ उस छोटे से खुले मैदान को छोड़कर, जहाँ हमने उन्हें चौंका दिया था, उस रास्ते पर आगे बढ़ गए जहाँ से हम अभी-अभी आए थे।
इन बाघों को अपनी ताकत दिखाने का बहुत मन कर रहा था। लेकिन अगर हम उस लालच में पड़ जाते, तो मुझे यकीन है कि वो प्रेमी जोड़ा भी हमारा पीछा करने के लिए उतना ही ललचा जाता। इसलिए हमने 'योजना के अनुसार पीछे हटना' शुरू किया, जिसका मतलब था कि हम लगातार टॉर्च जलाते हुए तेज़ी से चलते रहे। फिर भी, नाराज़ जोड़ा एक मील से भी ज़्यादा दूर तक हमारा पीछा करता रहा। एक बेहद खतरनाक जगह पर, जहां रास्ता एक गहरी और झाड़ियों से भरी खाई से होकर गुज़रता था, वे लगभग पच्चीस गज़ पीछे आकर हमारे पास आ गए। हमने ज़ोर से खांसा और इतनी ऊँची आवाज़ में बोलने लगे कि किसी भी वक्ता को मात दे देते। इससे वो फुर्तीले बाघ एक बार फिर पीछे हट गए, और इस तरह हम उस मुश्किल हालात से निकल गए जो कुछ पल के लिए वाकई जानलेवा साबित हो सकता था।
शावकों के जन्म से पहले बाघिन आमतौर पर एकांतवास में चली जाती है, क्योंकि उसके नर साथी को अपने बच्चों को मारकर खाने की प्रवृत्ति होती है। वह आम तौर पर गुफा चुनती है, हालांकि कभी-कभी वह किसी खाई या अन्य झाड़ियों वाली ज़गह पर भी बच्चे पैदा कर सकती है। औसतन तीन से चार शावक पैदा होते हैं। इन्हें दूध

पिलाया जाता है, और बाद में जब तक वे ठोस भोजन पचाने में सक्षम नहीं हो जाते, तब तक उन्हें उल्टी किया हुआ मांस खिलाया जाता है। बड़े होने पर वे अपनी माँ के साथ भोजन की तलाश में जाते हैं। फिर, कुछ समय बाद, नर उनके साथ वापस आ जाता है और माता-पिता उन्हें शिकार की गर्दन तोड़कर मारने की कला सिखाना शुरू करते हैं। इस प्रक्रिया में कभी-कभी बहुत अधिक व्यर्थ वध होता है; एक झुंड के चौर या पाँच मवेशियों को केवल छुरा घोंपने के लिए मार दिया जाता है ताकि छोटों को सबक सिखाया जा सके या उन्हें अभ्यास कराया जा सके। युवा बाघ अक्सर काम बिगाड़ देते हैं, वे अपने शिकार को सीधे मारने के बजाय केवल घायल करने में ही सफल होते हैं।
जब शावक आधे बड़े हो जाते हैं, तो कभी-कभी बाघों का एक पूरा परिवार दिखाई देता है, जिसमें नर, मादा और कई बड़े शावक होते हैं। मैं खुद एक रात टेगार्थी के पास कोडिहल्ली नामक स्थान पर टहलने निकला था, तभी मुझे चार शावकों का एक परिवार दिखाई दिया। वे एक झरने से पानी पीकर किनारे पर चढ़े थे। सबसे पहले माँ दिखाई दी। उसने मुझे देखा, गुर्राई, रास्ते के उस पार छलांग लगाई और एक अजीब सी तेज़ म्याऊँ-म्याऊँ करने लगी। इससे दो शावक बाहर आ गए, जो लगभग स्पैनियल कुत्ते के आकार के थे। टॉर्च की रोशनी देखकर वे ज़रा भी नहीं डरे, बल्कि कुछ कदम चंचल भाव से आगे बढ़े। इस अनुचित व्यवहार पर माँ ने ज़ोर से गुर्राकर विरोध किया। पीछे खड़े पिता को यह व्यवहार असहनीय लगा। वह उनका रास्ता रोकने के लिए उनके सामने रास्ते पर कूद पड़े और धमकी भरे अंदाज़ में दहाड़े। उस दहाड़ का न केवल शावकों को माँ के पास वापस भेजने का असर हुआ, बल्कि मुझे भी इतना डर लगा कि मैं लगभग उन्हें गोली मार ही देता। मुझे खुशी हुई कि मैंने ऐसा नहीं किया जब मुझे एहसास हुआ कि उसका इरादा मुझ पर हमला करने का नहीं बल्कि केवल अपने चंचल बच्चों को डांटने का था।
बाघों की कुछ खास आदतें होती हैं, जिनमें वे पैंथर से भिन्न होते हैं। उनमें से कुछ—सभी नहीं—नरम छाल वाले पेड़ों के तनों पर अपने पिछले पैरों पर खड़े होकर, जितना हो सके ऊपर तक पहुँचकर, अपने अगले पंजों के पंजों को नरम छाल में रगड़कर साफ करते हैं। उनके मल त्यागने का तरीका भी अलग होता है। इस मामले में पैंथर एक असली बिल्ली की तरह होता है; वह जंगल के रास्ते के किनारे की मिट्टी को खरोंचता है और बाद में अपने मल को सावधानीपूर्वक ढक देता है। लेकिन बाघ ऐसा नहीं करता; वह लगभग एक फुट चौकोर जमीन के एक टुकड़े को खुरचकर साफ कर देता है, कभी-कभी तो रास्ते के ठीक बीच में। ऐसा करते समय वह अपने पिछले पैरों को एक साथ रखकर, झुकी हुई मुद्रा में 'नाचता' हुआ प्रतीत होता है, और स्पष्ट रूप से कांपता है। मल त्यागते समय वे अपनी पूंछ को हास्यास्पद रूप से ऊपर उठाते हैं। मल चिपचिपा, काला और तारकोल जैसी होता है, और इसे खुला छोड़ दिया जाता है।
एक और अंतर जिस पर मैंने ध्यान दिया है, वह है उनके भोजन करने का तरीका। बाघ अपने शिकार पर हमला गुदा मार्ग से शुरू करते हैं, अक्सर प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए जानवर की पूंछ काट देते हैं। फिर वे अंदर घुसते हैं और शव में पंजा डालकर आंतों और पेट को बाहर निकालते हैं, जिसे वे आमतौर पर खाने से कुछ फीट दूर हटा देते हैं। इसके विपरीत, तेंदुआ गंदे तरीके से भोजन करते हैं और अपने शिकार के पेट और गोबर को मांस के साथ मिला देते हैं। लेकिन एक बड़ा 'तेंदु', या वन तेंदुआ, बाघ की तरह खाता है, न कि अपने छोटे भाइयों की तरह।
बाघ गर्मी बर्दाश्त नहीं कर पाते, जबकि पैंथर ऐसा नहीं है। वे ठंडी और छायादार जगहों पर आराम करना पसंद करते हैं और अक्सर उन्हें किसी छोटी नदी में डूबे हुए

देखा जा सकता है, जहाँ उनका केवल सिर पानी की सतह से ऊपर रहता है। उन्हें तैरना भी बहुत पसंद है और वे अक्सर नदियाँ पार करते हैं। पैंथर, जो हर मायने में एक असली बिल्ली है, पानी से घृणा करता है, यहाँ तक कि बरसात की रात में अपने शिकार अभियान भी रोक देता है। केवल जंगली कुत्तों का झुंड या जंगल में लगी आग ही उसे नदी पार करने के लिए मजबूर कर सकती है। मजबूरी में वह अच्छी तरह तैर सकता है।
इन दोनों जानवरों की आदतों में एक और अंतर तब सामने आता है जब वे अपने द्वारा मारे गए किसी भी बड़े जानवर का शिकार करते हैं और उसके बाद भोजन करते हैं। हर बार भोजन करने के बाद बाघ को काफी पानी पीना पड़ता है। यह जानते हुए, शिकार के पास के किसी भी पानी के स्रोत या धारा पर शिकारी की मौजूदगी का पता लगाना और उसी के अनुसार 'घेराबंदी' करना काफ़ी आसान होता है, बशर्ते शिकारी ऐसा व्यक्ति हो जो मचान पर बैठकर बाघ के लौटने का इंतजार करने के बजाय घेराबंदी करना पसंद करता हो। लेकिन पैंथर के मामले में ऐसा नहीं है। उसे इतने पानी की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए उसका पता लगाना मुश्किल होता है।
बाघ अक्सर बाइसन, जंगली सूअर, भालू और यहाँ तक कि अपनी ही प्रजाति के सदस्यों से भी लड़ते हैं। उन्हें सही खाना बहुत पसंद होता है, लेकिन ऐसे मुठभेड़ों से वे हमेशा सुरक्षित नहीं बच पाते। टैगाथी से कुछ मील दूर मुझे एक मरी हुई बाघिन मिली जिसके चेहरे पर साही के कई कांटे चुभे हुए थे। बाघ तेंदुओं को भी मार डालते हैं, और इसी कारण जिन जंगलों में बाघ बहुतायत में होते हैं, वहाँ तेंदु कम ही पाए जाते हैं, क्योंकि तेंदु अपने से बड़े और अधिक शक्तिशाली चचेरे भाइयों के सामने हार मान लेते हैं। तेंदु इतने लड़ाकू या साहसी भी नहीं होते, और ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं जहाँ एक गाँव का कुत्ता भी हमले का शिकार होकर हताशा में तेंदु पर ही टूट पड़ा और हमलावर भाग गया।
बाघों को सूअर का मांस बेहद पसंद होता है, जबकि तेंदुओं के लिए बंदर का मांस एक स्वादिष्ट व्यंजन माना जाता है। ये दोनों बिल्लियाँ अपने-अपने पसंदीदा भोजन को पाने के लिए असाधारण प्रयास करती हैं और अपने पसंदीदा शिकार को छोड़ने में बहुत आनाकानी करती हैं। वास्तव में, अगर कोई बाघ को रसीले जंगली सूअर से दूर भगाने की कोशिश करे तो वह बेहद आक्रामक हो जाता है, और एक तेंदुआ लंगूर बंदर के शव पर हिंसक प्रदर्शन करता है। अपने शिकार को मारने के बाद, कम से कम मेरे अनुभव के अनुसार, मैंने कभी किसी बाघ को जानवर के गले पर अपनी पकड़ बनाए रखते हुए उसका खून चूसते हुए नहीं देखा है। शायद इसका कारण यह है कि बाघ जल्दी मार देते हैं, शिकार की गर्दन तुरंत टूट जाती है, जबकि तेंदुओं के शिकार को दम घुटने से लंबी और दर्दनाक मौत का सामना करना पड़ता है। तेंदुआ अक्सर अपने शिकार का खून चूस लेता है।
बाघ अपने भोजन के मामले में पैंथर से कहीं अधिक नखरे वाले होते हैं, इसलिए किसी बूढ़े, कमजोर या बीमार बैल या भैंस को बाघ के लिए चारा बनाना बहुत बड़ी गलती है। एक बार अनाइकुट्टी में, मुझे केवल एक ही चारा मिल पाया, जो फुट-एंड-माउथ रोग की अंतिम अवस्था से पीड़ित था और मृत्यु के कगार पर था। अगली सुबह, उसके पदचिह्नों से पता चला कि बाघ आया था, चारे के चारों ओर घूमा, उसके सामने बैठ गया, और ज़मीन पर बने कई निशानों से मैंने अनुमान लगाया कि वह उसके साथ खेल भी रहा था। लेकिन उसने बीमार बैल को न तो मारा और न ही उसे कोई चोट पहुँचाई, जो अगले दिन बीमारी से मर गया।
बाघ कभी-कभी अपने शिकार को, यहाँ तक कि बहुत भारी जानवर को भी, बड़ी-बड़ी बाधाओं के ऊपर से घसीटते या उठाकर ले जाते हैं। मैंने 'उठाना' शब्द का

प्रयोग किया है, क्योंकि मेरा यही अर्थ है। एक बरसात की दोपहर, एक बाघ ने टेगाथी गाँव से मुश्किल से दो फर्लांग दूर एक खेत के बीचोंबीच एक बड़े भूरे बैल का शिकार किया। वह उस जानवर को अपनी पीठ पर लादकर, एक खुर गीली ज़मीन पर घिसटते हुए, लगभग आधा मील तक पहाड़ी से नीचे जंगल की एक खाई में ले गया। एक अन्य बाघ एक बड़े हल चलाने वाले बैल को बाड़ तक घसीटकर ले गया और मरे हुए जानवर के साथ बांड के ऊपर से कूद गया। पैंथर कभी-कभी अपने शिकार, जैसे हिरण या बकरी, को पेड़ पर घसीटकर ले जाते हैं, शायद उन्हें अन्य शिकारी जानवरों से बचाने के लिए।
गर्मी के दिनों में बाघ कभी-कभी बड़े ही अनोखे तरीके से आराम करते हैं। वे किसी नाले की ठंडी रेत पर पेड़ की छांव में पीठ के बल लेट जाते हैं और चारों पैर हवा में उठाकर सो जाते हैं। उन्हें रेत में नहाना और सूखे पत्तों पर लोटना भी बहुत पसंद होता है। शायद वे ऐसा अपनी पीठ खुजलाने और कीड़ों से छुटकारा पाने के लिए करते हैं। ये कीड़े अक्सर किसी बाघ के शिकार के बाद उसके शरीर पर बड़ी संख्या में पाए जाते हैं।
बाघ बेहतरीन शिकारी होते हैं और भोजन की तलाश में एक रात में कई मील का सफर तय करते हैं। इसके अलावा, उनकी एक निश्चित क्षेत्र में घूमने की आदत होती है, जो सौ मील तक फैला हो सकता है, और वे हमेशा एक ही रास्ते पर एक ही दिशा में बार-बार जाते हैं। जैसा कि मैंने अपनी पिछली कहानियों में बताया है, यह आदत किसी आदमखोर बाघ के किसी विशेष स्थान पर लौटने के संभावित समय का अनुमान लगाने में काफी मददगार होती है, और यह अनुमान हमेशा एक या दो सप्ताह के भीतर सटीक होता है।
यह सिद्ध हो चुका है कि बाघ भारत में अपेक्षाकृत हाल ही में आया है। उसके आने से पहले भारत में एशियाई शेर का प्रभुत्व था। फिर बाघ उत्तर से—साइबेरिया और मंचूरिया से—आया और शेर धीरे-धीरे इस अधिक सक्रिय जानवर के सामने कमजोर पड़ने लगा। बाघ का आकार थोड़ा छोटा हो गया है और उसका रंग पहले से अधिक गहरा हो गया है। अब उसका रंग भूरे रंग के साथ काले निशान वाला रसेट ब्राउन हो गया है, लेकिन फिर भी उसमें मूल बाघों के काले निशान मौजूद हैं। हालांकि, वह अभी तक गर्मी के प्रति अपनी असहिष्णुता पर काबू नहीं पा सका है, जिसके कारण उसे बार-बार पानी पीना पड़ता है और ठंडी जगहों पर लेटना पड़ता है, अक्सर वह किसी तालाब में डुबकी लगाता है।
साक्ष्यों के आधार पर, पैंथर, स्लॉथ बियर की तरह, भारत का मूल निवासी है और प्राचीन काल से ही यहाँ मौजूद रहा है। पैंथर विश्वभर में व्यापक रूप से वितरित हैं। ये न केवल दक्षिण अमेरिका में गठीले जगुआर के रूप में पाए जाते हैं, बल्कि अफ्रीका, मध्य पूर्व, एशिया माइनर, फारस, पूरे भारत और श्रीलंका, बर्मा, मलाया, इंडोनेशिया, इंडो-चीन, चीन और मंचूरिया में भी पाए जाते हैं। इतने व्यापक वितरण के कारण यह स्वाभाविक है कि क्षेत्र के अनुसार जानवर के आकार, आकृति और आदतों में काफी भिन्नता होगी। लेकिन मूल रूप से ये सभी एक ही प्रजाति के हैं। चूंकि मैं केवल भारत और विशेष रूप से दक्षिण भारत के बारे में बात कर रहा हूँ, इसलिए मैं अपनी टिप्पणियों को केवल स्थानीय प्रजाति तक ही सीमित रख सकता हूँ।
भारत में पाए जाने वाले पैंथर आकार और रंग में काफी भिन्न होते हैं। जंगल पैंथर की बड़ी प्रजातियाँ सात फीट छह इंच तक लंबी और 160 पाउंड से अधिक भारी हो सकती हैं। इनका रंग गहरा भूरा होता है, जिस पर बड़े-बड़े धब्बेदार निशान और लंबे बाल होते हैं, खासकर पेट के नीचे। इनका सिर बड़ा और चौकोर होता है। ये पैंथर काफी बड़े जानवरों का शिकार कर सकते हैं; उदाहरण के लिए, एक स्वस्थ घरेलू

बैल, एक सांभर हिरण या मध्यम आकार का टट्टू भी। इनका शिकार करने का तरीका बाघों जैसा ही होता है, यानी ये आमतौर पर अपने शिकार का गला घोंटने के बजाय उसकी गर्दन तोड़ देते हैं। और ये बाघों की तरह ही पिछले हिस्से से खाना शुरू करते हैं। ये बड़े पैंथर आमतौर पर घने जंगलों में पाए जाते हैं।
दूसरी ओर, हमें गाँव का या 'बंदर पैंथर' मिलता है, जो एक वयस्क जानवर है, जिसकी लंबाई शायद ही कभी पाँच फीट से अधिक होती है और वजन लगभग साठ पाउंड होता है। इनका रंग आमतौर पर हल्का पीला होता है, इन पर छोटे-छोटे धब्बे होते हैं, बाल छोटे होते हैं और सिर छोटा और गोल होता है। इनका आहार बहुत व्यापक होता है और इसमें कुत्ते, बिल्लियाँ, बकरियाँ, मुर्गियाँ (पालतू और जंगली दोनों), खरगोश, पक्षी, छिपकलियाँ और यहाँ तक कि मेंढक और केकड़े जैसे कई छोटे जीव शामिल होते हैं। ये गाँवों के आसपास, चट्टानों के बीच और विरल झाड़ियों में पाए जाते हैं, हालाँकि छोटा पैंथर कभी-कभी घने जंगल में भी मिल जाता है, ठीक उसी तरह जैसे थेन्दु कभी-कभी झाड़ियों में या गाँव के पास किसी छोटी पहाड़ी पर रहता है।
इस तीव्र विरोधाभास के कारण, लंबे समय तक यह तर्क दिया जाता रहा कि दो अलग-अलग जानवर हैं। वह सिद्धांत अब समाप्त हो चुका है: केवल एक ही जानवर है, जिसका रूप और आहार उसके परिवेश के अनुसार बदलता रहता है।
काले पैंथर दुर्लभ रूप से दिखाई देते हैं। ये पूरी तरह से काले नहीं होते, बल्कि नज़दीक से देखने पर गहरे भूरे रंग के होते हैं। दूर से देखने पर, भले ही ये पूरी तरह से काले दिखाई दें, लेकिन जब इन पर किसी कोण से प्रकाश पड़ता है तो इन पर बने रोसेट निशान स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। काले पैंथर कोई अलग प्रजाति नहीं हैं। ये मेलानिज़्म के उदाहरण हैं और आमतौर पर उन जंगलों में पाए जाते हैं जहाँ भारी वर्षा होती है और वनस्पति घनी होती है। कभी-कभी ये अन्य जंगलों में भी पाए जाते हैं। एक सामान्य मादा दो या तीन शावकों को जन्म दे सकती है, जिनमें से एक काला हो सकता है। यह विचित्र है कि मेलानिज़्म केवल पैंथरों में ही पाया जाता है, बाघों में नहीं, जबकि लगभग सफ़ेद बाघों और लगभग भूरे या यहाँ तक कि धूसर रंग के स्लॉथ भालुओं के मामले भी दर्ज किए गए हैं।
पैंथरों की एक खास विशेषता उनकी पूंछ की लंबाई में भिन्नता है। छोटे पैंथरों की पूंछ लंबी होती है, जबकि बड़े पैंथरों की पूंछ छोटी होती है। पैंथर भीषण गर्मी सहन कर सकते हैं और उन्हें ज़्यादा पानी की जरूरत नहीं होती। वास्तव में, उन्हें पानी बिल्कुल पसंद नहीं होता। मैंने अक्सर उनके पदचिह्नों को देखकर यह गौर किया है कि पैंथर कुछ इंच पानी या कीचड़ को पार करने से बचने के लिए काफी लंबा रास्ता तय करते हैं, सिवाय तब जब उन्हें किसी नदी को पार करना ही हो। बाघों को पानी में चलने या तैरने में कोई संकोच नहीं होता और वे अक्सर ऐसे मौके का स्वागत करते हैं।
मेरी राय में, पैंथर कहीं अधिक बुद्धिमान जानवर है। उसके कार्यों के पीछे एक निश्चित उद्देश्य होता है। उदाहरण के लिए, शाम लगभग 5 बजे, सूरज डूबने और हवा ठंडी होने से पहले, एक पैंथर पहाड़ी की चोटी पर एक चट्टान पर लेटकर नीचे के इलाके में बकरियों, भेड़ों, कुत्तों आदि जैसे शिकार की तलाश करता है, जो अपने गांवों की ओर लौट रहे होते हैं। संभावित शिकार को देखते ही, वह चुपके से सबसे छोटे रास्ते से नीचे उतरता है, अपने शिकार का पीछा करता है और कुछ ही मिनटों में उसे मार डालता है। बेशक, बाघ भी बेहतरीन शिकारी होते हैं; लेकिन मुझे लगता है कि उनका शिकार करना दूरदर्शिता की बजाय सहज प्रवृत्ति और अद्भुत कौशल का मेल है।
शावकों वाली पैंथर उनकी जान की बाजी लगाकर रक्षा करेगी। बाघिनें, भले ही यह आश्चर्यजनक लगे, कभी-कभी अपने बच्चों को छोड़ देती हैं, हालाँकि एक बार मेरा इसके विपरीत एक बहुत ही अप्रिय अनुभव हुआ था।* पैंथर विशेष रूप से बंदरों,

सूअर के बच्चों और साही को पकड़कर खाने के शौकीन होते हैं, हालाँकि वे वयस्क जंगली सूअर से बहुत दूर रहते हैं। साही की बात करें तो, सलेम जिले के गुम्मलपुर में मुझे एक बिल मिला, जिसके प्रवेश द्वार पर नरम रेत में बने पदचिह्नों से पता चला कि उसमें एक साही और एक पैंथर दोनों रहते थे। यह बिल मुथियालम्मा होले नामक एक धारा के किनारे पर था। मैंने उसी शाम इस जगह के ठीक सामने एक पेड़ पर बैठकर सच्चाई की पुष्टि करने का फैसला किया। पुजारियों ने मुझे अक्सर बताया था कि साही और पैंथर साथ रहते हैं, लेकिन मैंने इन कहानियों पर कभी पूरी तरह विश्वास नहीं किया क्योंकि मैं जानता था कि ये जीव जन्मजात दुश्मन हैं। यह अपेक्षाकृत सुनसान जगह थी, और शाम 6 बजे से ठीक पहले का समय था। एक वयस्क, औसत आकार की पैंथर बाहर निकली। बाद में शाम ढल गई, लेकिन काफी अंधेरा होने से पहले ही मुझे साही के कांटों की सरसराहट सुनाई दी। मैंने अपनी टॉर्च की रोशनी डाली और नदी किनारे चट्टानों के बीच उसी छेद से एक बड़े आकार के साही को निकलते देखा। इस विचित्र संगति का कारण मुझसे मत पूछो, क्योंकि मैं इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं दे सकता।
तेंदुओं की क्षमता बाघों से कहीं अधिक होती है। वे खुले मैदानों में भी रह सकते हैं जहाँ झाड़ियाँ कम हों, बशर्ते चट्टानों और पत्थरों के बीच आश्रय मिल सके। वे अपने बड़े चचेरे भाइयों की तुलना में दिन के उजाले में कहीं अधिक घूमते हैं। वे बेहतरीन पर्वतारोही भी होते हैं। मुझे याद है कि कई साल पहले मुत्तूर में मैंने एक तेंदुए की तस्वीर खींची थी जो एक विशाल मुठी के पेड़ की चोटी पर चढ़ गया था, जहाँ उसने एक डरे हुए छोटे बंदर को घेर लिया था। तेंदुए रोशनी से कम डरते हैं, खासकर अगर वह लालटेन या किसी अन्य तेल के दीपक से आ रही हो।
दो कारणों से, घायल पैंथर का पीछा करना अक्सर बाघ का पीछा करने से ज़्यादा खतरनाक होता है। उसका रंग जंगल में घुलमिल जाता है और जब तक उस पर पैर न पड़ जाए, वह अदृश्य रहता है। साथ ही, वह बाघ की तरह पहले से चेतावनी भरी गुर्राहट भी नहीं करता। सौभाग्य से, इस कमी को पूरा करने के लिए पैंथर में अक्सर हमला करने का साहस नहीं होता। वह ज़ोरदार हमला करता है, लेकिन आखिरी क्षण में पीछे हट जाता है। यहाँ तक कि जब वह किसी आदमी पर झपटता है, तो वह बस कुछ सेकंड के लिए खरोंचता और काटता है। फिर वह भाग जाता है। वह बाघ की तरह आदमी को मारने के लिए नहीं रुकता।
आदमखोर बाघ और उसी आदत को अपना चुके पैंथर में एक बड़ा अंतर है। एक बार बाघ को मानव मांस का स्वाद लग जाए तो वह इसका स्थायी आदी हो जाता है; वह तब तक लोगों को मारता रहता है जब तक वह खुद मारा न जाए। वहीं, आदमखोर पैंथर कभी भी सिर्फ मानव मांस नहीं खाता, न ही वह इस पर निर्भर रहता है; वह अपना सामान्य भोजन भी खाता और मारता रहता है। कभी-कभी वह लंबे समय तक मानव हत्या करना पूरी तरह बंद कर देता है और एक सामान्य पैंथर की तरह व्यवहार करता है। लेकिन देर-सवेर वह फिर से मानव जाति पर अपना हमला शुरू कर देता है। यही बात उसे और भी खतरनाक और ढूंढना व मारना मुश्किल बना देती है। यहां तक कि जब कोई शिकारी किसी पैंथर को यह सोचकर गोली मार देता है कि वह उसी आदमखोर पैंथर की तलाश में है, तब भी वह कभी निश्चित नहीं हो सकता कि उसने किसी साधारण पैंथर को नहीं मारा है और अपराधी अभी भी फरार तो नहीं है। एकमात्र कसौटी समय है—और यह तथ्य कि उस विशेष क्षेत्र में अब और कोई इंसान नहीं मारा जाता।
पैंथर, जो इंसानों के ज़्यादा संपर्क में रहते हैं, बाघों से कहीं ज़्यादा साहसी होते हैं। मुझे याद है कई साल पहले, मैं अपने चाचा, चाची और चचेरे भाइयों के साथ शिवरोय

पहाड़ियों पर स्थित येरकौड में उनके घर पर खाना खा रहा था। उनके पास सात बिल्लियाँ थीं जो बंगले के बरामदे में तीन प्लेटों में खाना खा रही थीं। हमने एक बिल्ली की भयानक चीख सुनी और दौड़कर बाहर गए तो देखा कि एक पैंथर बरामदे से कूद रहा है और उनमें से एक को अपने मुंह में दबाए हुए है। देखते ही देखते हम सबने शोर मचाया और कुत्तों को छोड़ दिया। किसी तरह बिल्ली बच निकली, लेकिन उसका एक पिछला पैर कट गया था। माथा नाम की उस बिल्ली ने अपने घाव से उबरकर कई सालों तक तीन पैरों पर जीवन बिताया। जंगल में टहलते समय पालतू कुत्तों के पैरों के बीच से उठाकर ले जाने के कई उदाहरण हैं। और एक से ज़्यादा बार मैं एक मुर्गी फार्म के बीच में एक चालाक 'बंदर' पैंथर का इंतज़ार करता रहा हूँ, जिसे हफ्ते में कई बार रात के खाने में चिकन खाने की आदत पड़ गई थी।
पैंथर्स को आमतौर पर मचान से तब गोली मारी जाती है जब वे अपने शिकार के ऊपर होते हैं, और शायद ही कभी बीट में। वे इतने चतुर और चालाक होते हैं कि उन्हें भगाया नहीं जा सकता, और वे बहुत अच्छी तरह छिप सकते हैं। यह उनकी असाधारण बुद्धिमत्ता का एक और उदाहरण है। हालाँकि, इस सामान्य नियम का एक अपवाद यह है कि गोली लगने और चूक जाने के बाद भी वे अपने शिकार पर लौट आते हैं। बाघ ऐसा बहुत कम करते हैं। मैंने एक और मामले के बारे में सुना है जहाँ एक पैंथर अपने शिकार पर लौट आया था जहाँ कुछ गज की दूरी पर एक जलती हुई लालटेन रखी थी, हालाँकि मैं उस समय वहाँ मौजूद नहीं था।
मुझे लगता है कि यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारत के विभिन्न राज्यों में सरकार और वन विभाग इस जानवर को 'हानिकारक जीव' मानते हैं, जबकि कुछ जगहों पर तो इसके शिकार के लिए लाइसेंस की भी आवश्यकता नहीं होती। हालांकि यह प्रजाति पूरे देश में अभी भी काफी संख्या में मौजूद है, फिर भी मुझे लगता है कि यह बेहतर स्थिति की हकदार है। धूप और छांव से जगमगाते जंगल में एक सुंदर पैंथर का शिकार करना बाघ से भी कहीं अधिक मनमोहक होता है। यह भारत का सबसे खूबसूरत जंगली जानवर है। पैंथर की आवाज - एक कर्कश, खुरदरी और घुरघुराहट भरी गुर्राहट - तब सुनाई देती है जब नर अपनी मादा को पुकारता है, और कभी-कभी जब वह अपने शिकार के पास पहुंचता है। यह एक विशिष्ट ध्वनि है और इतने छोटे आकार के जानवर के लिए आश्चर्यजनक रूप से तेज और दूर तक सुनाई देने वाली होती है। जंगल में, पैंथर छोटे हिरणों - चित्तीदार हिरण, जंगली भेड़ और चूहा हिरण - का भारी शिकार करते हैं, जो जंगली मादा सूअरों और उनके बच्चों के साथ उनका मुख्य भोजन होते हैं। बड़े नर सूअरों को वे बिल्कुल अकेला छोड़ देते हैं। ग्रामीण इलाकों में, भोजन में घरेलू बकरियों और कुत्तों को शामिल किया जाता है; कुछ गांवों में तो एक-दो फुर्तीले पैंथरों ने कुत्तों की पूरी आबादी को ही खत्म कर दिया है। जोवलागिरी वन बंगले में, एक रात मैं बरामदे में निकला और लगभग एक पैंथर से टकरा ही गया जो वहां लेटा हुआ था और मेरे कुत्ते निपर को घूर रहा था, जो खाने की मेज के नीचे सो रहा था। ऊपर बताए गए जानवरों के अलावा, पैंथर छोटे जीवों और सभी प्रकार के पक्षियों का शिकार करते हैं। बदले में, उन्हें अक्सर बाघ मार कर खा जाते हैं, इसलिए जिन इलाकों में बाघ स्थायी रूप से मौजूद होते हैं, वहां पैंथर बेहद शर्मीले और चालाक होते हैं और कभी-कभी तो बिल्कुल भी दिखाई नहीं देते। वे बाघ के शिकार से कुछ चुराने के लिए ललचाते हैं, लेकिन ऐसा करते समय वे असली मालिक के अचानक लौटने के डर से बहुत सतर्क रहते हैं। अंत में, वे सड़े हुए मांस को भी खाते हैं और बहुत अधिक सड़ चुके शवों पर भी दावत करते हैं। मैंने पाया है कि दक्षिण भारत में बाघ ऐसा नहीं करते, और आमतौर पर वे ऐसा करने के लिए एक से अधिक बार नहीं लौटते, क्योंकि वे बहुत अधिक भोजन करते हैं और उस समय

तक, यादे उन्हें परेशान न किया जाए, तो वे अपना सारा भोजन खा चुके होते हैं। लेकिन तेंदुए लगातार दो और यहाँ तक कि तीन रातों तक अपने शिकार पर लौटते हैं।

इन स्मृतियों को जंगली जानवरों के उस विशालकाय जीव, हाथी के उल्लेख के बिना अधूरा माना जा सकता है, जो प्रागैतिहासिक काल से ही किसी न किसी रूप में मानव जाति के साथ रहा है। आज हाथी की केवल दो ही प्रजातियाँ मौजूद हैं: अफ्रीकी और एशियाई, हालाँकि इन दोनों मुख्य श्रेणियों में भी भिन्नताएँ पाई जाती हैं। अफ्रीकी हाथी आकार में बड़ा होता है, जिसकी कंधे तक की ऊँचाई अक्सर बारह फीट तक होती है। दिखने में वह अपने एशियाई चचेरे भाई से काफी भिन्न होता है। उदाहरण के लिए, उसके कान बहुत बड़े होते हैं और उसके दाँत बहुत लंबे और भारी होते हैं। उसकी पीठ अवतल होती है, जिसमें एक विशिष्ट गद्दी होती है, और उसके प्रत्येक पिछले पैर में केवल तीन उंगलियां होती हैं। उसका माथा तेजी से पीछे की ओर धंसा हुआ होता है, और यह, उसके लंबे कानों के साथ मिलकर, उसके सिर को नुकीला आकार देता है। मादा हाथियों के भी दाँत होते हैं। लेकिन एशियाई हाथी कई मायनों में भिन्न होता है। उनमें से सबसे बड़ा हाथी भी दस फीट से अधिक ऊँचा नहीं होता। उसके कान बहुत छोटे होते हैं, और दांत भी छोटे होते हैं और उतने भारी या मोटे नहीं होते। कुछ मामलों में पीठ उत्तल होती है, जिसमें हल्का सा कूबड़ होता है, जबकि अन्य में यह अपेक्षाकृत सपाट होती है। प्रत्येक पिछले पैर में चार उंगलियां होती हैं। धड़ अफ्रीकी प्रजाति की तरह छल्लेदार या खुरदुरा नहीं होता, खोपड़ी के दाएं और बाएं हिस्सों के बीच ऊपरी भाग में हल्का सा गड्ढा होता है; प्रत्येक कनपटी पर स्पष्ट गड्ढे होते हैं। मादाओं में कभी भी दांत नहीं उगते।

अफ्रीकी हाथी प्रजाति की तरह, एशियाई हाथी की भी कुछ देशों, जैसे कि श्रीलंका और मलाया में बौनी प्रजाति पाई जाती है, जहाँ नर और मादा दोनों ही बिना दांत वाले होते हैं। भारत में बड़े आकार के हाथियों के झुंड में कभी-कभी बिना दांत वाले नर हाथी, जिन्हें मुक्ना कहा जाता है, पाए जाते हैं, हालाँकि दक्षिण भारत में ये बहुत आम नहीं हैं। यह तथ्य कि ऐसे बिना दांत वाले नर हाथी अकेले नहीं रहते, बल्कि सामान्य झुंड में दांत वाले नर हाथियों के साथ रहते हैं, इस सिद्धांत का खंडन करने के लिए पर्याप्त प्रमाण है कि वे एक अलग प्रजाति हैं, हालाँकि इस बात का कोई स्पष्टीकरण नहीं है कि उनके दांत कभी क्यों नहीं बढ़े। ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसे बिना दांत वाले नर हाथी सामान्य दांत वाले अधिकांश नर हाथियों की तुलना में अधिक भारी-भरकम जानवर बन जाते हैं।

यह सोचना कि 'अनैतिक' हाथी पागल होता है, बिल्कुल गलत है। अक्सर यह भी मान लिया जाता है कि अनैतिक हाथी हमेशा मस्त अवस्था में होता है। वास्तव में, ये शब्द नर हाथी को प्रभावित करने वाली तीन बिल्कुल अलग-अलग स्थितियों को दर्शाते हैं। मस्त की अवस्था अस्थायी होती है, जो कुछ हफ्तों से लेकर तीन महीने तक रहती है और नर हाथियों में संभोग के मौसम के समान होती है। यह सीधे तौर पर यौन उत्तेजना से जुड़ी होती है और मस्त अवस्था समाप्त होने पर समाप्त हो जाती है। मस्त की यह अवधि मुख्य रूप से नर हाथियों को प्रभावित करती है, इस दौरान वे बेचैन, झगड़ालू, उत्तेजित और गुस्सैल हो जाते हैं। वे झुंड के अन्य नर हाथियों से लड़ते हैं, जो कभी-कभी मिलकर उन्हें झुंड से बाहर निकाल देते हैं जब तक कि उनका मस्त शांत नहीं हो जाता। लेकिन ऐसा हमेशा नहीं होता, क्योंकि कभी-कभी मस्त हाथी झुंड में अन्य हाथियों, विशेष रूप से छोटे बच्चों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखते हैं।

मस्त में हाथी से सामना करना हमेशा ही बेहद खतरनाक होता है। वह बिना किसी उकसावे के, देखते ही हमला कर सकता है। सभी हाथियों में यह एक स्वाभाविक और

आवांधिक अवस्था है, इसीलिए पालतू नर हाथी भी मस्त हो जाते हैं। ऐसे में उन्हें काम पर नहीं लगाया जाता और उनके पिछले पैरों में जंजीर बांधकर तब तक सुरक्षित रखा जाता है जब तक कि उनका मस्त शांत न हो जाए। मस्त होने पर वे सामान्य हो जाते हैं। यह एक ग्रंथि संबंधी विकार है। कनपटी सूज जाती है और फूल जाती है। यह स्राव दोनों गालों में, कनपटी और कान के बीच स्थित छिद्रों से निकलता है और हाथी के चेहरे पर गाढ़े तैलीय पदार्थ के रूप में बहता है। साथ ही वीर्य का स्राव भी होता है। इन स्रावों के कारण मस्त में जानवर से एक विशेष गंध आती है। मस्त की अवस्था में पालतू हाथियों के हमले से कई दुर्घटनाएं हुई हैं और लोगों की मौत भी हुई है। आमतौर पर महावत या हाथी चालक पहला शिकार होता है।
एक उग्र हाथी को कोई खास समस्या नहीं होती। वह उग्र इसलिए हो जाता है क्योंकि उसने मनुष्यों का भय खो दिया है और बिना किसी उकसावे के उनका पीछा करके उन्हें मार डालने की आदत बना ली है। इसके कई कारण हो सकते हैं। पहला, मस्त अवस्था में उसने लोगों पर हमला किया होगा, उनका पीछा किया होगा और शायद कुछ लोगों को मार भी डाला होगा। इससे उसका मानव जाति के प्रति अंतर्निहित भय समाप्त हो गया और उसे यह एहसास हो गया कि मनुष्य वास्तव में कितने असहाय हैं। इसलिए मस्त अवस्था समाप्त होने के काफी समय बाद भी वह अपनी इस आदत को जारी रखता है। या हो सकता है कि उसकी किसी दूसरे हाथी या हाथियों से लड़ाई हुई हो और उसे झुंड से निकाल दिया गया हो। हताशा और क्रोध के आवेश में, उसका सामना किसी दुर्भाग्यशाली मनुष्य से हुआ हो, जो उसके पास आते ही भाग गया हो, जिससे वह उसका पीछा करने लगा और अंत में उसे मार डाला हो। इसके बाद से उसने इसे एक मनोरंजक शौक बना लिया है। तीसरा, हो सकता है कि वह मनुष्यों द्वारा इतना आहत या परेशान किया गया हो कि एक दिन उसने पलटवार करते हुए अपने ही एक उत्पीड़क पर हमला करके उसे मार डाला हो। उस क्षण से यह महसूस करते हुए कि मनुष्यों को आसानी से मारा जा सकता है, उसने हर अवसर पर किसी न किसी मनुष्य को समाप्त करने का कोई मौका नहीं छोड़ा।
हाथी का हिंसक स्वभाव बाघ या तेंदुआ के आदमखोर बनने जैसा ही है, बस फर्क इतना है कि मुझे किसी ऐसे हिंसक हाथी के बारे में जानकारी नहीं है जिसने अपने शिकार इंसान का कोई हिस्सा खाया हो। हालांकि, मेरे दोस्त फ्रेडी गैलिफ ने मुझे बताया कि हाल ही में अन्नाय चौक आरक्षित वन की सीमा के ठीक बाहर, उनकी जागीर से कुछ ही दूरी पर, एक छोटे हिंसक हाथी को गोली मार दी गई थी, जिसके पेट में इंसान की जांघ की हड्डी मिली थी। मैं खुद इसकी पुष्टि नहीं कर पाया हूं, लेकिन अगर यह सच है, तो हिंसक हाथियों के इतिहास में यह एक अनोखी घटना होगी।
पागल हाथी वह होता है जो मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गया हो। हो सकता है कि किसी पागल कुत्ते के काटने से उसे जलभराव (हाइड्रोफोबिया) हो गया हो (इस स्थिति में हम यह नहीं कह सकते कि वह मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गया है, जैसा कि इस शब्द का सर्वमान्य अर्थ है), या हो सकता है कि वह लू लगने या अत्यधिक काम करने का शिकार हो गया हो (इस स्थिति में भी वह वास्तव में मानसिक रूप से विक्षिप्त नहीं है)। व्यक्तिगत रूप से मैंने कभी इस तरह का कोई मामला नहीं देखा है, हालांकि मैंने ऐसे मामले भारतीय शासकों के हाथियों के अस्तबलों में और सरकारी बाड़ों में पढ़े हैं जहां हाथियों को जंगलों में काम करने के लिए रखा जाता था।
हाथियों की दृष्टि कमजोर होती है, लेकिन उनकी सुनने की क्षमता बहुत अच्छी और सूंघने की क्षमता अद्भुत होती है। इसी कारण, किसी जंगली हाथी के पास अवलोकन, फोटोग्राफी या शूटिंग के उद्देश्य से जाने का प्रयास केवल हवा की दिशा से ही किया जा सकता है। अन्यथा, लंबे समय तक पीछा करने के बाद भी पता चलेगा

के शिकार बहुत पहले ही भाग चुका है। कहा जाता है कि जंगली हाथी एक-दूसरे को तीन मील दूर से सूंघ सकते हैं, और यदि मनुष्य हवा की विपरीत दिशा में हों तो उसे एक मील दूर से सूंघ सकते हैं।
हाथी के अगले पैर की परिधि का दुगुना उसके कंधे तक की सटीक ऊंचाई बताता है। इस तथ्य का उपयोग हमेशा उन हाथियों की ऊंचाई का अनुमान लगाने में किया जाता है जिन्हें गोली मारने के लिए प्रतिबंधित किया गया है, और पहले से दर्ज किए गए उनके पदचिह्नों के माप के आधार पर गोली मारे गए हाथियों की पहचान करने में भी किया जाता है। गोली लगने के बाद जब कोई हाथी गिर जाता है, तो उसकी मृत्यु का सबसे निश्चित संकेत उसके लिंग का खोल से पूरी तरह बाहर निकला होना है।
ये जानवर सौ साल से भी ज़्यादा जीते हैं, और एक ऐसा मामला भी दर्ज है जहाँ एक जानवर 150 साल की उम्र तक पहुंच गया था। बुढ़ापे के लक्षण आमतौर पर उसका दुबला-पतला और कुपोषित होना (दांत इतने घिस चुके होते हैं कि वे भोजन को चबा नहीं पाते, और मल में बिना पचे पत्ते होते हैं), पिचके गाल, धँसी हुई आँखें और कनपटी, कान जो ऊपर से काफी मुड़े हुए और नीचे से खुरदुरे होते हैं, और शरीर पर बाल न होना तथा पीली, बहुत झुर्रीदार त्वचा होना है। इस विषय के विशेषज्ञ कहते हैं कि पहले पंद्रह साल तक कानों के ऊपरी किनारे बिल्कुल सीधे रहते हैं। फिर वे हर तीस साल में एक इंच की दर से मुड़ने लगते हैं, लेकिन मुझे इस कथन की सत्यता की कोई व्यक्तिगत जानकारी नहीं है।
हाथियों के साथ लगातार संपर्क में रहने वाले लोग उन्हें बहुत बुद्धिमान जानवर मानते हैं, हालांकि कुछ शिकारी इससे असहमत हो सकते हैं। जंगली अवस्था में उनके व्यवहार और पालतू बनाए जाने पर उनके अनेक उपयोगों को देखते हुए, वे निश्चित रूप से चतुर और समझदार होते हैं। लेकिन उनमें एक निर्विवाद विशेषता है: इतनी विशालता के बावजूद उनमें साहस की कमी, जो घोर कायरता के समान है। एक परिपक्व जंगली सूअर, उत्तेजित होने पर, कई गुना अधिक साहसी होता है। एक हाथी अपने विशाल शरीर और रोंगटे खड़े कर देने वाली, उन्मादी चिंघाड़ से किसी व्यक्ति पर अचानक हमला कर सकता है, जिससे वह भयभीत हो जाता है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति डटकर खड़ा रहे, ताली बजाए, चिल्लाए और हाथ हिलाए, तो हाथी हमेशा अंतिम क्षण में मुड़कर भाग जाएगा। जंगली सूअर ऐसा नहीं करता। वह सीधे राइफल की धधकती नली की ओर दौड़ता है, भले ही उसके शरीर में कई गोलियां लगी हों—जब तक कि कोई गोली उसके दिल या किसी अन्य महत्वपूर्ण अंग को भेद न दे।
कई हाथी ल्यूकोडर्मा नामक बीमारी से पीड़ित होते हैं: उनकी त्वचा पर सफेद धब्बे पड़ जाते हैं, खासकर सूंड और कानों पर। ऐसे जानवर को पालना बहुत शुभ माना जाता है, हालांकि वे देखने में भद्दे लगते हैं। शायद यह अंधविश्वास इसी तथ्य का ही प्रतिबिंब है कि तथाकथित 'सफेद' हाथी को सियाम और बर्मा के बौद्धों के बीच धार्मिक महत्व दिया जाता है।
मादा हाथी लगभग ढाई साल में एक बार प्रजनन करती है, जबकि गर्भधारण की अवधि औसतन बीस महीने होती है। वह अपने बच्चे से बहुत प्यार करती है, इसलिए अगर उसका बच्चा आसपास हो और अचानक उससे सामना हो जाए तो वह खतरनाक हो सकती है। मुझे इस बात का भला तब पता चला जब मैं बेंगलोर में अपने साथ काम कर रहे कुछ अमेरिकियों को इन जानवरों के झुंड की तस्वीरें लेने के लिए ले गया था। दुर्भाग्य से, जो लोग अचेटी से कुछ ही दूरी पर सीक्रेट नदी के किनारे हाथियों के झुंड को उस दिशा में ले जा रहे थे जहाँ से वे छिपे हुए कैमरामैनों के पास से गुजर सकें, वे एक बच्चे वाली मादा हाथी के चक्कर में पड़ गए। उसने तुरंत उन पर हमला कर दिया और वे वापस उस जगह की ओर भागने लगे जहाँ हम सब आराम से

बैठ थ, और क्रोधित मादा हाथी को भी अपने पीछे खींच लाए। मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि उस दिन हम सब बहुत तेज़ी से भागे, और हमारे कपड़े और शरीर का एक बड़ा हिस्सा उस काँटेदार झाड़ी में गिर गया जिससे हम भागे थे। सौभाग्य से बच्चा हमारी और अपनी माँ की रफ़्तार का मुकाबला नहीं कर पाया। बीच रास्ते में छोड़े जाने पर वह चीखने लगा और इसी वजह से मादा हाथी ने उसका पीछा करना छोड़ दिया और अपने बच्चे के पास लौट गई। वरना एक भयानक दुर्घटना हो सकती थी, क्योंकि हममें से कोई भी हथियारबंद नहीं था, और घोषित बदमाश हाथी को छोड़कर किसी भी हाथी को गोली मारना सख्त मना है।
जब हाथी मार्च करते हैं, तो मादा हाथी और उनके बच्चे झुंड के आगे चलते हैं, नर हाथी सबसे पीछे रहते हैं। बच्चों की उम्र के अनुसार चरागाह और पानी की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए, रुकने के स्थानों का निर्धारण माताएँ ही करती हैं। जब कोई बच्चा पैदा होता है, तो पूरा झुंड एक सप्ताह के लिए अपना मार्च रोक देता है, जब तक कि बच्चा इतना मजबूत न हो जाए कि उनके साथ चल सके। खतरे के समय नर हाथी अपने बच्चों की रक्षा करने का बहुत कम प्रयास करते हैं। दूसरी ओर, वे अक्सर भागने के दौरान सबसे आगे रहते हैं। नदी पार करते समय, माँ अपने बच्चे को अपनी सूंड से पेट के नीचे सहारा देकर सतह पर अपने सामने रखती है। वे आसानी से लंबी दूरी तक तैर सकते हैं। बाधाओं का सामना करते समय या चढ़ाई पर जाते समय, वह अक्सर अपने बच्चे को अपने आगे धकेलती है। बच्चे कई महीनों तक अपनी माँ का दूध पीते हैं, जब तक कि वे अपेक्षाकृत बड़े नहीं हो जाते। वे अपने मुँह से चूसते हैं, न कि अपनी सूंड से; माँ के स्तन उसके अगले पैरों के ठीक पीछे स्थित होते हैं।
चराई खत्म होने पर झुंड लगातार चलते रहते हैं। वे दिन में दो बार पानी पीते हैं, सूर्यास्त से ठीक पहले और सूर्योदय के समय, लेकिन दिन के अन्य समयों में भी, विशेषकर गर्म मौसम में, यदि अवसर मिले तो पानी और रेत में स्नान का आनंद लेते हैं। वे एक-दूसरे के प्रति बहुत स्नेही होते हैं और हमेशा अपने बच्चों के कल्याण के प्रति सजग रहते हैं, और एक झुंड एक बड़े खुशहाल परिवार की तरह व्यवहार करता है। लगातार अंतर्प्रजनन के कारण सदस्य अक्सर रिश्तेदार होते हैं। मैंने उन्हें कभी संभोग करते नहीं देखा, क्योंकि मुझे कभी मौका नहीं मिला; लेकिन पुजारियों ने मुझे बताया है कि नर मादा को गड्ढे में या नीचे की ओर ले जाने के बाद ही संभोग करने का प्रयास करता है, ताकि वह संभोग आसानी से कर सके, और वह मादा के पीछे लगभग सीधी मुद्रा में खड़ा होकर संभोग करता है।
भोजन पचाते समय वे कई तरह की आवाज़ें निकालते हैं, जिनमें एक धीमी, गड़गड़ाहट जैसी, गरजने वाली आवाज़; संतुष्ट होने पर पालतू बैल जैसी, लेकिन कहीं ज़्यादा तेज़ दहाड़; बहुत खुश होने पर सूअर जैसी चीखें; खतरे का आभास होने या हमला करने पर एक छोटी, तीखी तुरही जैसी आवाज़; और घुसपैठिए को चेतावनी देने और एक-दूसरे को सचेत करने के लिए तेज़ खटखटाहट की आवाज़ शामिल है। यह आखिरी आवाज़ वे सूंड को ज़मीन पर पटकते हुए और उसमें से तेज़ी से हवा फूंकते हुए निकालते हैं।
हाथी असमंजस में होने पर अपनी उंगलियाँ (जो उनकी सूंड के सिरे से दर्शाई जाती हैं) भी चूसते हैं। किसी असमंजस में पड़े हाथी को अपनी सूंड का सिरा अपने मुँह में लिए यह सोचते हुए देखना मनोरंजक होता है कि आगे क्या करना है; बिल्कुल किसी डरपोक छोटे बच्चे की तरह जो अपना अंगूठा चूस रहा हो।
हिरणों के विपरीत, जो समय-समय पर अपने सींग गिराकर नए सींग उगा लेते हैं, हाथी अपने दांत जीवन भर अपने पास रखते हैं। अगर लड़ाई में उनका एक दांत टूट

जाए, तो जानवर को बाकी जीवन क्षतिग्रस्त अंग के साथ ही गुजारना पड़ता है। यह सोचना गलत है कि हाथी अपने दांतों का इस्तेमाल पेड़ों को गिराने के लिए करते हैं; हाथी ऐसा पेड़ के तने पर अपना माथा रखकर और अपने शरीर के वजन का इस्तेमाल करते हुए जोर से धक्का देकर करते हैं। ढलान पर चलते समय हाथी बहुत सावधान रहते हैं, ताकि ठोकर न लगे या फिसल न जाएं, कहीं उनका पैर न टूट जाए। वे अपने वजन और गिरने से होने वाली चोटों के प्रति बहुत सचेत रहते हैं, चाहे उनका पैर किसी गड्ढे में चला जाए या वे किसी दलदल में फंस जाएं। इसी कारण, अगर कोई व्यक्ति हाथी द्वारा पीछा किया जाता है, तो उसके बचने की संभावना ऊपर की ओर या समतल पर दौड़ने की तुलना में ढलान पर दौड़ने से कहीं अधिक होती है। हाथी क्षैतिज या लंबवत रूप से कूद नहीं सकते, क्योंकि वे कभी भी अपने चारों पैरों को ज़मीन से ऊपर नहीं उठा सकते। वैसे तो वे आम तौर पर प्रचलित अर्थों में दौड़ते नहीं हैं, बल्कि तेज़ कदमों से चलते हैं जिनकी गति पंद्रह मील प्रति घंटे से थोड़ी अधिक हो सकती है। वे इस गति को कुछ मील तक लगातार बनाए रख सकते हैं।
एक कुशल धावक पीछा कर रहे हाथी से कुछ दूरी तक तो आगे निकल सकता है, लेकिन यह एक समस्या है कि वह अपनी बढ़त को कितनी देर तक बनाए रख सकता है, खासकर जब वह घने या कंटीले जंगल, पेड़ों के तनों, झाड़ियों के झुंडों और विशेष रूप से कांटों के बीच से भाग रहा हो। ऐसी बाधाओं से बचने में कीमती समय बर्बाद हो जाता है, और बाधाओं को पार करने की कोशिश में व्यक्ति और उसके कपड़ों को काफी नुकसान पहुंचता है, जबकि पीछा कर रहा हाथी बस आगे बढ़ता चला जाता है।
हाथियों के बारे में कोई भी चर्चा इस दिलचस्प सवाल के बिना अधूरी है: हाथी मरते कहाँ हैं? इस सवाल को लेकर उन सभी देशों में अंधविश्वास और अटकलों का अंबार लगा हुआ है जहाँ ये विशालकाय जानवर जंगली अवस्था में रहते हैं। अफ्रीका में, लंबे समय से यह माना जाता रहा है कि हाथियों के गुप्त कब्रिस्तान मौजूद हैं, और वहाँ मौजूद हाथीदांत के खजाने को खोजने के लिए कई अभियान भी भेजे गए हैं। लेकिन कोई भी सफल नहीं हुआ। श्रीलंका, बर्मा, मलाया और सियाम में भी यही सवाल पूछा जाता है और यही मान्यता है। लेकिन इनमें से किसी भी देश में इसका कोई सबूत नहीं मिला है।
दक्षिण भारत के आदिवासी इस मामले में अपने विश्वासों में बंटे हुए हैं। करुम्बा और पुजारी 'गुप्त कब्रिस्तान' के सिद्धांत का समर्थन करते हैं, जबकि शोलागा मानते हैं कि हाथी कभी मरते ही नहीं, जो स्पष्ट रूप से गलत है, क्योंकि हर जीवित प्राणी को मरना ही है। लेकिन पहला सिद्धांत भी उतना ही निराधार है, क्योंकि दक्षिण भारत के जंगलों का कोई भी कोना ऐसा नहीं है जहाँ मनुष्य के पैर न पड़े हों। वहाँ कोई भी अनछुआ स्थान नहीं है।
तो फिर बूढ़े होने पर हाथी कहाँ मरते हैं? जंगल में भटकते हुए मैंने आज तक किसी हाथी का शव नहीं देखा जिसकी मृत्यु स्वाभाविक रूप से हुई हो। मुझे एक छोटी मादा हाथी ज़रूर मिली है जिसे दो बाघों ने मार डाला था। और हाँ, मोयार घाटी का वह दुष्ट हाथी रेत में धंसकर मर गया। लेकिन इनमें से किसी भी अंत को स्वाभाविक मृत्यु नहीं कहा जा सकता। इसलिए सवाल अनुत्तरित ही रहता है और कहानी जारी रहती है। ज़्यादा से ज़्यादा हम अनुमान लगा सकते हैं या कोई संभावित समाधान सुझा सकते हैं, जिनमें से एक से अधिक समाधान भी हो सकते हैं।
दो बार मुझे कावेरी नदी के कीचड़ और दलदल में हाथी की हड्डियाँ मिलीं, जब अत्यधिक गर्म और शुष्क मौसम के दौरान पानी असामान्य रूप से कम हो गया था। इनमें से एक रीढ़ की हड्डी का एक हिस्सा था, जो मुझे होगेनेकल में मिला था। दूसरी

जांघ का हड्डा था, जो संगम में मिला था। ये दोनों स्थान हाथियों के निवास स्थान हैं और कावेरी नदी के किनारे स्थित हैं। क्या बूढ़े हाथी, जब उन्हें मृत्यु निकट आती दिखती है, तो जानबूझकर डूबकर आत्महत्या कर लेते हैं? यह विचार असंभव लगता है, क्योंकि वे स्वाभाविक रूप से कुशल तैराक होते हैं। इसके अलावा, सभी प्राणियों में जीने की प्रबल इच्छा होती है। हालांकि, यह संभव है कि बुढ़ापे के साथ वे इतने कमजोर हो जाते हैं कि धारा का सामना करने में असमर्थ हो जाते हैं, और इसलिए दुर्घटना में डूब जाते हैं। मुझे लगता है कि यही समस्या का सबसे संभावित समाधान है, क्योंकि हर उस देश में जहाँ हाथी पाए जाते हैं, वहाँ जंगलों से होकर बहने वाली बड़ी नदियाँ होती हैं; उन्हें पानी बहुत पसंद होता है और वे उसमें तैरते रहते हैं, और अंत में वह दिन आ जाता है जब वे खुद को पानी में तैरते रहने के लिए बहुत कमजोर हो जाते हैं, इसलिए वे उग्र धाराओं में डूबकर मर जाते हैं।
दूसरी थ्योरी यह है कि हाथी जंगल के दूरदराज इलाकों में मर जाते हैं, जहाँ गिद्ध, लकड़बग्घे, जंगली सूअर, भालू, साही, चींटियाँ, दीमक और फफूंद मिलकर शव और हड्डियों को पूरी तरह नष्ट कर देते हैं, इससे पहले कि कोई इंसान वहाँ से गुज़रे। हालाँकि, उस जगह के दूर होने के कारण वहाँ इंसानों का आना बहुत कम होता है। यह एक संभावित समाधान है, हालाँकि मुझे नहीं लगता कि यह सही है। किसी न किसी समय कोई न कोई ज़रूर वहाँ पहुँचकर शव को ढूंढ लेता, भले ही कंकाल न मिले। हाथियों के कंकालों को छोड़कर, जिनके मारे जाने की पुष्टि हो चुकी है, बाकी कभी नहीं मिलते।
तीसरा सिद्धांत यह है कि हाथी इतनी लंबी उम्र जीते हैं—वास्तव में 150 वर्ष से अधिक—कि औसत के नियम के अनुसार वे कभी भी प्राकृतिक मृत्यु नहीं पाते, बल्कि देर-सवेर हिंसक मौत मरते हैं। जैसा कि मैंने कहा है, ऐसी परिस्थितियों में उनके अवशेष अक्सर पाए जाते हैं। वास्तव में, सड़ते हुए हाथी के शव से आने वाली दुर्गंध मीलों दूर तक उसकी मौजूदगी का संकेत देती है। इस अंतिम सिद्धांत पर आपत्ति यह है कि इसके बावजूद, अप्राकृतिक रूप से मरने वाले हाथियों के शव, कंकाल और हड्डियाँ असाधारण रूप से कम पाई जाती हैं, जबकि हाथियों के निवास स्थान वाले प्रत्येक देश में हर साल मरने वाले हाथियों की संख्या इससे कहीं अधिक है। यह स्थिति विशेष रूप से अफ्रीका में है, जहाँ आज हजारों हाथी जंगली अवस्था में हैं, जबकि अप्राकृतिक कारणों से मरने वाले जीवों के शवों और कंकालों की संख्या हर साल होने वाली कुल मौतों की संख्या के अनुपात में बहुत कम है।

---

* नौ नरभक्षी और एक बदमाश देखें।
* देखें: नौ नरभक्षी और एक बदमाश।
* देखें: नरभक्षी और जंगल के हत्यारे, जॉर्ज एलन एंड अनविन

सात

सुलेकुंटा पैंथर

सुलेकुंट का पैंथर एक 'थेन्डू' था, जो हिंदुस्तानी भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ है 'जंगल में रहने वाला विशाल आकार का पैंथर'। यह असाधारण रूप से बड़ा थेन्डू था। मुझे इस जानवर के बारे में सबसे पहले अपने एक शिकारी मुनियाप्पा से पता चला। शिकारी शब्द का अर्थ है 'शिकारी', आमतौर पर वह व्यक्ति जिसने इसे अपना पेशा बना लिया हो, और मुनियाप्पा हर मायने में एक शिकारी था। इसके अलावा, वह एक पक्का अवैध शिकारी था। मैं 'था' शब्द का प्रयोग इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मुनियाप्पा मुझे यकीन दिलाता है कि उसके अवैध शिकार के दिन खत्म हो चुके हैं। खैर, वह यही कहता है; लेकिन मैं उस पर बिल्कुल विश्वास नहीं करता। मुनियाप्पा बहुत बड़ा झूठा है।
कुछ साल पहले इस आदमी ने आदमखोर बाघिन को जन्म दिया था, जिसने सलेम जिले के जोवलागिरी में अपना आतंक मचाना शुरू किया और फिर सुलेकुंटा और अन्य स्थानों पर भी गई। खैर, यह सब एक अलग कहानी है।* मैं इसका जिक्र सिर्फ इसलिए कर रहा हूं ताकि आपको पता चले कि मुनियाप्पा एक शिकारी था और उसने बीते दिनों में खूब शरारतें की थीं। लेकिन फिर भी वह एक भरोसेमंद शिकारी है और अपने गांव जोवलागिरी के दस मील के दायरे में मौजूद जंगलों को वह हथेली की तरह जानता है।
सुलेकुंटा, उत्तरी सलेम क्षेत्र के जंगल में स्थित एक छोटा सा गाँव है, जो जोवलागिरी से लगभग सात मील दक्षिण-पूर्व में है। यहाँ विभिन्न प्रकार के वन पाए जाते हैं; एक गहरी घाटी में घने जंगल हैं जिनमें बांस की बहुतायत है, और इस घाटी से बत्तेमादुवु हल्ला नामक एक धारा बहती है। यह धारा अंततः दक्षिण-पूर्व दिशा में बहती है और डोड्डाहल्ला नामक एक बड़ी नदी की सहायक नदी है, जिसे मैंने गुप्त नदी कहा है और जिसके बारे में मैं पहले ही लिख चुका हूँ।
सुलेकुंटा बस्ती थोड़ी ऊँची ज़मीन पर बसी है, जिसके चारों ओर रागी और चोलम की खेती के लिए कुछ खेत हैं। खेतों के चारों ओर झाड़ियाँ और जंगल हैं। इस क्षेत्र के चारों ओर छोटी पहाड़ियाँ हैं, जो काफी पथरीली हैं और कई जगहों पर बड़े-बड़े पत्थरों के ढेर हैं, जिनके बीच-बीच में लंबी, कांटेदार घास उगी है। घास के बीच-बीच में और अक्सर घने झुंडों में लैंटाना और वेट-ए-बिट कांटेदार झाड़ियाँ बहुतायत से उगती हैं।

यह इलाका कभी मोरों से भरा हुआ था, जो कैक्टस के रसीले लाल फलों को खाते थे। लेकिन वन विभाग ने कोचीनियल नामक कीट को यहाँ ला दिया, जो केवल कैक्टस पर ही निर्भर रहता है और उसे नष्ट कर देता है। यह प्रयोग बेहद सफल साबित हुआ है और कैक्टस तेज़ी से खत्म हो रहा है, लेकिन इसकी संख्या में कमी के साथ ही बेर जैसे फल दुर्लभ होते जा रहे हैं। इसलिए मोर दूसरे क्षेत्रों में चले गए हैं, हालांकि इस इलाके में अभी भी काफी संख्या में पक्षी मौजूद हैं। ये पक्षी सुबह और शाम को खेतों में घुस आते हैं, जहाँ से उनकी दर्द भरी आवाज़ें घाटियों और पहाड़ियों में गूंजती हैं। चंदन के पेड़ यहां बहुतायत से उगते हैं, हालांकि किसी न किसी कारण से इस क्षेत्र के पौधे 'स्पाइक' कीट के हमलों से बुरी तरह प्रभावित होते हैं और ज्यादातर अस्वस्थ रहते हैं।
खैर, अपनी कहानी पर लौटते हुए, एक दिन मुनियाप्पा ने मुझे तमिल भाषा में एक पोस्टकार्ड भेजा, जिसमें लिखा था कि सुलेकुंटा गाँव के पास ही एक बाघिन ने तीन हफ़्तों के भीतर तीन मवेशियों को मार डाला है। उन्होंने मुझे आकर उसका शिकार करने का न्योता दिया। मैं तमिल नहीं पढ़ सकता, इसलिए मैंने एक भारतीय मित्र से पोस्टकार्ड का अनुवाद करवाया। मैंने उससे विशेष रूप से पूछा कि क्या उसे यकीन है कि मुनियाप्पा ने ही कहा था कि हत्यारा बाघिन थी, या उनका मतलब बाघ या शायद कोई तेंदुआ था। मेरे मित्र को पूरा यकीन था और उसने पुष्टि की कि मुनियाप्पा ने स्पष्ट रूप से लिखा था कि हत्या एक बाघिन ने की थी। इसलिए मैंने न्योते का जवाब नहीं दिया, क्योंकि मुझे बाघिन का शिकार करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, जो आखिरकार भोजन के लिए ही अपना जायज़ शिकार कर रही थी। मैंने अपने मित्र से तमिल में जवाब लिखवाया, जिसमें मुनियाप्पा को जानकारी के लिए धन्यवाद दिया गया था, लेकिन यह भी कहा गया था कि मुझे इसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं है।
लगभग एक महीने तक मुझे कोई खबर नहीं मिली, फिर मुनियाप्पा का एक और पत्र मिला, जो एक बार फिर तमिल में था। इसमें बताया गया था कि बाघिन ने तब से चार और मवेशियों को मार डाला है, यानी इलाके में आने के बाद से औसतन प्रति सप्ताह एक शिकार। उन्होंने मुझसे आग्रह किया कि मैं अवश्य आऊं और बाघिन का शिकार करूं। मैंने एक बार फिर जवाब भेजा और स्पष्ट रूप से कहा कि मुझे बाघिन का शिकार करने की कोई इच्छा नहीं है, क्योंकि वह तो बस अपना प्राकृतिक भोजन कर रही थी और किसी को नुकसान नहीं पहुंचा रही थी। दो सप्ताह बाद मुनियाप्पा स्वयं आए। वे ठीक उसी समय पहुंचे जब मैंने दोपहर का भोजन समाप्त किया था, और उन्होंने बताया कि वे सुबह-सुबह जोलागिरी से बस से आए थे। यह देखते हुए कि जोलागिरी बेंगलोर से केवल तैंतालीस मील दूर है, आपको दक्षिण भारत में 'तीसरी श्रेणी की बस सेवाओं' के नाम से जानी जाने वाली बसों की धीमी गति का कुछ अंदाजा हो सकता है। मुनियाप्पा ने कहा कि वे मुझे बाघिन का शिकार करने के लिए प्रेरित करने आए हैं। मैंने जवाब दिया कि मुझे इसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं है और सुझाव दिया कि वे स्वयं जानवर का शिकार करें। उन्होंने कहा कि वे ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि उनके पास शिकार का लाइसेंस नहीं है।
मैंने काफी सीधे शब्दों में जवाब दिया, 'मुन्नियप्पा, अब तक तो आपको मुझे बेहतर तरीके से जान लेना चाहिए था। क्या आपको लगता है कि मैं एक पल के लिए भी आपकी बात पर विश्वास करता हूँ?'
मुनियाप्पा कुछ देर तक हिचकिचाया, फिर बोला: 'दोराई को धोखा देने की कोशिश करना व्यर्थ है। वह अच्छी तरह जानता है। असल बात तो यह है कि मेरी थूथन से चलने वाली बंदूक बाघिन के खिलाफ शायद ही कारगर होती है।'

मैंने जवाब दिया, 'मुझे याद है कि तुमने एक बार इससे एक बाघ को गोली मारी थी, और उस छोटी सी गोलीबारी ने काफी बड़ी मुसीबत खड़ी कर दी थी। क्या ऐसा ही है?'
वह एक मिनट तक चुप रहा और फिर बोला, 'मैं एक और जोखिम नहीं लेना चाहता। इस बार मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूं कि बाघिन को मार दिया जाए।'
उनकी बातों ने मेरी जिज्ञासा जगा दी। मैंने पूछा, 'आप इस बाघिन में इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे हैं?'
अंततः, पूर्वी रिवाज़ के अनुरूप, और यह देखकर कि मेरे तीखे सवालों ने उसे घेर लिया है, मुनियाप्पा ने सच उगल दिया। पता चला कि उसने अपने गाँव के एक प्रभावशाली व्यक्ति से सौ रुपये उधार लिए थे, क्योंकि उसे अपने खेत में हल चलाने के लिए एक अच्छा बैल खरीदने के लिए उन पैसों की ज़रूरत थी। उसके पास पहले दो बैल थे, लेकिन उनमें से एक मर गया था और उसके लिए तुरंत नुकसान की भरपाई करना ज़रूरी था, क्योंकि हल चलाने के लिए एक नहीं बल्कि दो बैलों की ज़रूरत थी।
लेनदार अपने पैसे वापस लेने के लिए दबाव डालने लगा था, लेकिन मुनियाप्पा के पास पैसे नहीं थे। संक्षेप में कहें तो, लेनदार मुनियाप्पा को कर्ज से मुक्त करने के लिए तैयार हो गया था, बशर्ते वह उसे एक अच्छी, ताजा शिकार की हुई बाघ की खाल उपलब्ध करा दे। लेनदार उस खाल को एक अन्य व्यक्ति, जो इस बारे एक अधिकारी था, को एक विशेष कृपा के बदले में भेंट करने का इरादा रखता था।
मुनियाप्पा ने मुझे लेनदार और उस व्यक्ति का विवरण दिया जिसे वह बाघ की खाल भेंट करना चाहता था; साथ ही उस विशेष कृपा के बारे में भी बताया। लेकिन इसका कहानी से कोई लेना-देना नहीं है। मैंने बहाना बनाया कि मैं व्यस्त हूँ और अगले एक महीने तक छुट्टी नहीं ले सकता, जो कि सच था। लेकिन मुनियाप्पा मुझे तब तक परेशान करता रहा जब तक मैंने समझौता नहीं कर लिया और अगले पाँच सप्ताह बीत जाने के बाद आने वाले किसी भी बुलावे का जवाब देने के लिए तैयार हो गया, क्योंकि उस दौरान मैं पूरी तरह से व्यस्त था। वह काफी हद तक संतुष्ट हो गया और कहा कि जब यह अवधि बीत जाएगी और कोई शिकार हो जाएगा, तो वह गिद्धों से बचाव के लिए उसे शाखाओं से ढकने की व्यवस्था करेगा और जोवुलागिरी से होसुर के जिला मुख्यालय तक तेईस मील साइकिल चलाकर जाएगा, जहाँ से वह मुझे एक टेलीग्राम भेजेगा। संदेश मिलते ही मैं तुरंत कार से चला जाऊँगा। मेरे आने तक वह वापस आकर मचान लगा देगा, ताकि मुझे बस बाघिन के दिखाई देते ही उसे गोली मारनी हो। उसने अपनी बात इतनी अच्छी तरह रखी कि वह न केवल मुझसे बेंगलोर जाने का बस किराया लेने में सफल रहा, बल्कि वापसी यात्रा का किराया, साथ ही साथ उसके द्वारा भेजे जाने वाले टेलीग्राम के लिए दो रुपये और अपने लिए कुछ अतिरिक्त पैसे भी लेने में सफल रहा।
अभी पाँच सप्ताह ही बीते थे कि मुझे टेलीग्राम से सूचना मिली। तय समझौते के अनुसार, मैंने तुरंत पत्र का उत्तर दिया, और लगभग नब्बे मिनट बाद मैंने जोवलागिरी में मुनियाप्पा के छोटे से घर के सामने अपनी स्टडबेकर कार रोकी। मैंने उन्हें दरवाजे पर बैठे हुए, मेरे आने का इंतज़ार करते हुए पाया। वे अभी-अभी होसुर से साइकिल पर लौटे थे। उन्होंने बताया कि बाघिन ने पिछली शाम सुलेकुंटा से एक मील के भीतर एक बड़े भूरे बैल को मार डाला था। अंधेरा होने से पहले एक संदेशवाहक ने यह सूचना दी थी। मुनियाप्पा और संदेशवाहक लालटेन की रोशनी में सुलेकुंटा लौट आए थे, और उन्होंने रात वहीं बिताई थी। भोर होते ही उन्होंने मृत बैल को देखा और पाया कि बाघिन उसका लगभग आधा हिस्सा खा चुकी थी। मुनियाप्पा और उनके सुलेकुंटा

के दोस्तों ने शव को पत्तों से ढक दिया था। फिर उन्होंने उन्हें मचान लगाने के निर्देश दिए, और ऐसा करने के बाद वे दौड़कर जोवलागिरी तक सात मील की दूरी तय करके साइकिल पर सवार हुए और दो घंटे में होसुर तक तेईस मील की दूरी तय करके मुझे अपना टेलीग्राम भेजा। संदेश जल्दी आ गया था और मैंने भी तुरंत जवाब दिया था, इसलिए अब दोपहर के 3 बज चुके थे और मुझे आठ मील पैदल चलना था, और फिर बस मचान पर बैठना था, जो निस्संदेह तैयार होगा और मेरा इंतजार कर रहा होगा, और बाघिन के आते ही उसे मार देना था। सब कुछ इतना ही आसान था।
हम बिना देर किए सुलेकुंटा के लिए निकल पड़े। रास्ते में मैंने मुनियाप्पा से उस इलाके के बारे में पूछा जहाँ शिकार हुआ था। उन्होंने बताया कि बैल घने बाँसों के झुरमुट में भटक गया था, जहाँ उसकी मौत हो गई। फिर मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने शिकार के बारे में कोई खास बात देखी थी, और क्या उन्हें कोई पैदचिह्न मिले थे जिससे यह साबित हो सके कि हत्यारा एक बाघिन थी।
'नहीं,' उसने उत्तर दिया; 'मुझे कोई पदचिह्न नहीं मिले, क्योंकि पूरा इलाका गिरे हुए, सूखे और सड़ते हुए बांस के पत्तों से घना ढका हुआ है। इसके अलावा, मेरे पास दूर-दूर तक पटरियों की तलाश करने का समय नहीं था, क्योंकि मुझे टेलीग्राम भेजने के लिए जल्दी वापस लौटना था। लेकिन हत्यारा निश्चित रूप से एक बाघ ही है, क्योंकि बैल की गर्दन टूटी हुई थी, जो एक पुख्ता सबूत है। यह एक बाघिन ही होनी चाहिए, क्योंकि सुलेकुंटी के लोग ऐसा ही कहते हैं।'
उस बेतुके तर्क से मुझे संतुष्ट होना पड़ा, इसलिए हमने आगे बातचीत में समय बर्बाद नहीं किया। तमाम कोशिशों के बावजूद सुलेकुंटा पहुंचने में दो घंटे लगे, और फिर मरे हुए बैल तक पहुंचने में कुछ और समय लगा। मेरी घड़ी में ठीक शाम के 5:30 बज रहे थे।
हमने शव से पत्ते हटाए। जैसा कि मुनियाप्पा ने बताया था, बैल की गर्दन टूटी हुई थी और आंतें कुछ फीट बाहर निकालने के बाद उसका पिछला आधा हिस्सा खा लिया गया था। सभी संकेत बाघ या बाघिन के काम की ओर इशारा कर रहे थे! गिरे हुए और सूखे बांस के असंख्य पत्तों के कारण पगडंडियों के निशान देखने की कोई उम्मीद नहीं थी।
फिर मैंने अपना ध्यान मचान पर केंद्रित किया। जैसा कि उम्मीद थी, क्योंकि इसे एक पक्ष ने दूसरे पक्ष को निर्माण के लिए सौंप दिया था, इसलिए मेरी राय में परिणाम संतोषजनक नहीं था। सबसे पहले तो, यह उन बांस-पेड़ मचानों में से एक था, यानी इसे बांसों के एक झुंड के ऊपर बनाया गया था। बेशक, इसमें किसी की गलती नहीं थी, क्योंकि बैल को बांसों के घेरे में ही मार डाला गया था और आसपास कोई दूसरा पेड़ नहीं था जिस पर चबूतरा बांधा जा सके। लेकिन ऐसे मचानों में कई कमियां होती हैं। जब तक इन्हें बहुत सावधानी और चतुराई से न बनाया जाए, ये बहुत ही ध्यान खींचने वाले होते हैं। यह मचान भी इसका अपवाद नहीं था।
लगभग पंद्रह फीट की ऊंचाई पर बांस के हर एक इंठल को काट दिया गया था, फिर कटे हुए टुकड़ों से पत्तियां हटाकर उन्हें आड़े-तिरछे रखकर मचान का फर्श बनाया गया था। परिणामस्वरूप, बांस का वह विशेष गुच्छा स्पष्ट रूप से कटा हुआ दिखाई दे रहा था और उसके ऊपर का चबूतरा साफ दिख रहा था। दूसरे, आड़े-तिरछे रखे गए टुकड़े बहुत कम थे और उनमें से कुछ कई इंच दूर थे। पूरी संरचना बेहद अस्थिर लग रही थी और मुझे पता था कि यह बुरी तरह हिलेगी और चरमराएगी। तीसरे, इसे नीचे या किनारों से छिपाने का कोई प्रयास नहीं किया गया था। यह बस एक नंगा चबूतरा था, जिसे अचानक छोटे किए गए बांस के गुच्छे के ऊपर खड़ा कर दिया गया था।

समय तेज़ी से बीत रहा था और अब कुछ भी करना संभव नहीं था। मरे हुए बैल के ऊपर से पत्ते हटाने के बाद, मैं अपनी राइफल और रात में इस्तेमाल होने वाले सामान्य सामान के साथ चबूतरे पर चढ़ गया।
मेरी आशंकाएँ तुरंत सच हो गईं। देखते ही देखते, मेरे वज़न से एक सिरा दूसरे से नीचे झुक गया, जिससे पूरी संरचना क्षैतिज से लगभग तीस डिग्री के कोण पर टेढ़ी हो गई और मुझे उसमें खतरनाक कंपन महसूस होने लगी। मुनियाप्पा ने कुछ हरे बांस के पत्ते काटकर मेरे नीचे के खंभों के बीच फंसा दिए ताकि नीचे से संरचना छिप जाए। लेकिन यह एक बेकार कोशिश थी, और अब लगभग छह बज चुके थे, चबूतरे के चारों सिरों पर और कुछ छिपाना संभव नहीं था। फिर मुनियाप्पा चले गए और मैंने अपनी ज़िंदगी की सबसे भयानक रातों में से एक रात बिताई। बांस के टुकड़े नीचे से मुझे चुभ रहे थे। हर बार जब मैं हिलता, तो पूरी संरचना चरमराती और हिलती। मेरे वजन और हर हरकत से मचान और भी ज्यादा टेढ़ा होता जा रहा था। इसलिए मुझे डर था कि कहीं यह अजीबोगरीब संरचना गिर न जाए या एक सिरे से इतनी तेजी से नीचे न झुक जाए कि वहाँ रहना असंभव हो जाए, इसलिए मैं हिलने-डुलने को मजबूर नहीं था।
हालांकि कई लोग शिकार के पास बैठकर समय बिताना एक थकाऊ और उबाऊ काम मानते हैं, लेकिन मेरे लिए यह हमेशा से ही बेहद आनंददायक रहा है। शायद इसका कारण यह है कि मैं प्रकृति प्रेमी हूँ। नीरसता के बजाय, मुझे लगता है कि समय बहुत तेज़ी से बीत जाता है। मैं रात के चमत्कारों में इतना खो जाता हूँ, चाहे वह चाँदनी हो जब चाँद की कोमल, चाँदी जैसी किरणें जंगल को दिन के उजाले से बिल्कुल अलग, एक रहस्यमयी चमक से भर देती हैं; या फिर अँधेरी रात, जब जुगनू इधर-उधर टिमटिमाते रहते हैं और आकाश में तारे शांत भाव से टिमटिमाते हैं, जिनकी चमक आसपास की झाड़ियों और परिदृश्य को खूबसूरती से उभार देती है। सुनने के लिए बहुत कुछ है, भले ही कोई जंगल की रात में उमड़ने वाले अनगिनत जीवों को न देख पाए। सीखने के लिए बहुत कुछ है, बस इच्छा और क्षमता होनी चाहिए।
लेकिन यह रात हर मायने में अपवाद थी। आसमान घोर अंधकार से भरा था, और आसमान में छाए घने बादलों ने इस अंधकार को और भी गहरा कर दिया था। लेकिन जंगल एकदम सन्नाटा पसरा हुआ था। न किसी जानवर या पक्षी ने हल्की सी भी आवाज़ निकाली, न ही बांसों की लहराती कतारों में किसी मेंढक ने टर्राया और न ही झींगुर ने चहचहाया।
मुझे इन असामान्य परिस्थितियों का कारण पता था। एक तूफान आने वाला था। रात के आठ बज रहे थे जब बांस के झुरमुट में मूसलाधार बारिश का पहला संकेत महसूस हुआ। हवा चलने लगी। मैं बांसों की चोटियों से आती हुई उसकी आवाज़ सुन सकता था, जो दूर समुद्र की गर्जना जैसी लग रही थी। आखिरकार वह मुझ तक एक विशाल हाथ के प्रहार की तरह पहुंची। पंखनुमा बांसों की चोटियाँ हवा के झोंके से झुक गईं, जबकि मेरे नीचे कटे हुए तने हवा के साथ मुड़ने लगे। इससे जिस चबूतरे पर मैं बैठा था, उसके जोड़ चरमराने लगे और सबसे बुरी बात यह थी कि वे धीरे-धीरे अलग होने लगे। जैसे-जैसे कटे-फटे बांस के तने हर झोंके के साथ हिलते और डगमगाते गए, झुकाव और भी तीव्र होता गया।
और फिर बारिश शुरू हो गई! जंगल में, खासकर पहाड़ी इलाकों में, अक्सर बारिश की बूंदें ज़मीन पर गिरने से पहले ही सुनाई देती हैं। मुझे दूर से आती हल्की-हल्की आवाज़ सुनाई दी, जब घने बादल नीचे प्यासे जंगल की ओर बरसने लगे। बारिश जंगल पर बरसते ही यह आवाज़ तेज़ गर्जना में बदल गई, और जैसे-जैसे पानी की दीवार मेरी ओर बढ़ती गई, गर्जना और भी तीव्र होती गई। एक आखिरी झोंके ने नीचे

टूटे हुए बांसों को हिला दिया। वे ज़ोर से झुक गए, और फिर पानी की एक चादर ने मुझे घेर लिया। बिजली की तेज़ चमक धरती की ओर कौंधी, जिसके बाद गरज की कान फाड़ देने वाली आवाज़ आई। पल भर में मैं पूरी तरह भीग गया।
लेकिन मुझे अपनी असुविधा पर शोक मनाने का ज्यादा समय नहीं मिला, क्योंकि एक और भी बड़ी विपत्ति मुझ पर आ पड़ी। हवा के अगले झोंके के साथ ही मेरे उस अजीब से प्लेटफार्म की पकड़े हुए रस्सियाँ या तो फिसल गईं या टूट गईं, और मैंने महसूस किया कि वह ढाँचा पैंतालीस डिग्री के कोण पर झुक गया और मैं, अपने सारे उपकरण के साथ, उस खतरनाक ढलान से नीचे फिसल गया।
जैसे ही मुझे लगा कि मैं गिर रहा हूँ, मैंने राइफल छोड़ दी। मुझे याद है कि वह बाँस के तनों से टकराई और फिर धीमी सी आवाज़ के साथ ज़मीन पर गिर गई। उछलते बाँसों के कटे हुए सिरे मुझे भेदने की कोशिश कर रहे थे, और मैं बेढंगे तरीके से गिरते हुए किसी चीज़ को पकड़ने की कोशिश कर रहा था। एक कटे हुए सिरे ने मेरी कमीज़ को पीछे से फाड़ दिया, जबकि दूसरे ने लगभग मेरी आँखें निकाल लीं। मैंने डरते हुए दूसरे सिरे को पकड़ लिया, और उसे दूर धकेलने की कोशिश की, क्योंकि वह मेरे माथे को चीर रहा था। और इस अफरा-तफरी के बीच, मेरे नीचे से खाँसने की कई आवाज़ें आईं और झाड़ियों के बीच से एक भारी शरीर के भागने की आवाज़ सुनाई दी।
मैं अपने चेहरे के सामने बांस को दोनों हाथों से कसकर पकड़े हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थी। मेरे पैर और शरीर बांस की डंडियों के बीच फंसे हुए थे, और मेरा पूरा वज़न दोनों हाथों पर था। इस स्थिति में मैं अपनी जान बचाने के लिए पूरी ताकत से बांस को पकड़े रही, और उस बाघिन को भगाने के लिए लगातार चीखती रही, जो अब मेरे नीचे थी।
जो कुछ हुआ था, वह बिल्कुल स्पष्ट था। बारिश शुरू होते ही वह शिकार पर लौट आई थी और उसने उस बाँस के झुंड के नीचे शरण लेने का फैसला किया था, जहाँ मेरा सबसे असुरक्षित मचान बना हुआ था। संभवतः हवा, बारिश, गरज और बिजली, सबने मिलकर उसका ध्यान उस स्पष्ट चबूतरे से भटका दिया था जिस पर मैं बैठा था, और जिसे वह सामान्य परिस्थितियों में निस्संदेह तुरंत देख लेती। लेकिन तभी मेरे मचान को बाँधने वाली रस्सियाँ टूट गईं। मेरी राइफल और अन्य उपकरण उसके चारों ओर गिर पड़े, जबकि मैं ऊपर बाँस के तनों के बीच छटपटाने लगा।
वह बुरी तरह डरी हुई और नाराज़ भी रही होगी। इसीलिए तो उसने विरोध में इतनी ज़ोर से दहाड़ मारी थी। लेकिन सवाल यह था: क्या वह भाग गई थी, या अभी भी नीचे छिपी हुई थी?
मैं घोर अंधेरे में था, राइफल के साथ मेरी टॉर्च भी गिर गई थी। मैं ज्यादा देर तक टिक नहीं सकता था। मेरे हाथ, चेहरा और पीठ बुरी तरह घायल हो गए थे, गीला बांस मेरे हाथों से फिसलने लगा था, और मेरे पैर और शरीर एक फुट नीचे खिसक गए। फिर मैं बांस के तनों के बीच फंस गया। मैं पूरी तरह से फंस गया था, और हर तरह से असहाय था।
जैसा कि मैंने आपको बताया, चबूतरा ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट की ऊंचाई पर बनाया गया था। यह लगभग दो फीट नीचे झुक गया होगा। फिर मैं कम से कम एक फीट और नीचे खिसक गया, जिसके बाद मैं फंस गया। इस प्रकार मैं मूल पंद्रह फीट से लगभग तीन फीट नीचे था। मेरी ऊंचाई 5 फीट 7½ इंच है। परिणामिस्वरूप, मेरे पैर ज़मीन से लगभग छह फीट ऊपर लटक रहे थे। बेशक, मैंने उस समय यह सब मानसिक गणना नहीं की थी। लेकिन मुझे इतना ज़रूर समझ आ गया था कि अगर बाघिन ने हमला करने का फैसला किया तो मैं बहुत बड़े खतरे में पड़ जाऊंगा।

क्योंकि अब कोई भी बाघ मुझ तक आसानी से पहुंच सकता था, जबकि मैं बांसों के बीच फंसा हुआ था, निहत्था था और घोर अंधेरे में था।
क्या आप मुझे चिल्लाने के लिए दोषी ठहरा सकते हैं? मैंने ऐसा सिर्फ़ बाघिन को डराने के लिए नहीं किया था। मुझे लगता है कि जब कोई सचमुच डरा हुआ होता है, तो स्वाभाविक प्रतिक्रिया चिल्लाना होती है—या यूँ कहें कि चीखना। इसलिए मैं काफ़ी देर तक यही करता रहा, पूरी तरह बेकाबू और बेशर्मी से। फिर मैंने खुद पर काबू पाया और सोचने लगा। मुझे याद आया कि मैंने झाड़ियों के बीच से किसी भारी शरीर के भागने की आवाज़ सुनी थी। निस्संदेह, वह बाघिन ही थी। लेकिन क्या वह तुरंत भाग गई थी, या अपने आस-पास और ऊपर मची अफरा-तफरी के बाद किसी और झाड़ी की ओट में कूद गई थी?
शांत होने पर मुझे बड़ी कृतज्ञता के साथ एहसास हुआ कि बाघिन तो बस एक आम मवेशी चुराने वाली थी, आदमखोर नहीं। मेरी चीखों ने उसे पहले से कहीं ज़्यादा डरा दिया होगा। अब तक के अनुमान के आधार पर मुझे पूरा यकीन था कि वह भाग गई होगी और ज़मीन पर उतरने से मैं सुरक्षित रहूँगा। लेकिन असल बात यह थी कि मैं उतर नहीं सकता था, मैं हिलते हुए तनों के बीच बुरी तरह फँसा हुआ था।
अगले कुछ मिनट बेहद भयावह थे। खुद को इतनी मजबूती से जकड़ा हुआ पाकर, स्वाभाविक उपाय यही था कि मैं अपने पैरों और निचले अंगों को छुड़ाने के लिए उस तने पर थोड़ा ऊपर चढ़ जाऊं जिससे मैं चिपकी हुई थी। मैंने ऐसा करना शुरू किया और साथ ही अपने कैनवास के जूतों की उंगलियों से सहारा ढूंढने लगी, ताकि कुछ सेकंड के लिए ही सही, मेरा वजन संभाल सके और मेरी बाहों पर पड़ रहे भयानक तनाव से राहत मिल सके।
पता नहीं आप में से कितने लोगों ने बांस के तने या पत्ती को करीब से देखा या परखा है। उस पर उभरे हुए हिस्से होते हैं जिनसे पत्तियां निकलती हैं। कुछ पत्तियां नुकीली होती हैं, लेकिन सभी अपेक्षाकृत मज़बूत होती हैं, हालांकि उनकी मोटाई एक आदमी की मध्यमा उंगली जितनी ही होती है। इन नुकीले कांटों ने मेरे पहने हुए पतले रबर के जूतों के तलवों को छेद दिया और मेरी त्वचा में चुभ गए। लेकिन वे मेरा वजन सहने के लिए काफी मजबूत थे। काफी मशक्कत के बाद मैंने अपना खोया हुआ एक-दो पैर वापस पा लिया। ऐसा करते ही मुझे लगा कि मेरे पैर आज़ाद हो गए हैं। जल्द ही मैं सिर्फ एक तने से चिपका रह गया, जिसने मेरा पूरा वजन संभाल रखा था।
इन सबके बीच तूफान अपनी पूरी ताकत से जारी रहा। बिजली कड़क रही थी, बादल गरज रहे थे और मूसलाधार बारिश हो रही थी। हवा और भी तेज़ हो गई, मानो ऐसा संभव हो, और बांस के झुरमुट को चीरती हुई इधर-उधर से डालियाँ तोड़ती हुई मेरे चेहरे के पास से गुज़र रही थीं। अचानक एक ज़बरदस्त धमाका हुआ, जो पहले के सभी धमाकों से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली था, और उसने बांस की चोटियों को जकड़ लिया। उसने टूटे हुए बांस के गुच्छे पर प्रहार किया, जिससे तने पहले से कहीं ज़्यादा झुक गए, और जिस तने से मैं चिपका हुआ था, वह मेरे नीचे ज़ोर से टूट गया। मुझे लगा जैसे मैं गिर रहा हूँ, मेरा शरीर दूसरे तनों से टकराता हुआ आगे बढ़ रहा है, और एक पल बाद, टूटे हुए बांस को अभी भी हाथों में पकड़े हुए, मैं ज़मीन पर ज़ोर से धड़ाम से गिर पड़ा।
सहज ही मैं झटपट उठा और घोर अंधेरे में अपने गिरे हुए राइफल को टटोलने लगा। लेकिन उसे ढूंढने में काफी समय लग गया, और तब जाकर मुझे बांस के उस झुंड के चारों ओर दो चक्कर लगाने पड़े। मुझे राइफल की नली का सिरा कीचड़ से सना हुआ महसूस हुआ और मैंने सबसे पहले उसे साफ किया।

मौसम गर्म होने के कारण मैं अपने साथ ओवरकोट नहीं लाया था; केवल एक पुलओवर लाया था। वह मेरे बाकी सामान के साथ ज़मीन पर गिर गया था और मैंने बड़ी मूर्खता से उसे ढूंढने के बारे में नहीं सोचा, जिसकी वजह से मुझे उस रात के खत्म होने से पहले ही भारी कीमत चुकानी पड़ी।
इसके बाद मैंने राइफल की नली से बंधी टॉर्च का बटन दबाया। कुछ नहीं हुआ। मैंने टॉर्च को टटोलकर उसके लेंस तक पहुँचा, लेकिन वहाँ न तो शीशा था और न ही बल्ब। गिरने से दोनों चकनाचूर हो गए थे। चारों ओर घना अंधेरा था। और बारिश लगातार तेज़ होती जा रही थी।
मैंने बताया था कि बैल को सुलेकुंटा गाँव से लगभग एक मील दूर मारा गया था। एक मील कोई बहुत दूर नहीं है, लेकिन उन परिस्थितियों में उस गाँव तक पहुँचना मुश्किल होता, क्योंकि बारिश और अंधेरे के अलावा मुझे बाँस के घने जंगल से भी निपटना पड़ता। जो लोग रात में ऐसे जंगलों में रहे हैं, वे समझ सकते हैं कि इसका क्या मतलब है, क्योंकि बाँस झुंडों में उगते हैं, हर झुंड अपने पड़ोसी से कुछ ही फीट की दूरी पर होता है। आमतौर पर उनके बीच कोई पेड़ या बड़ी झाड़ियाँ नहीं होतीं, बीच की ज़मीन घास, छोटी-छोटी झाड़ियों या गिरे हुए, सड़ते हुए बाँस के पत्तों की मोटी चादर से ढकी होती है। तेज धूप में भी बांसों का एक झुंड दूसरे झुंड जैसा ही दिखता है, और मैं जानता था कि घोर अंधेरे में, बांसों की वजह से और भी घना अंधेरा छा जाएगा, आसमान में बादल छाए रहेंगे, मूसलाधार बारिश होगी, मुझे रास्ता दिखाने के लिए कोई तारा नहीं होगा, और अगर मैं गीली माचिस की डिब्बी पर एक माचिस जला भी लूं तो भी वह जलती नहीं रहेगी। ऐसे में, एक बार जब मैं उस झुंड को छोड़ दूंगा जिस पर मैं बैठा था, तो मैं पूरी रात गोल-गोल भटकता रहूंगा और सुलेकुंटा के करीब भी नहीं पहुंच पाऊंगा। मैं उस छोटे से गांव से और भी दूर भटक सकता हूं।
इस समय तक मैंने बाघिन के बारे में चिंता करना छोड़ दिया था। अगर वह आस-पास भी होती और मुझ पर हमला करना चाहती, तो अब तक कर चुकी होती। वरना, कोई भी जानवर ऐसे तूफ़ान में बाहर नहीं निकलता। यहाँ तक कि जंगली हाथी भी, जिनमें से कुछ आम तौर पर इन मिश्रित जंगलों में रहते हैं, जहाँ बांस उगता है और उन्हें कोमल पत्तियाँ प्रदान करता है, ऐसी स्थिति का सामना नहीं करते, बल्कि जहाँ भी आश्रय मिलता, वहाँ छिप जाते और बांस के झुंडों के नीचे दुबक जाते। बेशक, अगर मैं अँधेरे में भटकते हुए किसी बाघिन के सामने आ जाता, तो यह बहुत बुरा होता। यह एक ऐसा जोखिम था जिसे उठाना ही था।
मैंने अगली बिजली की चमक का इंतज़ार किया, और वह ज़ल्द ही आ गई। उस क्षणिक रोशनी के बाद, मैंने उस दिशा की ओर रुख किया जहाँ मुझे लगा कि गाँव है। मैंने अपने हाथ फैलाकर कुछ कदम चले, जो जल्द ही अगले बाँस के झुंड से बनी नुकीली रुकावट से टकरा गए। मैंने उसे टटोलते हुए रास्ता बनाया, और जब मुझे लगा कि मैं लगभग आधा चक्कर लगा चुका हूँ, तो मैंने सही दिशा में आगे बढ़ने की कोशिश की। कुछ मिनटों तक ऐसा करने से मुझे इसकी पूरी तरह से निराशा का एहसास हुआ। सबसे पहले तो, जब मैं बाँस के हर झुंड के चारों ओर घूमता था, तो मेरे पास यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि मैंने उसका आधा चक्कर लगाया है, या कम, या ज़्यादा; इसलिए हर बार जब मैं अगले झुंड के लिए निकलता था, तो मैं लगभग किसी भी दिशा में चल रहा होता था। तब मैंने फैसला किया कि तूफ़ान के गुज़रने का इंतजार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। मैं अगले बाँस के झुंड के नीचे घुटनों के बल बैठ गया। ज़मीन लगभग छह इंच पानी और कीचड़ से भरी थी, इसलिए मैंने अपनी राइफल अपने घुटनों पर रखी और आगे की स्थिति का इंतजार करने लगा।

रात के दस बज चुके थे जब तेज बारिश रुकी, लेकिन लगभग आधी रात तक हल्की बूंदा-बांदी जारी रही। गरजना काफी देर पहले ही बंद हो चुकी थी और बिजली की चमक भी धीरे-धीरे कम होती गई और फिर पूरी तरह से रुक गई, जिससे चारों ओर घना अंधेरा छा गया।
जब तक तेज बारिश होती रही, मुझे ज्यादा ठंड नहीं लगी। अजीब बात यह थी कि पानी तुलनात्मक रूप से गर्म लग रहा था। जब हल्की बूंदा-बांदी शुरू हुई तो मुझे ठंड लगने लगी, और आधी रात के बाद जब बूंदा-बांदी रुकी, तब जाकर मुझे सच में ठंड लगने लगी। सुबह के शुरुआती घंटों में तापमान में गिरावट और भीगे कपड़ों से भाप बनकर उड़ने के कारण मैं जमने लगा। मैंने खुद को कोसना शुरू कर दिया कि मैंने अपना स्वेटर क्यों नहीं ढूंढा। आखिरकार मैंने अपने सारे कपड़े उतार दिए, इधर-उधर चला, उछल-कूद की, हाथ-पैर हिलाए और अपने ठंडे शरीर में खून का संचार बनाए रखने के लिए हर संभव कोशिश की। मैंने माचिस जलाने की कोशिश की, लेकिन माचिस की डिब्बी और उसमें रखी चीजें भीग चुकी थीं। आसमान बादलों से घिरा रहा, सुलेकुंता पहुंचने की मेरी अगली कोशिश में कोई तारा मेरा मार्गदर्शन नहीं कर रहा था। और इसी तरह मैंने वह रात गुजारी जो निस्संदेह अब तक की सबसे असहज रात थी। ठंड से बेहाल और दांत किटकिटाते हुए, मैंने घने जंगल से उठते भाप के बादलों को चीरते हुए भोर को देखा।
दिन की रोशनी होते ही मुझे उस छोटे से गाँव की दिशा का अंदाज़ा हो गया और मैं उसकी ओर चल पड़ा। सोचिए, मुझे कितना आश्चर्य हुआ जब एक मिनट बाद ही मैं उस कटे हुए पेड़ों के झुंड के पास से गुज़रा जिस पर मैं पिछली रात बैठा था। हालाँकि सुबह के शुरुआती घंटों में कई बार मेरा मन हुआ था कि मैं ठंड से जम जाऊँगा और दोबारा निकल पड़ूँ, लेकिन उस पल मैंने खुद को वहीं रुके रहने के लिए दिल से बधाई दी। आखिरकार, अपनी भीगी हुई पतलून पहने हुए मैं उस छोटे से गाँव में पहुँचा, जहाँ मुनियाप्पा बेसब्री से मेरा इंतज़ार कर रहे थे।
उसे सारी बात बताने से पहले, मैंने उससे कहा कि वह बिना देर किए भूसे, लकड़ी, सूखे गोबर—यानी जलने वाली किसी भी चीज़—की बड़ी आग जलाए। थोड़ी ही देर में अच्छी-खासी आग जल उठी और मैं उसके पास बैठ गया, मेरी भीगी हुई कमीज़ मेरे पैंट के बगल में ज़मीन पर फैली हुई थी, और मैंने मुनियाप्पा की पगड़ी अपनी कमर पर बाँध रखी थी। जैसे ही गर्मी मेरे पूरे शरीर में फैली, मुझे परम आनंद का अनुभव हुआ। फिर, जब मुनियाप्पा ने चाय बनाने की तैयारी में आग के बीच में पानी का एक छोटा बर्तन रखा, तो मैंने उसे अपनी सारी दुख भरी कहानी सुनाई।
एक घंटे बाद मैंने जोवलागिरी और अपनी कार तक सात मील की पैदल यात्रा शुरू की। अब मुझे सुलेकुंटा की बाघिन से हिसाब चुकता करना था। हालाँकि उसका इरादा निश्चित रूप से निर्दोष था, फिर भी मुझे लगता था कि उस भयानक रात के लिए वही ज़िम्मेदार थी जो मैंने अभी-अभी झेली थी। जोवलागिरी में मैंने मुनियाप्पा को एक और टेलीग्राम के लिए पैसे दिए ताकि अगर बाघिन फिर से किसी को मार डाले तो वह मुझे तुरंत सूचित करे। फिर मैं बेंगलोर लौट आया, पहले से ज़्यादा दुखी, लेकिन पहले से कहीं ज़्यादा समझदार।
उसी शाम मुझे भीषण बुखार हो गया। ठंड लगने से मलेरिया हो गया था। तीन दिन बाद मलेरिया के साथ-साथ ब्रोंकाइटिस भी हो गया, और फिर यह निमोनिया में बदल गया। तभी मुनियाप्पा का टेलीग्राम आया: सुलेकुंटा में शेरनी ने फिर से शिकार कर लिया था। ज़ाहिर है, मैं जवाब नहीं दे सका। मैंने अपनी पत्नी से कहा कि वह मुनियाप्पा को पत्र लिखकर मेरी हालत के बारे में बता दे, और मैं उनसे तब संपर्क करूंगा जब मैं ठीक हो जाऊंगा। लेकिन पूरे एक महीने बाद ही मैं मचान में एक और

रात बिताने का जोखिम उठा सका। और यह भी, ज़ाहिर है, मेरी पत्नी और डॉक्टर दोनों के मना करने के बावजूद। इसी बीच मैंने मुनियाप्पा को पत्र लिखकर बताया कि मैं फिर से ठीक हो गया हूँ।

लगभग एक महीना बीतने के बाद मुझे अगला टेलीग्राम मिला। उसमें संक्षेप में बताया गया था कि सुलकुंटा के पास एक गाय मारी गई है। बदला लेने की प्यास में मैं एक बार फिर जोवलागिरी के लिए निकल पड़ा, लेकिन इस बार एक रेनकोट और दो पुलओवर, साथ ही एक अतिरिक्त टॉर्च, बैटरी, बल्ब और माचिस भी साथ ले गया, जिन्हें गीलेपन से बचाने के लिए एक पुराने चमड़े के थैले में लपेटा गया था। मैंने सबक सीख लिया था: तब से मैं हमेशा ये अतिरिक्त सामान अपने साथ रखता हूँ।

जब मुनियाप्पा मुझसे जोलागिरी में मिले, तो उन्होंने मुझे बताया कि हत्यारा एक बहुत बड़ा पैंथर—एक थेन्दु—था, न कि कोई बाघिन जैसा कि उन्होंने सोचा था। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात का पूरा यकीन है क्योंकि उन्होंने शिकार के पास रेत में जानवरों के पैरों के निशान सीफ देखे थे। मेरी निराशा को शब्दों में बयां करना मुश्किल है। फिर मुनियाप्पा ने कुछ ऐसा कहा जिससे मैं गहराई से सोचने लगा। उन्होंने कहा कि अब उन्हें लगता है कि वहाँ कभी कोई बाघिन थी ही नहीं, और सुलकुंटा में हुई इतनी सारी हत्याओं के लिए सिर्फ यही थेन्दु जिम्मेदार था। उन्होंने मुझे याद दिलाया कि जिस बैल के ऊपर मैं बैठा था, उसके पास हमें कोई पैरों के निशान नहीं मिले थे। हम दोनों ने यही निष्कर्ष निकाला था कि जानवर बाघ ही था क्योंकि बैल की गर्दन टूटी हुई थी और सुलकुंटा के ग्रामीणों ने ही कहा था कि वह एक बाघिन थी। उन्होंने मुझे यह भी याद दिलाया कि थेन्दु भी बाघों की तरह ही शिकार करते हैं और खाते हैं।

यह सोचकर मुझे बहुत गुस्सा आ रहा था कि मैंने एक तेंदुए के लिए इतना भयानक कष्ट सहा था। खैर, इतनी दूर आने के बाद, मैं मुनियाप्पा के साथ सुलकुंटा के लिए निकल पड़ा। इस बार मेरा शिकार, एक पूरी तरह से विकसित और सफ़ेद गाय, उसी बांस के झुरमुट के किनारे पर पड़ी थी। मैंने अपने पत्र में मुनियाप्पा को बांस के पेड़ों पर और मचान न बनाने के लिए कहा था। इसलिए, मेरे पास बैठने की जगह चुनने और दिन के बचे हुए एक घंटे में अपना छिपने का स्थान बनाने का ही विकल्प बचा था। ठीक पाँच बज रहे थे।

उन शुरुआती दिनों में मैंने वह पोर्टेबल मचान नहीं बनाया था जिसे मैं बाद के वर्षों में ऐसी ही आपात स्थिति से निपटने के लिए अपने साथ रखता था। इसलिए अगर मुझे छह बजे तक मौके पर पहुंचना था तो मुझे बहुत तेज़ी से काम करना पड़ा। शिकार बांस की पट्टी के किनारे पर किया गया था और वह बस्ती के काफी करीब था। वहां बांस कम घना था और उसके बीच-बीच में कुछ पेड़ और काफी संख्या में लैंटाना और अन्य झाड़ियाँ थीं जो पास के झाड़ीदार जंगल से फैलकर आई थीं।

चारों ओर जल्दी से नज़र घुमाते हुए, मेरी नज़र लगभग बीस गज दूर एक बड़ी लैंटाना झाड़ी पर पड़ी। यह अपने पड़ोसियों से कुछ ही फीट की दूरी पर थी और आदर्श जगह लग रही थी। मुनियाप्पा लकड़ी काटने के लिए अपना घुमावदार चाकू लाया था, इसलिए हम पूरी लगन से काम पर लग गए। लैंटाना झाड़ी के उस किनारे से, जहाँ गाय लेटी थी, हमने उसके केंद्र तक जाने के लिए एक छोटा सा रास्ता बनाया, जिसे हमने बाद में काटकर अलग कर दिया, और छलावरण के लिए काटी गई सभी शाखाओं और टहनियों को बचा लिया। मैं उस रास्ते से रेंगकर झाड़ी के केंद्र में बैठ गया। फिर, मेरे सिर के बराबर, मुनियाप्पा ने मृत गाय के ठीक सामने एक आयताकार छेद काटा। हमने झाड़ी के बीच में इतनी जगह बनाई कि मैं अपने रेनकोट, पुलओवर और चाय की थर्मस के साथ आराम से बैठ सकूँ। अपनी जगह लेते

हुए, मैंने गोली चलाने के कोण और दिशा का परीक्षण करने के लिए अपनी राइफल को आयताकार छेद से शिकार की ओर निशाना साधा।
हमने तेज़ी से काम किया और छह बजने में अभी दस मिनट बाकी थे जब मुनियाप्पा ने हर तरफ से बारीकी से जाँच करने के बाद, यह सुनिश्चित किया कि कहीं कुछ छूट तो नहीं गया, और फिर संतुष्ट होकर चले गए। झाड़ी के नीचे काफी गर्मी थी, और नीचे की ज़मीन में दिन की कुछ गर्मी अभी भी बाकी थी। इससे मुझे थोड़ा पसीना आया, लेकिन जैसे-जैसे अंधेरा होता गया, यह मामूली असुविधा दूर हो गई और मैं पूरी तरह से सहज महसूस करने लगा।
सूर्यास्त के समय जंगल की सामान्य आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, जिनमें बैंगनी सिर वाले अनगिनत छोटे हरे तोतों की चीखें गूंज रही थीं, जो बांस के जंगलों के आसपास बहुतायत में पाए जाते हैं, जहां वे सूखे बांस के बीजों को बड़े चाव से खाते हैं। 'सात बहनें' पक्षी, जो भारतीय 'बब्बलर' का बोलचाल का नाम है, के झुंड झाड़ी से ज़मीन और फिर वापस झाड़ी पर फड़फड़ाते हुए ज़ोर-ज़ोर से चहचहा रहे थे, और कुछ मैनाएं खुले मैदान में उड़ रही थीं, घास के ठंडा होने पर उसमें दिखाई देने वाले कीड़ों को झपट रही थीं। इस काम में मैनाओं का एक सक्रिय प्रतिद्वंद्वी एक अकेला हुपो था जो ज़मीन पर फुदक रहा था, अपने हल्के भूरे रंग के कंघी जैसे पंखों की कलगी को बार-बार ऊपर उठाता और कीड़ों का पीछा करते हुए नीचे करता रहता था। इस नज़दीकी शोरगुल की पृष्ठभूमि में दूर से आती मोरों की आवाज़ें, जंगली मुर्गों की चुनौती भरी बांग और स्पूरफ़ाउल की ज़ुबान की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं; ये तीनों, तोतों के साथ, विशेष रूप से उन इलाकों को पसंद करते हैं जहां बांस घनी मात्रा में उगता है, जो उन्हें भोजन और घने आवरण दोनों प्रदान करता है जिसमें वे अपने प्राकृतिक शत्रुओं - मनुष्य और बिल्ली-जनजाति के सदस्यों से छिप सकते हैं।
अंततः अंधेरा छा गया। हालाँकि चाँद नहीं था, आकाश बिल्कुल साफ था और जल्द ही असंख्य तारों से भर गया। तारों की रोशनी मेरे सामने ज़मीन पर हल्की-हल्की पड़ रही थी, जिससे लैंटाना की झाड़ियों में बनाए गए छेद से देखने पर भी मरी हुई गाय धुंधली सी दिखाई दे रही थी, हालाँकि उसका आकार लगभग गायब हो चुका था। उसके शरीर पर सफेद धब्बे उसके शरीर के उन हिस्सों को दर्शा रहे थे, जबकि भूरे धब्बे लगभग अदृश्य थे। मिनट जल्दी बीत गए और 7:45 बज रहे थे जब मुझे अपने दाहिनी ओर एक हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। यह एक हल्की सी आह या शायद दबी हुई जम्हाई जैसी लग रही थी। फिर, कुछ ही सेकंड बाद, हल्की सी खरोंच की आवाज़ आई।
यह आवाज़ किसकी हो सकती थी? न तो कोई पैंथर, न ही कोई बाघ। शायद कोई नेवला इधर-उधर घूम रहा था। इससे खरोंचने की आवाज़ तो समझ में आ जाती है, लेकिन हल्की सी आह या दबी हुई जम्हाई की आवाज़ नहीं। मिनट तेज़ी से बीत गए और फिर खरोंचने की आवाज़ दोबारा आने लगी। इस बार यह मेरे पीछे से आ रही थी। कोई जानवर उस लैंटाना झाड़ी को धीरे-धीरे खरोंच रहा था जिसमें मैं बैठा था। ऐसा लग रहा था कि उसने मुनियाप्पा द्वारा वहाँ बेतरतीब ढंग से रखी गई ताज़ी कटी हुई शाखाओं और टहनियों को खोज निकाला था और उनकी जाँच कर रहा था; शायद उन्हें हटाने की कोशिश भी कर रहा था। जो भी जानवर वहाँ व्यस्त था, वह या तो असाधारण रूप से बहादुर था या असाधारण रूप से जिज्ञासु। मैं भी जिज्ञासु हो गया और मैंने धीरे से अपना सिर घुमाकर अपने बाएं कंधे के ऊपर देखा।
खरोंचने की आवाज़ अचानक बंद हो गई। क्या जानवर उस हल्की सी हलचल को, बीच में मौजूद टहनियों के बावजूद, महसूस कर पाया था? काफी देर तक कुछ नहीं हुआ। फिर खरोंचने की आवाज़ दोबारा शुरू हुई, इस बार और भी ज़ोर से और तेज़ी

से। जिस अंधेर में मैं बैठा था, उसमें मेरे पीछे झाड़ी के पत्ते और टहनियाँ तारों से भरे आकाश की पृष्ठभूमि में धुंधली सी दिखाई दे रही थीं। मैंने उन्हें काँपते और हिलते हुए देखा। अब वह प्राणी ढीली टहनियों को हटाने की पूरी कोशिश कर रहा था। तभी मैंने एक हल्की फुफकार सुनी, जो संदेह में डूबे पैंथर की गुर्राहट की स्पष्ट पहचान थी।
धीरे-धीरे मैंने राइफल को अपने सामने के आयताकार छेद से पीछे खींचा और अपने शरीर को आधा घुमाया। तभी पैंथर का संदेह और जिज्ञासा दोनों ही खत्म हो गए। तेज, गहरी गुर्राहटों की एक श्रृंखला सुनाई दी, जिसके बाद एक झपट्टा और धड़ाम की आवाज़ आई, क्योंकि पैंथर पीछे हट गया और किसी अन्य झाड़ी या घास के गुच्छे को आड़ में छलांग लगा दी।
मेरी यादें दो महीने पहले की उस बरसात वाली रात में लौट गईं, जब मैं झुकी हुई मचान से फिसल गया था और लगभग बांस के कटे हुए सिरों पर फंसकर मरते-मरते बचा था। तब भी मैंने ठीक यही गुर्राहट सुनी थी, और फिर किसी जानवर के भागने की तेज़ आवाज़ आई थी। मैं सोचने लगा कि क्या मुनियाप्पा सही कह रहे थे। क्या सच में वह कोई पैंथर था जो बांस के नीचे छिपा हुआ था जब मैं उस पर गिरा था, न कि कोई बाघिन या बाघ, जैसा मैंने सोचा था?
खैर, उस समय जो भी जानवर हमला करने आया था, मुझे इसमें कोई शक नहीं था कि इस बार मैं एक पैंथर से निपट रहा था—और वो भी एक थेन्दु (एक प्रकार का जानवर)। अब उसे मेरी मौजूदगी का पता चल गया था और वो जा चुका था, और उसके लौटने की कोई उम्मीद नहीं थी। किस्मत पूरी तरह से मेरे खिलाफ थी। मैंने अपनी घड़ी देखी; समय 8:20 था। रात अभी जवान थी, इसलिए मैंने आधी रात तक इंतजार करने और फिर सुलेकुंता लौटने का फैसला किया।
संयोगवश, उस रात मैंने थेन्दु की आखिरी आवाज नहीं सुनी थी। जाहिर तौर पर भूखा, उत्सुक और जासूसी किए जाने से क्रोधित, वह आधा चक्कर लगाकर वापस आया और बिना खुद को प्रकट किए, मेरे सामने और मरी हुई गाय के ठीक पीछे जंगल से पैंथर की जानी-पहचानी चीखने जैसी आवाज निकालने लगा। पैंथर अक्सर शिकार किए गए जानवर के पास लौटते समय ऐसी आवाजें निकालते हैं, लेकिन इसने अभी तक ऐसा नहीं किया था।
मैं बिल्कुल स्थिर रहा और उस थेन्दु पर इसका असर आश्चर्यजनक था। वह एक बड़े घेरे में घूमता रहा, इस बात का ध्यान रखते हुए कि वह मेरी नज़रों से ओझल रहे, जब तक कि वह मेरे पीछे नहीं आ गया। फिर, मानो उसे एहसास हो गया हो कि वह फायदे में है, उसने अपनी गुर्राहट को और तेज़ कर दिया—अगर यह संभव था—और बीच-बीच में दहाड़ता रहा। एक समय वह अचानक रुक गया और कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। या तो वह चला गया था या हमले की तैयारी कर रहा था। लेकिन तेंदु, यहाँ तक कि बड़े थेन्दु भी, ऐसा तब तक नहीं करते जब तक वे आदमखोर न बन जाएँ, और मैं जानता था कि यह जानवर आदमखोर नहीं था। क्योंकि जोवलागिरी आदमखोर के शासनकाल के बाद से इस क्षेत्र में किसी भी व्यक्ति को बाघ या तेंदु द्वारा परेशान किए जाने की एक भी रिपोर्ट नहीं थी।*
कुछ देर बाद मेरा शक दूर हो गया जब वह मेरे सामने, लेकिन थोड़ा बाईं ओर घूमकर आया और वहाँ से उसने फिर से आवाज़ें निकालनी शुरू कर दीं। इससे मुझे उम्मीद जगी कि अगर मैं बिल्कुल स्थिर रहा तो शायद वह हिम्मत जुटाकर शिकार की ओर बढ़ जाए, या कम से कम एक-दो मिनट के लिए खुद को दिखा दे। लेकिन यह उम्मीद बेकार साबित हुई। आखिरकार, उसने मुझे अपनी आवाज़ों से डराने की कोशिश छोड़ दी और चला गया, उसकी नापसंदगी और निराशा भरी गुर्राहट धीरे-धीरे दूर होती चली गई।

आधी रात तक उसके लौटने का कोई आसार नहीं मिला, और फिर यह मानकर कि वह हमेशा के लिए चला गया है, मैं अपने छिपने की जगह से बाहर निकला और सुलेकुंटा तक थोड़ी दूर पैदल चला, जहाँ मैंने मुनियाप्पा को जगाया और उसे सारी घटना बताई। मुनियाप्पा ने कहा कि उसे लगता है कि मेरा वहाँ से चले जाना गलत था और मुझे वहीं छिपे रहना चाहिए था, क्योंकि उसे पूरा यकीन था कि पैंथर सुबह तड़के वापस आ जाएगा। उसने तो मुझे वापस जाकर लैंटाना की झाड़ियों में फिर से घुसने का सुझाव भी दिया। लेकिन मेरी राय अलग थी, मुझे पूरा विश्वास था कि पैंथर वापस नहीं आएगा, क्योंकि मुझे वहाँ से हटाने के उसके सारे प्रयास विफल हो चुके थे, तो वह इतनी मूर्खता तो नहीं करेगा कि वापस आकर खुद को दिखाए, जबकि मैं अभी भी छिपा हो सकता हूँ।
मुनियाप्पा ने मुझे इस मुद्दे पर शर्त लगाने की चुनौती दी। मैंने चुनौती स्वीकार कर ली और पाँच रुपये (लगभग छह शिलिंग) की शर्त लगाने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि यह रकम बहुत ज़्यादा है, लेकिन वे एक रुपये की शर्त लगाने को तैयार थे कि थेन्दु वापस आ जाएगा। मैंने चुनौती स्वीकार कर ली।
यह तय हुआ कि मैं अकेले ही जोवलागिरी वापस पैदल जाऊं और बाकी रात वहां के छोटे से वन विश्राम गृह में बिताऊं, जबकि मुनियाप्पा सुलेकुंटा में ही रहेंगे, अगली सुबह जल्दी शिकार का निरीक्षण करेंगे कि क्या पैंथर वापस आया है, और फिर जोवलागिरी आकर रिपोर्ट करेंगे।
मैंने जोवलागिरी विश्राम गृह में देर सुबह बिताई और जब जागा तो देखा कि मुनियाप्पा उस छोटी खिड़की की लोहे की सलाखों से मुझे झाँक रहे थे जिसे मैंने खुला छोड़ दिया था। समय सुबह 8:30 बजे का था। बिस्तर से उठकर मैं बरामदे में गया, जहाँ मुनियाप्पा ने मुझे बताया कि उन्होंने शर्त जीत ली है और अपने पैसे लेने आए हैं। थेन्दु लौट आया था और उसने पेट भरकर खाया था, लेकिन उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि तीसरे भोजन के लिए भी पर्याप्त बचा है। इसका मतलब यह होगा कि पैंथर उसी शाम शिकार पर होगा। मुनियाप्पा ने यह भी बताया कि उन्होंने गिद्धों से बचाने के लिए शव के बचे हुए हिस्से को पत्तों से ढक दिया था।
मैंने उसे विश्राम गृह के शयनकक्ष में बुलाया और गंभीरता से एक रुपया दांव पर लगा दिया। फिर मैंने उससे कहा कि अगर वह मेरी केतली को बंगले के पीछे लगभग सौ गज दूर स्थित छोटे पत्थर से बने कुएं से पानी भरने ले जाए, तो मैं उसके लिए चाय बना दूंगा। उसने तुरंत ऐसा किया और जल्द ही मेरे प्राइमस स्टोव की तेज आवाज ने हम दोनों को बता दिया कि जलपान आने वाला है। दाढ़ी बनाने की परवाह किए बिना, मैंने कुछ ठंडी चपातियों पर मक्खन लगाया और उनके साथ परोसने के लिए सार्डिन मछली का एक बड़ा डिब्बा खोला। जातिवादी होने के कारण, मुनियाप्पा को मेरी मक्खन लगी चपातियों और सार्डिन मछलियों से कोई लेना-देना नहीं था, लेकिन उसने मेरे द्वारा दी गई चाय का बड़ा मग स्वीकार कर लिया। फिर हमने आने वाली रात के लिए एक योजना बनाने की कोशिश की।
अब मुझे झाड़ियों में दोबारा बैठने का विचार पसंद नहीं आ रहा था, क्योंकि मुझे लगभग यकीन था कि अगर पैंथर वापस आया भी, तो वह अपने शिकार के पास आने से पहले झाड़ियों का अच्छी तरह निरीक्षण करेगा। अगर उसने मुझे अंदर पा लिया, जो कि उसे पूरा यकीन था, तो वह पिछली रात वाली हरकत दोहराएगा। यह सच है कि वह सुबह तड़के वापस आ गया था, जैसा कि मुनियाप्पा ने भविष्यवाणी की थी। लेकिन मुझे लगा कि अगर मैं पिछली रात झाड़ियों में वापस चला गया होता, जैसा कि मेरे साथी ने सुझाव दिया था, या वहीं रुका रहता, तो वह ऐसा नहीं करता। इसलिए मेरे मन में एक योजना बनने लगी, लेकिन मैंने मुनियाप्पा को नहीं बताया, जिसका मानना

था कि मुझे अपने पुराने ठिकाने पर वापस जाना चाहिए। इसके बजाय, मैंने उससे कहा कि वह वन विश्राम गृह से आधा मील दूर जोवलागिरी गाँव में अपने घर जाए, जल्दी दोपहर का भोजन करे और ठीक एक बजे मेरे साथ सुलेकुंटा लौटने के लिए तैयार रहे।
मैंने खुद ठंडा खाना खाया और साढ़े बारह बजे बंगले से निकलकर मुनियाप्पा को लेने गाँव की ओर चल पड़ा, लेकिन मेरे पहुँचने तक मेरे नौकर ने खाना शुरू भी नहीं किया था। खैर, बहुत मनाने के बाद, मैं उसे दोपहर साढ़े एक बजे चलने के लिए तैयार करने में कामयाब हो गया। भीषण गर्मी थी, लेकिन हम तेज़ गति से चलते रहे और ठीक साढ़े तीन बजे मृत गाय के अवशेष के पास पहुँच गए। हम दोनों पसीने से तरबतर थे। फिर मैंने अपनी गुप्त योजना को अंजाम देने का तरीका खोजना शुरू किया। आप शायद समझ गए होंगे कि मैं क्या खोज रहा था: एक सुविधाजनक पेड़, जो उस झाड़ी के ऊपर हो जिसके नीचे मैंने पिछली रात शरण ली थी, चाहे पेड़ से मृत गाय दिखाई दे या न दे।
जैसे ही मुनियाप्पा को मेरे मन की बात समझ आई, उन्होंने साफ-साफ कह दिया कि उन्हें यह योजना अच्छी नहीं लगी। सोचिए, खाली झाड़ी के ऊपर बैठकर काम करना कितना अजीब था! उनके लिए तो यह पूरा विचार ही बेवकूफी भरा था। हमें लगभग तीस गज दूर एक पेड़ मिला—एक अधपका जुमलम का पेड़। वहाँ से लैंटाना की झाड़ी का सीधा नजारा दिखता था, लेकिन वहाँ से मरी हुई गाय दिखाई नहीं देती थी, क्योंकि गाय जुमलम के पेड़ और लैंटाना की झाड़ी के बीच खींची गई रेखा के समकोण पर थी। ये तीनों बिंदु एक समकोण त्रिभुज के तीनों कोनों को दर्शाते थे। इसीलिए मैंने शुरू में झाड़ी के बजाय जुमलम को नहीं चुना था।
एक सुविधाजनक शाखा चुनकर, मैंने मुनियाप्पा को मचान बनाने का निर्देश दिया, जिसे उन्होंने एक घंटे से कुछ अधिक समय में बड़ी कुशलता से बना दिया। उन्होंने मचान को चारों ओर से और नीचे से भी उसी पेड़ की पत्तियों से ढक दिया। जब वह मचान बनाने में व्यस्त थे, मैंने उन्हें अपनी गुप्त योजना के दूसरे चरण के बारे में बताया। मैंने पिछली रात जिस लैंटाना झाड़ी में बैठा था, उसके अंदर एक अतिरिक्त खाकी कमीज लटका दी।
जब मैं जुमलुम के पेड़ पर चढ़ा और मुनियाप्पा को सुलेकुंटा में मेरा इंतज़ार करने को कहा, तब पाँच बजने में दस मिनट बाकी थे। वह कुछ उदास चेहरे के साथ चला गया। ज़ाहिर है, उसे लगा कि मैं बहुत बेवकूफ़ हूँ; लेकिन जाते समय उसने वही किया जो मैंने उसे पहले करने को कहा था: वह ज़ोर-ज़ोर से खुद से बातें करने लगा ताकि अगर पैंथर आस-पास कहीं छिपा हो, तो उसे लगे कि जो आदमी उसके शिकार के पास था, वह अब जा रहा है। मैं एकदम शांत बैठा रहा। अगले एक घंटे में पता चल जाएगा कि मैं सही था या नहीं।
सूरज अभी डूबा नहीं था और काफी उजाला था, तभी एक बड़ा थेन्दु (एक प्रकार का जंगली कुत्ता) दाहिनी ओर जंगल से धीरे-धीरे निकला, झाड़ी से लगभग बीस कदम दूर रुका और उसे ध्यान से देखने लगा। वह मेरे सामने समकोण पर, बिल्कुल स्थिर और सीधा खड़ा था, जिससे मुझे निशाना लगाने का एकदम सही मौका मिल रहा था —चाहे बाएं कंधे के पीछे से या गर्दन पर, जैसा मैं चाहूँ।
मैंने बहुत धीरे से अपनी राइफल उठाई, बट को आराम से अपने कंधे पर टिकाया और पैंथर पर निशाना साधना शुरू किया, जो बिल्कुल स्थिर था और झाड़ियों की ओर घूर रहा था। वह कितना सुंदर दृश्य प्रस्तुत कर रहा था, उसकी शानदार चित्तीदार खाल कितनी खूबसूरत थी! हर चित्ती साफ़ दिखाई दे रही थी। उसके खड़े कान और थोड़ा झुका हुआ सिर झाड़ियों से आने वाली हल्की सी भी आवाज़ या हलचल को

पकड़ने के लिए तैयार थे। केवल उसकी छल्लों वाली पूंछ का सिरा ही रुक-रुक कर इधर-उधर फड़फड़ा रहा था, जो उसके उस नर्वस तनाव को दर्शा रहा था जो उसके साहसी हावभाव में बिल्कुल भी नहीं दिख रहा था।

मैं लगभग ट्रिगर दबा ही चुका था कि मुझे उन दो रातों की याद आ गई जिनमें इस जानवर ने मुझे रोमांच और मनोरंजन दिया था। क्या अब उसे बेरहमी से मार डालना जायज़ था, जबकि वह मेरी मौजूदगी से पूरी तरह अनजान था और उसने कोई अपराध नहीं किया था? दो बार उसने मुझे अपनी दया पर छोड़ दिया था, लेकिन मैंने कुछ नहीं किया था। अब वह मेरी दया पर था। मैं क्या करूँ?

मैं एक पल के लिए और हिचकिचाया—और फिर रास्ता भटक गया!

अपनी राइफल नीचे रखते हुए, मैंने उनसे विनम्रतापूर्वक कहा, 'शुभ संध्या।'

वह चौंककर मेरी तरफ देखने लगा। फिर उसने मेरी अभिवादन का जवाब दिया।

'वूफ़! वूफ़!' कहते ही वह गायब हो गया!

मैंने पक्षियों की जानी-पहचानी और हमेशा मनमोहक आवाज़ें सुनीं जब वे अपने घोंसलों में जा रहे थे, और रात लगभग 9 बजे सुलेकुंटा लौट आया, यह खबर लेकर कि पैंथर नहीं आया था। मैंने मुनियाप्पा से स्वीकार किया कि शिकार के पास बैठकर उनकी बात न मानकर मैंने बहुत बड़ी गलती की थी। उन्होंने बड़े ही घमंडी अंदाज़ में सिर हिलाया और कुछ अकड़कर कहा: 'मैंने तुम्हें पहले ही कहा था, लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी। तुम्हें लगा कि तुम मुझसे ज़्यादा जानते हो। अगली बार याद रखना कि मैं, मुनियाप्पा, जो जोलागिरी का सबसे अच्छा शिकारी है, जंगल के जानवरों और उनके तौर-तरीकों के बारे में सब कुछ जानता हूँ।'

मैं अपने सेवक को यह सोचने नहीं देता कि उसका कुत्ता अचानक नरम और भावुक हो गया है। गलत साबित होना बेहतर है, बजाय इसके कि मुझे भावुक मूर्ख समझा जाए। लेकिन उस खूबसूरत जानवर की जान बख्शने के अपने आखिरी क्षण के फैसले पर मुझे कभी पछतावा नहीं हुआ।

वैसे, मुझे नहीं पता कि उस अधिकारी ने मुनियाप्पा के लेनदार का वह एहसान पूरा किया या नहीं जो उससे अपेक्षित था। शायद नहीं; क्योंकि उसे न तो बाघ की खाल मिली और न ही तेंदुआ की। लेकिन मुझे इतना ज़रूर पता है: मुनियाप्पा ने अपना सौ रुपये का कर्ज कभी नहीं चुकाया। उसने कई साल बाद मुझे यह बात बताई और अपनी बेईमानी का सीधा और एकमात्र कारण मुझे बताया, क्योंकि मैं तेंदुआ को मारकर उसकी खाल हासिल करने में नाकाम रहा था।

---

* देखें: नौ नरभक्षी और एक बदमाश।

* देखें: नौ नरभक्षी और एक बदमाश।

* देखें: नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग, जॉर्ज एलन एंड अनविन, लंदन

आठ

हमलावर से लेकर नरभक्षी तक

यह कहानी मेरी पिछली साहसिक कहानियों की पुस्तकों में दर्ज दो घटनाओं का अगला भाग है। पहली घटना तब शुरू हुई जब एक बाघ ने बेहद अजीब व्यवहार करना शुरू कर दिया। वह उत्तरी कोयंबटूर ज़िले (जो अब मद्रास राज्य के नाम से जाना जाता है) में डिंबम ढलान की तलहटी में स्थित राजनगर गाँव के पशुपालकों पर हमला कर रहा था। बाघ की खासियत यह थी कि उसने अपने किसी भी शिकार को कभी नहीं काटा और न ही इस बात का कोई पुख्ता सबूत था कि उसने किसी को मारा या खाया हो। वह बस अपने शिकार पर झपटता और पास आकर अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो जाता और अपने अगले पंजों के पंजों से उसके सिर, छाती, पीठ और बांहों पर बुरी तरह से वार करता। मैंने इस मायावी जानवर को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन पूरी तरह असफल रहा।

फिर दृश्य का स्वरूप बदल गया और अभियान का दायरा काफी विस्तृत हो गया, जो राजनगर से साठ से सौ मील उत्तर और उत्तर-पूर्व में फैला हुआ था। जंगल में स्थित पेगेपलयम नामक एक छोटे से गाँव में एक बाघ ने एक लड़के को मार डाला और उसे उठाकर ले गया। वह लड़का कई पीड़ितों में से पहला था, जिनमें से कुछ के अवशेष बरामद किए गए। शवों पर बाघ के पंजों से हुए गंभीर घावों के स्पष्ट प्रमाण थे, जबकि मांस खाने के स्थानों को छोड़कर अन्य जगहों पर दांतों के निशान नदारद थे। एक मामले में, पेड़ पर चढ़े दो लोगों ने अपने साथी को बाघ द्वारा बुरी तरह घायल होते देखा। बाघ ने उस पर दो अलग-अलग मौकों पर हमला किया, पहली बार में उसके चेहरे पर पंजे मारे और दूसरी बार में अपने पंजे के वार से उसे मार डाला, फिर उसे उठाकर ले गया।

मिले हुए मानव अवशेषों से संकेत मिलता है कि जानवर के दांतों या जबड़ों में कोई खराबी नहीं थी, जैसा कि पहले अनुमान लगाया गया था। क्योंकि उसने हर अंग से भरपेट भोजन किया था, जो खराब दाँतों या टूटे हुए या किसी अन्य प्रकार से क्षतिग्रस्त जबड़े के साथ संभव नहीं होता।

हालाँकि, उसका लगातार हमला करने का तरीका, जो काटने के बजाय अपने अगले पंजों से खरोंचने और प्रहार करने का था, इस बात का निर्विवाद संकेत देता प्रतीत होता था कि यह जानवर कोई और नहीं बल्कि वही पूर्व 'राजनगर का हमलावर' था जो भटककर उत्तर की ओर अपने मूल निवास स्थान से कहीं बड़े जंगल क्षेत्र में आ गया

था। मेरे बेटे डोनाल्ड ने इस जानवर को पकड़ने के दो प्रयास किए, पहला पेगपुलयम में और दूसरा लोकनहल्ली और बैलूर के बीच सड़क के पास, ठीक उसी क्षेत्र में जहाँ मैंने कुछ साल पहले रामपुरम बाघ को देखा था।* लेकिन उसे दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा, क्योंकि दोनों ही मौकों पर यह बाघ अपने मारे गए मानव पीड़ितों के अवशेषों पर नहीं लौटा, जिन पर डोनाल्ड ने बड़ी मुश्किल से शोक संतप्त परिजनों को बैठने की अनुमति दी थी।

स्वाभाविक रूप से, डोनाल्ड और मैं दोनों ही अखबारों को उत्सुकता से पढ़ते थे ताकि मानव वध की और खबरें मिल सकें, इसके अलावा हमें वन विभाग से समय-समय पर मिलने वाली खबरें भी मिलती रहती थीं। इन स्रोतों से बहुत कम खबरें लंबे अंतराल पर आती थीं। उत्तरी कोयंबटूर ज़िले के कोललेगल तालुक के सुदूर उत्तर-पूर्वी कोनों में, कावेरी नदी के ठीक दक्षिण में, जो इसे उत्तर-पश्चिम में मैसूर राज्य और उत्तर-पूर्व में मद्रास राज्य के सलेम ज़िले से अलग करती है, छिटपुट इलाकों में बाघों का शिकार होने लगा।

अंततः दो पुख्ता और प्रामाणिक खबरें आईं। पहली खबर यह थी कि अपनी गायों को चराते समय एक बूढ़ी औरत को एक बाघ उठा ले गया, जिसने चर रही गायों को छुआ तक नहीं। उसके अवशेष कभी नहीं मिले। यह घटना गुल्या नामक एक पशुशाला में घटी। दूसरी खबर यह थी कि सलेम ज़िले से कावेरी नदी के पार आलमबाड़ी नामक एक अन्य पशुशाला में गाय चरा रहे एक व्यक्ति पर बाघ ने हमला किया और उसे बुरी तरह घायल कर दिया, लेकिन उसकी मौत नहीं हुई। इस मामले में बताया गया कि चरवाहा, जो जंगल में जानवरों के चरने के दौरान उनके बीच खड़ा था, ने ऊपर देखा तो उसे पास की एक झाड़ी से एक बाघ निकलता हुआ दिखाई दिया और आसपास के जानवरों की परवाह किए बिना सीधे उसकी ओर आ रहा था। उसने बाघ पर चिल्लाया, और जैसे ही वह उसकी पहुँच में आया, उसने साहसपूर्वक अपने हाथ में पकड़ी लकड़ी की लाठी से उस पर वार किया। ऐसा प्रतीत होता है कि बाघ अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और उसके सीने और बाहों पर बुरी तरह से पंजे मारे, जिससे वह गिर पड़ा। लेकिन उस आदमी के मवेशियों में पाँच भैंसें थीं, और ये जानवर पास ही चर रहे थे। भैंसों की आदत के अनुसार, पाँचों ने मिलकर बाघ पर हमला कर दिया, जिससे बाघ दुम दबाकर भाग गया। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद वह आदमी लड़खड़ाते हुए वापस बाड़े तक पहुँचा, जहाँ कई अन्य चरवाहे उसकी मदद के लिए मौजूद थे।

पट्टी जंगल का वह हिस्सा है जिसे सरकार द्वारा कुछ चरवाहों को आरक्षित वन में चरने के लिए लाइसेंस प्राप्त मवेशियों को रात में बाड़े में रखने के लिए पट्टे पर दिया जाता है। इन जानवरों को पट्टी के चारों ओर लगभग तीन मील के दायरे में दिन के समय जंगल में चरने की अनुमति होती है। चराई का समय बारह महीनों में से लगभग छह महीने तक रहता है: मॉनसून के बाद और गर्म शुष्क मौसम के दौरान, जब गांवों के आसपास चारा उपलब्ध नहीं होता है। लाइसेंस की लागत छह महीने के लिए प्रति पशु चार आना है, जो छह महीने के लिए तीन पशुओं के लिए लगभग एक शिलिंग बैठता है। इस प्रकार, लगभग अट्ठाईस वर्ग मील के क्षेत्र में पूरे दिन चरने के अधिकार के लिए प्रति पशु प्रति माह दो-तिहाई पैसा खर्च होता है।

खैर, अब मुख्य मुद्दे पर आते हैं: इन दोनों घटनाओं के स्थल, और विशेष रूप से आलमबाड़ी, कावेरी नदी के निकट थे, जिसके दूसरी ओर सलेम ज़िला था, और वहां सड़कें और संचार व्यवस्था काफी अच्छी थी, इसलिए खबर तेजी से और विस्तार से फैली, और हमें बेंगलुरु में घटनाओं के एक महीने के भीतर ही इसकी जानकारी मिल गई। ऐसे हालात और इतने दूरदराज के इलाकों के लिए यह लंबा समय नहीं है। इसलिए यह लगभग निश्चित थी कि यह बाघ पूरी तरह से आदमखोर नहीं था। वह

आदमखोर तेंदुओं की तरह ही इंसानों पर हमला करता था, केवल तभी जब उसे कोई असाधारण रूप से आसान मौका मिलता था या शायद जब उसका मन करता था। बाकी समय वह स्पष्ट रूप से जंगली जानवरों का शिकार करता था, क्योंकि उस क्षेत्र में बाघों और तेंदुओं द्वारा मारे गए मवेशियों की संख्या सामान्य से अधिक नहीं थी।
समय बीतता गया और हम उस बाघ के बारे में भूलने ही लगे थे कि तभी एक के बाद एक खबरें आईं कि बेजाहाई नाम के एक छोटे से गांव में दो लोगों को मारकर खा लिया गया है। कहा जाता है कि पहले पीड़ित का शव कभी बरामद नहीं हुआ, लेकिन दूसरे का शव आधा खाया हुआ मिला। उस आदमी के चेहरे और छाती पर बुरी तरह से घाव थे और पंजे के निशान थे।
डोनाल्ड मुझसे सहमत था कि आखिरकार हमारे पास काम करने के लिए कुछ ठोस और प्रामाणिक चीज़ थी। पेगेपलयम का मायावी बाघ, जिसके बारे में हमें संदेह था कि वह राजनगर का खूंखार बाघ ही है, एक बार फिर सक्रिय प्रतीत हो रहा था। नक्शे के अनुसार, बेज़ाहहाई गाँव समुद्र तल से लगभग 3,000 फीट ऊपर, कोललेगल तालुक की सबसे ऊँची पर्वत चोटी, पोन्नाच्ची बेट्टा या पोनाची मलाई, जो स्वयं लगभग 5,000 फीट ऊँची है, के पूर्व में स्थित एक घाटी में था। डोनाल्ड ने लंबे समय से इस बाघ का शिकार करने और अपने शिकार को मारने से पहले उसे बुरी तरह घायल करने की उसकी विचित्र आदत के रहस्य को सुलझाने का निश्चय कर लिया था। इसलिए उसने अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक महीने की 'सफारी' पर निकलने का फैसला किया, जैसा कि उसने इसे नाम दिया था। आगे डोनाल्ड की कहानी है, जैसा कि उसने मुझे बताया:
बेंजाहहाई में हुई दो मानव हत्याओं की रिपोर्ट मिलने के बाद, मैंने हर कीमत पर उस बाघ को पकड़ने का फैसला किया जो इसके लिए जिम्मेदार था, खासकर इसलिए क्योंकि मुझे यकीन था कि यह वही जानवर था जिसे मैंने लगभग एक साल पहले पेगेपलयम में गोली मारने की असफल कोशिश की थी।
इस बाघ के बारे में दो अजीब बातें थीं। पहली यह कि वह हमला करने वाले लोगों को काटने के बजाय अपने पंजों से खरोंचता था। दूसरी यह कि वह कभी भी किसी इंसान को मारने के बाद वापस नहीं आता था; मैं पहले भी कई बार इंसानी लाशों के ऊपर बैठकर उसकी तलाश कर चुका था, लेकिन मुझे सफलता नहीं मिली।
इसलिए मैंने जल्दी से तैयारी की और लगभग 300 रुपये इकट्ठा किए, ताकि सफारी के दौरान अपने चारे और अन्य खर्चों को पूरा कर सकूँ। हालाँकि यह अच्छी-खासी रकम थी, लेकिन अगर मैं इस चालाक जानवर का शिकार कर पाता, जो इतने लंबे समय से मेरे लिए खतरा बना हुआ था, तो यह खर्च करना जायज़ था। तो एक सुबह पाँच बजे मैं अपनी कार में निकल पड़ा, जो पुरानी होने के बावजूद जंगल के काम के लिए बार-बार बेहतरीन साबित हुई थी।
मैं पेन्नाग्राम में कुछ घंटों के लिए रुका, ताकि पिताजी के पुराने शिकारी, रंगा को ले सकूँ, जिसे मैं नौकर से ज़्यादा एक पुराने दोस्त की तरह मानता था। फिर मैं जंगल के रास्ते से होते हुए मुत्तूर नामक स्थान पर पहुँचा, जो चिनार नदी के किनारे एक घाटी में सात मील दूर स्थित था। वहाँ मैंने अपने एक और पुराने शिकारी दोस्त बायरा को भी अपने साथ चलने के लिए मना लिया। बायरा एक पुजारी है, एक आदिवासी जो जंगल में ही पला-बढ़ा है। पिताजी और मैं उसे कई सालों से जानते हैं। हालाँकि वह काफ़ी बूढ़ा है, फिर भी मुझे लगता है कि जंगल के ज्ञान और काम के मामले में वह रंगा से भी बेहतर है। वह निश्चित रूप से एक बेहतर ट्रैकर है।
हम मोटरबाइक से पेन्नाग्राम वापस आए और फिर पश्चिम की ओर मुड़कर कावेरी नदी के किनारे बसे होगेनेकल नामक एक छोटे से गाँव तक दस मील का सफर तय किया। यहाँ कुछ झरने हैं जो धार्मिक कारणों से प्रसिद्ध हैं, कम से कम हिंदू धर्म में तो ज़रूर।

कुइ साल पहले यहाँ एक और बहुत अच्छा शिकारी रहता था, जिसने एक बार अपने शिकार के दौरान एक हाथी को गोली मारकर सरकार के साथ विवाद खड़ा कर दिया था। वह मुझे बचपन से जानता था, लेकिन अब वह मर चुका था। होगेनेकल से एक मील दूर ऊतैमलाई नाम का एक गाँव है, जहाँ पिताजी की एक कमरे की ईंटों की झोपड़ी है, जिसका इस्तेमाल वे पुराने दिनों में डेरा डालने के लिए करते थे, जब इलाके में शिकार बहुतायत में होता था और वे नियमित रूप से शिकार पर आते थे। हालाँकि, तब से हालात बदल गए हैं और अब इस इलाके में शिकार के लिए ज़्यादा कुछ नहीं है। मैंने अपनी कार उसकी झोपड़ी के सामने खड़ी कर दी और उसे स्थानीय वन रक्षक के हवाले कर दिया। फिर मैंने अपना सारा सामान रंगा, बायरा और अपने बीच बाँट लिया और हम लगभग साढ़े नौ मील की दूरी पैदल चलकर बेजाहाई तक पहुँचने के लिए निकल पड़े।

सबसे पहले हम ऊतैमलाई से उत्तर-पश्चिम की ओर जाने वाली सड़क पर तीन मील पैदल चले, कावेरी नदी के किनारे-किनारे बिलिगुंडलु नामक स्थान की ओर। तीसरे मील पर नदी पार करने के लिए एक नौका थी, और हमें दूसरी ओर स्थित आलमबाड़ी मवेशी बाड़े तक पहुँचने के लिए इसका उपयोग करना पड़ा। संयोगवश, यह नौका कोई साधारण लकड़ी की नाव नहीं थी, बल्कि एक गोलाकार, टोकरीनुमा संरचना थी, जिसका व्यास लगभग आठ फीट था, जो मज़बूत भैंस की खाल से ढकी हुई थी और मुश्किल से छह इंच पानी में डूबती थी। चमड़े और टोकरीनुमा संरचनाओं से बनी इन नौकाओं को स्थानीय भाषा में कोराकल कहा जाता है। इन्हें एक व्यक्ति एक छोटे लकड़ी के चप्पू से चलाता है; वह नदी की तेज़ धाराओं को पार करने और सतह के ठीक नीचे मौजूद चट्टानों के नुकीले किनारों से बचने में अत्यधिक कुशल है। आलमबाड़ी के पास नदी के दूसरे किनारे पर कदम रखते ही हम कोललेगल तालुक में थे, जो उत्तरी कोयंबटूर जिले का हिस्सा है और जिसका वन विभाग का प्रशासन पूरी तरह से अलग है। आलिमबाड़ी उन स्थानों में से एक था जहाँ कुछ महीने पहले इस बाघ ने एक व्यक्ति को बुरी तरह घायल कर दिया था। मैंने पट्टी में रहने वाले चरवाहों से उस जानवर के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की, लेकिन मैं बहुत कम जानकारी जुटा सका।

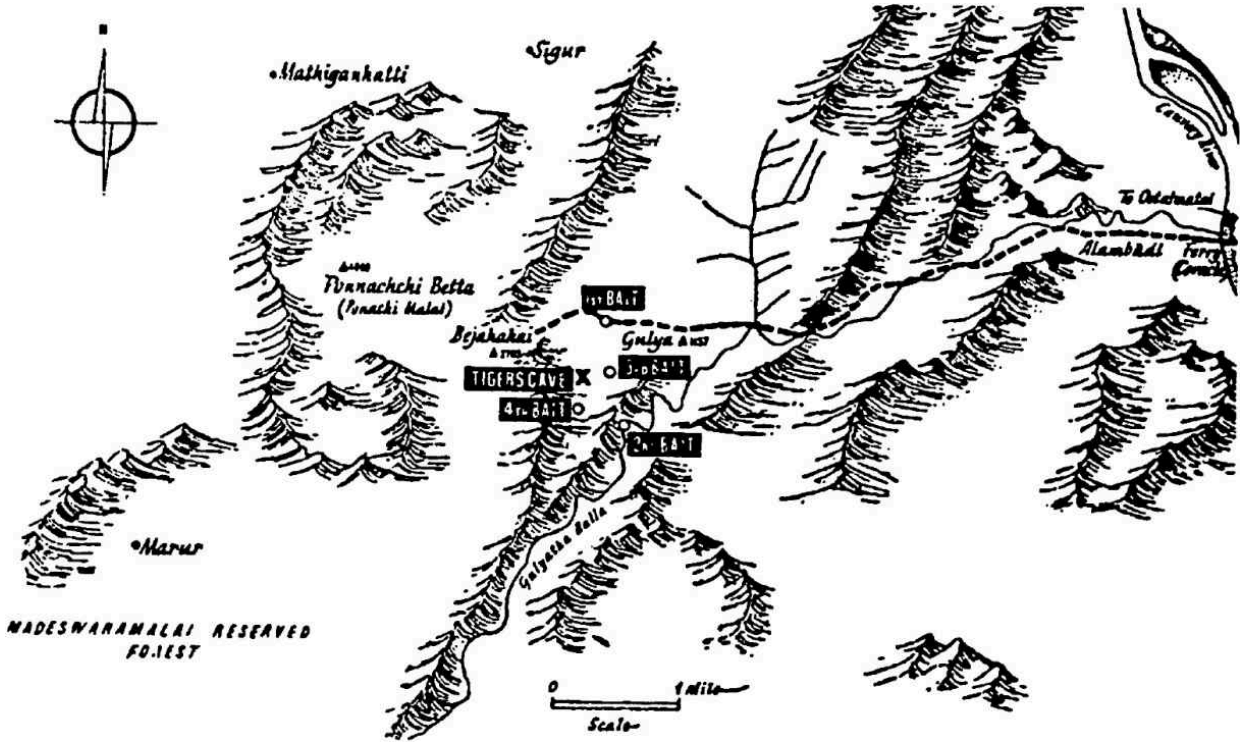

हालांकि, दो तथ्य प्रमुख थे। पहला, कि हर कोई बुरी तरह डरा हुआ था और अपनी जान के डर से इधर-उधर घूम रहा था। दूसरा, उस व्यक्ति को देखने वालों से मिली जानकारी के अनुसार, उसके कंधों, छाती और पीठ पर गहरे खरोंच के निशान थे, लेकिन कहीं भी काटा नहीं गया था। बेचारे की बाद में खून में ज़हर फैलने के कारण मृत्यु हो गई।

जिस जगह मुझे जाना था, वह बेजाहहाई नाम का एक छोटा सा गाँव था, जो लगभग दस मील लंबी, उत्तर-दक्षिण दिशा में फैली एक पर्वत श्रृंखला की पूर्वी ढलानों पर बसा था। इस श्रृंखला की सबसे ऊँची चोटी पोनाची मलाई नामक स्थान पर है, जो उत्तरी छोर से लगभग चार मील दूर है। गुल्याथा हल्ला नाम की एक धारा इस श्रृंखला के दक्षिण में कहीं से निकलती है और उत्तर-पूर्व दिशा में बहती हुई आलमबाड़ी के कुछ उत्तर में कावेरी नदी में मिल जाती है। आलीमबाड़ी से बेजाहहाई तक एक पैदल मार्ग है, जो लगभग पाँच मील तक उसी सहायक नदी के समानांतर चलता है जिसका मैंने अभी उल्लेख किया है, और फिर शेष डेढ़ मील तक पश्चिम की ओर मुड़कर बेजाहहाई पहुँचता है। हम तीनों इसी पैदल मार्ग पर चल पड़े। दोपहर के लगभग तीन बज रहे थे। सूरज बहुत तेज़ था, और संकरे और पथरीले रास्ते पर चलना बहुत मुश्किल था। हमने सहायक नदी को लगभग आधा दर्जन बार पार किया; जैसे-जैसे ज़मीन आगे पर्वत श्रृंखला की ओर बढ़ती गई, रास्ता और भी पथरीला और पत्थरों से भरा होता गया।

हमारी यात्रा पूरी तरह से शांतिपूर्ण नहीं रही। हमने लगभग पहले पाँच मील का सफर तय कर लिया था और जब हम आखिरी नदी पार करने वाले स्थान पर थे, जहाँ से रास्ता नदी को छोड़कर पश्चिम की ओर बेजाहहाई की ओर मुड़ने वाला था, तभी हमारी नज़र हाथियों के एक झुंड पर पड़ी जो नदी के दोनों किनारों पर उगे मुथी और इमली के पेड़ों की छाँव में गर्मी से राहत पाने के लिए आराम कर रहे थे। उस समय वे चर नहीं रहे थे, इसलिए हमें उनकी आवाज़ सुनाई नहीं दी, और पहाड़ियों से आती हवा उनके पास से गुज़रते हुए हमारी ओर बह रही थी, इसलिए उन्हें हमारी गंध भी नहीं आई। मैंने

रबर के तले वाले जूते पहने थे, जबकि रंगा और बायरा नंगे पैर थे। इसलिए उन्हें हमारे आने की आहट सुनाई नहीं दी, और नतीजा यह हुआ कि हम लगभग उनके बीचों-बीच पहुँच गए। जैसे ही हाथियों ने हमें एक साथ सूँघा और देखा, वहाँ अफ़रा-तफ़री मच गई। मानो यह दिखाने के लिए कि ये विशालकाय जानवर वास्तव में कितने कायर हैं, बड़ी संख्या में होने पर भी—कुल मिलाकर लगभग तीस हाथी रहे होंगे—उनका झुंड बेतहाशा भागने लगा। डरी हुई मादा हाथियों की चीखों से कहीं ज़्यादा ज़ोर से नर हाथियों ने चिंघाड़ भरी आवाज़ें निकालीं। अपनी माँ के पीछे-पीछे तेज़ी से भागते हुए बछड़ों की सूअर जैसी चीखें भी अफरा-तफ़री मचा रही थीं। सबसे मज़ेदार बात यह थी कि बड़े-बड़े नर हाथी, जिनसे उम्मीद की जाती थी कि वे मादा हाथियों और उनके बच्चों की रक्षा के लिए आगे आएंगे, वास्तव में उन्हें धक्का देकर किनारे कर रहे थे और एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ लगा रहे थे। कुछ ही पलों में, जहाँ पहले बहुत सारे हाथी और शोर था, वहाँ सन्नाटा छा गया।
हम शाम लगभग पाँच बजे बिना किसी और घटना के अपने गंतव्य पर पहुँच गए। हालाँकि सूर्यास्त में अभी अपेक्षाकृत लंबा समय था, लेकिन पूरा इलाका पहले ही छाया में डूब चुका था, क्योंकि सूर्य पर्वत श्रृंखला की विशाल चोटी के पीछे छिप चुका था। पोनीची मलाई की वास्तविक चोटी उत्तर-पश्चिम दिशा में, लगभग एक मील दूर, दिखाई दे रही थी।
बेजाहहाई अन्य जंगली बस्तियों की तरह ही था, जिसमें लगभग एक दर्जन झोपड़ियाँ एक साथ सटी हुई थीं। इनमें से अधिकांश की दीवारें कंटीली झाड़ियों की और छतें सूखी जंगली घास की बनी थीं। कंटीली झाड़ियों और घास को सूखी जंगली लताओं से बँधे बांसों से जोड़ा गया था। एक-दो झोपड़ियाँ, जो स्पष्ट रूप से 'बेहतर' थीं, उनकी दीवारें तीन फुट ऊंची सूखी मिट्टी की बनी थीं, जिन पर गोबर का लेप किया गया था, लेकिन छतें भी वैसी ही जंगली घास की थीं। प्रत्येक झोपड़ी के पीछे बने मवेशी बाड़े की दीवारें बुने हुए बांस की थीं, जिनके ऊपर कंटीली झाड़ियों की बाड़ लगी थी। यह बाड़ हमलावर तेंदुओं और बाघों को दूर रखने के लिए आवश्यक थी।
हमारे आगमन से काफ़ी हलचल मच गई। दो-तीन दर्जन पुरुष, जिन्होंने कमर पर केवल चिथड़े के टुकड़े लपेट रखे थे, नग्न स्तन वाली महिलाएँ, फटी-पुरानी साड़ियां पहने महिलाएं, और मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों के कारण तिल्ली बढ़ने से पीड़ित मोटे पेट वाले बच्चे, दबे पांव अपनी झोपड़ियों से बाहर निकले या दरवाजों पर खड़े होकर हमें संदेह और भय से देखने लगे। उनमें से एक-दो पुरुषों ने घबराकर सलाम किया।
हम झोपड़ियों के इस समूह के बीचोंबीच आकर रुक गए। ज़ाहिर है, अगर मुझे उनसे सवाल पूछने थे, तो सबसे पहले मुझे वहाँ के निवासियों को सहज महसूस कराना था। इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैंने सोचा कि बायरा से बात करना सबसे अच्छा रहेगा। एक तो वह खुद आदिवासी था, और ये डरे हुए लोग उसकी बात समझ जाएंगे। मुझे अपने अनुभव से पता था कि रंगा उन लोगों के प्रति काफ़ी घमंडी था जिन्हें वह सामाजिक रूप से अपने से नीचा समझता था, और उन्हें 'जंगली बंदर' और 'बेवकूफ़ लंगूर' जैसे अपमानजनक नामों से पुकारता था। अगर मैं खुद उनसे बात करता तो शायद वे और भी घबरा जाते। यकीनन वे मेरी बात पर विश्वास नहीं करते।
मैंने बायरा से हमारा परिचय कराने को कहा। उसके शब्दों से मुझे इतनी खुशी कभी नहीं हुई थी। बायरा ने कहा कि मैं एक महान शिकारी हूँ जिसने सैकड़ों बाघ, हाथी, तेंदुओं और ऐसे ही छोटे-मोटे जीवों का शिकार किया है, और बेजाहाई के निवासियों की दुर्दशा सुनकर मैं उनकी मदद करने के लिए कई मील दूर से आया हूँ। उसने कहा कि उनकी ओर से एक महत्वपूर्ण योगदान यह होगा कि मैं उन्हें हर संभव जानकारी और सहायता प्रदान करूँ। उसका भाषण थोड़ा लंबा था, लेकिन मुझे कहना होगा कि

उसने अपना उद्देश्य पूरा किया। मेरे आस-पास बैठे कुछ लोगों के चेहरों पर मुस्कान आ गई। खैर, तनाव सफि तौर पर कम हो गया।
मैं तमिल और हिंदुस्तानी बोल सकता हूँ और कुछ कन्नड़ समझ सकता हूँ। मेरे श्रोताओं में से अधिकांश तमिल थे, हालाँकि मैं कुछ शोलागा लोगों को भी पहचान सका, जो बायरा की तरह ही आदिवासी हैं और प्राचीन काल से कोयंबटूर के जंगलों में निवास करते आए हैं। इसलिए इस स्तर पर मैंने सभा को तमिल में संबोधित करके कार्यवाही में सक्रिय रूप से भाग लिया। मैंने यथासंभव सरल शब्दों में लोगों को बताया कि मेरा उद्देश्य उनके जीवन में आए इस भयानक खतरे से उन्हें मुक्ति दिलाना है। मैंने उन्हें यह भी बताया कि मुझे सफलता का पूरा भरोसा है। बस एक ही शर्त थी: कि मुझे उनका पूर्ण और सक्रिय सहयोग प्राप्त हो। मैंने कहा कि मैं गाँव के प्रत्येक सक्षम पुरुष से पूरी सहायता की अपेक्षा करता हूँ। मेरे सरल भाषण का वांछित प्रभाव प्रतीत हुआ। भारत में ग्रामीण पश्चिम के लोगों की तरह ताली बजाकर अभिनंदन नहीं करते। लेकिन वे कुछ ऐसा ही अच्छा करते हैं, बल्कि उससे कहीं बेहतर। वे मुस्कुराते हैं, यहाँ तक कि सहमति में हँसते भी हैं। उस शाम बेजाहाई के निवासी खुलकर मुस्कुराए।
उनका भरोसा जीतने के बाद, मैंने उनसे बाघ के बारे में पूछताछ शुरू की। मैंने पूछा कि क्या उनमें से किसी ने उसे देखा है, क्या उसके तौर-तरीकों या रूप-रंग में कोई खास बात है, क्या उसकी कोई विशेष आदतें हैं या कोई पसंदीदा इलाका है जहाँ वह अक्सर पाया जाता है। कई सीधे-सादे लोगों ने जवाब दिया कि उन्होंने आदमखोर बाघ को देखा है, लेकिन उनके विरोधाभासी जवाबों से जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि या तो उस इलाके में कई अलग-अलग दिखने वाले बाघ थे, या फिर लोग सिर्फ मुझे खुश करने के लिए उस जानवर को देखने की बात कह रहे थे।
जैसा कि उम्मीद थी, अधिकांश लोगों ने कहा कि वह एक विशालकाय जानवर था, जिसका सिर लगभग दो फीट व्यास का और शरीर कम से कम बारह फीट लंबा था। एक-दो महिलाओं ने, जिन्होंने कहा कि उन्होंने उस शिकारी को गाँव के बाहरी इलाके के पास घूमते हुए देखा था, ज़ोर देकर कहा कि वह बाघिन थी, बाघ नहीं। लेकिन एक बात पर वे सब लगभग एकमत थीं: कि उस आदमखोर को गोली मारने की कोशिश करना मेरे लिए बिल्कुल बेकार होगा। उन्हें पूरा विश्वास था कि वह जानवर, या वह, एक वन देवी द्वारा संरक्षित था जो उसकी गर्दन पर बैठी रहती थी और शिकार के दौरान उसके साथ जाती थी। वास्तव में, उन्हें पूरा यकीन था कि देवी ही उस आदमखोर को सीधे उसके हर शिकार तक ले जाती थी।
जब यह भाषण चल रहा था, मैंने देखा कि एक व्यक्ति, जो थोड़ी दूरी पर ज़मीन पर बैठा था और एक मुँह तक नहीं खोल रहा था, बाकी लोगों के बेतुके बयानों के बीच एक व्यंग्यात्मक मुस्कान लिए बैठा था। वह अधेड़ उम्र का था, स्पष्ट रूप से शोलागा समुदाय का था, और उसने केवल एक छोटी सी धोती पहन रखी थी। यह सोचकर कि शायद वह मेरी तमिल भाषा न समझ पाए, मैंने बायरा से उससे सवाल पूछने को कहा। लेकिन उस आदमी ने बीच में ही टोकते हुए कहा: 'मैं तुम्हारी बात समझ सकता हूँ, दोराई, और जैसे ही हमारे आसपास के ये झूठे लोग बोलना बंद कर देंगे, मैं बोलना शुरू कर दूंगा।'
उन शब्दों का ऐसा प्रभाव हुआ कि भीड़ एकदम शांत हो गई और तुरंत शोरगुल बंद हो गया। फिर शोलागा ने बोलना शुरू किया और उनके शब्द जितने अनोखे थे उतने ही नाटकीय भी थे।
'एक बात तो ये है, दोराई,' उसने कहा, 'आदमखोर नर होता है, मादा नहीं। मुझे ये बात पक्के तौर पर पता है, क्योंकि तीन दिन पहले ही, जब मैं एक ओडुम्बु को पकड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ा था, जो उसमें छिपा हुआ था, तो वो जंगल से बाहर आया और शांति से पेड़ के नीचे बैठ गया, मेरे उतरने का इंतज़ार करने लगा। मैंने उस पर चिल्लाया

और टहनियाँ फेंकीं, लेकिन वो सिर्फ़ गुर्राया और मुझे धमकी भरी नज़रों से घूरता रहा। मुझे लगा कि वो कभी नहीं जाएगा, लेकिन दोपहर होते-होते, जब सूरज अपने चरम पर पहुँच गया और गर्मी की लहरें ज़मीन पर नाचने लगीं, तो उसे प्यास लगी और वो अचानक जंगल में चला गया। मुझे लगा कि ये कोई चाल है और वो झाड़ियों में छिपकर मेरे उतरने का इंतज़ार कर रहा होगा। इसलिए मैं दो घंटे और पेड़ पर ही बैठा रहा।' मैं सोच ही रहा था कि क्या करूँ, तभी ज़ोरदार शोर मच गया और करीब एक दर्जन जंगली कुत्तों का झुंड एक सांभर हिरण का पीछा करते हुए मेरे पेड़ के नीचे खुले मैदान में आ गया और पल भर में उसे नोच-नोंच कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। फिर वे उसके शव को खाने लगे। मैं जानता था कि यही मेरा एकमात्र मौका है। कोई बाघ, यहाँ तक कि आदमखोर बाघ भी, जंगली कुत्तों के झुंड के सामने आने की हिम्मत नहीं करेगा। अगर मैं पेड़ से नीचे उतरकर भाग जाता, तो कुत्ते मुझे नुकसान नहीं पहुँचाते, जबकि संभावना यही थी कि बाघ बहुत पहले ही भाग चुका होता।
तो मैंने वही किया, दोराई। कुत्ते खाना छोड़कर खड़े हो गए और जिज्ञासा भरी निगाहों से मेरी ओर देखने लगे। लेकिन उनमें से एक भी नहीं भागा। मानो उनकी सहज प्रवृत्ति ने उन्हें बता दिया हो कि मैं निहत्था और असहाय हूँ और वे चाहें तो मुझे मार सकते हैं। और जब वे अभी भी मुझे देख रहे थे, मैं चुपके से निकल गया और बिना किसी नुकसान के गाँव लौट आया, हालाँकि मैं मानता हूँ कि जंगली कुत्तों की मौजूदगी से दूर होते ही मैं बहुत डर गया था, क्योंकि वास्तव में उन्हीं कुत्तों ने मेरी जान बचाई थी। मुझे यकीन था कि आदमखोर सांप नदी के किनारे सूख रहे कुछ बचे हुए तालाबों में से किसी एक में अपनी प्यास बुझाने के बाद आसपास ही लौट आएगा।
"खैर, दोराई, मैंने उस जानवर को साफ़-साफ़ देखा। यह उतना बड़ा बाघ नहीं है जितना ये लोग बता रहे हैं, बल्कि औसत आकार का है। लेकिन इसकी पूंछ काफ़ी लंबी है। मैंने इस बात पर खास ध्यान दिया, क्योंकि यह मेरी तरफ़ घूरते हुए अपनी पूंछ को बार-बार अगल-बगल हिला रहा था। और वह नज़र, दोराई! मैंने किसी भी जीवित प्राणी की आँखों में ऐसी शैतानी नफ़रत कभी नहीं देखी, जैसी मैंने उस बाघ की आँखों में देखी।"
मैंने संदेह से पूछा, 'तुम वापस आकर दूसरे ग्रामीणों को अपनी देखी हुई बातें क्यों नहीं बताईं?'
शोलागा कुछ देर चुप रहा। फिर उसने कहा: 'इस जानवर को मारने पर इनाम है। मैं अपने चाचा की बंदूक उधार लेकर इसे मारने की कोशिश करने वाला था। मेरे चाचा परसों इस गाँव में वापस आने वाले हैं। मुझे इनाम चाहिए था, क्योंकि मैं गरीब हूँ। मैं तुम्हें इस घटना के बारे में बताता भी नहीं, लेकिन गाँव वालों की बताई बेतुकी कहानियाँ सुनकर मेरा जी मिचला गया।'
भीड़ में क्रोध और विरोध की हल्की फुसफुसाहट फैल गई, लेकिन शोलागा ने बोलना जारी रखा। 'इस बाघ के पास न तो कोई जादू है और न ही कोई देवी जो इसकी रक्षा करे, दोराई। लेकिन इसमें बुद्धि है, यहाँ खड़े अधिकांश लोगों से कहीं अधिक बुद्धि। हालांकि, अगर दोराई सचमुच गंभीर है और इसे गोली मारना चाहता है, तो मैं उसकी मदद करूंगा। क्योंकि मुझमें भी बुद्धि है; बाघ या हमारे आस-पास के इन लोगों से कहीं अधिक बुद्धि।'
और इस तरह मेरी मुलाकात लोटा शोलागा से हुई—जो एक साधारण आदिवासी होने के बावजूद बेहद मुखर, अहंकारी और अपनी राय पर अडिग था। लेकिन जैसा कि मुझे जल्द ही पता चला, वह अपने जंगल और उसके निवासियों को भली-भांति जानता था, और वह एक अत्यंत साहसी व्यक्ति भी था। मैंने उससे कहा कि वह जो भी सहायता दे सकता है, मैं उसका स्वागत करूंगा, जिस पर उसने सहमति जताते हुए आकर मेरे साथ आए दो साथियों के बगल में खड़ा हो गया।

गाँव के निवासियों से ज़्यादा जानकारी न मिलने के कारण, मैं अपने तीन साथियों को लेकर लगभग एक फलांग जंगल में चला गया, जहाँ हम ज़मीन पर बैठकर आगे की योजना बनाने लगे। जब तक यह सारी बातचीत समाप्त हुई, तब तक चालीस मिनट और बीत चुके थे: ठीक शाम के 5:40 बज रहे थे। अब जीवित चारे बाँधने का समय नहीं था, इस प्रक्रिया में सबसे उपयुक्त स्थानों का चयन करना और यदि संभव हो तो उन्हीं स्थानों पर पहले से मचान (सुरक्षा घेरा) लगाना जैसे जटिल लेकिन अत्यंत आवश्यक कार्य शामिल होते हैं, ताकि शिकार होने की स्थिति में बाद में कोई गड़बड़ी न हो।
लोट्टा ने हमें बताया कि बाघ के पदचिह्न अक्सर सुबह के समय दिखाई देते थे, जो गुल्याथा हल्ला नदी की सूखी रेत पर बने होते थे। ये पदचिह्न हमेशा नदी के बाएँ या उत्तर-पश्चिमी किनारे से लगभग 500 फीट ऊँची एक छोटी पहाड़ी के ठीक दक्षिण में पाए जाते थे, जो नदी से लगभग एक मील दूर, उसी दिशा से ऊपर उठती थी जिस दिशा से हम उस शाम आए थे। वास्तव में, नदी को छोड़ने के बाद जिस रास्ते से हम बेजाहहाई गए थे, वह इसी पहाड़ी के उत्तरी किनारे से होकर गुजरता था। उन्होंने बताया कि पहाड़ी की चोटी के पास एक छोटी गुफा थी, जिसमें उनका मानना था कि आदमखोर बाघ दिन के समय आराम करता था। हालाँकि दक्षिण-पूर्व में पाँच सौ फीट नीचे नदी के तल से पूरी पहाड़ी स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी, लोट्टा ने कहा कि गुफा एक बड़े पत्थर के कारण दिखाई नहीं देती थी। उनके अनुसार, पहाड़ी का निचला दो-तिहाई हिस्सा जंगल से ढका हुआ था, लेकिन ऊपरी ढलानें अपेक्षाकृत खाली थीं, जिनमें एक दूसरे के ऊपर ढेर लगे हुए टूटे-फूटे पत्थर थे। इसलिए, गुफा के पास जाने वाला कोई भी व्यक्ति खतरे में पड़ जाता। वह न केवल ऊपर से बाघ को दिखाई देता, बल्कि चाहे कोई व्यक्ति कितनी भी खामोशी से चढ़े, ऊबड़-खाबड़ इलाके में चलते समय, एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदते समय या उनके बीच से निकलने की कोशिश करते समय किसी न किसी तरह की आवाज जरूर करता।
हमने लोटा से पूछा कि उन्हें ऐसा क्यों लगता है कि बाघ पहाड़ी पर स्थित गुफा को आश्रय के रूप में इस्तेमाल करता है। उन्होंने जवाब दिया कि नदी के किनारे से होकर गुजरने वाले और पहाड़ी से वापस उसी ओर जाने वाले प्रतीत होने वाले पदचिह्नों की बार-बार उपस्थिति के अलावा, उन्होंने पहाड़ी पर लंगूर बंदरों की चेतावनी भरी आवाज़ें भी कई बार सुनी थीं। साथ ही, लगभग चार रात पहले, पहाड़ी पर कहीं से एक बाघ की आवाज आई थी।
बायरा ने बताया कि इनमें से कोई भी घटना अपने आप में निर्णायक रूप से यह साबित नहीं करती कि आदमखोर बाघ पहाड़ी पर रहता था, लेकिन सभी तथ्यों को एक साथ देखने पर, साथ ही लोटा द्वारा बताई गई छिपी हुई गुफा की मौजूदगी से यह संकेत मिलता है कि ऐसा हो सकता है। इस सवाल का हल निकालने का एकमात्र तरीका पहाड़ी पर चढ़कर, यदि संभव हो तो, गुफा की जाँच करना था। इसलिए हमने तय किया कि अगली सुबह हम दो जीवित चारे लाएँगे और उनमें से एक को पहाड़ी के दक्षिण-पूर्व में नदी के किनारे बाँध देंगे, जहाँ अक्सर पैरों के निशान दिखाई देते थे, और दूसरे को उस पगडंडी पर बाँध देंगे जिससे हम अभी आए थे, और जो, जैसा कि मैंने आपको पहले ही बताया है, पहाड़ी के उत्तरी किनारे से होकर गुजरती है। इसके अलावा, दोपहर के ठीक बाद, जब सूरज सबसे तेज़ होता है, मैंने पहाड़ी पर चढ़कर गुफा को खोजने का फैसला किया। ऐसा करने में संभव था कि मुझे बाघ के वहाँ रहने के अतिरिक्त सबूत मिल जाएँ। यह भी थोड़ी सी संभावना थी कि मुझे उसकी एक झलक मिल जाए—शायद मैं उसकी तस्वीर भी ले सकूँ।
जब तक सारी चर्चा और फैसला हुआ, तब तक दिन ढलने लगा था, इसलिए हम रात बिताने के लिए बेजाहाई लौट आए। रहने की समस्या खड़ी हो गई। मैं अपने साथ तंबू

नहीं लाया था क्योंकि लंबी यात्रा में इतना वजन उठाना पड़ता। इसके अलावा, मार्च का आखिरी सप्ताह था, जब मौसम न केवल बहुत शुष्क होता है बल्कि असहनीय गर्मी भी बढ़ जाती है। पिताजी और मैं आमतौर पर मॉनसून को छोड़कर हर समय पेड़ों के नीचे ही डेरा डालते हैं। लोटा ने हमें अपनी झोपड़ी इस्तेमाल करने की पेशकश की। मना करना असभ्यता होती, लेकिन जब मैं छोटे, निचले प्रवेश द्वार पर खड़ा होकर उस छोटे, अंधेरे और दुर्गंधयुक्त अंदरूनी हिस्से को देखा, जिसमें किसी भी तरह की हवा आने-जाने की कोई व्यवस्था नहीं थी, तो मैंने विनम्रता से लेकिन दृढ़ता से कहा कि इतनी गर्म और बंद जगह में मुझे नींद नहीं आएगी, और मैं बाहर सोना पसंद करूंगा। अब दक्षिण भारत के किसी भी गांव के पास सोने की कोशिश करने वाला कोई भी व्यक्ति तुरंत मुझसे सहमत होगा कि यह लगभग असंभव है। न केवल जमीन हर तरह के कूड़े और गंदगी से ढकी होती है, बल्कि अंधेरा होने के बाद निवासी इसका खुलेआम शौचालय के रूप में इस्तेमाल करते हैं। इसलिए कचरे से बचने के लिए हम लगभग 150 गज दूर एक खुली जगह पर गए और वहीं रात बिताने का फैसला किया। लोटा ने कहा कि वह हमारे साथ रहेगा, और मैं ज़मीन पर लेट गया जबकि मेरे तीन साथी लकड़ियां इकट्ठा करने लगे और जल्द ही आग अच्छे से जलने लगी।
कार्यक्रम का पहला काम चाय बनाना था, और जब तक पानी उबल रहा था, मैंने घर से लाए हुए ठंडे नमकीन गोमांस और चपातियों में से थोड़ा सा खा लिया। फिर, गरमा गरम चाय की चुस्की लेते हुए, मैंने अपने तीन दोस्तों की कहानियाँ सुनीं। और सचमुच मैं खुश था। ऊपर तारों से भरा आकाश, जो उगते चाँद की रोशनी से हल्का होता जा रहा था, घने जंगल के पेड़ों की पृष्ठभूमि में जुगनुओं की चमक, पश्चिम में पोन्नाच्ची बेट्टा पर्वत श्रृंखला की ऊँची और नुकीली आकृति, नींद लाने वाली गर्माहट से जगमगाती हमारी अलाव की हल्की टिमटिमाती रोशनी, और धुएँ के गुबार जो घूमते-घूमते हुए अंत में अधूरे रह गए—ये सब उस खुशी में योगदान दे रहे थे।
रंगा और बायरा को घड़ी देखकर समय देखना सिखाया गया था, इसलिए आठ बजे मैंने अपनी घड़ी उतारकर रंगा को दे दी और उसे हिदायत दी कि वह जागता रहे और सतर्क रहे तथा साढ़े दस बजे तक आग जलाए रखे। फिर उसे बायरा को जगाना था, जिसकी पहरेदारी एक बजे तक चलती। उसके बाद मेरी बारी आती, साढ़े तीन बजे तक। अंत में, मैं यह ज़िम्मेदारी लोटा (जिसे समय देखना नहीं आता था) को सौंप देता, जब तक कि सुबह छह बजे सूर्योदय नहीं हो जाता।
मुझे तुरंत नींद आ गई और एक बजे जब बायरा ने मुझे कंधे से हल्के से हिलाया तो मेरी नींद खुली। मैंने देखा कि बाकी दोनों आदमी गहरी नींद में सो रहे थे और बायरा भी जल्द ही उनके साथ सो गया। आग बुझकर कुछ अंगारों में बदल गई थी और उसे जलाने के लिए ज्यादा लकड़ी नहीं बची थी। आखिरकार, मौसम के बावजूद, काफी ठंड हो गई। मेरी रात बिना किसी घटना के गुज़री। दूर से एक हाथी की चिंघाड़ सुनाई दी, और पास ही एक सांभर हिरण ने तीन-चार बार आवाज़ लगाई। लेकिन आवाज़ें इतनी देर तक नहीं थीं कि किसी मांसाहारी जानवर के गुज़रने का संकेत मिले। शायद किसी छोटे जानवर ने उसे डरा दिया था, क्योंकि हिरण जल्द ही अपने डर पर काबू पा लिया और शांत हो गया। मुझे फिर से नींद आने लगी और जब मेरी घड़ी में साढ़े तीन बजे तो मुझे खुशी हुई। मैंने लोटा को जगाया, उससे फुसफुसाकर कहा कि बची हुई कुछ लकड़ियों को बचाकर रखे ताकि अंगारे सुबह तक जलते रहें, और मैं फिर से सो गया।
साढ़े छह बज चुके थे जब मैं उठा तो देखा कि मेरे तीनों सहायक एक बड़ी आग जलाने में व्यस्त थे, जिसके ऊपर चाय के लिए केतली उबल रही थी, जिसे देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। फिर हम सब पूरी लगन से काम में जुट गए। काफी मोलभाव के बाद, मैं दस रुपये प्रति बैल के हिसाब से दो भूरे बैल किराए पर लेने में कामयाब रहा। बैल

किराए पर लेने वाले व्यक्ति ने साफ कर दिया कि वह जानवरों को सीधे नहीं बेच सकता, क्योंकि वह उनका मालिक नहीं था। असली मालिक एक दूर के गाँव में रहता था और उसने मुझे छह महीने की अवधि के लिए लगभग पैंतीस मवेशी चराने के लिए सौंपे थे। इसके लिए उसका वेतन तीन रुपये प्रति माह (4 शिलिंग 6 पेंस) था, साथ ही उसे जितना चाहे उतना दूध पीने को मिलता था। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह मुझे कुछ रातों के लिए बीस रुपये में बैल किराए पर देने के लिए ललचाया, जो लगभग सात महीने के वेतन के बराबर था। लेकिन उसने यह भी साफ कर दिया कि अगर इनमें से कोई भी जानवर मारा गया तो मुझे सौ रुपये का मुआवजा देना होगा। इसके अलावा, किसी को भी यह नहीं बताया जाना चाहिए कि उसने जानवरों को चारे के लिए उधार दिया था। वह मालिक को बताता कि चरते समय बाघ ने बैल को मार डाला। मालिक बेशक दो-तीन महीने की तनख्वाह रोककर उस पर जुर्माना लगाता, लेकिन चूंकि उसे मुझसे सौ रुपये मिल चुके थे, इसलिए उसे कम से कम नब्बे रुपये का मुनाफा हो जाता। एक ईमानदार वनवासी का यही सीधा-सादा तर्क होता है।
हम उसी रास्ते से वापस लौटे जिससे हम पिछली शाम बेजाहाई पहुँचे थे, और एक मील से थोड़ा अधिक चलने के बाद हम उस छोटी पहाड़ी के ठीक उत्तर में पहुँच गए जिसका वर्णन लोट्टा ने किया था। जैसा कि उसने कहा था, निचले हिस्से का आधे से अधिक भाग जंगल से ढका हुआ था, लेकिन उसके आगे पहाड़ी पर कुछ कंटीली झाड़ियों के अलावा कोई वनस्पति नहीं थी, जो पत्थरों के ढेरों के बीच उगी थीं।
पगडंडी के किनारे एक इमली का पेड़ पहली मचान बनाने के लिए आदर्श जगह थी, जिसे ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर बांधना था, जो कि आदर्श ऊंचाई है। हमने एक बैल के अगले पैर को रास्ते के बीचोंबीच ज़मीन में गाड़े गए एक खंभे से बांध दिया; फिर मेरे साथियों ने मचान बनाने का काम शुरू कर दिया। चूंकि वे तीनों जंगल के कामों में माहिर थे, इसलिए मुझे उन्हें कुछ बताने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वास्तव में, लगभग पचहत्तर मिनट में बनकर तैयार हुई मचान एक कलाकृति थी और इतनी अच्छी तरह से छिपी हुई थी कि तीस फीट की दूरी से भी मुश्किल से दिखाई देती थी।
इमली के पेड़ से हम लोट्टा के पीछे-पीछे जंगल के शॉर्टकट रास्ते से होते हुए आधे मील के भीतर ही नाले (गुल्याथा हल्ला) तक पहुँच गए। वहाँ से एक चौथाई मील ऊपर की ओर मुड़ने पर हम पहाड़ी के ठीक दक्षिण-पूर्व में उस जगह पर पहुँच गए जिसका वर्णन लोट्टा ने पिछली शाम किया था। उसकी कहानी को किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि कुछ ही मिनटों में रंगा को सहायक नदी की रेत पर बाघ के नए पदचिह्न दिखाई दिए। स्पष्ट था कि पिछली रात ये पदचिह्न बनाने वाला बाघ पहाड़ी से नीचे उतरा था। कुछ ही गज की दूरी पर एक अधपका बेर का पेड़ दूसरे मचान को बाँधने के लिए एक उपयुक्त स्थान था। डेढ़ घंटे बाद यह काम पूरा हो गया और हमने दूसरे बैल को पेड़ के ठीक नीचे नदी के किनारे गाड़े गए एक खंभे से बाँध दिया।
दोपहर हो चुकी थी और हमारे अभियान का अगला चरण यह था कि मैं पहाड़ी पर चढ़कर गुफा का पता लगाने की कोशिश करूं। जहाँ तक दो जीवित चारे की बात थी, अब बस यही उम्मीद की जा सकती थी कि बाघ आने वाली रात या उसके बाद वाली रात में उनमें से किसी एक को मारकर खा जाएगा।
मेरे तीनों सेवकों के बीच इस बात पर तीखी बहस छिड़ गई कि उनमें से कौन मेरे साथ जाए, तीनों का कहना था कि यह उनका अपना कर्तव्य है। रंगा ने ज़ोर देकर कहा कि जब मैं दो महीने का था तब उसने मुझे अपनी गोद में उठाया था, इसलिए वह मुझे सबसे लंबे समय से जानता है। बायरा भी उतनी ही ज़िद पर अड़ा था, उसका कहना था कि बाघ को नज़दीक से सूंघने में वह सबसे माहिर है, इसलिए वह मेरे लिए सबसे

उपयोगी साबित होगा। लोटा, जिसे एक दिन पहले ही भर्ती किया गया था, का दावा था कि वह सबसे योग्य है क्योंकि केवल वही गुफा की स्थिति जानता है।
ज़ाहिर है, मुझे लोटा को अपने साथ ले जाना चाहिए था, क्योंकि उसका दावा सबसे ज़्यादा तर्कसंगत था। लेकिन यहां एक पेचीदा मामला सामने आया। पूर्वी मानसिकता की पेचीदगियाँ कभी-कभी समझना मुश्किल होता है, और मैं अच्छी तरह जानता था कि अगर मैं नए आदमी को अपने साथ ले जाता, तो मैं अपने दोनों पुराने साथियों की भावनाओं, स्वाभिमान और स्नेह को गहरी चोट पहुँचाता। और उनमें से किसी एक को दूसरे पर तरजीह देना, पीछे रह जाने वाले को और भी ज़्यादा दुख पहुँचाता। इसलिए मैंने तुरंत फैसला कर लिया। मेरे पास अकेले जाने के अलावा कोई चारा नहीं था।
मैंने यथासंभव सहजता से अपना निर्णय सुनाया और लोटा से पूछा कि हम जहाँ खड़े हैं, वहाँ से छिपी हुई गुफा की अनुमानित स्थिति क्या है। इसके परिणामस्वरूप फिर से हंगामा मच गया, तीनों ने कहा कि ऐसा करना बेहद खतरनाक है। दरअसल, मेरी इस शर्मनाक स्थिति को समझते हुए कि मुझे उनमें से किसी एक को चुनना है, तीनों ने स्वेच्छा से पीछे हटने की पेशकश की ताकि मैं बाकी दो में से किसी एक को चुन सकूं। लेकिन इससे मामला आसान नहीं हुआ। मुझे अभी भी बाकी दो के नुकसान पर तीनों में से किसी एक को चुनना था। इसके अलावा, मैंने कहा था कि मैं अकेले पहाड़ी पर चढ़ूंगा, अब अपना इरादा बदलना यह दर्शाता कि मैं डरा हुआ हूँ। इसलिए मैंने दृढ़ता से कहा कि मैंने अपना निर्णय ले लिया है: मैं अकेले ही जाऊँगा।
लोटा ने कुछ संकोच से पहाड़ी की चोटी से कुछ गज की दूरी पर खड़े एक बड़े पत्थर की ओर इशारा किया और बताया कि गुफा का प्रवेश द्वार ठीक उसके पीछे है। उसने सुझाव दिया कि गुफा तक सीधे नीचे से जाने के बजाय, मुझे पहाड़ी पर तिरछे कोण से चढ़ना चाहिए जब तक कि मैं चोटी पर न पहुँच जाऊँ, और फिर धीरे-धीरे चोटी के साथ-साथ रेंगते हुए गुफा को देख सकूँ, जिसे पत्थर को निशान के रूप में इस्तेमाल करते हुए ढूंढना मेरे लिए आसान होगा।
इन निर्देशों को ध्यान में रखते हुए मैंने और कुछ नहीं कहा, बल्कि नदी पार करके दूसरी तरफ़ चला गया और चढ़ाई शुरू कर दी। पहाड़ी के निचले दो-तिहाई हिस्से को ढकने वाले घने जंगल ने गुफा के प्रवेश द्वार के पास छिपे बाघ को मुझ तक पहुँचने से प्रभावी ढंग से रोक दिया। इसी तरह, अगर बाघ झाड़ियों में छिपा होता और मेरे पास आने का इंतज़ार कर रहा होता, तो वह मुझ पर हमला कर सकता था।
मैं बहुत सावधानी से आगे बढ़ा, सामने की हर झाड़ी और घनी वनस्पति को ध्यान से देखता हुआ। स्वाभाविक रूप से इस तरह मेरी प्रगति धीमी थी, इसलिए मुझे यह देखने में कुछ समय लगा कि जैसे-जैसे मैं पहाड़ी के ऊपरी हिस्से की ओर बढ़ रहा था जहाँ बड़े-बड़े पत्थर थे, झाड़ियाँ कम होती जा रही थीं। लेकिन अंततः मैं वहाँ पहुँच गया, और पाया कि अब मेरी स्थिति घने जंगल वाले क्षेत्र की तुलना में कहीं अधिक खराब थी। ऊपर से देखने वाले किसी भी व्यक्ति को मैं स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। बाघ मुझ पर हमला कर सकता था, और किसी भी पत्थर के पीछे छिपकर वह मेरे पास आते ही मुझ पर झपट सकता था; या वह मेरे गुजरने का इंतजार करके पीछे से हमला कर सकता था। लेकिन मैंने यह ठान लिया था, इसलिए आगे बढ़ने के अलावा कोई चारा नहीं था।
कुछ चट्टानें काफी बड़ी थीं, दस फीट या उससे भी अधिक ऊँची। कुछ छोटी थीं, लगभग तीन फीट ऊँची। कई बार छोटी चट्टानों के बीच से या उनके आसपास से निकलना मुश्किल था क्योंकि वे आपस में गुँथी हुई थीं। अक्सर मुझे एक चट्टान पर चढ़कर दूसरी पर कूदना पड़ता था। इससे मैं ऊपर से आसानी से दिखाई देने लगा। इसके अलावा, रबर के तले वाले जूते पहनने और पूरी सावधानी बरतने के बावजूद, मेरे

चलने-फिरने से शोर होना लाज़मी था। इस समय मुझे अपनी नादानी पर पछतावा हुआ और मुझे लगने लगा कि काश मैं अपने किसी साथी को साथ ले आया होता।
लेकिन किस्मत ने मेरा साथ दिया और आखिरकार मैं पहाड़ी की चोटी पर, लगभग उसके दाहिने छोर पर पहुँच गया। अब मुझे चोटी के साथ-साथ दूसरे छोर की ओर रेंगना था, जब तक कि मुझे वह चट्टान दिखाई न दे जो गुफा के प्रवेश द्वार को छुपाए हुए थी। मैंने ऐसा ही किया, बीच-बीच में अपने पंजों पर खड़ा होकर चट्टान को देखने की कोशिश करता रहा। लेकिन एक नई मुश्किल खड़ी हो गई। मेरी स्थिति से मैं केवल प्रत्येक चट्टान का ऊपरी भाग ही देख पा रहा था, उसका आधार नहीं, जो पहाड़ी की ढलान के कारण मेरी नज़र से छिपा हुआ था। और वहाँ इतनी सारी चट्टानें थीं कि लोटा द्वारा बताई गई चट्टान को पहचानना मेरे लिए नामुमकिन था। इस दुविधा में भी मैं आगे बढ़ता रहा, तभी अचानक मेरी समस्या हल हो गई।
अचानक मेरे ठीक सामने एक चट्टान के पीछे से एक बड़ा सा भूरा आकार निकला और उछलकर भाग गया। मैं बुरी तरह डर गया और मुझे लगा कि यह बाघ है, इसलिए मैंने अपनी .470 पिस्तौल कंधे पर रख ली। तभी मैंने देखा कि यह एक अकेला लंगूर बंदर था। वह एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदता हुआ पहाड़ी के दूसरे छोर की ओर चला गया और कुछ ही पलों में मेरी नज़रों से ओझल हो गया। लंगूर की उपस्थिति से मुझे बहुत तसल्ली मिली। अगर आसपास बाघ होता, तो मुझे अच्छी तरह पता था कि बंदर वहाँ नहीं होता। मैं और तेज़ी से, और कम सावधानी के साथ, उस जगह की ओर बढ़ा जहाँ लंगूर गायब हुआ था।
फिर एक अजीब घटना घटी। लंगूर ने खतरे की चीख मारी; 'हार! हार! हार!' अगले ही पल वह फिर प्रकट हुआ और उछलता हुआ वापस आ गया। चट्टानों पर छलांग लगाते हुए वह तेजी से आगे बढ़ा और मेरी नजरों से ओझल हो गया।
अब लंगूर ने खतरे का संकेत क्यों दिया था? वह इतनी बेतहाशा तेजी से वापस क्यों भागा, लगभग मेरे ऊपर ही क्यों आ गिरा था?
मैं और भी सावधानी से उस जगह की ओर बढ़ा जहाँ बंदर फिर से दिखाई दिया था। जैसे ही मैं पहाड़ी के किनारे के पास पहुंचा और नीचे की ओर देखने लगा, मुझे एक बड़े पत्थर का ऊपरी आधा हिस्सा दिखाई दिया। जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया, वह और स्पष्ट होता गया, और जल्द ही वह पूरी तरह से दिखाई देने लगा, तब मुझे पता चला कि यह वही पत्थर था जिसे लोटा ने नदी के किनारे से दिखाया था। उस समय मैं गुफा के ठीक ऊपर खड़ा था। यह बात मुझे अचानक समझ में आ गई। लंगूर शायद इसलिए चिल्लाया और पीछे हट गया क्योंकि उसने गुफा के प्रवेश द्वार पर बाघ को लेटे हुए देख लिया था, या उसे अपने पुराने दुश्मन की निकटता का आभास हो गया था। अब सवाल यह उठता था कि बाघ गुफा के बाहर है या अंदर, और इसका जवाब जानने का एकमात्र तरीका था और भी करीब जाना।
तो मैं धीरे-धीरे, इंच-इंच करके आगे बढ़ता गया, जब तक कि मैं पहाड़ी के किनारे तक नहीं पहुंच गया और ज़मीन मेरे पैरों के सामने तेज़ी से नीचे की ओर ढलान पर आ गई। अपने हाथों और घुटनों के बल बैठकर और गर्दन आगे करके, मैं आखिरकार गुफा का प्रवेश द्वार देख पाया—चट्टान में एक संकरा छेद, जो मुझे लगभग पाँच फीट ऊँचा और शायद एक गज चौड़ा लगा। कोई बाघ दिखाई नहीं दिया। मैं सोचने लगा कि अब मुझे क्या करना चाहिए। मुझे ज़ोर से चिल्लाने या एक छोटा पत्थर फेंकने का मन हुआ, ताकि बाघ बाहर निकल आए और खुद को दिखा दे। लेकिन मैंने समय रहते खुद को रोक लिया। बाघ शायद घर पर न हो। इसके अलावा, पत्थर फेंकने से वह बेवजह डर जाएगा। वह पहली गुफा से जुड़ी दूसरी गुफा से बाहर आ सकता है, जिसके बारे में लोटा को कुछ नहीं पता था, और फिर जंगल के किसी दूसरे हिस्से में भाग सकता है, जहां उसे पकड़ने का काम फिर से शुरू करना पड़ेगा। सब कुछ कहने और करने के

बाद, सबसे बुद्धिमानी भरा रास्ता यही प्रतीत हुआ कि न तो खुद को उजागर किया जाए और न ही उसे डराया जाए, बल्कि चुपचाप पीछे हट जाया जाए और घटनाओं को - उसके द्वारा दोनों में से किसी एक प्रलोभन को स्वीकार करने के रूप में - अपना रास्ता खुद तय करने दिया जाए।
इसलिए, जिस खामोशी से मैं आया था, उसी खामोशी से और पीछे से होने वाले अचानक हमले के डर से बार-बार पीछे मुड़कर देखते हुए, मैं उसी स्थान पर वापस लौटा जहाँ मैं पहली बार पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा था, और फिर दूसरी तरफ नीचे उतरता गया, अंततः नदी के किनारे अपने साथियों के बीच पहुँच गया। उस शाम हम शिविर में ही रहे ताकि जंगल को अनावश्यक रूप से परेशान न करें और जल्दी सो गए, हालाँकि पिछली रात की तरह ही हम बारी-बारी से पहरा देते रहे। इस बार हमने एहतियात के तौर पर पहले से ही झाड़ियों का एक बड़ा ढेर इकट्ठा कर लिया था, जिसमें कुछ बड़े लट्ठे भी थे, ताकि हमें अपने पशुओं की देखभाल करने की नौबत दोबारा न आए।
भोर होते ही हम अपने पहले चारे—उस बैल को देखने के लिए निकल पड़े जिसे हमने गाँव की ओर जाने वाले रास्ते पर बाँधा था। वह बिल्कुल ठीक-ठाक था और उसे कोई चोट नहीं आई थी। रास्ते में उसके पैरों के निशान भी कहीं नहीं थे। हम उसी शॉर्टकट से होते हुए नदी और अपने दूसरे चारे की ओर बढ़े। लेकिन वह जानवर भी ज़िंदा था, पर एक फर्क था: हमने चारों ओर खोजबीन की तो पाया कि बाघ ने उसे देख लिया था। वह पंद्रह गज की दूरी तक आया, नदी के किनारे बैठ गया और जानवर को गौर से देखा, शायद सोच रहा था कि उसे मारना चाहिए या नहीं। और फिर, किसी अज्ञात कारण से, वह चला गया। नदी की नरम रेत पर उसके पैरों के निशान हमें कहानी इतनी स्पष्ट रूप से बता रहे थे मानो हम उसे देख रहे हों।
कुछ करने को न होने के कारण हम गाँव लौट आए और देखा कि लोट्टा के चाचा समय पर आ गए थे और अपने साथ बंदूक भी लाए थे। बंदूक की मौजूदगी (चाचा की नहीं) ने लोट्टा को हरकत में ला दिया। उन्होंने मेरे सामने एक ऐसा विचार रखा जिस पर उनकी पूरी सहमति थी। शिविर में तीसरी रात कुछ न करते हुए बिताने के बजाय, उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि मुझे दो और मवेशी चारे के लिए माँगने, उधार लेने या चुराने चाहिए और उन्हें पहाड़ी के पूर्व और पश्चिम में स्थित दो शेष किनारों पर बाँध देना चाहिए। मुझे उनमें से एक पर बैठना चाहिए, जबकि वह अपने चाचा की बंदूक से चौथे चारे पर बैठ जाएँ। उनका तर्क था कि चूंकि बाघ पहले दो चारे के पास तो आया था लेकिन उसे शक हो गया था और उसने उन्हें नहीं खाया था, इसलिए बहुत संभव है कि अगर वह पहाड़ी पर स्थित गुफा से नीचे उतरने के बाद तीसरे और चौथे चारे पर आ जाए तो वह उन्हें भी खा ले। इसलिए लोट्टा ने सुझाव दिया कि मैं पश्चिम में जीवित चारे पर बैठूँ और वह पूर्व में चारे पर बैठ जाएँ। तब हम दोनों में से किसी को भी बाघ को तब गोली मारने का मौका मिल सकता है जब वह चारे की जाँच कर रहा हो। बेशक, अगर बाघ इन दोनों नए चारे में से किसी एक को मार देता है, तो यह हमारे लिए आसान निशाना सुनिश्चित करने में और भी बेहतर होगा।
स्वभाव से मैं बेचैन स्वभाव का व्यक्ति हूँ और दिन-रात निष्क्रिय बैठे इस उम्मीद में इंतज़ार करना कि बाघ पहले दो चारे में से एक खा लेगा, मुझे बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा। कई बार मैंने उसे उसकी गुफा से बाहर निकालने की कोशिश करने का सोचा, लेकिन बायरा और रंगा ने मुझे इस योजना के खिलाफ चेतावनी दी, कहीं ऐसा न हो कि हम बाघ को डराकर भगा दें। इन परिस्थितियों में मुझे कोई भी ऐसी योजना अच्छी लगी जिसमें कुछ करने का मौका हो और मैं तुरंत लोट्टा के विचार से सहमत हो गया। उसे दो और बैल लाने का काम सौंपकर, और वह भी जल्दी से, मैंने अपने साथ लाए डिब्बाबंद खाने से जल्दी से दोपहर का भोजन तैयार करना शुरू कर दिया।

लोटा को मेरी उम्मीद से कहीं जल्दी सफलता मिल गई और दोपहर तक वह एक अधविकसित काले बैल और एक भैंस की बछिया के साथ आ गई। हम चारों तुरंत चल पड़े, रंगा और बायरा मेरा ओवरकोट, पानी की बोतल, सैंडविच और चाय से भरी एक खाली बीयर की बोतल लिए हुए थे। मेरे पास मेरी टॉर्च भी थी, जिसे दो क्लिप की मदद से मेरी राइफल से जोड़ा जा सकता था। लोटा पीछे-पीछे बैल और बछिया को हांकते हुए चल रही थी।
मैं मानता हूं कि लोटा के सुझाव के अनुसार पहाड़ी के पश्चिमी भाग के बजाय पूर्वी भाग को चुनना कुछ हद तक स्वार्थपूर्ण था, क्योंकि मैंने सोचा था कि बाघ के इस दिशा से आने की संभावना अधिक होगी, क्योंकि यहाँ से नदी दिखाई देती थी। मैंने काले बैल के बजाय भैंस की बछिया को चुना, क्योंकि बाघ कभी-कभी पूरी तरह से काले जानवर से डरते हैं। दूसरी बात, पिछली रात एक बैल को चारा बनाने से मना करने के बाद, मुझे उम्मीद थी कि बाघ एक युवा भैंस को मना नहीं करेगा।
इसके बाद बैठने के लिए उपयुक्त जगह ढूंढने का काम शुरू हुआ, और इसमें कुछ कठिनाई आई क्योंकि पहाड़ी के निचले दो-तिहाई हिस्से में घनी झाड़ियाँ, घास और पेड़ थे जो न तो इतने ऊँचे थे और न ही इतने मजबूत कि मचान में मेरा वजन सह सकें। मुझे जल्द ही इस सच्चाई का सामना करना पड़ा कि पहाड़ी के इस हिस्से में बैठने के लिए कोई उपयुक्त जगह नहीं थी, जब तक कि मैं किसी झाड़ी में जमीन पर बैठने के लिए तैयार न हो जाऊं, जो कि बहुत खतरनाक होगा।
फिर मुझे थोड़ा और ऊपर चढ़ने का विचार आया, ऊपरी ढलानों पर बहुतायत में जमा चट्टानों के बीच। हमने ऐसा किया और थोड़ी देर में हमें एक ऐसी संरचना दिखाई दी जो मेरे उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त लग रही थी। बारह फीट से अधिक ऊंचे दो बड़े पत्थर, उनके बीच फँसे एक तीसरे पत्थर को छू रहे थे, जो पहले दो पत्थरों से थोड़ा ऊँचा, लगभग पंद्रह फीट ऊँचा था। तीनों पत्थर एक दूसरे से लगभग नब्बे डिग्री के कोण पर थे। सामने का स्थान खुला था और वहाँ से पहाड़ी और नीचे बहती गुल्याथा हल्ला नदी दिखाई दे रही थी। यदि मैं अपने सहायकों से तीनों पत्थरों के आधारों के बीच की जगह में कांटे काटकर मजबूती से गुँथवाकर, बीच वाले और सबसे ऊँचे पत्थर के आधार पर बैठ जाता, तो मैं पीछे से होने वाले हमले से पूरी तरह सुरक्षित रहता। मुझ तक पहुँचने के लिए बाघ को तीनों पत्थरों में से किसी एक पर कूदना पड़ता, जो वह आसानी से कर सकता था, लेकिन फिर भी पत्थरों के घुमाव के कारण मैं उसे सीधे दिखाई नहीं देता। उसे पहले बीच में स्थित एम्फीथिएटर में छलांग लगानी होगी, और फिर मुड़कर मुझे ढूंढना और मुझ पर हमला करना होगा, जिससे मुझे गोली चलाने के लिए पर्याप्त समय मिल जाएगा।
मेरे पास पहुँचने का उसका एकमात्र दूसरा रास्ता सामने के खुले इलाके से आना था, जहाँ मैंने अपनी भैंस की बछिया को लगभग पंद्रह गज दूर बाँधने का इरादा किया था। मैंने सोचा कि अगर बाघ को मेरी मौजूदगी का पता भी चल जाए और वह चट्टानों के बाहरी किनारे से छिपकर आने की अक्ल रखता हो, तो भी उसे भैंस की बछिया सामने खड़ी मिलेगी, जो उसके लिए एक पक्का बचाव होगा। हो सकता है वह उसे मारने का मन बना ले; हो सकता है वह उसका मुआयना करने के लिए उसके चारों ओर घूमे; लेकिन उसकी मौजूदगी उसे जरूर उलझन में डाल देगी और उसकी हमले की मूल योजना को बिगाड़ देगी। अंत में, भैंस की बछिया पहाड़ी की चोटी से बाघ को दिखाई देगी और उसे आकर्षित करने का काम करेगी। बेशक, अगर वह चट्टानों के बीच की किसी भी जगह से रेंगकर आने की कोशिश करता है, तो उसे काँटे हटाने होंगे और शोर से मुझे पर्याप्त चेतावनी मिल जाएगी।
इसलिए मुझे इतना बढ़िया और अपेक्षाकृत सुरक्षित छिपने का स्थान पाकर बहुत खुशी हुई। मैंने अपने तीनों साथियों को अपनी योजना बताई, और वे सभी इस बात से सहमत

थे कि यह वाकई एक अच्छी योजना है। मैं प्रवेश द्वार पर राइफल लेकर उनकी रखवाली कर रहा था, तभी वे पहाड़ी से थोड़ी दूर नीचे गए और ढेर सारे कटे हुए काँटे लेकर वापस आए, जिन्हें उन्होंने चट्टानों के आधार पर बनी दरारों में कसकर ठोक दिया। अंत में उन्होंने बछिया को उसके अगले पैर से एक खूंटी से बांध दिया, जिसे उन्होंने ठीक उस जगह से बीस कदम की दूरी पर जमीन में गाड़ दिया जहाँ मैं बैठने वाला था।
अब लोटा के लिए पहाड़ी के दूसरी ओर एक उपयुक्त जगह ढूंढना बाकी था, जहाँ वह अपने चाचा की पुरानी बंदूक छिपा सके। मैं इसमें मदद करना चाहता था, इसलिए जहाँ हम खड़े थे, वहाँ से सीधे पहाड़ी पार करने या शॉर्टकट के रूप में उसकी चोटी पर चढ़ने के बजाय, क्योंकि दोनों ही मामलों में बाघ हमें देख या सुन सकता था और सतर्क हो सकता था, हम एक कतार में पहाड़ी की तलहटी तक उतरे और एक चक्कर लगाया। हम थोड़ी दूर तक नदी के किनारे-किनारे चले और फिर बीच के जंगल से होते हुए लोटा के नेतृत्व में पहाड़ी के दूसरी ओर चढ़ गए।
यहां की परिस्थितियां पूर्वी तरफ जैसी ही थीं। निचली ढलानों पर मचान के लिए कोई बड़ा पेड़ नहीं था, इसलिए हम ऊपर चट्टानों और पत्थरों वाले इलाके में चढ़ गए। मुझे लगा था कि मुझे वैसा आदर्श छिपने का स्थान मिल जाएगा जैसा मैंने चुना था। चट्टानों के ढेर पर चढ़ते-उतरते और उनके बीच ठोकर खाते हुए, लोटा ने आखिरकार एक लगभग सपाट चट्टान का टुकड़ा चुना जो पहाड़ी की चोटी की ओर थोड़ा ऊपर था। उसने कहा कि यह ठीक है, और वह चट्टान पर लेट जाएगा और काले बैल को ऊंचे सिरे के सामने बांध देगा, जहां से बाघ उस पर बिना किसी रुकावट के नजर रख सकेगा। बाघ की गुफा पहाड़ी के कोने या ढलान पर थी, जो सपाट चट्टान से दिखाई नहीं देती थी और काफी ऊपर थी।
अब शाम के करीब चार बज चुके थे और शिविर में वापस जाने के लिए बहुत देर हो चुकी थी। पहाड़ी के पश्चिम में स्थित सपाट चट्टान की ऊपरी सतह, जो दोपहर की धूप के सीधे संपर्क में थी, लोटा के लिए तुरंत अपनी जगह लेने के लिए बहुत गर्म हो गई थी। इसलिए हम सभी ने काले बैल को बांधने में मदद की और फिर लोटा को उसकी बंदूक के साथ चट्टान के दूसरी तरफ छाया में छोड़ दिया। उसने कहा कि जैसे ही चट्टान ठंडी होगी, वह लगभग साढ़े पांच बजे ऊपर चढ़ जाएगा।
एक बार फिर रंगा, बायरा और मैं पहाड़ी से नीचे सरकते हुए, जंगल से होते हुए और नदी के किनारे-किनारे चलते हुए उस जगह पहुंचे जहां से मुझे उन तीन चट्टानों तक पहुंचने के लिए चढ़ाई शुरू करनी थी जहाँ मुझे बैठना था। यहाँ मैंने अपने दोनों नौकरों से विदा ली, उन्हें सख्त हिदायत दी कि वे गाँव लौट जाएँ और सुबह तक वहीं रहें, जब मैं वापस उनके पास आऊँगा।
पांच बजने के कुछ मिनट बाद मैं अपने छिपने की जगह पर लौटा। बछिया बिल्कुल शांत, ज़मीन पर लेटी हुई थी, आधी सोई हुई। सूरज पश्चिम की पहाड़ी की चोटी के नीचे डूब चुका था, इसलिए चट्टानों के नीचे अपेक्षाकृत ठंडक थी और पूरी तरह से छाया थी, खासकर इसलिए क्योंकि मैं उनके पूर्व में बैठा था और मेरे और पहाड़ी की चोटी के बीच चट्टानें थीं, जिस पर, जैसा कि मैंने अभी कहा, सूरज पहले ही डूब चुका था। आस-पास कोई जंगल न होने के कारण, पहाड़ी की तलहटी में नीले-काले लैंटाना बेरों के गुच्छों पर पल रहे सैकड़ों बुलबुलों की दूर से आती चहचहाहट के अलावा शायद ही कोई आवाज़ मुझ तक पहुंच रही थी। उससे भी नीचे हरियाली की एक पट्टी थी जो धारा के किनारे इमली, मुट्ठी और जामुन के पेड़ों को दर्शाती थी। उस दिशा से मुझे जंगली मुर्गों और स्पूरफाउल की कभी-कभार आने वाली आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, क्योंकि नर मुर्गे रात को सोने से पहले अपने प्रतिद्वंद्वियों को चुनौती दे रहे थे।

छह बजने के कुछ ही देर बाद काफ़ी अंधेरा हो गया, हालांकि मुझे अब भी नीचे दूर नदी के दोनों किनारों पर उगे पेड़, थोड़ी दूरी पर फैली झाड़ियाँ और बीस गज की दूरी पर खड़ी बछिया दिखाई दे रही थी। मुझे याद है कि मैंने उस दृश्य की तुलना सिनेमा स्क्रीन पर चल रही किसी तस्वीर से की थी, जहाँ दर्शक अंधेरे में बैठा होता है जबकि स्क्रीन रोशन होती है। लेकिन बहुत जल्द वह तस्वीर भी धुंधली पड़ गई; और फिर मेरे चारों ओर घना, गहरा कालापन छा गया, जिसे केवल ऊपर टिमटिमाते कुछ तारों से ही थोड़ी राहत मिल रही थी। मेरे चारों ओर की चट्टानें मुझे जंगल की सामान्य और सुहावनी आवाज़ों से अलग कर रही थीं।
फिर, जैसे ही मेरी घड़ी में आठ बजकर दस मिनट हुए, अचानक दूर से आती एक चीख ने सन्नाटा तोड़ दिया, और एक-दो सेकंड बाद ही बंदूक की गड़गड़ाहट सुनाई दी। फिर पूर्ण सन्नाटा छा गया, और आधे मिनट बाद ही, नीचे घाटी में कहीं दूर से आती एक सांभर हिरणी, मेरी ही तरह उन आवाज़ों से चौंककर, अपनी गूंजती हुई चेतावनी भरी चीख निकालने लगी, जो घाटियों और घने जंगलों से ढके रास्तों में गूंजती हुई पहाड़ों की दुर्गम घाटियों में कहीं जाकर गुम हो गई।
मैं झटके से खड़ा हो गया। निस्संदेह बेचारे लोटा के साथ कुछ भयानक हुआ था। मैंने जो अजीब सी चीख सुनी थी, हालाँकि वह अमानवीय लग रही थी, लेकिन वह केवल उसी के मुँह से निकली हो सकती थी। एक मजल-लोडर की आवाज़, जो अनुभवी कानों के लिए राइफल या ब्रीच-लोडिंग बंदूक की आवाज़ से बिल्कुल अलग होती है, केवल उसी पुरानी मस्कट से आ सकती थी जिसे वह पकड़े हुए था। चीख का पहले आना यह संकेत देता है कि लोटा पर या तो हमला हुआ था या वह बुरी तरह डर गया था और फिर उसने आत्मरक्षा में गोली चलाई थी। लेकिन लोटा आसानी से डरने वाला आदमी नहीं था।
यह कहना मुश्किल था कि रंगा और बायरा, जो एक मील से भी ज़्यादा दूर गाँव में थे, ने बंदूक की गोली की आवाज़ सुनी होगी या नहीं, खासकर इसलिए क्योंकि वह पहाड़ी के दूसरी तरफ से आई थी। उन्होंने चीख तो बिल्कुल नहीं सुनी होगी। और मैंने उन्हें साफ़-साफ़ हिदायत दी थी कि वे गाँव छोड़कर न जाएँ। इसलिए अब एक ही रास्ता बचा था—और वो भी तुरंत। मुझे खुद लोटा के पास जाना होगा और देखना होगा कि मैं उसकी क्या मदद कर सकता हूँ।
अपनी राइफल से बंधी टॉर्च की मदद से मैं झाड़ियों से भरे जंगल से होते हुए लड़खड़ाते हुए नदी के किनारे तक पहुँचा, और फिर थोड़ी दूर तक दौड़ा। मुझे जंगल के उस हिस्से से होकर जाने वाला शॉर्टकट नहीं पता था जो उस पहाड़ी की तलहटी तक जाता था जहाँ से हमने समतल चट्टान तक पहुँचने के लिए चढ़ाई शुरू की थी, क्योंकि उस रास्ते से हमें खुद शोलागा ने ही रास्ता दिखाया था। इसलिए मैंने एकमात्र वैकल्पिक मार्ग चुना, जो नदी से पश्चिम की ओर पहाड़ी की तलहटी तक जाना था, और फिर बाईं ओर थोड़ा मुड़ते हुए चढ़ाई शुरू करना था, जिससे मैं जल्द ही घायल व्यक्ति की आवाज़ सुन सकूँ, और अगर वह जीवित होता तो मुझे जवाब दे देता।
झाड़ियों के बीच से ऊपर चढ़ते हुए मैं उत्तेजना और घबराहट से काँप रहा था, और डर के मारे टॉर्च की रोशनी इधर-उधर चमका रहा था कि कहीं आदमखोर किसी भी क्षण मुझ पर हमला न कर दे। आखिरकार झाड़ियाँ खत्म हुईं और वे भयानक चट्टानें शुरू हो गईं। तारों भरे आकाश में मुझे पहाड़ी की चोटी दिखाई दे रही थी, और इसे अपने आधे दाहिनी ओर रखते हुए, मैं उस कठिन इलाके में जितना हो सके आगे बढ़ता रहा। कुछ ही क्षणों में, यह महसूस करते हुए कि लोटा मेरी आवाज़ सुन सकता है, मैंने उसका नाम पूरी ताकत से पुकारना शुरू कर दिया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि मैं दो में से एक काम पूरा कर सकूँ—यानी तो आदमखोर को भगा दूँ या उसे अपनी ओर आकर्षित कर लूँ।

काफ़ी देर तक मेरी पुकारों का कोई जवाब नहीं मिला। फिर मुझे एक धीमी सी कराह सुनाई दी। मैं आवाज़ की दिशा जानने के लिए रुक गया और फिर से चिल्लाया: 'लोटा, तुम कहाँ हो? मुझे जवाब दो, मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगा।'
मुझे एक दबी हुई कराह सुनाई दी, जिसके कुछ ही सेकंड बाद एक धीमी सी चीख सुनाई दी, 'डोरोई, मैं यहाँ हूँ। मुझे तुम्हारी रोशनी दिखाई दे रही है। तुम पहाड़ी पर बहुत ऊपर जा रही हो। आगे बढ़ो, लेकिन थोड़ा नीचे आ जाओ।'
आवाज़ बहुत दूर से आती हुई प्रतीत हुई, लेकिन सौ गज़ के भीतर ही मेरी नज़र लोटा पर पड़ी। वह जिस चट्टान पर लेटा था, उसके तल पर गिर पड़ा था, लेकिन किसी तरह अपनी बंदूक को पकड़े रहा, हालांकि वह उसे दोबारा लोड नहीं कर पा रहा था। शोलागा ने उसकी पीठ, नितंबों और जांघों पर बुरी तरह खरोंचें मारी थीं। सौभाग्य से उसे काटा नहीं गया था।
फुसफुसाते हुए उसने मुझे बताया कि बाघ ने उसे पहाड़ी की चोटी से कहीं से देख लिया था और पीछे से घूमकर उसके पास आ गया था, जबकि वह ढलान वाली चट्टान पर ऊपर की ओर मुंह करके लेटा हुआ था, जहां हमने काले बैल को बांधा था। बिना किसी चेतावनी के बाघ पीछे से चट्टान पर झपटा और उसकी पीठ पर कूदकर उसे नोचने लगा। न तो वह मुड़ सका और न ही अपना हथियार तान सका, इसीलिए उसने बस ट्रिगर दबा दिया। धमाके की गर्जना और निस्संदेह बारूद से निकली आग और धुएं ने जानवर को डरा दिया था, क्योंकि वह उछलकर दूर भाग गया और ऐसा करते हुए उसे चट्टान से नीचे गिरा दिया। लोटा चट्टान के नीचे लेटा हुआ था, किसी भी क्षण आदमखोर के लौटने की उम्मीद कर रहा था, तभी उसने मेरी मशाल की रोशनी देखी और मुझे उसका नाम पुकारते हुए सुना। अगर वह चट्टान के दाईं ओर गिरने के बजाय बाईं ओर गिरता, तो चट्टान उसके और मेरे बीच आ जाती और वह मेरी रोशनी कभी नहीं देख पाता।
टॉर्च की रोशनी में बारीकी से जांच करने पर पता चला कि गंभीर और गहरे खरोंच के निशान और अत्यधिक खून बहने के बावजूद, कोई गंभीर या खतरनाक घाव नहीं हुआ था। वह व्यक्ति स्पष्ट रूप से गंभीर सदमे में था और बहुत दर्द में था, लेकिन काटने का कोई निशान नहीं था।
मैंने उसे समझाया कि हमें किसी भी तरह गाँव वापस जाना होगा, क्योंकि सुबह तक कोई मदद नहीं पहुँच पाएगी। पहले तो लोटा ने कहा कि वह खड़ा नहीं हो सकता, लेकिन सदमे का असर कम होते ही मैंने उसे खड़ा किया; अपनी बंदूक छोड़ने के बाद, जिसे वह पहले तो छोड़ने को तैयार नहीं था, उसने दोनों हाथों से मेरी गर्दन पकड़ ली। मैंने उसे अपने बाएँ हाथ से सहारा दिया जबकि दाहिने हाथ में जलती हुई मशाल के साथ राइफल पकड़ी हुई थी। इस तरह हमने पहाड़ी से नीचे की एक भयानक यात्रा शुरू की।
बड़ी मुश्किल से और काफ़ी देर बाद हम नदी के किनारे पहुँचे, जहाँ लोटा थकान से चूर होकर गिर पड़ा। वहाँ से मैंने उसे अपने कंधों पर उठाकर ले गया, जैसे कोई अग्निशामक उठाता है, और जब तक हम गाँव वापस पहुँचे, मैं बुरी तरह थक चुका था, और मेरी टॉर्च की बत्तियाँ, जो इतनी देर से जल रही थीं, काफ़ी धीमी पड़ चुकी थीं।
हमने निवासियों को जगाया और गर्म पानी तैयार होते ही चारों ओर हलचल मच गई। फिर मैंने शोलागा के घावों को यथासंभव धोया और उन पर पोटेशियम परमैंगनेट के कच्चे क्रिस्टल डाले, उसके बाद आयोडीन डाला। मुझे पता था कि यह एक क्रूर उपचार था, और वह दर्द से कराह उठा। अंत में, मैंने पेनिसिलिन प्रोकेन की दो शीशियों की कुल आठ लाख यूनिट की मात्रा उसके नितंबों में इंजेक्ट कर दी। पिताजी और मैं हमेशा अपने शिकार यात्राओं पर एक हाइपोडर्मिक सिरिंज, पेनिसिलिन,

आयोडीन, एक तेज़ चाकू, पट्टियाँ, रुई और प्राथमिक चिकित्सा की अन्य सामग्री साथ रखते हैं, ताकि ऐसी आपात स्थितियों से निपटा जा सके।
सुबह के 3 बज चुके थे जब मैंने गांव के मुखिया से कहा कि अगली सुबह जल्दी ही उन्हें आठ तंदुरुस्त आदमियों को काम पर लगाना होगा ताकि लोट्टा को चारपाई पर बिठाकर कावेरी नदी तक ले जाया जा सके और फिर नाव से पार करने के बाद ऊतमलाई तक ले जाया जा सके, जहां से मैं उसे अपनी कार में बिठाकर पेन्नाग्राम के अस्पताल ले जाऊंगा।
मैं अत्यधिक थकान से सो रहा था, तभी बायरा मेरे पास एक नाटकीय विचार लेकर आया। उसने कहा, 'दोराई, चलो इस बाघ को मारने का आखिरी प्रयास करते हैं। बंदूक की आवाज से डरकर यह शायद अपनी गुफा में वापस चला गया होगा और वहीं छिपा होगा। तुम अब सो जाओ। जब जंगली मुर्गे बांग देने लगेंगे, मैं तुम्हें बुलाऊंगा। हम नदी के किनारे वापस जाएंगे और सुबह होते ही पहाड़ी पर चढ़ेंगे। तुम धीरे-धीरे ऊपर की ओर रेंगते हुए उस जगह तक पहुंच जाना जहां से लंगूर उछला था, जो गुफा के प्रवेश द्वार के ऊपर है। तुम्हें स्थिति में आने के लिए पर्याप्त समय देने के बाद, मैं एक तरफ से पहाड़ी पर आऊंगा और गुफा के सामने थोड़ी देर के लिए दिखाई दूंगा। अगर बाघ अंदर है, तो वह हमला करने से पहले शायद गुर्राएगा, और फिर हमला करके बाहर निकल आएगा। मैं पीछे हटकर चट्टान से सटकर छिप जाऊंगा ताकि रास्ते में न आऊं। तुम अपनी राइफल की दोनों नलियों से ऊपर से उसकी पीठ में गोली मार देना। मैंने कह दिया है।'
'बकवास,' मैंने विरोध करना शुरू किया, तभी बायरा बीच में बोली: 'जल्दी सो जाओ, डोराई; तुम्हारे पास आराम करने के लिए मुश्किल से दो घंटे हैं।'
और मैं इतना थक गया था कि बहस करने से पहले ही सो गया।
ठीक पाँच बजे बायरा ने मुझे जगाया, और अपने वादे के मुताबिक मुझे जंगली मुर्गों की बांग सुनाई दी, हालाँकि बाहर काफी अंधेरा था। मैं अभी भी असमंजस में था कि मैं समझदारी का काम कर रहा हूँ या मूर्खता का, फिर भी मैं उसके पीछे चल पड़ा। नदी के किनारे पहुंचने से बहुत पहले ही टॉर्च की बत्ती बुझ गई। यकीन मानिए या नहीं, हालाँकि मैंने बेंगलोर से लाए अपने सभी सामान की सावधानीपूर्वक जाँच की थी, लेकिन सबसे ज़रूरी चीज़—अतिरिक्त टॉर्च बैटरी—भूल ही गया था। लेकिन मुझे अपने पुराने जंगली दोस्त बायरा पर पूरा भरोसा था, इसलिए मैं उसके पीछे-पीछे चलता रहा और घने पेड़ों के बीच से रास्ता बनाते हुए आखिरकार नदी की सूखी रेत पर पहुँच गया। यहाँ हम लगभग आधे घंटे तक बैठे रहे, जब तक कि भोर नहीं होने लगी। फिर मैंने टॉर्च और राइफल की नली से क्लैप हटा दिए, क्योंकि अब ये अनावश्यक बाधा थे, अपनी .470 राइफल की दोनों नलियों में गोलियों की दोबारा जाँच की, और बायरा के पीछे पहाड़ी पर चढ़ने लगा।
जब हम लगभग चोटी पर पहुँच गए थे, तो उसने मेरा हाथ पकड़ा और फुसफुसाते हुए कहा: 'तुम यहाँ से आगे बढ़ो, डोराई। बिलकुल भी आवाज़ मत करना। धीरे-धीरे रेंगते हुए शिखर तक पहुँच जाना। फिर बाईं ओर मुड़ना और तब तक चलते रहना जब तक तुम गुफा के ठीक ऊपर न पहुँच जाओ। वहाँ लेट जाना और ट्रिगर पर उंगली रखकर तैयार रहना। मैं तुम्हें अपने सामने आने से पहले काफी समय दूँगा। जब गोली चलाओ, तो दोनों बैरल से गोली चला देना ताकि कोई शक न हो।'
फिर, बिना कुछ कहे, वह एक बड़े पत्थर के पीछे गायब हो गया। बहुत शंकाओं के साथ मैंने वही किया जो उस छोटे बूढ़े आदमी ने मुझे बताया था। पहाड़ी की चोटी तक पहुँचना और बाईं ओर की पहाड़ी पर चलना तो आसान था। लेकिन उस जगह को याद करना जहाँ तक मैं लंगूर बंदर का पीछा करते हुए गया था, बिलकुल अलग बात थी। तीन बार मैंने जगह का गलत अनुमान लगाया और ऊपर से नीचे देखने पर मुझे

कोई गुफा नहीं दिखी। फिर मुझे वह नुकीला पत्थर याद आया जो नदी के किनारे खड़े होने पर गुफा के प्रवेश द्वार को छिपा देता था। आखिरकार मैंने उसे देख लिया, और उसे एक निशान के रूप में ध्यान में रखते हुए, मैंने तुरंत उस सटीक जगह को पहचान लिया जहाँ से मैंने लंगूर बंदर के वापस भागने के बाद गुफा के मुँह को देखा था। एक बार फिर गुफा ठीक मेरे नीचे थी।
अब एक और बात मुझे परेशान करने लगी। क्या बायरा ने मुझे जगह ढूंढने में हुई मेरी तीन गलतियों को सुधारने का पर्याप्त समय दिया था? मुझे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी थी, इसलिए कुछ भी नहीं हुआ होगा। चुपचाप मैं ऊपर नंगी चट्टान पर लेट गया, ताकि मेरी राइफल का मुंह गुफा के संकरे प्रवेश द्वार के ऊपर रहे। और मैं वहीं इंतज़ार करता रहा। लेकिन बायरा फिर भी नहीं आया।
फिर अचानक, इससे पहले कि मैं उसकी निकटता को महसूस कर पाता, वह छोटा आदमी नीचे से और मेरे बाईं ओर से दिखाई दिया। शांत और सावधानी से, ताकि सही समय आने से पहले कोई आवाज़ न हो, वह संकरी गुफा के मुँह की ओर बढ़ा, उसके सामने खड़ा हुआ, अपने पैर से एक ढीले पत्थर को ठोकर मारी और अपना गला साफ़ किया। उसके बाद, बिजली की गति से वह उसी रास्ते से वापस चला गया और बाईं ओर एक चट्टान के पीछे मेरी नज़र से ओझल हो गया।
घटनाएँ तेज़ी से घटीं। जिस ज़मीन पर मैं लेटा था, वह भूकंप आने जैसी गड़गड़ाहट से काँप उठी, तभी नीचे गुफा में बाघ दहाड़ा। फिर उसने ज़ोर से दहाड़ा, और अगले ही पल वह धरती के गर्भ से बाहर निकल आया।
आदमखोर एक पल के लिए झिझका, यह न जानते हुए कि जिस व्यक्ति ने इतनी गुस्ताखी से उसकी निजता भंग की थी, वह कहाँ चला गया। तभी मेरी पहली गोली उसकी गर्दन के पीछे लगी। वह पलटकर पीठ के बल गिर पड़ा, उसका सफेद पेट मेरी ओर था—उसके चारों पैर बेतहाशा हवा में फड़फड़ा रहे थे। मेरी दूसरी गोली उसके सीने में जा लगी।
वह अभी ठीक से तड़पना बंद भी नहीं कर पाया था कि बायरा कोने से फिर प्रकट हुई और कमर पर हाथ रखकर मेरी तरफ़ देखकर मुस्कुराई, मानो उसकी योजना पूरी तरह सफल हो गई हो। मैं बहुत उत्साहित होकर ऊँचे से चट्टान से नीचे फिसल गया और बड़े ही अनाड़ीपन से बायरा के पैरों के पास ढेर की तरह गिर पड़ा, उस बाघ के बेहद करीब, जिसके बारे में हम दोनों को ही पक्का यकीन नहीं था कि वह सचमुच मर गया है। हम वहाँ लगभग पाँच मिनट तक इंतज़ार करते रहे। फिर बायरा ने एक पत्थर फेंका जो जानवर से टकराकर निकल गया, कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। इससे हमें वह पता चल गया जो हम जानना चाहते थे; बाघ मर चुका था।
और अब उस रहस्य को सुलझाने का समय आ गया है जिसने पिताजी, मुझे और कई अन्य लोगों को लगभग पाँच वर्षों से उलझन में डाल रखा था। इस बाघ ने अपने मानव शिकारों पर पहली बार हमला करते समय उन्हें काटने के बजाय खरोंचने और पंजे मारने की आदत क्यों बना ली थी?
अंत में, जब हमने मृत जानवर की जांच की, तो रहस्य सुलझ गया। उसकी पूरी नाक एक पुराने गोली के घाव से उड़ गई थी, जो संभवतः .12 शॉटगन या शायद मज़ल-लोडर से लगी थी। गोली लगने से नाक की हड्डी भी चकनाचूर हो गई थी, जो नथुनों से लेकर आंखों के बीच तक फैली हुई थी। यह एक भयानक और बेहद दर्दनाक चोट रही होगी, लेकिन चमत्कारिक रूप से ठीक हो गई थी। लेकिन बाघ ने निस्संदेह उस भयानक घाव को मानव जाति से जोड़ना कभी नहीं भूला था, और इसलिए जब भी वह किसी मनुष्य पर हमला करता था, तो वह अपने उस अंग को सुरक्षित रखने का पूरा ध्यान रखता था। यही एकमात्र स्पष्टीकरण हो सकता है, क्योंकि इस बाघ द्वारा मारे गए सभी मवेशियों को सामान्य तरीके से, अपने दांतों और पंजों से मारा गया था। इसके

अलावा, वह सामान्य रूप से खाता-पीता था। जैसा कि मैं देख सकता था, घाव पूरी तरह से भर गया था। इसलिए यह बहुत ही असंभव था कि उसे काटने के दौरान अब भी दर्द होता हो। निश्चित रूप से, इस चोट के बिना, वह किसी भी सामान्य बाघ की तरह, मानव जाति के लिए पूरी तरह से हानिरहित रहता।
हम अत्यंत प्रसन्न होकर गाँव वापस भागे और सबको खुशखबरी सुनाई। लोट्टा ने ज़ोर-ज़ोर से बधाई दी। बेजाहाई गाँव का हर पुरुष, स्त्री और बच्चा उस मरे हुए आदमखोर को देखने के लिए पहाड़ी पर चढ़ गया।
कुछ देर बाद ऊतैमलांई की ओर लौटते हुए जुलूस में लोट्टा आठ आदमियों द्वारा उठाई जा रही चारपाई पर बैठा था, और बाघ की खाल का एक बंडल बायरा के सिर पर रखा था। हालांकि झटके से शोलागा को काफी दर्द हुआ होगा, लेकिन उसने एक बार भी शिकायत या बड़बड़ाहट नहीं की, बल्कि बाघ का वध करने वाले के रूप में मेरी और उस छोटे बूढ़े पुजारी बायरा की खूब प्रशंसा की, जिसकी जंगल की चतुराई ने बाघ का अंत किया और जिसकी निडरता ने आदमखोर बाघ को उसकी मांद से भगा दिया।
मुझे इस बात का पछतावा हो रहा था कि बाघ को वापस लाने के चक्कर में लोटा को जो चिकित्सा सहायता पहले मिल सकती थी, उसमें देरी हो गई। लेकिन मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि वह जल्दी और आसानी से ठीक हो गया। बायरा ने जो कुछ भी किया, उससे मेरी नज़र में उसकी इज्ज़त और बढ़ गई। उसके लिए मेरा सम्मान चरम पर था। बूढ़ा रंगा थोड़ा निराश था कि इस बार उसके प्रतिद्वंद्वी ने उसे हरा दिया। लेकिन अब लोटा के साथ ये दोनों हमेशा वफादार दोस्त, साथी और सहायक बनकर हमारा इंतज़ार कर रहे हैं, और किसी भी समय पिताजी और मेरी सेवा करने के लिए तैयार हैं।

---

* देखें: आदमखोर और जंगल के हत्यारे।

The Call of the Man-Eater collects stories and anecdotes of Anderson's adventures in the southern jungles of undivided India. Frequently sought by tormented villagers, Anderson would comb riverbanks and jungle trails to hunt down panthers and tigers well known for their slaughter of humans. He negotiated the dangerous terrain carefully with a .405 Winchester rifle, a Studebaker car, and some help from friends and native informants. Sometimes he domesticated these wild creatures, as in the case of the hyena, jackal, bear, barking deer and a few snakes, which the hunter-writer tamed and kept as pets around him.

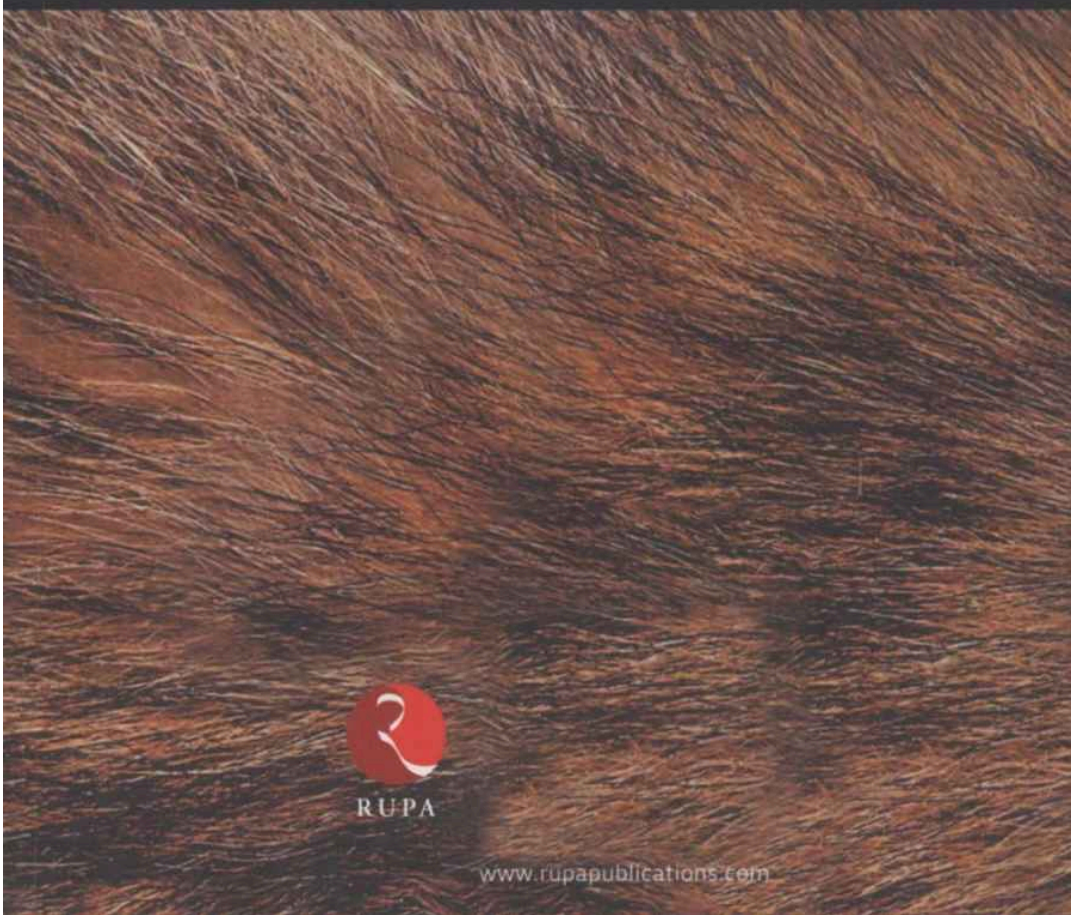

RUPA

www.rupapublications.com